हिन्दी संस्करण नं0 84

एक्ट्स

पवित्र आत्मा का अभिषेक

"न तो बल से और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है" (जकर्याह4:6)।

द्वारा – फ्रेंक आर. पैरिश

एक्ट्स

पवित्र आत्मा का अभिषेक

प्रकाशक :
वर्ल्ड मैप
नं0 67, बरक्का रोड,
कीलपक, चेन्नई–600010

ACTS HINDI EDITION
THE ANOINTING OF THE HOLY SPIRIT
English Acts, Vol. 36 / No. 1

Founder : Ralph Mahoney
International Editors : Frank and Wendy Parrish
Managing Editor, India : Mr. E. Velayutham

Hindi Translation ACTS HI-84
HI-84 / 2008
© 2008

WORLD MAP
Post Box 1037
67, Beracah Road
Kilpauk, Chennai - 600 010.

पवित्र आत्मा का अभिषेक

द्वारा–फ्रेंक आर. पैरिश

लेखक का महत्वपूर्ण नोट!

प्रिय कलीसिया के अगुवे;

एक्ट्स पत्रिका का "अभिषेक" पर का अंक इस प्रकार बनाया गया है कि इस विषय पर बाइबल आधारित गहराई से अध्ययन हो सके।

इस गम्भीर विषय को बेहतर तरह से समझने के लिये ये आपसे अध्ययन और प्रयास में गम्भीर विचारों को चाहता है।

इसका अध्ययन करने के लिये अधिक समय की जरूरत होगी। आप प्रति दिन केवल दो या तीन पृष्ठों का अध्ययन कर पायें। पर मैं बड़े जोर से आग्रह करता हूं कि आप अपने आप में इसे प्रार्थना और ध्यानपूर्वक अध्ययन में लगायें। यदि ऐसा करते हैं तो आपका जीवन और सेवकाई बदल जायेगी।

मैं बहुत साल सेवकाई में था इससे पहले कि मैं परमेश्वर के आत्मा के अभिषेक को मेरे जीवन में और सेवकाई में समझ पाता। जब मैंने अपने हृदय को खोला और परमेश्वर को मेरी समझ की आंखों को खोलने दिया। मैं बदल गया था। मेरी सेवकाई बदल गई थी। पवित्र आत्मा की उपस्थिति और सामर्थ अत्याधिक क्रियाशील और मेरे जीवन और सेवकाई में दिखती थी।

मेरी सेवकाई में अधिक फल दिखने लगे। और अधिक तरह से मैंने परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव किया। मेरा जीवन आसान नहीं

बन गया पर अब जीने की अधिक योग्यता मसीह के द्वारा बन गई जो मुझ से प्रेम करता है (देखें रोमियों 8:37)।

मैं आपको अधिक प्रोत्साहित करता हूं कि इस सामग्री के अध्ययन में अधिक स्थिर और बुद्धिमान हों यहां कुछ व्यवहारिक सुझाव दिये गये हैं जो आपको इसे करने में सहायता करेंगेः–

पहलाः इस शिक्षण में मैंने बहुत से संदर्भ दिये हैं कृपया *इन हर एक धर्मशास्त्र के पदों को देखिये*। ये बहुत से महत्वपूर्ण अभिप्रायों को बतायेगाः 1) कलीसिया के अगुवे होकर आपको हर एक शिक्षा व जो पढ़ते हैं आसानी से स्वीकार नहीं करना चाहिए–धर्मशास्त्र से ढूंढ कर पढ़ें–(प्रेरित 17:11); 2) कलीसिया के अगुवे होकर आपके लिये ये महत्वपूर्ण है कि आप अपने ज्ञान, घनिष्ठता और धर्मशास्त्र की समझ में आगे बढ़ें (2 तीमुथियुस 2:15–18)। ये आपको वा जिनकी अगुवाई आप करते हैं उन्हें गलतियों से बचायेगा, और आपको सक्षम कार्यकर्ता परमेश्वर के वचन में बनायेगा; 3) केवल परमेश्वर का वचन उसकी सामर्थ से सहारा देगा। (2 तीमुथियुस 3:16,17; इब्रानियों 4:12,13, 2 पतरस 1:20,21)। ये पवित्र आत्मा और परमेश्वर के वचन का मिला जुला कार्य है जो मानव हृदय को बदल सकता है।

दूसराः नोट्स लिखने के लिये पेपर या नोटबुक रखें, आगे अध्ययन व प्रश्नों के लिये। परमेश्वर आपसे बातें करेगा और जैसे उसके वचन का अध्ययन करते हो वह सत्य को प्रगट करेगा।

इस अध्ययन को व्यक्तिगत विकास की यात्रा बनने दें, ये आपको इस शिक्षण सामग्री में अधिक मदद करेगा।

अन्त में मेरे प्रिय सहकर्मी, मैं जोरों से आपको प्रोत्साहित करता हूं कि अपने अध्ययन समय को प्रार्थना के साथ प्रभु की बाट जोहते हुए करें। क्योंकि ये पवित्र आत्मा है जो सत्य प्रगट करता है और मसीह का स्वागत व चरित्र प्रगट करता है (यूहन्ना 14:17,26)। इस अध्ययन में केवल अपने दिमाग ही को न लगायें – क्योंकि इससे जो आप प्राप्त कर सकते हैं उसमें सीमित हो जायेंगे। हमारे दिमाग परमेश्वर की ओर

से एक वरदान हैं पर फिर भी वे सीमित हैं (देखें 1 कुरिन्थियों 3, 4 अध्याय) अपने हृदय को खोलें और पवित्र आत्मा को सिखाने दें व आपको ढालने दें। आप जहां हैं, जो हैं, दूसरों की अगुवाई कर सकते हैं। इसलिये प्रार्थना करें, अध्ययन करें और इस शिक्षा का आनन्द लें और जब आप पढ़ते हैं तो आप परमेश्वर के अभिषिक्त सामर्थ में बढ़ें।

हमने जो एक्ट्स पत्रिका के अंक में नई विशेषतायें जोड़ दी हैं उन्हें नोट करिये। पूरे शिक्षण में मेरे द्वारा आपके लिये विशेष नोट्स होंगे। इन्हें आपकी कलीसिया के अगुवा होने के लिये विशेष रूप से बनाया गया है कि आप व्यक्तिगत बढ़ौतरी वा सेवकाई से सम्बन्धित धर्मशास्त्र के सिद्धान्तों को गहराई से देख सको। ये विशेष नोट्स "पास्टर से पास्टर" के नाम से दिये गये हैं और रंगीन रूप में दिया गया है जिससे आप आसानी से पहचान लें।

पास्टर, मैं मसीह आपसे प्रेम करता हूं और आपके लिये परमेश्वर के अभिप्राय पर विश्वास करता हूं। आप परमेश्वर के चुने हुए हथियार हो जिसे वह अपने राज्य के लिए महिमा में इस्तेमाल करना चाहता और अपनी कलीसिया को आशीष देना चाहता है। मैं मसीह यीशु के नाम में आपको आशीष देता हूं। अब प्रभु यीशु आपको आशीष देवे आपको सामर्थ दे और बढ़ाये – जैसे आप उसके वचन का अध्ययन करते और उसकी आत्मा और वचन से प्राप्त करते हो।

आपका भाई,
रेव्ह फ्रैंक आर. पैरिश
डायरेक्टर, वर्ल्ड मैप

पवित्र आत्मा का अभिषेक

"ना बल से न शक्ति से पर मेरी आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेना के यहोवा का यही वचन है" (जकर्याह 4:6)।

द्वारा–फ्रेंक आर. पैरिश

इस शिक्षण का परिचय

इससे पहले कि "अभिषेक" की प्रभावशाली बाइबल आधारित अध्ययन आरम्भ हो, हमें कुछ महत्वपूर्ण नींव के सिद्धान्तों को स्थापित कर लेना चाहिये। ये सिद्धान्त बाइबल आधारित मंच बनायेगा जिससे हम अभिषिक्त करने को सही तरह से देख सकेंगे।

इस लेख का आरम्भिक भाग उन नींव के सिद्धान्तों का वर्णन करेगा। हो सकता है वो आपके लिये नये हों, या पहले ही से परिचित हों। फिर भी जबकि ये गम्भीर हैं कि हमारी एक सामान्य नींव है जिस पर से इस अध्ययन का निर्माण करें। मेरा आग्रह है कि आप इन सिद्धान्तों का अध्ययन सावधानी से करें। पवित्र आत्मा को समय दें जिससे वह प्रगट करे, कायल करे, जांचे और पुष्टि करे कि कितनी अच्छी तरह इन सिद्धान्तों को दृढ़/स्थापित किया गया है और उन्हें अपने जीवन और सेवकाई में जीत सकें। प्रिय सहपाठी, ये अध्ययन परिपक्वता का आसान "छोटा रास्ता" नहीं है। ना ही ये शीघ्र नुस्खा है या अच्छी शिक्षा है जो आपको "सफल" बनाने में इस्तेमाल की जा सकती है।

बल्कि ये वो बाइबल आधारित अध्ययन है कि हम जो चर्च के अगुवे हैं किस प्रकार परमेश्वर के राज्य में बढ़ें और कार्य करें। सत्य

में फलदायक होने के लिये परिपक्वता का रास्ता आवश्यक प्रक्रिया है, अन्त तक सेवकाई में रहने के लिये जो परमेश्वर को अधिक महिमा देती है!

इसलिये आइये, अपने आपको बुद्धिमानी से उसका अमल करें–जब हम इस "अभिषेक" के विषय को सीखते हैं। परमेश्वर जिसे उसने अपनी इच्छा और तरीके से किया आशीष दे सकता है। इस प्रकार ये आवश्यक है कि हम इस विषय पर आगे बढ़ने से पहले एक सही नींव उसके वचन से स्थापित करें (यशायाह 28:10)।

''पवित्र आत्मा के अभिषेक'' की रूपरेखा

परिचय

I. अभिषेक की ऐतिहासिक और बाइबल आधारित पृष्ठ भूमि

- क. पुराने नियम में अभिषेक
  - 1. शब्द "अभिषेक" का उद्‌गम
  - 2. शब्द "मसायाह" का उद्‌गम
- ख. नये नियम में अभिषेक
  - 1. *ऐलीफो*
  - 2. *क्रियो*
  - 3. *क्रिसमा*

II. अभिषेक का स्वाभाव अभिप्राय और कार्य

- क. अभिषेक का स्वाभाव
  - 1. अभिषेक क्या नहीं है
  - 2. पवित्रीकरण की तीन विशेषताएं
  - 3. विकास का मार्ग
- ख. अभिषेक का अभिप्राय
  - 1. अभिषेक की व्याख्या

  - 2. शक्ति के साथ अभिप्राय
    - क. दैविय समर्थ करना
    - ख. अभिषेक कौन पा सकता है
- ग. अभिषेक का कार्य
  - 1. अभिषेक बुलाहट से सम्बंधित है
  - 2. अभिषेक अपने तक ही नहीं रखना
  - 3. अभिषेक सीमित हो सकता है या बन्द (समाप्त) हो जाये
  - 4. अभिषेक निन्दित या दुरुपयोग हो सकता है।
- घ. पुराने नियम के प्रकार का अभिषेक
  - 1. चिन्ह रूपी
  - 2. अभिषेक के तेल से सबक

III. अभिषेक में चलना

- क. अभिषेक की रक्षा करना/बचाना
  - 1. कुएं में चूहे
  - 2. शुद्धता का मार्ग
  - 3. असली अभिषेक की सात विशेषताएं
- ख. अभिषेक में बढ़ना
  - 1. चरित्र और अभिषेक
  - 2. स्वामी के पद चिन्ह
    - क. यीशु अधिकार के आधीन था
    - ख. यीशु परिपक्वता में बढ़ता गया
    - ग. यीशु ने परीक्षा को समझा
- ग. उसके अभिषेक को प्राप्त करना
  - 1. भर जाओ!
  - 2. परमेश्वर की खोज करो!

असीमित सेवकाई

मसीह यीशु में हर एक विश्वासी या किसी के लिये विषय अभिषेक का बड़ा महत्व है। फिर भी अभिषेक को समझ लेना–ये है क्या ये कैसे कार्य करता है, हम उसमें कैसे चल और बढ़ सकते हैं–ये गम्भीर है। ये उनके लिये जो पूरे समय की सेवकाई के लिये बुलाये गये विशेष रूप से सत्य है।

दुर्भाग्य से, अभिषेक अक्सर गलत रूप से समझा गया या वह विषय है जो अगुवों के द्वारा दूर किया गया है। यद्यपि ये वो है जो परमेश्वर हमें देना चाहता है, बहुत से अगुवों को मालूम ही नहीं कि ये क्या है या इसे कैसे प्राप्त करें। इस प्रकार वे पवित्र आत्मा के अभिषेक को दूसरी चीज़ों से बदल देते हैं।

कुछ अगुवे प्रबन्ध करने में सक्षम हो जाते या संस्था को चलाने में। शायद वे शिक्षा पर अधिक ध्यान देते, डिग्ररियां जोड़ते रहते और अपने नाम के आगे पीछे रखते हैं। वे हो सकता बहुत सी की सप्रेंसो में जाते और महान वक्ताओं द्वारा प्रभावित होते। वे शायद अपने बोलने की क्षमता को बढ़ाते कि वे अगुवाई कर सकें या प्रभावशाली रूप से दूसरों को प्रेरित कर सकें।

ज़रूरी नहीं कि ऊपर वर्णन की हुई बातें गलत हैं और सेवकाई में सहायक होंगी या नहीं। पर ये अभिषेक नहीं है! ना ही ये सेवक के जीवन में पवित्र आत्मा के अभिषेक का विकल्प हैं।

शिक्षा और प्रबन्धन का गुण अच्छा और सहायक हो सकता है। फिर भी वे सीमित हैं जो वे सहायता कर सकते जो अगुवा करना चाहता है। जब हम अपनी शिक्षा पर निर्भर होते हैं, हम सबसे उत्तम नतीजा आशा कर सकते हैं कि हमारी शिक्षा की सीमा। जब हम अपने बोलने की योग्यता पर भरोसा करते हैं या दूसरी क्षमता पर हम उन क्षमताओं से जो प्राप्त करते वे सीमित हैं।

फिर भी, **जब हम पवित्र आत्मा पर निर्भर होते, हम केवल वहां सीमित हैं जो पवित्र आत्मा कर सकता है।**

जिस पर भी हम निर्भर करना चुनें या अपना भरोसा रखें – अपनी सेवकाई की बुलाहट में पूरा करने के लिये–यही वह सीमा निर्धारित करेगा जो हम करने योग्य हैं। आप अपनी सेवकाई में कितनी सीमा चाहते हैं?

परमेश्वर के साथ कोई सीमा नहीं है . . . (देखें लूका 18:27)। इसलिये यदि मैं अपनी निर्भरता और भरोसा परमेश्वर पर रखूं और उसकी सामर्थ वा उसकी योग्यता पर तो मेरी सीमाएं परमेश्वर की इच्छा है और उसकी इच्छा मेरे लिये (फिलिप्पियों 4:13)।

हर एक नया जन्म पाये हुए विश्वासी के लिये परमेश्वर की इच्छा ये है कि आत्मा के फलों का सबूत दें (गलातियों 5:16–26)। उनके व्यवहार और कार्यों में। आत्मा के फल मसीह की विशेषता है। इसी प्रकार के चरित्र की आवश्यकता उन से है जो दूसरे लोगों को मसीह की देह में अगुवाई करने के लिये बुलाये गये हैं। वे अगुवे की भूमिका है कि उनके साथ जिनकी अगुवाई करना है भलाई का व्यवहार करने का आदर्श बनें (1 कुरिन्थियों 11:1; फिलिप्पियों 3:17; 1 तीमुथियुस 4:12)। कोई ऐसा वरदान नहीं हैं, प्रबन्धन का गुण या प्रचार करने या शिक्षा देने की योग्यता जो मसीह के समान चरित्र और प्रतिष्ठा का विकल्प हो सके।

ये भी परमेश्वर की इच्छा है – विशेषकर उनके लिये जो अगुवाई करने के लिये बुलाये गये हैं कि हमारे पास पवित्र आत्मा का अद्वैत सामर्थ है। यीशु ने अपने चेलों को कहा, *"तुमने मुझे नहीं चुना परन्तु मैंने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया है ताकि तुम जाकर फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो वह तुम्हें दें"* (यूहन्ना 15:16)।

इस हिस्से से हम देखते हैं कि ये यीशु की इच्छा है कि हमारे जीवन में फल रहें। ये कैसे हो सकता है? जब हमारी सेवकाई परमेश्वर के अभिषेक की पवित्र आत्मा की सामर्थ से भरपूर है – हमारे द्वारा उसका सामर्थ हमें इसे लायक बनाती है कि हम दूसरों के जीवनों में इस प्रकार प्रभाव डालें कि उनका जीवन फलदायक और हमेशा रहे।

इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता कि अगुवा कितना तेज़ या गुणी है, बिना पवित्र आत्मा के अगुवा परमेश्वर की इच्छा परमेश्वर के तरह से पूरी नहीं कर सकता। हमारे लिये ये सौभाग्य है कि परमेश्वर जानता है कि हम जो करते उससे बेहतर क्या है और उसने पहले ही से अपनी उच्च बुलाहट को पूरा करने के लिये अपनी योग्यता और सामर्थ उपलब्ध कराई है।

बिना सामर्थ से

आज बहुत से चर्च और सेवकाइयां हैं जहां परमेश्वर की उपस्थिति और पवित्र आत्मा की सामर्थ सीमित हैं। इन सेवकाइयों के पास बड़ी भीड़ हो सकती है, आधुनिक सुविधाएं हो सकती हैं और उत्तेजित घटनाएं हो सकती हैं। यदि असली पवित्र आत्मा की सामर्थ का स्वागत नहीं किया गया और दिखाई नहीं देता, तो ये इक्ट्ठा होना (भीड़) धार्मिक, विधियों में एकदम खाली हो सकती हैं।

एक बड़ी इमारत या स्टेडियम में बड़ी भीड़ हो सकती है, आधुनिक सुविधायें और उत्तेजना जैसे फुटबाल खेल के लिये होती है हो सकती है। पर ये बाहरी परिस्थितियां जो मसीह यीशु के पीछे चलते हैं चेला बनाने के लिये बहुत थोड़ा है।

चर्च के इतिहास में, हमारे संसार में बहुत से स्थान हैं जहां परमेश्वर ने मानव पात्रों द्वारा बहुत से महान और अद्‌भुत कार्य किये हैं। उनमें से बहुत से चर्च और बहुत से भूगोलिक क्षेत्र एक समय मसीहियों के जोशीले उपस्थिति के लिये जाने जाते थे। दुःख के साथ आज वे आत्मिक रूप से अन्धकारमय हैं। एक समय जब चर्च का बहुत अधिक प्रभाव था आज ये स्थान खाली हैं और सुसमाचार की ज्योति के बिना है।

नये नियम के इतिहास में अधिक जाने माने चर्च एशिया माइनर में थे (अब वे तुर्की में हैं) इन कलीसियाओं के बारे में प्रकाशितवाक्य में पढ़ा जा सकता है साधारणतया वे "प्रकाशितवाक्य की सात कलीसियाओं" के नाम से जाने जाते हैं।

एक समय था जब ये कलीसियाएं लोगों के हृदयों में मसीह के छुटकारे के कार्य के लिये मज़बूत शक्तिशाली गढ़ मानी जाती थी। बहुत से आश्चर्यकर्म वहां पर हुए (प्रेरितों के काम की पुस्तक पढ़ें) परन्तु आज पर्यटक पैसा लगाकर उन खन्ड़रों के बीच चलते हैं जहां एक समय प्रेरितों ने जीवित वचन को थामें रखा था। ये स्थान आज शून्य और बिना जीवन के हैं और सुसमाचार के वचन से रहित हैं।

इन महान चर्चों का और सेवकाइयों का क्या हुआ? ये खाली खण्ड़र आज आकाश के पक्षियों का बसेरा हैं जो हमारे लिये एक चेतावनी और सीख हैं।

यहां वो है जो हम सीख सकते हैं: "जब कभी कलीसिया के अगुवे अपनी योग्यताओं पर भरोसा करने लगें या रीति रिवाजों पर, चर्च की राजनीति, पदों पर या अपनी शिक्षा और ज्ञान पर – परमेश्वर के पवित्र आत्मा पर निर्भर ना होकर न उसके अनन्त वचन पर भरोसा करने के बदले–तो यही समय है जब परमेश्वर का जीवन और सामर्थ हम जैसे अगुवों को छोड़ना आरम्भ कर देता है हमारी सेवकाइयों को, चर्च को जिसे परमेश्वर ने हमें दिया है।

thou d opu
dk vkx j[kuk

चर्च (कलीसिया) क्या है

पवित्र आत्मा ने पौलुस को प्रेरणा दी कि कलीसिया की दशा का वर्णन करें (देखें – 1 कुरिन्थियों 3)। कुरिन्थ की कलीसिया अपने संसारिक, अपरिपक्व एक दूसरे के साथ स्वार्थी झगड़ों में निन्दित थी। वे एक दूसरे से बेहतर समझने में झुण्डों में विभाजित हो रहे थे कि एक दूसरों से उच्च समझें (3:1–4)। ये उस समय था और आज भी है – घमण्ड से फूलने के अलावा कुछ नहीं है – शैतान का पाप (1 तीमुथियुस 3:6)। ये घमण्ड का व्यवहार और अपने स्वयं पर भरोसा करने का प्रयास आज भी कलीसियाओं में फलदायक होने में रुकावट डालता है।

पौलुस स्पष्टता से साफ कहता जाता है कि केवल परमेश्वर ही है जो सत्य में कलीसिया की बढ़ौतरी करता है। "इसलिये न तो लगाने वाला कुछ है और न सींचने वाला, परन्तु परमेश्वर जो बढ़ाने वाला है" (1 कुरिन्थियों 3:7)।

केवल एक ही नेंव है जिस पर कलीसिया स्थापित की जा सकती हैः मसीह यीशु जो कोने के सिरे का पत्थर है (1 कुरिन्थियों 3:10,11 साथ में देखें इफिसियों 2:20–22)। यही हमारे लिये आज चर्च के लिये कोने का पत्थर है, जितना कि 2000 साल पहले जब कलीसिया का जन्म हुआ था!

कलीसिया का मर्म (हृदय)

प्राचीन संसार में कोने के पत्थर का कुछ बहुत अधिक मूल था जो हमें ये समझने में सहायक होगा कि क्यों यीशु को "मुख्य कोने का पत्थर" कहा गया है (मत्ती 21:42)।

प्राचीन मध्य–पूर्व में घर व इमारतें इसी प्रकार बनाई जाती थीं। एक पत्थर को बड़ी सावधानी के साथ रखा जाता था – वहीं मुख्य कोने का पत्थर होता था। बाकी की इमारत जिसमें उसका आकार शामिल था उसकी बनावट व नक्शा का नाप लिया जाना और उस विशेष कोने के पत्थर से सीध (लाइन) ली जाती थी।

यही वह उदाहरण है जो पवित्र आत्मा के द्वारा पौलुस के माध्यम से इस्तेमाल किया गया है कि ये दिखाये कि किस प्रकार एक जीवित कलीसिया मसीह में बनाई जाये। ये जीवते पत्थरों की है, बढ़ती हुई, आत्मिक रूप से जीवित–जो मसीह यीशु के द्वारा उद्धार के कोने के सिरे के पत्थर पर है (1 पतरस 2:4–10)। बिना इस कोने के पत्थर के कुछ और दूसरा कलीसिया के केन्द्र पर सही नहीं बना सकता।

कलीसिया के अगुवे होकर हम आज्ञाकारिता में उसके अभिप्रायों और योजनाओं में सहायता देने के लिये उसके (मसीह के) सहभागी कहलाते हैं – परमेश्वर को जीवित कलीसिया के बनाने में नये नियम की कलीसिया–मसीह की कलीसिया – उन लोगों के द्वारा बनाई गई है जो मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा उद्धार पाने के ज्ञान से उसके पास आये हैं। नये नियम में शब्द "कलीसिया/चर्च" का अर्थ संस्थागत बनावट उपाधि/पदवी, इमारत या वर्ग "कलीसिया" वे लोग हैं जिनका उद्धार हो गया है और विश्वास के द्वारा मसीह में धर्मी ठहराये गये हैं और जो चेलों को परिपक्व बना रहे हैं।

ykxk dk f'k"; cukuk o fuek.k djuk

सच्ची फलदायकता

नये नियम में "कलीसिया" के लिये दूसरे शब्द भी इस्तेमाल किये गये हैं जैसेः "जीवित पत्थर" (1 पतरस 2:5)। "मसीह की देह" (1 कुरिन्थियों 12:27)। परमेश्वर की "खेती", "इमारत" या "मन्दिर" (1 कुरिन्थियों 3:9,16,17) ये सभी शब्द सामान्य हैंः वे सब "लोगों" का सन्दर्भ देते हैं जो मसीह यीशु में सच्चे विश्वासी हैं।

ये गम्भीरता से समझना महत्वपूर्ण है। चर्च के अगुवा होकर हमें कलीसिया का प्रबन्ध/शासन करने, नई इमारतों की देखभाल करने, या कलीसिया के कार्यों को आयोजित करने से अधिक कुछ के लिये बुलाया गया है। हमें परमेश्वर के साथ सहभागी होने के लिये बुलाया गया है कि लोगों को बनायें व चेला भी बनायें।

हमें परमेश्वर के द्वारा बुलाया गया कि पासबानी करें और जीवित परमेश्वर की जीवित कलीसिया का पालन–पोषण करें और लोगों की सहायता करें कि उन्हें चेला बनने में सहायता करें। इस भन्डारीपन के कार्य को हम बिना परमेश्वर की सामर्थ और सहायता के नहीं कर सकते (देखें भजन 127:1)।

परमेश्वर हमें जिम्मेवार ठहरायेगा कि हम किस प्रकार मसीह यीशु के द्वारा उद्धार की नींव पर बनाते हैं (1 कुरिन्थियों 3:12–23)। क्या हम अपने ही प्रयासों से, शक्ति से और चालाकी से भीड़ इक्ट्ठी कर रहे हैं? ये थोड़े समय के लिये सफल तो लगेगा पर जो परमेश्वर सदा ठहरने वाला फल चाहता कभी नहीं हो सकेगा (यूहन्ना 15:5,8,16)।

या क्या हम परमेश्वर के आत्मा में अपने आपको उसकी इच्छा में समर्पित करते हैं? क्या हम उसके द्वारा अगुवाई पाये हुए हैं कि वह परमेश्वर का सच्चा पुत्र है (रोमियों 8:14)। सेवकाई के हर क्षण के लिये उस पर भरोसा करना, जो वह हमें करने देता है? यदि ऐसा है तो उसकी सामर्थ और सहायता से, हम सत्य में फल दायक हो सकते हैं और हमारा फल अनन्त के स्वाभाव का होगा। (यूहन्ना 15:16)

कृपया ये समझें कि फल और फलदायकता परमेश्वर ने इसी प्रकार से नहीं अलग की है कि मानव बुद्धि उसे बयान करें। मनुष्य कह सकते हैं कि फलदायकता बहुत से अनुयायियों का होना है या धनवान होना या प्रभावशाली होना है। मानव बुद्धि बतायेगी कि ये प्रतिष्ठा शक्ति और भाग्य है।

परन्तु सच्ची फलदायकता परमेश्वर की ओर से एक नियम के अनुसार मापी गई हैः *लोगों का जीवन मसीह के स्वरूप में बदल गया है – जैसे जैसे वे उसकी शिष्यता में परिपक्व होते जाते हैं।* सिद्धान्तों को समझना और उन पर चलना आपको ये परिभाषा के सत्य को समझने में सहायता करेगा।

उसकी समानता में पुनः बनाये गये

मानवता परमेश्वर के स्वरूप में सृजी गई थी (उत्पति 1:26,27)। ये आवश्यक नहीं कि शारीरिक स्वरूपता हो, पर एक योग्यता और समर्थता या गुंजाइश। "स्वरूपता" इस धर्मशास्त्र के संदर्भ में कारणों की क्षमता, बुद्धिमानी, भावनाएं, उत्तेजना और चुनाव करने की योग्यता है। हम उस प्रेम की समर्थता में सृजे गये, बलिदान और जो अच्छा सत्य और सही है उसकी प्रशंसा करना है।

परमेश्वर ने हमें क्यों इस तरह से बनाया? परमेश्वर ने हमें एक अभिप्राय के लिये बनायाः स्वयं अपने लिये, जिससे हम उसके साथ सम्बन्ध रखें। यही हमारी सबसे उच्च बुलाहट है! परमेश्वर को और अधिक स्वर्गदूतों की आवश्यकता नहीं या अधिक स्वर्गदूतों की इच्छा है या उनकी आवश्यकता नहीं है या वह और उन्हें अधिक बना देता। बल्कि हम पूरी बाइबल में देखते हैं कि परमेश्वर बेटे–बेटियां चाहता है जो उसके साथ करीबी, प्रेमी सम्बन्ध को उसके साथ बांटेंगे।

परन्तु परमेश्वर के साथ के सम्बन्ध का अवसर नाश हो गया जब आदम और हव्वा के आज्ञा उल्लंघन करने के द्वारा पाप संसार में प्रवेश कर गया। उनकी अनाज्ञाकारिता ने समस्त मानव जाति में पाप ला दिया (रोमियों 5:12–21)। फिर भी उस समय परमेश्वर की अद्भुत योजना

मानव के साथ पुनः छुटकारा देकर सम्बन्ध स्थापित करने की ने इस क्रिया को स्थापित किया (उत्पत्ति 3:15: "स्त्री के बीज"—वो देहधारण का संदर्भ होता है कुंवारी से परमेश्वर के पुत्र यीशु का जन्म)।

नियुक्त समय पर (गलतियों 4:4)। मसीह धरती पर आया और हमारे पापों के लिये मर गया। उसके इस त्यागपूर्ण कार्य ने सृष्टिकर्ता परमेश्वर के साथ पुनः सम्बन्ध जोड़ने के अवसर को खोल दिया। मसीह के उद्धार के कार्य को प्राप्त करने के द्वारा और उस पर विश्वास करने के द्वारा हमारे पाप क्षमा किये जा सकते हैं और हम परमेश्वर को जान सकते हैं और उसके साथ संगति कर सकते हैं।

परिवर्तन का कार्य

पर इससे ऊपर परमेश्वर भी हमें पाप के प्रभाव से और हानि जो वो हमारी करता उससे स्वतंत्र करना चाहता है। इस प्रकार हमारा सीधा उद्धार का नतीजा – परमेश्वर हमारे जीवनों में बदलाव का कार्य सीधे रूप में आरम्भ करता है – उस "स्वरूप" को जो बिगड़ गया जिसमें हम सृजे गये थे।

"क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहलौठा ठहरे" (रोमियों 8:29)। यह पद प्रगट करता है कि उनके लिये जो उद्धार में मसीह के पास आते हैं तो ये परमेश्वर की पहले ही से अभिषिक्त इच्छा है कि हमें बदलना चाहिए, जिससे *"हम उसके पुत्र के स्वरूप में बन सकें"*।

ये बदलाव का कार्य उद्धार में आरम्भ होता है और हमारे जीवन भर चलता रहता है। परमेश्वर अद्वैत–बुद्धिमान है। उसने अपने राज्य को इस प्रकार बनाया कि विशेष कारण से विशेष तरीके से कार्य करें। जैसे हम अपने असली सृष्टि के "स्वरूप" में बदल जाते हैं (उसके पुत्र के स्वरूप में) दो गम्भीर बातें होंगीः

(1) हम बिना रोक–टोक के चल सकेंगे और परमेश्वर के साथ गहरे सम्बन्ध में होंगे। ये पाप है जिसने नाश किया और अभी भी हमारे परमेश्वर के साथ के सम्बन्धों को नष्ट कर सकता है। इस प्रकार जब हम पाप से और उसके प्रभाव से स्वतंत्र है तब हमारे पास अनुभव करने की महान कुशलता है, अधिक प्रेमी और अपने सृष्टिकर्ता के साथ अत्याधिक सम्बन्ध रखने की।

2) हम परमेश्वर के चाहे हुए स्थान में पुनः स्थान पायेंगे और अपने अभिप्राय को पायेंगे। मनुष्य पाप में और उसके लिये सृजा गया है। हम पवित्रता में, शुद्धता और निष्कपटता में सृजे गये हैं। परमेश्वर की समस्त सृष्टि अच्छी थी। *"तब परमेश्व ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है"* (उत्पत्ति 1:31)।

हम त्रुटियों के साथ नहीं सृजे गये थे – पर पाप ने हमारे असली नमूने को नष्ट कर दिया। इसलिये जैसा हम पाप से स्वतंत्र कर दिये गये हैं और बदल दिये गये हैं कि आगे भी इसके प्रभाव से स्वतंत्र रहें तो नतीजा महान आनन्द, शान्ति और स्वतंत्रता के विचार का हमारे जीवनों में होगा। तब हम बेहतर तरीके से परमेश्वर की इच्छा और अभिप्राय को पूरा करने के लिये सुसज्जित होंगे।

इसलिये हम भरोसे से कह सकते हैं कि व्यक्तिगत परिवर्तन परमेश्वर की सबसे उच्च प्राथमिकता हर एक के लिये है। परिर्वतन/बदलाव को इस संदर्भ में उत्तम रीति से वर्णन किया गया है – जैसे *"मसीह यीशु की नाईं अधिक विचारों में, इच्छा में और कार्यों में"।*

पवित्र आत्मा ने परिर्वतन को समर्थ किया

जब हमारा उद्धार हो गया, हमारा पुराना जीवन समाप्त हो जाता है। हम जीवन भर के सब चीज़ों के नये हो जाने की प्रक्रिया में आ जाते हैं (2 कुरिन्थियों 5:17)। हम पवित्र आत्मा की शक्ति से बदल गये हैं और परमेश्वर के वचन में *"उसके पुत्र के स्वरूप में"* (रोमियों 8:29)।

ये अद्‌भुत बदलाव का कार्य हमारी अपनी शक्ति और प्रयासों के द्वारा, कभी पूरी नहीं हो सकती (यिर्मयाह 13:23)। हम छोटी चीज़ों में अपने को बदल सकते हैं, और साधारणतः बाहरी बातों में।

हम अपने जीवनों को अनुशासित करने और अच्छी आदतें लाने के लिये कड़ा परिश्रम कर सकते हैं।

पर इससे भी गहरा कार्य है जिसकी हमें आतुरता से जरूरत है। जैसेः टूटेपन से चंगाई और पीड़ा से, तिरस्कार से छुटकारा, और दूसरे प्रकार के बन्धनों से छुटकारा; हमारी पापमय स्वार्थी तरीकों से छुटकारा। इस प्रकार का बदलाव केवल पवित्र आत्मा की सामर्थ ही के द्वारा सम्भव है (रोमियों 8:1–11; देखें मत्ती 19:23–24; इफिसियों 2:1–10; इब्रानियों 9:13,14)।

परमेश्वर चाहता है कि हम बढ़ें मसीह यीशु उद्धारकर्ता के पास आकर परिपक्व हो जायें। उसके अनुग्रह से और क्षमा वास्तविक हैं और हमेशा रहने वाले है (1 यूहन्ना 1:9)। ये कभी भी बहाना नहीं रहा कि पापमय, स्वार्थ के व्यवहार में जारी रखते रहें। परमेश्वर ठोकर या असफलता को क्षमा करता है, पर हमें लगातार पाप में लगे नहीं रहना

चाहिये, पर इसके बदले परमेश्वर के साथ चलने में आगे बढ़ें (लूका 9:23–26)।

वे जो नहीं बदलेंगे या जो पवित्र आत्मा के बदलाव की प्रक्रिया का सामना करते हैं वे वास्तव में परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करते हैं (याकूब 1:21–25) (विद्रोहियों के प्रति परमेश्वर का न्याय कठोर है (नीतिवचन 29:1, इब्रानियों 3:8–11)।

फल जो परमेश्वर ढूंढ़ता है

सुसमाचार के फलदायक सेवक होने का मतलब है कि लोगों का जीवन जिनकी आप सेवा करते हैं वे यीशु की समानता में अधिक बदल गये हैं। ये याद रखें कि फलदायक होना आंकड़ों और भीड़ जमा करने से अधिक मतलब नहीं है। अपने चर्च में बहुत से लोगों को लाना आसान है। मुफ्त भोजन, कपड़े या पैसा दें तो आपको भीड़ मिल जायेगी! या मनोरंजन करायें उन्हें ऐसी बातें कहें, उनके कानों को गुदगुदाना (2 तीमुथियुस 4:3,4) और उन्हें अच्छा महसूस कराते।

पर एक भीड़ मंडली नहीं बनाती। अधिक लोगों का जमा होने का मतलब ये नहीं कि आपके पास नये नियम की स्वस्थ कलीसिया है या आप चेले बना रहे हैं।

हमें अपनी सेवकाई के लिये अपने आप से हमेशा ये प्रश्न पूछना चाहिये, "क्या जिन लोगों की मैं सेवा कर रहा हूं क्या वे बदलकर अधिक मसीह की तरह बन रहे हैं?" क्या आपका लक्ष्य चर्च में अधिक लोगों का है या ये है कि उन्हें सच्चे चेला बनायें जो मसीह में बढ़कर परिपक्व हों? इससे फर्क नहीं पड़ता कि वहां 10 लोग हैं या 1000 लोग आप फलदायक हैं यदि आपका झुण्ड मसीह की तरह बन रहा है।

सही प्रकार की कमजोरी

हमने ये स्थापित कर दिया है कि यीशु मसीह की समानता में बदल जाना मसीह के अनुयायियों के लिये परमेश्वर की इच्छा है। हम जानते हैं कि ये मानव प्रयासों से पूरा नहीं किया जा सकता, पर केवल

पवित्र आत्मा की उपस्थिति और सामर्थ से किया जा सकता है। इसलिये ये हमें सिखाता है कि हम किस प्रकार सेवकाई को जिसे परमेश्वर ने हमें दिया है आयोजित करें?

साधारण तरीके से रखें, हमें इसे समझना चाहियेः **ये सबूत है कि वर्तमान में पवित्र आत्मा की सामर्थ कार्य कर रही है और बिना अड़चन/दबाव के एक मानव–पात्र के द्वारा आगे बढ़ रही है जो दूसरे व्यक्ति के जीवन पर अत्याधिक प्रभाव डालेगा।**

ये एक स्पष्ट सत्य लगता है! पर कितना अक्सर हमारी अच्छे मतलब की मानव कोशिश हमारे बीच में पवित्र आत्मा का स्थान ले लेती है?

यदि हम अगुवे होकर ईमानदार हैं और अपने स्वयं पर कड़ी दृष्टि डालते हैं तो हमें मानना पड़ेगा कि **अक्सर हम ही समस्या हैं**। ये सेवकाई में हमें पहचानने में देर नहीं लगती कि हम कार्य के लिये अधूरे या पूर्ण नहीं हैं। और इस प्रकार हम कार्यक्रमों में, शिक्षा और दूसरी चीजों में जो प्रभावशाली हैं या सफल हैं उनमें व्यस्त हो जाते हैं। पर वास्तविकता ये है कि हमारे अपने पास में पूर्ण करने या प्राप्त करने की शक्ति नहीं है कि जो सब परमेश्वर चाहता है उसे कर सकें! क्या ये आप अपने लिये मान लेंगे?

अगुवे होकर, हम सब समय उत्तम होना चाहते हैं, पर हमारी मानवीय प्रयास परमेश्वर की इच्छा और अभिप्राय को पूरा करने के लिये काफी नहीं है।

ये बुरी खबर सुनाई दे सकती है। पर वास्तव में यदि हम इसे मानने को और गले लगाने को तैयार हैं – तो *हमारी अयोग्यता – अच्छे समाचार* का आरम्भ है! उसे देखो जो एक महान प्रेरित ने इसी संदर्भ में लिखाः

"इसके विषय मैंने ("शरीर में एक कांटा" पद 7) प्रभु से तीन बार बिनती की, कि मुझ से ये दूर हो जाये, और उसने मुझ से कहा, मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती

है; इसलिये मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा कि मसीह की सामर्थ मुझ पर छाया करती रहे, इस कारण, मैं मसीह के लिये निर्बलताओं, और निन्दाओं में, और दरिद्रता में और उपद्रवों में, और संकटों में प्रसन्न हूं, क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूं, ***तब ही बलवन्त होता हूं"*** (2 कुरिन्थियों 12:8–10)।

पौलुस ने हार का रवैया नहीं अपनाया न ही उसने ये सोचा कि वह परमेश्वर के द्वारा दन्डित किया गया बल्कि पौलुस ने इस प्रकाश में आनन्द किया और विजय प्राप्त करने के परमेश्वर के अनुग्रह का व्यक्तिगत अनुभव किया!

ये परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा है कि हमारे पास विजय पाने वाले का जीवन और विजय भी है (रोमियों 8:37)। पर ये पौलुस का सम्पूर्ण समर्पण था और उसकी जरूरत की खुली स्वीकृति जिसने दोनों

का रास्ता खोल दिया और पवित्र आत्मा की सामर्थ को प्राप्त किया – अपने जीवन और हमेशा के जीवन में।

पौलुस ने अपनी कमजोरी को न ढांपने की कोशिश की न छिपाने की, बल्कि अपनी "निर्बलता पर घमण्ड" किया (पद 9) और "आनन्दित हुआ" (पद 10) अपनी कठिनाइयों में क्योंकि ये वो बिन्दु हैं जिन पर पौलुस पूरी तरह परमेश्वर की सामर्थ और भरपूरी पर निर्भर था और वह इस सामर्थ का अनुभव करने योग्य था जिसने उसे बनाये रखा और इस योग्य किया! (देखें 2 कुरिन्थियों 3:1–6)।

पास्टर से पास्टर तक : पौलुस के "शरीर के कांटे" का स्वाभाव हमारे लिये अनजान है। पर हम ये जानते हैं कि ये पाप नहीं था या पौलुस के द्वारा नैतिक असफलता/परमेश्वर हमारे पापों को कभी क्षमा नहीं करेगा, पर हमें कायल करेगा और सच्चे पश्चाताप के लिये अनुशासित करेगा (नीतिवचन 3:11,12; 2 कुरिन्थियों 7:9,10; 1 यूहन्ना 1:9)। परमेश्वर से कुछ भी छिपा नहीं है। यद्यपि उसका अनुग्रह व्यक्ति को मन फिराव का अवसर प्रदान करेगा – जब हम पाप को छिपाने का प्रयत्न करते हैं तो उसे बेवकूफ नहीं बना सकते – हमारा पाप अन्त में खुल जायेगा (गिनती 32:23; गलातियों 6:7; 1 तीमुथियुस 5:24)।

विनम्रों को परमेश्वर इस्तेमाल करता है

इस शिक्षा का अभिप्राय है आइये अपनी कमजोरी को बतायें:

- परमेश्वर की इच्छा को अपने आप पूरा करने में अपनी असमर्थता को पहचानें;
- अपने हृदय और पूरी तरह पवित्र आत्मा की सामर्थ पर निर्भर हों।
- पवित्र आत्मा को अपने में कार्य करने दें – अनन्त मूल्य सेवकाई में पूरा करने के लिये – बदला हुआ जीवन – हमारी नहीं पर उसकी शक्ति के द्वारा।

कलीसिया के अगुवे अक्सर सेवकाई में "सफलता" के लिये बड़ा दबाव महसूस करते हैं। दुर्भाग्यवश, हमारा सफलता का विचार अक्सर संसार के स्तर पर देखा जाता है या अपने गर्व के अनुसार। हम दूसरों की नज़र में महत्वपूर्ण होना चाहते हैं। हम परमेश्वर के राज्य में "महान" होना चाहते हैं जिससे परमेश्वर हमें बड़े रूप से इस्तेमाल करें!

पर वास्तविकता ये है और हमेशा रही है कि "कोई भी परमेश्वर का महान व्यक्ति नहीं है" – केवल नम्र लोगों को परमेश्वर ने महान रूप में इस्तेमाल किया है! (देखें मत्ती 20:20–28)

फिर सच्चाई में फलदायक सेवकाई का कुंजी का (मुख्य) अंश है। ***पवित्र आत्मा की उपस्थिति व कार्य!*** परमेश्वर उन लोगों के विरोध में नहीं है जिनके पास शिक्षा, संस्था चलाने का वरदान या योग्यताएं हैं, पर इनमें से कोई भी पूरे नहीं हैं कि सेवकाई में पवित्र आत्मा के अभिषेक का विकल्प बन सकें।

परमेश्वर हमारी योग्यताओं और वरदानों को हमारी क्षमता को बढ़ाने के लिये इस्तेमाल कर सकता है। पर उसने बिल्कुल स्पष्ट अपने वचन में कर दिया है कि *"बिना मेरे तुम कुछ नहीं कर सकते"* (यूहन्ना 15:5)। *"ये ना बल से न शक्ति से पर मेरे आत्मा के द्वारा, सेनाओं का यहोवा का यही वचन है"* (जकर्याह 4:6)।

परमेश्वर जानता है कि हमारी जरूरत क्या है और पहले ही हमें देने के लिये उपलब्ध करा दिया है। जैसा हम सेवकाई की बुलाहट को पूरा करने के लिये फलदायक बनाना चाहते उसके लिये पवित्र आत्मा का अभिषेक उपलब्ध है।

इसलिये, आइये हम दोनों अध्ययन करें कि ठोस बाइबल की समझ और पवित्र आत्मा का अभिषेक जान सकें।

ये अध्ययन खोजेगा: 1) अभिषेक का वर्णन, यह कैसे है क्या और कैसे है; 2) वर्णन करें कि अभिषेक किस प्रकार कार्य करता है और सेवक के जीवन के द्वारा और; 3) प्रगट करेगा कि किस प्रकार हम अभिषेक प्राप्त कर सकते और उसमें बढ़ सकते हैं। 📖

पवित्र आत्मा का अभिषेक

भाग I

अभिषेक का ऐतिहासिक एवं बाइबल आधारित पृष्ठभूमि

क. पुराने नियम में अभिषेक

पुराने नियम को पूरी तरह समझने के लिये हमें नये नियम को इस्तेमाल करना चाहिये। नया नियम एक "लैंस" की तरह है जो अक्सर ध्यान केन्द्रित करने में सहायता करता है और "पुरानी वाचा" को स्पष्ट करता है (नियम को) धर्मशास्त्र को।

नया नियम वर्णन करता है कि पुराना नियम (पुरानी वाचा या पुराना सुलहनामा) व्यवस्था परमेश्वर का वचन है (मत्ती 5:17,18; 2 पतरस 1:20,21) फिर भी हम अभी नई वाचा के आधीन जीते हैं ("नियम सुलहनामा") अनुग्रह का और उद्धार जो मसीह यीशु पर विश्वास के द्वारा है। हम अब पुरानी वाचा के आधीन नहीं जीते और हम अपने कामों के द्वारा उद्धार नहीं प्राप्त कर सकते (गलातियों 3:21–25)।

नई वाचा पुरानी वाचा से ऊपर हो गई है (उसे पीछे छोड़ दिया है) (देखिये इब्रानियों 7–8 अध्याय)। ये नई वाचा पुरानी वाचा की पूर्वी करती है। (मत्ती 5:17,18; लूका 24:25–27) और "नया और जीने का मार्ग" स्थापित करता है (इब्रानियों 10:20) मनुष्य का परमेश्वर के साथ सम्बन्ध का आधार है।

फिर भी पुराने नियम (धर्मशास्त्र) अभी भी परमेश्वर के अनन्त वचन का हिस्सा हैं (यशायाह 40:8)। जब हम पुरानी वाचा का अध्ययन करते हैं हम अभी भी बहुत से महत्वपूर्ण सिद्धान्तों को सीख सकते हैं जो हमारे जीवनों में नई वाचा के आधीन लागू किये जा सकते हैं।

पौलुस ने कुरिन्थियों को लिखने में (1 कुरिन्थियों 10:1–13) बयान करता है कि इतिहास, घटनाएं, अध्ययनों को जो पुराने नियम में रिकार्ड किये गये हैं उनका अध्ययन करना चाहिये, समझना चाहिये और जीवनों में इस्तेमाल नये विश्वासियों की तरह करना चाहिये। *"अब ये चीज़ें हमारे लिये आदर्श बन गई हैं"* (1 कुरिन्थियों 10:6)।

इस प्रकार हम *पवित्र आत्मा के अभिषेक* के आन्तरिक मूल्य को पा सकेंगे यह अब नये नियम के विश्वासियों के लिये उपलब्ध है तस्वीरों का अध्ययन करके या उन "प्रकारों" को जो पुराने नियम में अभिषेक के लिये पहले से दिखाये गये हैं।

1. शब्द "अभिषेक" का स्रोत/उद्गम

पुराने नियम में शब्द अभिषेक के लिये इब्रानी भाषा में "मसाह" शब्द आया है और 69 बार उपयोग किया गया है। इस शब्द का मतलब है तेल का उंडेल कर इस्तेमाल करना, फैलाना या वस्तु के ऊपर लगाना या व्यक्ति का अभिषेक करना।

बहुत सी संस्कृतियों में अभिषेक करना आम बात थी और मध्य–पूर्व के प्राचीन लोगों के बीच। ये विधि साधारण और धार्मिक रूप में की जाती थी। उदाहरण के लिये मेहमानों की मेहमाननवाज़ी के लिये अभिषेक किया जाता था–यहां तक कि यीशु के समय भी ये प्रथा जारी थी (भजन 23:5; लूका 7:46; यूहन्ना 12:3)।

इस्राएली लोगों के लिये पुराने नियम में अभिषेक की प्रथा बहुत ही उच्च मानी जाती थी। हम इस अभिषेक का आमना–सामना पहली बार करते हैं जब याकूब की प्रथम भेंट परमेश्वर के साथ हुई। याकूब ने पत्थर का अभिषेक किया जिस पर वह सिर रखकर सोया था और जब उसने स्वप्न देखा (उत्पत्ति 28:10–18)।

बाद में वह तेल, वेदी और दूसरी चीज़ों के लिये इस्तेमाल परमेश्वर के तम्बू में किया गया (निर्गमन 30:26–29; लैव्यव्यवस्था 8:10,11), याजकों का भी अभिषेक तेल के द्वारा किया गया (निर्गमन 28:41; 30:30; लैव्यव्यवस्था 8:12)। याजकों के अभिषेक के लिये मेम्ने का लहू भी इस्तेमाल किया जाता था (जिसे इस लेख में हम बाद में अध्ययन करेंगे जब हम पुराने नियम के अभिषेक का अध्ययन करेंगे)।

ये अभिषेक की प्रथा राजाओं के लिये भी बनाई गई (1 शमूएल 9:16; 15:1; 16:3, 12) और अवसर पर भविष्यद्वक्ताओं के लिये (1 राजा 19:16)।

पुराने नियम में अभिषेक तीन अभिप्रायों के लिये किया जाता था। पहला, "अर्पित या समर्पित" करने के लिये इस्तेमाल किया जाता था: पवित्र उपयोग के लिये अलग किया जाना–बहुत सी शारीरिक वस्तुओं को इनमें आराधना के लिये चीज़ों के इस्तेमाल को शामिल किया गया है (चीज़ें तो तम्बू में आराधना के लिये इस्तेमाल की जाती थीं – निर्गमन 30:26–29)।

दूसरा – मनुष्यों द्वारा अभिषेक के कार्य को समझा जाता कि ये परमेश्वर की ओर से है इसका स्पष्ट उदाहरण है जब शमूएल ने शाऊल और दाऊद का अभिषेक किया कि वे इस्राएल पर राजा की नाईं सेवा करें (1 शमूएल 10:1; 16:12,13; 2 शमूएल 12:7) इस अभिषेक ने परमेश्वर के प्रतिनिधित्व को बताया (चुनाव को) और उस बुलाहट को कि वह परमेश्वर का सेवक बने (नियुक्त हो)।

तीसरा : ये अभिषेक कुछ मामलों में था – जो दैवीय योग्यता के साथ था। ये परमेश्वर की ओर से था और सीधे जो काम परमेश्वर ने दिया उसे पूरा करने के लिये उस व्यक्ति के लिये था जिसका अभिषेक किया गया है (देखें 1 शमूएल 16:1–13; 2 राजा 2:9–15)।

2. शब्द "मसायाह" का स्रोत/मूल

मुख्य शब्द "मसाह" से लिया गया जो इब्रानी शब्द है। इस शब्द का अनुवाद "मसीहा" से किया गया है जिसका अर्थ है "अभिषिक्त किया

हुआ"। इसे पुराने नियम में 39 बार इस्तेमाल किया गया है। स्पष्ट इस्तेमाल इसे मसीही के लिये किया गया है–परमेश्वर का पुत्र यीशु (यशायाह 9:7; 11:1–5) (यशायाह 53 अध्याय) पर इसे इस्राएल के राजा के प्रति भी सम्बोधित किया गया है 1 और 2 शमूएल और भजन – ये दाऊद की वंशावली का वर्णन करने के लिये किया गया है (भजन 2:2;18:50, 84:9 आदि)।

ख. नये नियम में अभिषेक

नये नियम में शब्द "अभिषेक" के लिये तीन भिन्न शब्दों का इस्तेमाल किया गया है – ये तीनों शब्द अलग अलग अभिषेक के लिये इस्तेमाल किये गये हैं।

1. एलीफो (8 बार इस्तेमाल किया गया): वास्तविक रूप से शरीर पर तेल या मलहम लगाना (देखें मरकुस 6:13; लूका 7:38, 46; याकूब 5:14)। याकूब 5:14 में स्वास्थ का अभिप्राय नहीं था पर ये चिन्ह के रूप में था–दोनों पवित्र आत्मा की उपस्थिति के लिये, साथ ही बीमार व्यक्ति के विश्वास के द्वारा परमेश्वर की चंगाई का।

ये नोट करना चाहिये, कि मेडीकल सहायता लेना गलत नहीं है। परमेश्वर ने चीज़ों को रचा जिससे दवाइयां बनाई गईं और डॉक्टरों के लिये बुद्धि जिससे वे सही इस्तेमाल कर सकें। फिर भी मसीहियों को विश्वास में जीवन के सभी निर्णयों में जीना चाहिये। जब कुछ और काम नहीं करता तो प्रार्थना को अंतिम विकल्प न समझें। जब बीमारी होती है या चोट लगती है, पहले चंगाई के लिये परमेश्वर को खोजो। यदि परमेश्वर आश्चर्यजनक रूप से चंगा करता है तो उसके नाम की प्रशंसा करो! यदि परमेश्वर दवाइयों का उपयोग चुनता है और कि डॉक्टर चंगा करें–तब भी उसके नाम की प्रशंसा करो–अपनी अन्तिम चंगाई के लिये और अन्तिम घर उसकी उपस्थिति में है जब हम आमने सामने एक दूसरे के चेहरे को देखेंगे (1 थिस्सलुनीकियों 4:16–18) हमारा परमेश्वर भरोसेमन्द और विश्वासयोग्य है!

2. क्रियो: (पांच बार इस्तेमाल हुआ है) ये विशेष प्रकार की

नियुक्ति का संकेत करता है या परमेश्वर के द्वारा विशेष आदेश जो व्यक्ति को दिये गये कार्य के लिये अलग करता है (देखें लूका 4:18; प्रेरित 10:38; 2 कुरिन्थियों 1:21; इब्रानियों 1:9)।

3. क्रिसमा (तीन बार इस्तेमाल किया गया) पवित्र आत्मा के द्वारा समर्थ किया गया कि जानें कि सही और सच क्या है; पवित्र आत्मा की सामर्थ परमेश्वर के वचन के साथ विश्वासी के हृदय में कार्य करती है।

दोनों 1 यूहन्ना 2:20 और 2:27 पवित्र आत्मा की सेवकाई का संदर्भ देता है जो मसीह के पीछे चलने वालों के हृदयों में सत्य को प्रगट करता है (यूहन्ना 14:16, 17, 26; 1 कुरिन्थियों 2:10–16; इफिसियों 1:17,18 भी देखें)।

प्रेरित यूहन्ना इस पत्र को लिख रहा था (1 यूहन्ना) कुछ लोगों के झुण्ड का सामना करने के लिये जो ये दावा करते हैं कि उनके पास परमेश्वर का विशेष ज्ञान है। ये झूठे शिक्षक मना करते हैं। नहीं मानते कि "परमेश्वर का पुत्र" शरीर में होकर आया (देहधारण किया) (1 यूहन्ना 2:18–23)। उन्होंने दावा किया कि केवल उनको ही परमेश्वर का सच्चा ज्ञान है और सबको उनके पीछे हो लेना चाहिये।

पर यूहन्ना ने मसीहियों को पुनः आश्वस्त किया कि ये दूसरे शैतान के प्रभाव में मसीह की विरोधी आत्मा से कार्य कर रहे हैं (पद 18)। यूहन्ना इन झूठे शिक्षकों का सामना विश्वासियों को ये याद दिलाकर बता रहा है कि उन्होंने पहले ही पवित्र आत्मा पा लिया है और जानते हैं कि सत्य क्या है (पद 20) वह यह भी स्पष्ट करता है कि ये पवित्र आत्मा ही है जो "तुमको सब बातें सिखा रहा है" (पद 27)।

यूहन्ना शिक्षा की सेवा को ना कम कर रहा है ना अनुचित बता रहा है (देखें रोमियों 12:7 और इफिसियों 4:11) बल्कि यूहन्ना पवित्र आत्मा की सेवकाई को प्रगट कर रहा है जो हमें परमेश्वर के वचन में सत्य को समझने में सहायता करता है (यूहन्ना 16:13)।

अभिषिक्त किया हुआ

हमने ये सीखा है कि "मसीहा" का मतलब "अभिषिक्त किया हुआ"। नये नियम का सुसमाचार कोई शंका नहीं रख छोड़ता कि नासरत का यीशु ही "मसीहा" है – अभिषिक्त किया हुआ! यीशु का अभिषेक विशेष कार्य/अभिप्राय के लिये किया गया था।

नये नियम की मूल यूनानी भाषा में यीशु को "मसीह" कहा गया है या "मसीह यीशु"। यीशु एक नाम है – पर मसीह शब्द एक पदवी है जिसका अर्थ है "अभिषिक्त" किया हुआ। पूरा नया नियम स्पष्ट रूप से यीशु को प्रगट करती है कि यीशु ही अभिषिक्त किया हुआ है (यूहन्ना 1:41; 4:25,26)।

यहूदी लोग "मसीह" की बाट जोह रहे थे (इब्रानी अभिषिक्त की) दाऊद के वंश का राजा, जो इस्राएल को पुनः स्थापित करेगा जैसा राजा सुलैमान के जमाने में था। इसी कारण से बहुत से यहूदियों ने यीशु का तिरस्कार किया। वह उनकी गलत–विचारों की धारा में सही नहीं बैठा कि यही वायदा किया हुआ मसीह है (मत्ती 11:–19; यूहन्ना 6:26–29)।

यहूदियों ने ये नहीं देखा कि परमेश्वर की अधिक बड़ी योजना है जो उनसे ऊपर फैलाई/बनाई गई (यशायाह 42:5–9; 49:5,6; प्रेरित 4:8–12, 13:44–49)। परमेश्वर ने उन्हें इससे भी अधिक कुछ दिया – न केवल संसार का एक राजा। उसने संसार को राजाओं का राजा दिया, सबके लिये एक सच्चा उद्धारकर्ता, समस्त अनन्त के लिये यीशु मसीह, सारी महिमा उसके नाम को मिले!

समापन

पुराने नियम का अभिषेक महान रीति रिवाज़ का चिन्ह था। शारीरिक चीज़ों का अभिषेक, याजकों, भविष्यद्वक्ताओं का और राजाओं को परमेश्वर के अभिप्राय में समर्पित करना था। फिर भी हमें ये नोट करना चाहिये कि ये अभिषेक परमेश्वर की नई वाचा में पूर्वी करने का पूर्व चिन्ह था।

नई वाचा के आधीन, मनुष्य और परमेश्वर के बीच सम्बन्धों के लिये एक जीवित तरीका होना था। जिसका प्रथम संकेत यीशु का भेजा जाना था (यूहन्ना 7:28, 29) परमेश्वर का पुत्र, अभिषिक्त किया हुआ जो परमेश्वर के अभिप्राय और कार्य को पूरा करेगा (यूहन्ना 3:14–17)। यीशु ने इसे हमारे पापों के लिये क्रूस पर मरकर पूरा किया, इस प्रकार उद्धार का द्वार खोला – उन सबके लिये जो उस पर विश्वास करेंगे। (रोमियों 12:9–13; इफिसियों 2:1–10; इब्रानियों 7:11–25; 9:11–15)।

परमेश्वर के उद्धार की योजना का हिस्सा मानव के लिये ये था कि जो उसके पुत्र पर विश्वास करेंगे उन्हें ईश्वरीय सहायता उपलब्ध कराना। विश्वासियों को सब प्रकार की सहायता मिलेगी और परमेश्वर की इच्छा पूर्ण करने के लिये वे शक्ति प्राप्त करेंगे।

इस प्रकार यीशु ने जिस कार्य के लिये उन्हें धरती पर भेजा गया था पूर्ण कर लिया (यूहन्ना 17:4; 19:30)। उसने वायदा किया कि वह एक "सहायक" भेजेगा (यूहन्ना 7:37–39; 15:26; 16:5–15)। वह सहायक (शान्ति देने वाला) पवित्र आत्मा है– परमेश्वर आत्मा।

जो पुराने नियम में पहले बताया गया था जैसे तेल का उंडेला जाना अब वह विश्वासियों के लिये पूर्ण वास्तविकता मसीह यीशु में नये नियम में हैं (नई वाचा) यह पेन्तिकोस्त के दिन आरम्भ हुआ जब परमेश्वर ने अपना आत्मा उंडेला (योएल 2:28–32; लूका 24:49; प्रेरित 2:1–39)। 📖

पवित्र आत्मा का अभिषेक

भाग II

अभिषेक का स्वाभाव, अभिप्राय और कार्य

क. अभिषेक का स्वाभाव

अभिषेक के विषय पर बहुत अधिक उलझने हैं, आवाज़ की कमी के कारण – बाइबल आधारित शिक्षा और विषय के अध्ययन पर। इस हिस्से में हम अभिषेक का वर्णन करेंगे जैसा हमें धर्मशास्त्र के द्वारा प्रगट किया गया है।

इस हिस्से में बाद में हम बतायेंगे कि वास्तव में अभिषेक है क्या, पर अभी के लिये ये देखें कि अभिषेक क्या नहीं है।

1. वह जो अभिषेक नहीं है

क. अभिषेक व्यक्तित्वहीन ताकत या रहस्यवादी शक्ति नहीं है। अभिषेक बिजली की तरह नहीं है (बिना जीवन के ताकत) ना ही ये कुछ जादू की शक्ति है। शिमौन जादूगर (प्रेरित 8:9–25)। किसी प्रकार की शक्ति थी (शैतानी) पर शीघ्र ही उसने पहचान लिया कि वह क्या था जो प्रेरितों के अन्दर शक्ति थी उसकी तुलना में कुछ नहीं थी। परमेश्वर का अभिषेक अद्वितीय और आत्मिक है।

ख. अभिषेक – जैसा धर्मशास्त्र में वर्णन है, यह साधारण भावनात्मकवाद नहीं है जो मज़बूत व्यक्तित्व दिखाता है या

विशेष प्रकार का प्रचार। परमेश्वर अवश्य अक्सर हमारी भावनाओं को छूता है – जब हम उसके अभिषेक की सामर्थ में चलते हैं। पर केवल मज़बूत भावना दिखाने का मतलब ये नहीं कि परमेश्वर के अभिषेक की उपस्थिति है। जब लोग अतिथि – सत्कार करते या कोई खेल का प्रदर्शन करते उस समय मज़बूत भावनाएं दिखा सकते हैं। पर हां! इसका अर्थ ये नहीं है कि परमेश्वर का अभिषेक उपस्थित है।

कुछ लोग सोचते हैं कि प्रचारक जब जोर से बोलता है या उत्तेजित हो जाता है या कूदता है तो वह अभिषिक्त है। पर सच्चा अभिषेक जो परमेश्वर की ओर से है वह इस प्रकार शारीरिक कार्यों के द्वारा बाहरी रूप से दिखाता नहीं है।

इसी प्रकार से परमेश्वर के अभिषेक की उपस्थिति को "खरीदा" नहीं जा सकता या शिक्षा, ज्ञान या संस्था के द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता। ना ही ये महान स्वाभाविक वरदान हैं या योग्यताएं–परमेश्वर के अभिषेक के चिन्ह हैं। हमारे स्वाभाविक वरदान, मानव वरदान परमेश्वर का दान है, यहां तक कि अविश्वासी व्यक्ति भी पा सकता है और उन वरदानों/योग्यताओं को इस्तेमाल कर सकता है। वरदानों और योग्यताओं का होना अभिषेक, गलती से नहीं समझना चाहिये।

ये सच है कि परमेश्वर हमारी योग्यताओं को अपने अभिषेक से समर्थ कर सकता है – उस शक्ति से ऊपर जो हम अपनी स्वयं की शक्ति से पूर्ण कर सकते हैं, जैसा उसने सुलैमान के साथ किया (1 राजा 4:29–34) पर हमारी योग्यताएं एवं दान कभी भी परमेश्वर की निर्भरता उसके दैवीय अभिप्राय का विकल्प नहीं हो सकते।

परमेश्वर की ओर से अभिषेक अद्वैत एवं ईश्वरीय है, और उसकी योग्यता और सामर्थ शामिल होती है!

ग. अभिषेक उद्धार नहीं है। हर एक व्यक्ति जिसने अपने पापों से पश्चाताप कर लिया है और उद्धार के लिये मसीह की ओर मुड़ गया है उसके पास पवित्र आत्मा है! पर ये पवित्र आत्मा का अभिषेक नहीं है।

आइये उद्धार में पवित्र आत्मा के कार्य को देखें:

- व्यक्ति नया जन्म केवल पवित्र आत्मा के कार्यों और सामर्थ से पा सकता है (यूहन्ना 3:3–8; रोमियों 8:9,16)।
- व्यक्ति – उद्धार में मसीह के संसार की देह में अद्वैत रूप से जुड़ जाता है, मसीह की देह उन सबके लिये है जो विश्वास के द्वारा उसके उद्धार में आते हैं (1 कुरिन्थियों 12:13)।

- उद्धार में एक व्यक्ति पर पवित्र आत्मा के द्वारा "छाप" लगा दी जाती है (2 कुरिन्थियों 1:22, 5:5, इफिसियों 1:13,14)। "छाप" लगाने के लिये यूनानी शब्द "ऐराबोन है जिसका अर्थ है "गारन्टी" या "पैसा अदा कर देना"। पर उन साधारण परिभाषाओं से ऊपर इसका गहरा अर्थ है। पहला, "छाप" लग जाने का मतलब है इस प्रकार का चिन्ह लग जाना कि हम परमेश्वर के हैं। ये जीवित चिन्ह है कि हमारे लिये जो कीमत अदा की गई उसे परमेश्वर ने स्वीकार कर लिया है। कीमत परमेश्वर के पुत्र के बलिदान का लहू है जो हमारे पापों के लिये दिया गया (इफिसियों 1:7),

दूसरा, जब हम उद्धार के लिये विश्वास से मसीह के पास आते हैं (रोमियों 10:9,10) तो हमें परमेश्वर के प्रथम "किश्त" में पवित्र आत्मा दिया जाता है "जमा" के लिये। ये परमेश्वर का निवेश गारन्टी है (या वायदा) कि हम प्रतिदिन जीवन में आनन्द, आशीष और पवित्र आत्मा की सामर्थ में बढ़ सकते हैं उस दिन तक जब तक कि परमेश्वर हमें स्वयं स्वर्ग में स्वीकार न कर लें! (फिलिप्पियों 1:6, 2 पतरस 1:5–11)।

पवित्र आत्मा की सेवकाई और कार्य हमारे द्वारा और हमारे अन्दर उद्धार से आरम्भ होता है। जब पहले हमारा उद्धार हो गया तो हम क्या प्राप्त करते हैं वह परिपक्व होने की प्रक्रिया का पहला कदम है। परमेश्वर की इच्छा सब विश्वासियों के लिये ये है कि वे एक परिपक्व चेले बनें उसके पुत्र/पुत्रियों के समान। इसमें लगातार समर्पण की आवश्यकता होती है – हमारे व्यक्तिगत बढ़ौतरी और परिवर्तन होने में ये एक हिस्सा है। हमें अपने आपको प्रतिदिन पवित्र आत्मा के कार्य के लिये दे देना चाहिए, जैसा वह हमें कायल करता, अनुशासित करता, हमें प्रोत्साहित करता और समर्थ बनाता है।

पास्टर से पास्टर तक : एक कलीसिया का अगुवा वा पास्टर होकर आपको इसलिये बुलाया गया कि आप बाकी झुण्ड के लिये आदर्श बनें, उस समर्पण में जो परमेश्वर की चीज़ों में बढ़ना है। ये सोचना एक परीक्षा है कि एक अगुवा होकर हमें मसीह में व्यक्तिगत रूप से बढ़ने की प्राथमिकता नहीं है। पर इसका विपरीत सच है (देखो 1 पतरस 5:2,3)।

इसलिये कि हम अगुवे हैं। हमें यीशु के वचनों को पूरी तरह नमूना होना चाहियेः "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आप का इंकार करें और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाये और मेरे पीछे हो ले" (लूका 9:23)। उद्धार के समय हर एक विश्वासी को पवित्र आत्मा दिया गया है, आइये अपने आपको सौंप दें तब उसके कार्य और अपने प्रतिदिन के प्रभाव में।

घ. अभिषेक पवित्र आत्मा के बपतिस्में की तरह नहीं है। बपतिस्मा एक अनोखा अनुभव है जो मसीह में सभी विश्वासियों को उपलब्ध है (मत्ती 3:11)। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा ऐसा नहीं जैसे पवित्र आत्मा उद्धार के समय विश्वासी में रहने को आता है।

पवित्र आत्मा के वरदान की भविष्यवाणी योएल भविष्यद्वक्ता ने 800 साल पहले ही कर दिया था और इसकी पूर्ति पेन्तिकोस्त के दिन ये वरदान उंडेला गया (प्रेरित 2:1–39; योएल 2:28–32)।

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा इस प्रकार बनाया गया है कि मसीह के पीछे चलने वाला हर विश्वासी अधिक उपयोगी और स्वामी के कार्य के लिये सामर्थ से भरा हुआ हो! ये विश्वासी को मसीह में अगुवाई करेगाः–

- आत्माओं के लिये गहरी चिन्ता/भावनाएं
- प्रार्थना में और उसके लिये महान शक्ति;
- मसीह और उसकी देह के लिये गहरा प्रेम
- आत्मिक युद्ध के लिये सुसज्जित करना
- परमेश्वर के वचन में आंतरिक रूप से बढ़ना

उद्धार के समय सारे विश्वासी बास करने के लिये पवित्र आत्मा का वरदान प्राप्त करते हैं (यूहन्ना 3:5,6; रोमियों 8:15,16) पवित्र आत्मा का बपतिस्मा अन्दर की भरपूरी के लिये है और परमेश्वर का आत्मा उमड़ता है। ये बपतिस्मा आपको अधिक उद्धार या मुफ्त नहीं बनाता या परमेश्वर का अधिक प्रिय नहीं बनाता। पर ये आपको अधिक प्रभावशाली और मसीह के विजयी जीवन में जीने के लिये बेहतर बनाता है।

यदि आपने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पा लिया है तो याद करें कि ये एक समय का अनुभव नहीं है कि उसे पायें बल्कि ये जीवन शैली है जिसे बनाये रखना है। हमें लगातार भरते रहना है (देखें भाग 3 ग.1., "भरपूर जो जाओ", इस विषय पर अधिक जानने के लिये)।

पास्टर से पास्टर तक : जब पवित्र आत्मा का अध्ययन कर रहे हैं तो संसार में दूसरी आत्माओं की उपस्थिति के बारे में कुछ कहना चाहियेः–

1) शैतानी आत्माएं

आज संसार में शैतानी आत्माओं की उपस्थिति है। उनके स्वयं दिये गये कार्य समस्त मानवता को भटकाना है (प्रकाशित वाक्य 12:7–9) और उस सत्य को अन्धा करना है कि यीशु कौन है (2 कुरिन्थियों 4:4; 1 यूहन्ना 2:22, 4:1–3) शैतानी राज्य प्रारम्भिक रूप से झूठे धर्मों के द्वारा कार्य करता है। वे "धोखे" को अपना सबसे बड़ा हथियार करके इस्तेमाल करते हैं, शैतान के साथ कार्य करते जो "झूठा और झूठ का पिता है" (यूहन्ना 8:44)।

शैतान की आत्माओं का अविश्वासियों पर बहुत असर होता है (2 कुरिन्थियों 4:3,4) पर वे मसीह के सच्चे विश्वासियों पर भी निशाना साधते हैं, जिनके द्वारा महिमामय सुसमाचार प्रचार किया जाता है (इफिसियों 6:10–12; 2 कुरिन्थियों 10:3–5; 11:3)। शैतानी राज्य पाप के जैसा मसीहियों के ऊपर को शक्ति नहीं है। जब तक कि एक मसीही उनकी योजना या परीक्षा में उनका सहयोग करने को नहीं चुनता।

शैतान मानव पात्रों को इस्तेमाल करेगा (भले की वे जो अपने आपको मसीही होने का दावा करते हैं) कि लोगों को भटका दें (मत्ती 24:24, 2 कुरिन्थियों 11:13–15, 2 पतरस अध्याय 2) शैतान समय पर आधा सत्य भी बोलेगा (मत्ती 4:1–11; मरकुस 5:1–8; प्रेरित 16:16–19) पर कभी भी परमेश्वर की महिमा नहीं करेगा या उसकी इच्छा पूरी करेगा।

शैतानी आत्माएं जानती हैं कि परमेश्वर वास्तविकता में है और सत्य है: *"आप विश्वास करते हो कि एक परमेश्वर है आप अच्छा करते हो, दुष्ट आत्माएं भी विश्वास करती हैं – और कांपती हैं"* (याकूब 2:19) पर दुष्ट आत्माएं पश्चाताप नहीं कर सकती। वे मानवता को धोखा देने के लिये कड़ा परिश्रम करती हैं, क्योंकि

वे जानती है कि उन पर न्याय आने वाला है (प्रकाशितवाक्य 12:12)।

2) मानव आत्माएं

हर एक मानव जो गर्भ में आया उनके पास आत्मा होती है। मनुष्य को तीन चीजों से बनाया गया हैः (1) देह, (2) प्राण (3) आत्मा (1 थिस्सलुनीकियों 5:23; इब्रानियों 4:12) हमारी आत्मा फिर भी हमारे अन्दर मृतक है और हमें विश्वास के द्वारा आत्मिक रूप से जीवित बनाया गया है (इफिसियों 2:1–8)।

बाइबल ये सिखाती है कि एक बार मानव शारीरिक रूप से मर गया, तो उनकी आत्मा उनकी देह को छोड़ देती है। वे जो मसीह में हैं वे मसीह के साथ उपस्थित रहते हैं (2 कुरिन्थियों 5:6,8)। वे जो बिना मसीह के मरते हैं वे न्याय के लिये ठहरते हैं (इब्रानियों 9:27; प्रकाशितवाक्य 20:11–15) मृतक मानवों को आत्माओं को धरती पर घूमने–फिरने की अनुमति नहीं है। ना ही वे पुर्नजन्म ले सकती हैं या कोई और रूप ले सकती हैं। हर एक व्यक्ति के पास एक जीवन है तब उसके बाद न्याय (इब्रानियों 9:27)।

बहुत से धर्म हैं जो विभिन्न प्रकार की आत्माओं की आराधना करते हैं। उनमें कुछ मानते हैं कि वे प्राचीन लोगों की आत्माओं की आराधना करते हैं। उनमें कुछ मानते हैं कि वे प्राचीन लोगों की आत्माओं से वार्तालाप कर सकते हैं या मृतकों की आत्माओं से बात कर सकते हैं। पर ये लोग मृतक लोगों से बातें नहीं कर रहे, पर वास्तव में ये दुष्टात्माओं से बातें कर रहे हैं–ये मृतक लोगों की आत्माएं हैं।

इस प्रकार की बातों से धोखा न खायें। बाइबल ये सिखाती है कि शैतान और उसकी दुष्ट आत्माएं "ज्योतिर्मय स्वर्गदूतों" की नाईं दिखाई दे सकती है और कई ईश्वरीय नज़र आ सकती है (2 कुरिन्थियों 11:14)। यदि ये इसे प्राप्त कर सकते हैं तो उनके लिये आवाज़ बदलना कोई कठिन काम नहीं है या मृतक व्यक्ति

के इतिहास को जाने। मृतक लोगों से बातें करने का प्रयास न करें या किसी भी रीति–रिवाज़ या आयोजनों में भाग न लें जो इनकी उपासना करने या प्राचीनों से प्रार्थना करने या दूसरे मृतक लोगों से बातें करने का प्रयास करते हैं। यदि आप ऐसा करते हो तो आप शैतानी आदान प्रदान को आमंत्रित कर रहे हो!

3) पवित्र आत्मा

पवित्र आत्मा परमेश्वर का आत्मा है और केवल वही आत्मा इस योग्य है जिसे पवित्र कहा जा सकता है (रोमियों 1:4)। पवित्र आत्मा पूरे तौर से परमेश्वर है जैसा पिता परमेश्वर है और यीशु परमेश्वर है (मत्ती 28:19; 2 कुरिन्थियों 13:14) पवित्र आत्मा को धर्मशास्त्र में वर्णन किया गया है:

- वह परमेश्वर कहलाता है (यूहन्ना 4:24; प्रेरित 5:3,4; 1 कुरिन्थियों 3:16, 2 कुरिन्थियों 3:17)।
- वह अनन्त है (इब्रानियों 9:14)।
- वह सर्वज्ञानी है (सब जानता है) यूहन्ना 14:26; 1 कुरिन्थियों 2:10)।
- वह सब जगह उपस्थित है (भजन 139:7)।
- वह सर्वशक्तिमान है (लूका 1:35; सृष्टि के समय उत्पत्ति 1:2)।
- उसे सम्पूर्ण ज्ञान है (प्रेरित 1:16; 11:27,28)।
- उसके पास प्रेम है (रोमियों 15:30)।
- उसने धर्मशास्त्र की प्रेरणा दी (2 पतरस 1:21; 2 तीमुथियुस 3:16)।
- वह दैवीय अगुवाई का एजेन्ट (मरकुस 13:11; रोमियों 8:14)
- वह व्यक्ति है, जैसे पिता और यीशु व्यक्ति है (यूहन्ना 14:16,17,26) वह उदास भी हो सकता है (इफिसियों 4:30)।

पवित्र आत्मा व्यक्ति का अध्ययन बहुत विशाल है – इस लेख में थोड़ा ही वर्णन किया गया है – फिर भी पुराना और नया ये

प्रगट करते हैं कि पवित्र आत्मा वास्तविक है और परमेश्वर है – उसका पिता और पुत्र के साथ सहभागिता है – और वह त्रिएकता का तीसरा व्यक्ति है।

ड. अभिषेक शुद्धिकरण के समान नहीं है। आइये, शुद्धिकरण को बेहतर तरीके से समझने के लिये बाइबल के महत्वपूर्ण प्रक्रिया के लिये संक्षिप्त रूप से वर्णन करें।

पवित्रीकरण का वर्णन

पवित्रीकरण के दो महत्वपूर्ण अर्थ हैं – पहला समर्पण करना है – जिसे अलग रखना या विशेष और पवित्र इस्तेमाल के लिये अलग करना या रखना।

हमने पुराने नियम से सीखा कि ये भौतिक वस्तुओं से सम्बंधित है जैसे : मकान (लैव्यव्यवस्था 27:14); एक मैदान/खेत (लैव्यव्यवस्था 27:16) मन्दिर के पात्र (2 इतिहास 29:18,19)। इन सभों को शुद्ध किया गया और पवित्र इस्तेमाल के लिये अलग किया गया।

लोगों को भी विशेष अभिप्राय के लिये अलग किया गया: इस्राएल के पहलौठे (निर्गमन 13:2) याजक लोग (2 इतिहास 29:4,5,15); यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता (यिर्मयाह 1:5) स्वयं यीशु, परमेश्वर का पाप रहित पुत्र (यूहन्ना 10:36, 17:19)।

ifo=kdj.k ifo=k bLreky d fy,
vyx j[krk g

इस पवित्रीकरण का दूसरा अर्थ है – "साफ करना"/शुद्धिकरण" – शुद्ध करना या नैतिक दूषिता से शुद्ध करना/उदाहरण के लिये – पौलुस जब एक विश्वासी के पूरे जीवन की दशा के बारे में वर्णन करता है (1 थिस्सलुनीकियों 5:23); एक विश्वासी का विवेक (इब्रानियों 9:13,14) आदि।

पास्टर से पास्टर तक : पवित्रीकरण की ये दो परिभाषायें पुराने नियम के और नये नियम के पवित्रीकरण के विचारधारा की भिन्नता को समझने में सहायक होगा।

पुराने नियम में जो सामान्य (आम) था उसे पवित्र समझा जाता था और पवित्र किया गया – उस समय जब उसे विशेषरूप से परमेश्वर के लिये व उसकी सेवा के लिये अलग किया गया है।

नये नियम में जो सामान्य था उसे परमेश्वर के आत्मा से भरपूर किया गया, और परिवर्तन करके उसे पात्र बना दिया कि स्वामी के इस्तेमाल योग्य हो जाये (2 तीमुथियुस 2:19–21)।

मसीह की देह में अगुवे होकर हमें पवित्र बुलाहट के साथ बुलाया गया है (2 तीमुथियुस 1:9)। ये बुलाहट हमें मसीह की सेवा के लिये अलग करती है – फिर भी परमेश्वर ने इस बिन्दु पर समाप्त नहीं किया – वह "पवित्रीकरण" का कार्य आरम्भ करता है हमारे अन्दर, लगातार हमें अपने आत्मा से बदलता रहता है। जब हम इस कार्य में सहयोग करते और वचन का आज्ञा पालन करते हैं, तो वह हमें उस व्यक्ति में परिवर्तन करता है जिसके विचार, शब्द और प्रतिदिन के जीवन के कार्यों में उसे प्रगट करता है जो हमारे अन्दर प्रभु है।

2. पवित्रीकरण की तीन विशेषताएं

क. दशानुसार पवित्रीकरण – एक पूर्ण किया हुआ कार्य। यीशु जब इस धरती पर था जो वह नैतिक रूप से सिद्ध और पाप रहित था। वह यहां पर पिता के द्वारा उस अभिप्राय को पूरा करने को भेजा

गया कि पतित संसार के वा हमारे पापों के दण्ड के लिये अपने आप को बलिदान कर दे। उसके द्वारा केवल उसी के द्वारा क्या हम क्षमा, उद्धार और परमेश्वर का छुटकारा पा सकते हैं।

जब व्यक्ति विश्वास में मसीह के पास आता है और उसकी प्रभुता में अपने आपको समर्पित करता है तो वह व्यक्ति मसीह की देह में उसके प्रभुत्व में कलीसिया से जुड़ जाता है (1 कुरिन्थियों 12:13)। "कलीसिया" के लिये यूनानी शब्द "अकलेसिया" जिसका अर्थ है "बुलाया हुआ"। ये परिभाषा हमें देखने में सहायता करती है कि कैसे हर मसीह में विश्वासी का इरादा रहता कि वह परमेश्वर के इस्तेमाल के लिये अलग किया हुआ या बुलाया हुआ है।

इस प्रकार का पवित्रीकरण – एक पवित्र अभिप्राय के लिये अलग किया हुआ "दशानुसार पवित्रीकरण" कहलाता है (देखें 1 कुरिन्थियों 1:30, 6:11; 2 थिस्सलुनीकियों 2:13)। ये दशानुसार पवित्रीकरण परमेश्वर का पूर्ण किया गया कार्य है जो हर व्यक्ति को उद्धार के समय दिया गया है (प्रेरित 26:18; रोमियों 15:16, 1 कुरिन्थियों 6:11)।

मसीह ने अपना लहू बहाया और हमारे पापों के लिये अपना जीवन दे दिया। पूर्ण किये गये कामों में से एक पवित्रीकरण का कार्य उनके लिये जो उस पर विश्वास करते हैं। *"उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाये जाने के द्वारा पवित्र किये गये हैं"* (इब्रानियों 10:10)। *"परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा, अर्थात् धर्म, और पवित्रता और छुटकारा"* (1 कुरिन्थियों 1:30)।

एक "पवित्र किया हुआ" होकर तो क्यों प्रारम्भिक कलीसिया में विश्वासियों को "सन्त" कहा गया (1 कुरिन्थियों 1:2 इफिसियों 1:1)।

ये पवित्रीकरण हमको मुफ्त दिया गया है – मसीह के क्रूस पर पूर्ण किये गये कार्यों के कारण। हम कभी भी काफी अच्छे कार्य नहीं कर सकते या इसे कमाने के लिये धार्मिक प्रयास। हम परमेश्वर की "स्वीकृति" लेने के लिये कभी भी "काफी भले" नहीं हो सकते या अपने ही प्रयासों से उद्धार नहीं पा सकते।

जब हमें हमारा स्वर्गीय पाप रहित पिता हमारी ओर देखता है वह हमारी सब अशुद्धता और असफलताओं से वाफिक है। और अभी भी वह हमें अपने पुत्र यीशु के लहू के द्वारा हमें देखता है। ये लहू का "ढांपना" हमारे पापों के लिये हैं – जो एक तरीका है जिससे हम धर्मी, पवित्र परमेश्वर के द्वारा स्वीकृत हो सकते हैं (इफिसियों 1:6,7) ये सच में एक अच्छा समाचार है!

पापरहित मेमने के अन्ततः लहू के द्वारा विश्वासियों को पवित्र किया गया है (इब्रानियों 10:11–14; 13:12) मसीह के बहाये हुए रक्त हमेशा के लिये पवित्रीकरण का कार्य है (इब्रानियों 9:28; 10:12)। हमें "दोबारा अनुग्रह के कार्य" की आवश्यकता नहीं है (जैसा कुछ सिखाते हैं) जिससे हम परमेश्वर के योग्य ग्रहण ठहरें। जिस क्षण हम मसीह पर और हमारे पापों के लिये उसके बलिदान पर विश्वास करते हैं (रोमियों 10:9,10)। परमेश्वर हमें मसीह की पवित्रता में जानता और हमें घोषित करता कि हम "पवित्र किये" गये हैं (1 कुरिन्थियों 1:30)।

ख. विकासशील पवित्रीकरण – एक व्यवहारिक प्रक्रिया, तीन हिस्सों की पवित्रीकरण का दूसरे भाग के मतलब है पवित्रीकरण की प्रक्रिया जो विश्वासी के जीवन भर जारी रहती है। इसे अक्सर विकासशील पवित्रीकरण के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

हम पहले ही सीख चुके हैं कि दशानुसार पवित्रीकरण परमेश्वर के सार्वभौम कार्य हैं जो हमें पवित्रता प्रदान करता है जो मसीह के बलिदान के द्वारा उपलब्ध है। हम इसे किसी भी मानव प्रयासों से कमा नहीं सकते, जबकि सम्पूर्ण मानवता आशाहीन तरीके से पाप के आधीन खो गई है (रोमियों 3:9–26)।

पर एक बार जब व्यक्ति उद्धार के लिये विश्वास से मसीह के पास आता है तब परमेश्वर का दूसरा महान कार्य "उसी स्वरूप में मसीह के बदलने" की प्रक्रिया है महिमा से महिमा तक जैसा प्रभु की आत्मा के द्वारा किया जाता है (2 कुरिन्थियों 3:18)। क्योंकि ये परमेश्वर की इच्छा है कि हम *"क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहलौठा ठहरे"* (रोमियों 8:29)।

पवित्रीकरण की प्रक्रिया दशानुसार पवित्रीकरण से भिन्न है। दशानुसार पवित्रीकरण परमेश्वर द्वारा किया गया अकेला कार्य है – जब हम मसीह के उद्धार के द्वारा प्राप्त करते हैं। पर विकासशील पवित्रीकरण हमारी इच्छा, अभिलाषायें और लगातार आधार पर प्रयासों को शामिल करती है।

"बदल जाने के लिये" कार्य और जीवन पर्यंत समर्पण एक दैवीय/मानव सहभागिता है। विश्वासियों को परमेश्वर के साथ सहभागिता और उसके परिवर्तन के दैविय कार्य अपने जीवन में उसका सहयोग करना चाहिये।

बाइबल बिल्कुल स्पष्ट है कि सभी मसीह के अनुयायियों को मसीह की नाईं बनने के लिये हर सम्भव प्रयास करना चाहिये, शुद्ध और पवित्र जीवन जीना चाहिये। *"अतः हे प्रियो, जबकि ये प्रतिज्ञाएं हमें मिली हैं, तो आओ, हम अपने आपको शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें।* (2 कुरिन्थियों 7:1)।

हमें बताया गया है कि *"तुम पिछले चाल चलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो, और अपने मन के आत्मिक स्वाभाव में नये बनते जाओ और नये मनुष्यत्व को पहिन लो जो परमेश्वर के अनुरूप सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है"* (इफिसियों 4:22–24)। कृपया पढ़ने के लिये एक क्षण लो नीचे दिये गये धर्मशास्त्र में से जो विषय पर बहुत से संदर्भों में से कुछ हैः रोमियों 6:11–13, 12:1,2; 13:14; 2 तीमुथियुस 2:20,21; 1 पतरस 1:13–19; 1 यूहन्ना 3:3)।

ये हमारे मसीही विश्वास का विशाल स्वरूप है। फिर भी ये बहुत से विश्वासी जो परमेश्वर उनसे अपेक्षा करता है उसमें वे असफल होते हैं। वे पाप, क्रोध और बन्धन से या भय के बन्धन में बंधे रहते हैं बल्कि परमेश्वर को उन्हें उन चीज़ों से स्वतंत्र करने दें। यद्यपि वे अपनी शक्ति से बुरी आदतों व प्रथाओं को तोड़ने का प्रयास करते हैं, वे परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता से अज्ञात हैं कि पूरी तौर से स्वतंत्र हो जायें।

धर्मशास्त्र से ये स्पष्ट है कि बिना परमेश्वर की सामर्थ की सहायता से पवित्र और नैतिकरूप से शुद्ध होना असम्भव है। (यिर्मयाह 13:23; 17:9,10; रोमियों 3:20,23; 7:18) हां! यीशु का लहू हमारी पवित्रीकरण की प्रारम्भिक आधार उपलब्ध कराता है (इब्रानियों 10:29) पर ये पवित्र आत्मा और परमेश्वर के अनन्त वचन दोनों के लगातार कार्य करता है (इफिसियों 5:26)। जो लगातार हमें प्रभु यीशु के स्वरूप में ढालता रहेगा (रोमियों 8:29,30; 2 कुरिन्थियों 3:18; फिलिप्पियों 1:6; 1 पतरस 5:10) ये कार्य जीवन भर की है प्रक्रिया है–ये उस समय तक जारी रहेगी जब तक हम उसे "आमने–सामने" देख न लें (1 कुरिन्थियों 13:12; 1 यूहन्ना 3:2)।

परमेश्वर की लगातार इच्छा है कि हममें कार्य करें कि हमें बनाये। फिर भी उसे हमारे पूरे सहयोग और प्रयासों को चाहिये जैसा पवित्र आत्मा और परमेश्वर के वचन के द्वारा जोड़ा गया। हमें आज्ञा पालन करना और सुनना, परमेश्वर के वचन के निर्देशों और पवित्र आत्मा को उत्तर देना चुनना होगा।

ये विकासशील पवित्रीकरण जीवन भर का परिवर्तन है। हम कभी भी सिद्ध नहीं हो सकते या इस जीवन में पाप रहित नहीं हो सकते (1 यूहन्ना 1:8) पर हमें लगातार आत्मिक परिपक्वता में बढ़ते रहना चाहिये।

ग. पूर्ण व अन्तिम पवित्रकरण – हमारी पापरहित सिद्धता, प्रभु यीशु मसीह के आने की बाट जोह रही है या जिस क्षण हमारी मृत्यु पर हम इस जीवन में कूच करके प्रभु की उपस्थिति में प्रवेश करते हैं। ये उस समय होगा जब हम अपनी इस नाशमान देह से छूटकर *"अन्तिम तुरही फूंके जाने पर पलक झपकते ही"* (1 कुरिन्थियों 15:52) अविनाशी रूप में बदल जायेंगे (1 कुरिन्थियों 15:45–47; फिलिप्पियों 3:20,21; 1 यूहन्ना 3:2 भी देखें)।

क्रूस के पास, जब मसीह हमारे पापों के लिये मर गया – हम पापों के दण्ड से बचा लिये गये। जैसे हम विश्वास में और पवित्रता में बढ़ते हैं तो हम अधिक अधिक पाप की शक्ति से स्वतंत्र होते हैं।

और जब मसीह वापस आयेगा (या हम मसीह में मर जायें) तो हम पाप की उपस्थिति से उद्धार पायेंगे!

पवित्रीकरण अभिषेक करना नहीं है। फिर भी पवित्रीकरण (विशेषरूप से विकासशील पवित्रकरण) गम्भीर रूप से अभिषेक के विषय पर महत्वपूर्ण है। पवित्र और समर्पित जीवन जीने का हमारे जीवनों और सेवकाई के द्वारा अभिषेक के उंडेले जाने पर सीधा असर है (इसके विषय भाग 3क में "अभिषेक का बचाव" में वार्ता/चर्चा की जायेगी)।

3. बढ़ने का मार्ग

मसीही लगातार बढ़ते रहते हैं। बाइबल हमें बताती है, *"पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ . . ."* (2 पतरस 3:18, साथ में 2 पतरस 1:5–11)।

विकासशील पवित्रीकरण एक प्रक्रिया है जिसमें परमेश्वर और व्यक्तिगतों के बीच में सहभागिता की आवश्यकता है (फिलिप्पियों 2:12,13)। परमेश्वर हमारी ओर से कार्यरत है, जबसे हमें मसीह के चरित्र की नाईं बनने की सहायता चाहिये। पर इस प्रक्रिया में हमारा भाग क्या है?

हमें चाहियेः

क. मसीह के प्रति विश्वास रखें – बिना विश्वास के, न हम उद्धार का वरदान पा सकते ना ही मसीह के दशानुसार पवित्रीकरण का वरदान पा सकती हैं (1 कुरिन्थियों 1:30)। हम इस वरदान को उससे उसके विश्वास के द्वारा प्राप्त करते हैं (प्रेरित 26:18)।

ख. अपने जीवनों को परमेश्वर को दो – इसी प्रकार हम अपने मसीही जीवन को आरम्भ करते हैं, इसी प्रकार हमें प्रतिदिन जीना चाहिये। लगातार देना या परमेश्वर को समर्पित करना प्राथमिक महत्वपूर्ण है। यही वह है जो जानता है कि हमें मसीह के स्वरूप में ढालना आवश्यक है (देखें रोमियों 6:13, 19–21; 12:1,2; 2 तीमुथियुस 2:21)। हमारे विश्वास को बढ़ाने के लिये परमेश्वर को प्रतिदिन अपने आपको समर्पण करना जरूरी है और समर्थ हो जाओ–उस समय जब हम उस पर निर्भर रहना और भरोसा करना चुनते हैं (इब्रानियों 11:6)।

ग. परमेश्वर के वचन का आज्ञा पालन करें – विश्वास और चरित्र के लिये पवित्रशास्त्र ही हमारा अन्तिम स्तर है *"जवान अपनी चाल को किस उपाय से शुद्ध रखे? तेरे वचन के सावधान रहने से"* (भजन 119:9)। पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचन को हमसे बात करने के लिये व हमारे चरित्र को ढालने में इस्तेमाल करेगा (यूहन्ना 14:26)। परमेश्वर का वचन हमें सुसज्जित करेगा और हमें परमेश्वर का वचन हमें शुद्ध करेगा (इफिसियों 5:26)। बाइबल हमें भी प्रगट करती है हमारी आंतरिक विचारों और उद्देश्यों को (इब्रानियों 4:12) हमें प्रतिदिन बाइबल पढ़ना चाहिये, तब हमें उसका पालन करना चाहिये (याकूब 1:22)। हमें जीने के लिये और ईश्वरत्व में बढ़ने के लिये परमेश्वर हर चीज़ जो आवश्यक है उपलब्ध करायेगा (2 पतरस 1:3,4) पर हमें अपनी इच्छा का सहयोग और आज्ञाकारिता देना चाहिये!

घ. पवित्रता को लागू करने के लिये व्यक्तिगत समर्पण करें – *"सबसे मेल–मिलाप रखो और उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा"* (इब्रानियों 12:14 साथ में मत्ती 5:8 देखें)।

पतरस विश्वासियों को बताता है कि अच्छे बनें और अपनी पूरी आशा परमेश्वर के अनुग्रह पर रखें। हमें परमेश्वर की आज्ञा पालन करना है और पूर्व के लालच जिस पर पहले नियंत्रण किया उसके सदृश्य न बनो। पवित्रता के लिये हमारी ये दैविय आशा है क्योंकि परमेश्वर अपने चरित्र व अपने न्याय में धर्मी और पवित्र है (1 पतरस 1:13–21)। हमारे जीवनों और हमारे मंजिल का बिन्दु प्रसन्नता का जीवन नहीं है या आसानी का, परन्तु पवित्रता का है।

पवित्र जीवन की शैली का चलना – हमारे कार्यों में, विचारों, सम्बन्धों और शब्दों में है – मसीह के पीछे चलने का विकल्प नहीं है। जो पवित्र परमेश्वर के साथ सम्बन्ध रखने में जो पवित्र नहीं है उसे हमें सहन नहीं करना चाहिये! हमारे नमूने या उदाहरण वे नहीं जो दूसरे करते हैं (मसीही या नहीं) व्यवहारों का समझौता जिसे दूसरे अगुवों के जीवन में हम देखते हैं। हमारे जीवन का अन्तिम अगुवा हमारी

संस्कृति, जाति व परिवार नहीं है। मसीह के राज्य के नागरिक होकर (फिलिप्पियों 3:17–20) हम उस पर चलने के जिम्मेवार हैं जो प्रथम और सबसे अधिक परमेश्वर ने अपने वचन के द्वारा पवित्र आत्मा से प्रगट किया है – इसी का हमें आज्ञा पालन करना चाहिये! (लूका 9:23–26)।

यदि हम परमेश्वर के पवित्र स्तर द्वारा प्रगट किये गये वचन व चरित्र पर अपने जीवनों को जियेंगे तो हमें गारन्टी है कि हम सन्तुष्टि में बढ़ेंगे। जब हम सन्तुष्टि में आगे बढ़ते हैं तो हम एक पात्र बन जाते हैं *"यदि कोई अपने आप को इससे शुद्ध करेगा तो वह आदर का बर्तन और पवित्र ठहरेगा और स्वामी के काम आयेगा और हर भले काम के लिये तैयार होगा"* (2 तीमुथियुस 2:21)।

ख. अभिषेक का अभिप्राय

इसलिये कि अभिषेक के लिये कुछ गड़बड़ी है इसीलिये हमने पहले ही हिस्से में समय लिया कि बतायें कि अभिषेक क्या नहीं है–आइये संक्षिप्त में दोहरायें कि हमने क्या सीखाः

- अभिषेक कोई जादू का या जोर जबरन की ताकत नहीं है।
- अभिषेक वरदान का देना नहीं है–योग्यता, क्षमता, भावनात्मकता या आश्चर्यकर्म का व्यक्तित्व नहीं है।
- अभिषेक उद्धार नहीं है
- अभिषेक – पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं है
- अभिषेक – विश्वासी का पवित्रीकरण नहीं हैं

1. अभिषेक का ब्यान

तो अभिषेक क्या है?

अभिषेक को इस प्रकार उत्तमता से वर्णन किया जा सकता हैः

अभिषेक पवित्र आत्मा की उपस्थिति और व्यक्ति के सिवाय कुछ नहीं है – अपने साथ आवश्यक शक्ति, अधिकार और वरदानों को सेवकाई के दिये गये क्षणों या कार्यों को पिता की इच्छा में पूरा करने के लिये लाना।

ऐसा कहा जाना चाहिये कि पवित्र आत्मा ऊपर दिये गये पांचों चीज़ों में सीधे रूप से शामिल है। परमेश्वर के आत्मा की बिना उपस्थिति और कार्य के वे पांचों कार्य हर एक विश्वासी के जीवन में स्थान नहीं ले सकते।

फिर भी पवित्र आत्मा का ये कार्य अभिषेक कहलाता जिसके असली और विशेष अभिप्राय है।

2. अभिप्राय के साथ शक्ति

क. दैवीय योग्यता – पवित्र आत्मा के अभिषेक का प्राथमिक अभिप्राय विश्वासी को अद्वितीय योग्यता देना है।

जिस किसी को परमेश्वर की इच्छा है वह उसे देता है, उन्हें सहायता करने के लिये कि जो परमेश्वर चाहता है कि करें उसे पूरा करने के लिये। ये प्रचार करना या बोलना हो सकता है, कार्य को करना, गीत गाना या किसी संगीत वाद्य को बजाना। हो सकता है बीमारों पर हाथ रखना हो चंगाई व दूसरे चिन्ह व आश्चर्य करने को। ये एक को बोझ की प्रार्थना करने में सहायता कर सकता है।

ये नोट करना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से अगुवाई करने के लिये व्यक्ति को अभिषेक कर सकते हैं या क्षमता को पूर्ण करने भले ही ये व्यापार की ही क्यों न हो (देखें निर्गमन 31:3)।

ये परमेश्वर की इच्छा है कि अपने लोगों को सेवकाई के लिये अपनी कलीसिया में और कलीसिया के बाहर अभिषेक करें–पर याद रहे – ये उसके अभिप्राय के लिये है – हमारी नहीं पर उसकी महिमा के लिये है।

याद रखें कि अभिषेक क्या है : ये परमेश्वर है जो अपनी आत्मा से मानव पात्रों को जो भी शक्ति, अधिकार और वरदानों को आवश्यकता है कि पिता की इच्छा की पूर्ति सेवकाई में दी गई क्षणों में पूरा कर सकें।

ये समझना महत्वपूर्ण है कि अभिषेक पवित्र आत्मा व्यक्ति का है! परमेश्वर की सामर्थ उस व्यक्ति की उपस्थिति से अलग नहीं है। जब हम कहते हैं कि किसी का अभिषेक हुआ है तो हमारा मतलब

ये है कि पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व उनके जीवनों में उपस्थित है कि उनके द्वारा परमेश्वर की इच्छा पूरी की जा सके।

ख. इस अभिषेक का कौन अनुभव कर सकता है? जैसे आप पुराने नियम को पढ़ते हो, ये पहचानना आसान है जब पवित्र आत्मा किसी भविष्यद्वक्ता, न्यायी, राजा, याजक के ऊपर आया–इनमें से कुछ घटनाओं को हम भाग 20 में देखेंगे।

फिर भी पुराने नियम में पवित्र आत्मा का उतरना नये नियम से फर्क था। प्रेरित यूहन्ना ने लिखा, *"उसने ये वचन पवित्र आत्मा के विषय में कहा है जिसे उस पर विश्वास करने वाले पीने पर थे क्योंकि आत्मा अब तक ना उतरा था क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था"* (यूहन्ना 7:39)।

पवित्र आत्मा जो पूर्ण रूप से परमेश्वर है समस्त अनन्त से वर्तमान है। वह सृष्टि के समय कार्यशील था (उत्पत्ति 1:2) और पूरे पुराने नियम में। परन्तु पिता परमेश्वर ने अभी तक आत्मा को नहीं दिया जब तक परमेश्वर के पुत्र ने उद्धार का द्वार अपनी बलिदान रूप क्रूस की मृत्यु से खोल दिया (यूहन्ना 14:16,17, 16:7)।

पास्टर से पास्टर तक : जैसा बाइबल पर विश्वास करने वाले मसीही, हम तीन ईश्वरों की उपासना नहीं करते। बल्कि हम एक ईश्वर की आराधना करते हैं जिसने अपने आपको तीन व्यक्तियों में वर्णन किया। परमेश्वर में तीन "व्यक्ति" है – जो ना ही तीन ईश्वर हैं ना ही तीन भाग। ये तीन एक हैं और हर एक बराबर से ईश्वर है। हमारे सीमित दिमाग को परमेश्वर के तीन एक के होना समझना कठिन है। पर धर्मशास्त्र उसके विषय सत्य को प्रगट करता है।

पुराने नियम और नये नियम में पवित्र आत्मा के दिये जान पर एक प्रारम्भिक भिन्नता है। पुराने नियम में पवित्र आत्मा थोड़े समय के लिये चुने हुए मानव पर उतर आया। पवित्र आत्मा व्यक्तिगत रूप से उनको इस योग्य करता (भविष्यद्वक्ता, न्यायी आदि को) कि उस क्षण परमेश्वर की इच्छा को पूरा करें और तब पवित्र आत्मा उनमें से सेवकाई के अगले क्षण के लिये उठ जाता।

फिर भी नये नियम में पवित्र आत्मा को मानव हृदय में बास करने के लिये दिया गया और उनके साथ जीवित सम्बन्ध रखने के लिये दिया गया है। आइये, पवित्र आत्मा के नये नियम में अभिषेक करने के कुछ उदाहरणों को देखें।

यीशु

नये नियम में प्रथम व्यक्ति जिसका अभिषेक पवित्र आत्मा द्वारा हुआ वह "*यीशु*" है! यीशु ने अपने बपतिस्में के दौरान पवित्र आत्मा का अभिषेक पाया (मत्ती 3:16)। जंगल में यीशु की परीक्षाओं के बाद उसका सार्वजनिक प्रचार मन्दिर में यशायाह 61:1,2 से था। तब उसने घोषित किया कि ये मसीह का धर्मशास्त्र अब पूरा हो गया है (लूका 4:14–21)।

आप नोट करेंगे कि पवित्र आत्मा के अभिषेक के विषय यशायाह 61:1,2 में बोला गया है और पिता की इच्छा यीशु की पृथ्वी पर की सेवकाई द्वारा पूर्ण की गई।

vfHk"kd gekj tho dk cny nxkA

जब यीशु पृथ्वी पर शारीरिक रूप से था वह पूरी तरह से परमेश्वर और पूरी तरह से मानव था (फिलिप्पियों 2:5–8)। फिर भी उसे पिता की इच्छा पूर्ण करने के लिये पवित्र आत्मा की आवश्यकता था तो कितना अधिक आपको और मुझे चाहिये है? (देखें प्रेरित 10:38)।

प्रारम्भिक कलीसिया

प्रारम्भिक कलीसिया के *अगुवे*

पेन्तिकोस्त के दिन (प्रेरित 1:12–2:4) प्रारम्भिक कलीसिया के अगुवे और बचे हुए चेले एक उपरोठी कोठरी में प्रार्थना कर रहे थे। वे जो वहां उपस्थित थे जिनमें असली 11 चेले भी थे (यूहदा तो मर गया था), यहूदा के स्थान पर एक नये चेले को चिट्ठी डालकर चुना गया था, और दूसरे चेलों का झुण्ड (करीब 120 लोग) था। अचानक पवित्र आत्मा (योएल 2:28–32) का वायदा उन पर उंडेला गया (प्रेरित 2:2–4)।

पौलुस प्रेरित बाद में मसीह के विश्वास में बदल गया, उसने भी पवित्र आत्मा पाया और तेजी के साथ मसीह यीशु के सुसमाचार का प्रचार करने लगा (प्रेरित 9:1–22)।

सुसमाचार प्रचारक जैसे फिलिप्पुस भी मारा गया और पवित्र आत्मा के द्वारा अगुवाई की गई। (प्रेरित 8:29) जिन्हें सिखाने का वरदान दिया गया जैसे अपुल्लोस बिना पवित्र आत्मा के अभिषेक के प्रभावशाली रूप से नहीं कर सकता था (प्रेरित 18:24–28 देखें, 1 कुरिन्थियों 3:5–8) जो सेवा के लिये बुलाये गये और मसीह की देह शीघ्रता से बढ़ रही थी वे सब आत्मा से भरे गये थे जैसा स्तिफनुस के साथ था (प्रेरित 6:1–10)।

इस विषय पर नये नियम में अतिरिक्त पृष्ठ भी दिये गये हैं (जैसेः प्रेरित 4:13,33; 11:27,28; 21:10,11)।

प्रारम्भिक कलीसिया के *चेले*

पेन्तिकोस्त के दिन जिन लोगों को पवित्र आत्मा से भरा गया था वे बहुत से विश्वासियों के लिये आरम्भ था (प्रेरित 4:31,5:32, 13:52 आदि)।

सुसमाचार प्रचार के लिये सामर्थ

जैसे सुसमाचार की आग फैलती गई, वैसे ही आत्मा का उंडेला जाना भी फैलता रहा। इसने यीशु के उन वचनों की पूर्ति की जो उसने स्वर्ग पर जाने से पहले कहा थाः *"परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आयेगा तब तुम सामर्थ पाओगे और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे"* (प्रेरित 1:8)।

यीशु की भूगोलिक सूचि (जगहों की) कोई कविता की भाषा नहीं थी। प्रेरितों के काम की पुस्तक ये प्रगट करती है कि पवित्र आत्मा के उंडेले जाने की प्रतिज्ञा उन सब पर जो विश्वास करते हैं यह संसार को सुसमाचार प्रचार करने की शुरुआत है।

यरूशलेम में . . . (पेन्तिकोस्त के दिन पूर्ण किया गया प्रेरित अध्याय 2) ऐसा प्रतीत होता है कि ये यहूदियों के नये विश्वासियों का झुण्ड यरूशलेम में प्रचार करना बन्द कर देंगे। ये मसीह के अभिप्राय के लिये खतरा था – जैसा वह चाहता था कि उसका मिशन सुसमाचार प्रचार के लिये *सब लोगों और सब स्थानों के लिये हो।*

परन्तु शीघ्र ही सुसमाचार प्रचार किये जाने के एकदम बाद सताव आरम्भ हो गया था। परमेश्वर ने इस सताव को इस्तेमाल किया कि प्रारम्भिक कलीसिया को मजबूर करें और तितर बितर करें – यरूशलेम से बाहर – जिससे पिता की इच्छा पूरी हो कि हर एक व्यक्ति को उद्धार का सुसमाचार प्रचार किया जाये।

तब प्रेरित अध्याय 8 में हमें एक भयंकर सताने वाले से परिचय कराया गया है – उसका नाम शाऊल था। ये सब बुरी खबरें थी – जब तक हम धर्मशास्त्र में नहीं पढ़ते *जो तितर बितर हुए थे वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे"* (प्रेरित 8:4) इसमें यहूदा और सामरिया दोनों शामिल थे (प्रेरित 8:1–25)।

सुसाचार का बाहरी अभियान

नोट करें कि पवित्र आत्मा उन पर उंडेला गया जिन्होंने सुसमाचार को स्वीकार किया (8:16,17) चिन्ह और चमत्कार भी हुए उनके बीच जिन्होंने सुसमाचार का प्रचार सुना (8:6,13)।

पर इससे भी बढ़कर एक महान कार्य का खुलासा प्रारम्भिक कलीसिया में होना था – परमेश्वर चाहता था कि सुसमाचार *हर जगह* प्रचार किया जाये–यीशु ने विश्वासियों को आज्ञा दी, *". . . तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो"* (मरकुस 16:15)। इसी प्रकार का वचन प्रेरित 1:8 में रिकॉर्ड किया गया *"संसार के छोर तक"*।

ये बाहरी अभियान उस समय आरम्भ हुआ जब फिलिप्पुस की भेंट कूश देश के खोजे के साथ हुई – जो शीघ्र ही मसीह में बदल गया (प्रेरित 8:26–40)। यही कूश के व्यक्ति ने अफ्रीका में सुसमाचार को फैलाया!

उसके बाद शीघ्र ही शाऊल पूरी तरह मसीह से भेंट कर बदल गया। (प्रेरित 9:1–19) और वह अन्य जातियों के लिये प्रेरित कहलाया (प्रेरित 9:15) पर फिर भी ध्यान यहूदियों को सुसमाचार सुनाने में था – जब तक कि परमेश्वर ने कुछ बदलाव नहीं किया!

हम प्रेरितों के काम में कुरनेलियुस के बारे में पढ़ते हैं जो रोमी व्यक्ति था (प्रेरित 10:1–48)। पतरस को कुरनेलियुस के साथ जो अन्यजाति था सुसमाचार सुनाने के लिये भेजा गया। ये पतरस के लिये यहूदी होकर करना मुश्किल चीज़ थी (प्रेरित 10:9–16)।

पर जैसे पतरस प्रचार कर रहा था पवित्र आत्मा कुरनेलियुस व उसके पूरे परिवार पर उतर आया – ठीक पतरस के सन्देश के बीच में! (प्रेरित 10:44) भले की यहूदी भाई लोग जो वहां उपस्थित थे दुविधा में थे कि सुसमाचार अन्यजातियों को सुनाया गया और उन्होंने भी पवित्र आत्मा पाया (प्रेरित 10:45–48)।

अन्त में प्रेरितों की यरूशलेम में एक महत्वपूर्ण सभा हुई – जिसमें पतरस को गवाही देने के लिये बुलाया गया (प्रेरित 11:1–15)। वे अन्त में इसे समझे और स्वीकार किया जो यीशु ने उन से स्पष्ट कहा था: "सुसमाचार हर एक को प्रचार किया जाये" यहां तक कि ***जगत की छोर तक"*** (प्रेरित 1:28)।

परमेश्वर की योजना प्रगट की गई

प्रेरितों के काम की पुस्तक के बारे में नोट करना कुछ गम्भीर महत्व का है। प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार साधारण रूप से कोई नया धर्म नहीं था या यहूदियों के लिये धार्मिक–सिद्धान्त। अदन की बारी से लेकर जो कुछ भी मनुष्य को प्रेरणा दी गई – पूरे पुराने नियम के इतिहास ने समय पर इस बिन्दू को पूरा किया।

परमेश्वर की ईश्वरीय योजना थी जो मानव ने पाप करके चुना (उत्पत्ति 3:15)। ये उद्धार की योजना थी जो पाप की मृत्यु से थी, विश्वास के द्वारा अनुग्रह से (कार्यों से नहीं) मसीह यीशु के द्वारा। ये बलिदान की मृत्यु के द्वारा सम्भव हो सका और साथ ही मसीह के जी उठने के द्वारा। इस को हम सुसमाचार में पढ़ते हैं (मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना)।

परन्तु परमेश्वर का अभिप्राय पुनः स्थापित सम्बन्ध और नये विश्वास से ऊपर गया – परमेश्वर हमारे मध्य में रहना चाहता था–हमें आश्वासन और शक्ति देने कि हमें विजयी जीवन जीने में आवश्यक

है और इस जीवन में उसकी इच्छा पूरी करने के लिये आवश्यक है।

इसीलिये, उसके अद्‌भुत प्रेम और बुद्धि में परमेश्वर ने अपने पवित्र आत्मा को उंडेल दिया, जो हर एक विश्वासी में रहेगा (योएल 2:28,29)। यीशु कोई भी नया धर्म या धार्मिक सिद्धान्त लाने नहीं आया बल्कि वह सब पूरा करने आया जो परमेश्वर ने मानव उद्धार के लिये वायदा किया था!

हां! मसीह का बलिदान हमें परमेश्वर के साथ पुनः सम्बन्ध जोड़ने देता है – पर सर्वशक्तिमान परमेश्वर की इच्छा ये है कि वह हमारे बीच में पवित्र आत्मा के रूप में रहे। ये वो शक्ति है जो संसार अनदेखी नहीं कर सकता। वे उसकी निन्दा कर सकते हैं, आलोचना कर सकते या तिरस्कार कर सकते हैं – जैसा उन्होंने पेन्तिकोस्त के दिन किया (प्रेरित 2:5–13), पर वे काम और पवित्र आत्मा की शक्ति को विश्वासी के जीवन देने में रोक नहीं सकते हो।

हम जो पूरी प्रेरितों के काम की पुस्तक में देखते हैं चिन्हों, आश्चर्यकर्मों के बारे में, उद्धार और चंगाई के बारे में आदि जो आज हमारे लिये सम्भव व आवश्यक है जैसा प्रारम्भिक कलीसिया के लिये था (योएल 2; प्रेरित 2:33,38,39)। हमें पवित्र आत्मा की उपस्थिति और वहीं सामर्थ की आवश्यकता है जो 2000 साल पहले थी। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि *"मसीह यीशु (और पवित्र आत्मा) आज और कल और हमेशा एक से हैं"* (इब्रानियों 13:8)।

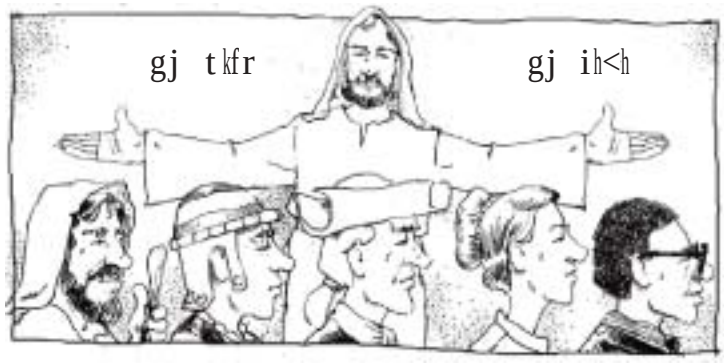

सब समयों में मसीह में सब विश्वासी

पतरस, पवित्र आत्मा की प्रेरणा से ये घोषणा करता है कि अन्दर बसने की पवित्र आत्मा का वायदा *"तुम्हारा और तुम्हारी सन्तान (भविष्य की पीढ़ी) और वे सब जो दूर है जिन्हें हमारा परमेश्वर बुलाता है"* (देखो, प्रेरित 2:33,38,39)।

वे जिनकी पहचान की गई, "वे सब जो दूर है" उनमें अवश्य भविष्य की पीढ़ी को शामिल किया गया है पर सभी अन्यजातियां और दूसरी जातियां, भाषा और पृथ्वी की जातियां (इफिसियों 2:11–19; गलतियों 3:28; कुलुस्सियों 3:11)।

जीवन भर के सम्बन्ध

पवित्र आत्मा के अभिषेक की उपस्थिति का वरदान हर विश्वासी के हृदय में बास करने को आता है ये साधारण अभिषेक है जो हर विश्वासी उद्धार के समय पाता है।

यूहन्ना अपनी पहली पत्री में, इस सामान्य अभिषेक की आंतरिक बातें बताता है – वह प्रारम्भिक विश्वासियों को स्मरण दिलाता है, *"अब तुम्हारा अभिषेक पवित्रजन से हुआ है और तुम सब बातें जानते हो"* (1 यूहन्ना 2:20)।

यूनानी भाषा से इस असली पाठ में ये स्पष्ट है कि यूहन्ना किसी धार्मिक विधि जो तेल द्वारा अभिषेक होता है बयान नहीं कर रहा है बल्कि ये अभिषेक "पवित्र जन" के द्वारा है जो परमेश्वर का पुत्र मसीह यीशु है (यूहन्ना 6:69; प्रेरित 3:14, 4:27)।

दूसरे शब्दों में "अभिषिक्त व्यक्ति" (मसीह यीशु) वह स्वयं अपनी ओर से अपने अनुयायियों को दान देता है, वह दान पवित्र आत्मा है जो हमारे अन्दर निवास करता है (मत्ती 3:11; प्रेरित 1:5; यूहन्ना 14:16, 17, 26, 16:7)। ये अभिषेक हर एक विश्वासी के लिये है जो अनुग्रह के द्वारा विश्वास से उद्धार के लिये मसीह में आशा रखता है।

तब यूहन्ना पवित्र आत्मा के द्वारा जारी रखता है: *"और तुम्हारा ये अभिषेक, जो उसकी ओर से किया गया तुम में बना रहता है और तुम्हें इसका प्रयोजन नहीं कि कोई तुम्हें सिखाये बरन जैसे वह अभिषेक*

जो उसकी ओर से किया गया तुम्हें सब बातें सिखाता है और वह सच्चा है और झूठा नहीं और जैसा उसने तुम्हें सिखाया है वैसे ही तुम उसमें बने रहते हो" (1 यूहन्ना 2:27)।

ये अभिषेक एक समय का अनुभव नहीं है बल्कि ये जीवन भर और पवित्र आत्मा के साथ बढ़ता हुआ सम्बन्ध है। ये पवित्र आत्मा है जो हमें सत्य में अगुवाई करता है, हमें सब चीज़ें सिखाता है और हमें जो मसीह ने सिखाया उसको स्मरण दिलाता है (यूहन्ना 14:26), पवित्र आत्मा हमें सत्य को समझने में सहायता करता और यीशु की महिमा करता है (यूहन्ना 16:13,14)।

ये स्पष्ट है कि यूहन्ना उस शिक्षा को जो सेवकाइयों में आवश्यक हैं इस्तेमाल नहीं कर रहा (परमेश्वर हमें शिक्षक देता है – देखें रोमियों 12:7; इफिसियों 4:11)A पर यहून्ना उस प्रकाश या प्रगटीकरण की और समझ की बात कर रहा है, कि व्यक्ति पवित्र आत्मा व्यक्तिगत रूप से उन लोगों को लायेगा जो जीवन में उसको प्रति उत्तर देते हैं (1 कुरिन्थियों 2:10–16, इफिसियों 1:17,18)।

तो हम परमेश्वर के वचन से देखते हैं कि यहां अभिषेक है जो हर एक जन जो यीशु के पीछे चलता है वह उद्धार के समय प्राप्त करता है।

पास्टर से पास्टर तक : पवित्र आत्मा क्या दर्शाता है या सत्य के विषय क्या प्रगट करता है वह हमेशा परमेश्वर के उस वचन से सहमत होता है जो पहले ही से प्रगट हुआ है (यूहन्ना 16:13,14)। कोई भी नया प्रगटीकरण नहीं होगा जो बाइबल से असहमत हो (इसका अधिक वर्णन भाग 20 में किया जायेगा)।

ग. अभिषेक का कार्य

जब पवित्र आत्मा के विचरण और कार्य के विषय अध्ययन करते हैं हमें ये जानना चाहिये कि यहां रहस्य हैं। अभिषेक के विषय में परमेश्वर की सार्वभौमिकता है जो हमारी समझ से परे है (यूहन्ना 3:8) उसकी प्रभुत्व में हमारा केवल ये प्रतिउत्तर होगा कि हम साधारण तरीके व पूरे हृदय से उसकी इच्छा व प्रभुता में समर्पित हो जायें।

परमेश्वर ने अपने ज्ञान में चुना है कि भेदों/रहस्यों को अपने तरह से छोड़ दें और हम विश्वास से जियें (2 कुरिन्थियों 5:7; इब्रानियों 11:6) इस जीवन में बहुत कुछ है जिसे हम केवल "हिस्से" में देख और समझ सकते हैं (1 कुरिन्थियों 13:12), हमारी परमेश्वर के प्रति मुद्रा हमेशा भरोसे, आज्ञाकारिता और पूरी तरह से उसके वचन में समर्पित होना चाहिये।

अभिषेक का व्यवहारिक सिद्धान्त

जैसा हम इस अध्ययन को जारी रखते हैं आइये, एक बार फिर अभिषेक की परिभाषा को दोहरायें:

"अभिषेक व्यक्ति और पवित्र आत्मा की उपस्थिति है, उसकी उपस्थिति से सब सामर्थ, आवश्यक वरदान, और अधिकार जिसे पिता की इच्छा पूर्ण करने में आवश्यक है – जो सेवकाई में व दिये गये कार्य में पूरा करना है।

दिमाग में इस स्पष्ट समझ के साथ आइये कुछ उन सिद्धान्तों को देखें कि किस प्रकार पवित्र आत्मा का अभिषेक कार्य करना है।

1. अभिषेक सेवकाई में परमेश्वर के द्वारा दिये गये कार्य को पूर्ण करना जो व्यक्तिगत रूप से सीधे उसकी बुलाहट से सम्बन्ध रखता है।

दूसरे शब्दों में जब परमेश्वर किसी को सेवकाई का कार्य देता या बुलाहट देता है, तो वह सब आवश्यक शक्ति, अधिकार, वरदान, प्रकाश और आंतरिक चीज़ें देता है – जो कार्य को पूरा करने के लिये आवश्यक है! हलिल्लूयाह!

जब परमेश्वर आज्ञा देता या उसकी इच्छा पूरी करने की अगुवाई करता है तो सब कुछ जो सफलतापूर्वक पूरा करने के लिये जरूरी है वह पवित्र आत्मा के द्वारा उपलब्ध है। जो परमेश्वर व्यक्ति को करने की आज्ञा देता उसके लिये वह ईश्वरीय योग्यता करने के लिये देता है!

यह सही है कि हमेशा बहुत अध्ययन सीख और व्यक्तिगत बदलाव जो मार्ग में हो रहा होता है। जैसा हम अपने ऊपर लागू करते

हैं – अपनी योग्यता में बढ़ना परमेश्वर के वचन और वरदानों में बढ़ना तब परमेश्वर और अधिक देगा। ये विश्वासयोग्य होने का सिद्धान्त जो हमारे पास है और जो परमेश्वर अधिक दे रहा है (लूका 16:10क, 19:17)। परमेश्वर के अभिषेक में बढ़ने के लिये आवश्यक सिद्धान्त है (इसकी चर्चा भाग 20 में की गई है)।

अभिषेक में कार्य करना

परमेश्वर हमारा अभिषेक इसलिये करता है कि हम उसकी बुलाहट व इच्छा की पूर्ति करें। इसी प्रकार के सिद्धान्त को हम पढ़ते हैं – पौलुस के विश्वास के प्रस्तुति में।

रोमियों 12:3, "परमेश्वर ने हर एक के साथ विश्वास के माप के अनुसार व्यवहार किया" ये विश्वास को नापता है (जैसा अभिषेक में है) ये ईश्वरीय वरदान के हिस्सों में दिया जाता है।

"और जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है हमें भिन्न भिन्न वरदान मिले हैं तो जिसको भविष्यवाणी का वरदान मिला हो वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यवाणी करें। यदि सेवा करने का वरदान मिला हो तो सेवा में लगा रहे यदि कोई सिखाने वाला हो तो सिखाने में लगा रहे" (रोमियों 12:6,7)

पौलुस इसी सिद्धान्त को इफिसियों की पत्री में विभिन्न तरह से लिखता है, *"पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिणाम से अनुग्रह मिला है"* (इफिसियों 4:7)। दूसरे शब्दों में ये परिमाण के अनुसार वरदान उसमें कार्य करने में सीधे सम्बंधित है जो परमेश्वर ने किसी को व्यक्तिगत रूप से दिया है – उस सेवकाई के अभिप्राय में।

पास्टर से पास्टर तक : इफिसियों 4:7 के संदर्भ में सीधे इफिसियों 4:11 में जो वरदान लिखे हैं उनसे सम्बंधित है। ये पद 4:7 उद्धार के प्रति अनुग्रह का परिमाण नहीं बताता जैसा कुछ गलत सिखाते हैं। उद्धार के लिये परमेश्वर का अनुग्रह सबको बराबर दिया गया है, क्योंकि उसकी इच्छा है कि कोई नाश न हो और सब का उद्धार हो (प्रेरित 2:21, 17:30,31; रोमियों 3:22,23,

11:32, 1 तीमुथियुस 2:4, 4:10, तीतुस 2:11, 2 पतरस 3:9) परमेश्वर की इच्छा है कि सब उसके उद्धार के वरदान को पायें – मसीह यीशु के द्वारा – विश्वास से (इफिसियों 2:8)। दुःख है कि बहुतों ने उसका तिरस्कार किया है और उसका तिरस्कार करते रहे हैं, और इससे भी दुःखद ये है कि अभी भी लाखों लोगों ने मसीह यीशु के उद्धार का समाचार नहीं सुना है।

पास्टर से पास्टर तक : हालांकि ये आत्मिक वरदानों के अध्ययन का समय नहीं है, मैं आपको एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त आत्मिक वरदानों के प्रति देता हूं।

आत्मिक वरदान – चाहे वे दिखाने वाले वरदान क्यों न हों (1 कुरिन्थियों 12:1–11)। प्रेरणादायक वरदान (रोमियों 12:3–8) या सेवकाई के वरदान (इफिसियों 4:11) ये सर्वश्रेष्ठता से परमेश्वर के द्वारा दिये गये हैं। ये हमारे लिये नहीं है कि हम क्या वरदान चुनते या उठाते या चाहते हैं या सोचते कि सबसे अधिक इसकी आवश्यकता है। परमेश्वर इन वरदानों को अपनी असीमित ज्ञान और सिद्ध पवित्रता में देता है (देखें 1 कुरिन्थियों 12:11)।

यद्यपि हर एक विश्वासी का मसीह की देह की सेवकाई में अभिप्राय है और जिस संसार में हम रहते हैं वहां बहुत सी विभिन्न प्रकार की बुलाहट और वरदान हैं। हर एक के साथ परमेश्वर आवश्यक ईश्वरीय शक्ति, विश्वास, अनुग्रह और उसकी इच्छा और अभिप्राय को पूरा करने के लिये अभिषेक देता है।

हालांकि कि हमें कभी भी नियंत्रण नहीं करना चाहिये या अभिषेक को तोड़ना – मरोड़ना नहीं चाहिये (पवित्र आत्मा को) हम अभिषेक में बढ़ सकते हैं। हम उसमें जो परमेश्वर हमें देता है विश्वास योग्य हैं तो वह और अधिक देता है (मत्ती 25:21)। हम पवित्र आत्मा में बेहतर काम करने को भी सीख सकते हैं, सेवकाई में अधिक फलदायक होने के लिये और परमेश्वर की इच्छा में जुड़ने के लिये इसके बारे में आगे भाग 3ख में चर्चा की गई है, "अभिषेक में बढ़ना")।

अभिषेक को "स्थानान्तरण" करना

कुछ विशेष शिक्षा का विषय ये रहा है कि व्यक्ति जिसका अभिषेक हो गया है और सेवकाई में सामर्थी है वह दूसरे व्यक्ति के ऊपर हाथ रख सकता है और अपने "अभिषेक का कुछ हिस्सा" दे सकता है – "दोहरा हिस्सा भी" इसे अभिषेक को "ट्रांसफर करना" कहते हैं, और इसका वर्णन ऐलिय्याह और ऐलीशा की घटना में वर्णन किया गया है (देखें 1 राजा 19:16, 19; 2 राजा 2:1–13)।

फिर भी धर्मशास्त्र इस प्रकार की शिक्षा को प्रोत्साहित नहीं करती। ऐलिय्याह ने अपनी चादर ऐलीशा पर फेंक दी (1 राजा 19:19) पर ये एक चिन्ह के रूप में पुष्टि की गई जिसे परमेश्वर ने ऐलीशा को ऐलिय्याह के उत्तराधिकारी के रूप में बताया था (1 राजा 19:16) इस घटना में ऐलिय्याह ने ऐलीशा को नहीं बुलाया ना ही वह अभिषेक को पूरा करने को उसे दे सकता था। ये परमेश्वर के द्वारा किया जा रहा था। ऐलियाह साधारण रूप से परमेश्वर के वचन का आज्ञाकारी था, और जो परमेश्वर ने उससे कहा वह उसने ऐलीशा से कहा वह उसने ऐलीशा से कह दिया (1 राजा 19:19)।

ऐलीशा ने स्पष्ट रूप से पहचाना कि वह ऐलियाह की तरह भविष्यद्वक्ता की सेवकाई करने योग्य नहीं है जैसा परमेश्वर ने उसे बुलाया। ऐलीशा जानता था कि उसे परमेश्वर की सामर्थ (अभिषेक) की आवश्यकता है– धर्मशास्त्र में ऐलियाह की आत्मा का अस्पष्ट बयान है (2 राजा 2:9,15) इसलिये ऐलीशा ने ऐलियाह से उसकी आत्मा का "दुगना भाग" मांगा। (2 राजा 2:10)।

पर जैसे ऐलिय्याह परमेश्वर की ओर से नियुक्त भविष्यद्वक्ता था, उसका उत्तर ऐलीशा के लिये दुगना भाग भविष्यद्वाणी की बात कही गई थी, *"तूने कठिन बात मांगी है तौभी यदि तू मुझे उठा लिये जाने के बाद देखने पाये तो तेरे लिये ऐसा ही होगा; नहीं तो न होगा"* (2 राजा 2:10)।

धर्मशास्त्र के इस हिस्से को पढ़ने से स्पष्ट है कि ऐलियाह को मालूम था कि वह ऐलीशा को कुछ भी आत्मिक नहीं दे सकता था।

वह ऐलीशा के लिये परमेश्वर की बुलाहट की पुष्टि कर सकता था पर वह उसका अभिषेक नहीं कर सकता था।

स्पष्ट है परमेश्वर ने (अपनी प्रभुता में) एलीशा को ऐलियाह को देखने दिया जब वह स्वर्ग पर उठा लिया गया। इस प्रकार एलीशा ने ऐलियाह की चादर को प्राप्त किया, परमेश्वर की इच्छानुसार जैसा भविष्यवाणी की गई। उस समय से परमेश्वर का अभिषेक स्पष्ट रूप से ऐलीशा पर प्रदर्शित हुआ (2 राजा 2:15)।

बुलाहट देने वाला, वरदान और अभिषेक देने वाला केवल स्वयं परमेश्वर ही है, क्योंकि पवित्र आत्मा केवल परमेश्वर दे सकता है। हम परमेश्वर और पवित्र आत्मा को नियंत्रित नहीं करते, हम निर्णय नहीं ले सकते कि किसका अभिषेक करना है और कितना अभिषेक वे पायेंगे। ना ही हम परमेश्वर की बुलाहट और वरदानों के इंचार्ज हैं। यदि परमेश्वर ने हमें सेवकाई के लिये अभिषेक किया है तो हम यही अभिषेक किसी दूसरे को नहीं दे सकते।

परमेश्वर की बुलाहट–हम दावे के साथ कहते हैं

यहां तक कि मूसा भी एक परमेश्वर का एक महान सेवक दूसरों को परमेश्वर का अभिषेक नहीं दे सका जो परमेश्वर ने उसे दिया था। फिर भी परमेश्वर ने स्वयं अभिषेक को अपने हाथों में रखा और दूसरे प्राचीनों को दिया (गिनती 11:16–17)।

मूसा को परमेश्वर ने आज्ञा दी कि वह अपने कुछ अधिकार यहोशू को दे (गिनती 27:20) और उसे आज्ञा दे (गिनती 27:23) पर ये उस समय हुआ जब परमेश्वर ने पहले ही यहोशू को मूसा का उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया था (27:18)। यहोशू भी उपस्थित था जब प्राचीनों को अभिषेक किया गया (11:16,17,28) जिसे यहोशू ने वर्णन किया "जिसमें आत्मा है" इस्राएलियों के बीच अगुवा होने के लिये (27:18)।

ये प्रभु था जिसने यहोशू को बुलाया और अभिषेक किया, मूसा ने यहोशू की बुलाहट को पक्का किया और आज्ञा दी कि उसके जाने के बाद कार्य को जारी रखें।

ये पवित्र आत्मा था जिसने भविष्यवाणी का वरदान दिया और

ऐलियाह को तब ऐलीशा का अभिषेक किया–चिन्हों और चमत्कारों के साथ (देखें गिनती 11:25–29, 1 शमूएल 10:6,10; 1 राजा 18:46)।

पास्टर से पास्टर तक : परमेश्वर की आत्मा में से "दुगना भाग" मांगना कोई गलत नहीं है ना ही सेवकाई के लिये कुछ विशेष वरदान मांगना ही गलत है। हमें मांगना चाहिये, तब परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिये कि जो वह हमें देगा और कब देगा।

पर ये भी नोट करें कि ऐलीशा पूरी रीति से आज्ञाकारी था कि जो परमेश्वर ने उसे करने को कहा – अपनी पहली बुलाहट में और परमेश्वर के अभिषेक के उत्तर में तैयारी के लिये (1 राजा 19:20,21, 2 राजा 2:1–11)। परमेश्वर की बुलाहट और अभिषेक दोनों स्वतः ही हमारे जीवन में पूरी नहीं होगी। बल्कि हमारी आज्ञाकारिता, हमारा समर्पण और हमारा पूर्ण सहयोग हर कदम पर आवश्यक है – दोनों तैयारियों में और सेवकाई के कार्यों की पूर्ति के लिये।

एक वर्णन

ये विचाराधारा कि अभिषेक एक व्यक्ति से दूसरे को ट्रांसफर करना सही नहीं है। फिर भी धर्मशास्त्र बहुत से उदाहरण देती है जो "एक वर्णन" कहा जाता है या बताया जाना कहलाता है। ये लोगों पर हाथ रखने से जुड़ा हुआ है (इब्रानियों 6:2) और प्रार्थना के साथ – जैसा पवित्र आत्मा ने निर्देश दिया है (देखें प्रेरित 13:1–3; 1 तीमुथियुस 4:14; 2 तीमुथियुस 1:6)।

मैं परमेश्वर के शक्तिशाली पुरुष और महिलाओं से वाफिक हूं जो दूसरों को पवित्र आत्मा के वरदान के लिये प्रार्थना करते हैं। हमने पहले ही सीख लिया है कि वे अपने वरदान या अभिषेक किसी दूसरे को नहीं दें सकते। फिर भी ऐसा लगता है कि जो कुछ भी परमेश्वर अपनी आत्मा से सेवकाई के द्वारा कर रहा है या विशेष सत्र में जहां परमेश्वर अपनी प्रभुता में चल रहा है वह उसी में घूम सकता है या दूसरों को दिया जा सकता है। समय समय पर जिनके लिये प्रार्थना

ije'oj d dk;| dk vf/kdkj

की गई है वे सभा में महान स्तर में अधिकार वा पवित्र आत्मा की सामर्थ में हो जाते।

मैंने व्यक्तिगत रूप से पवित्र आत्मा की सामर्थ को प्राप्त किया। इन घटनाओं ने प्रार्थनाओं के बाद मेरे व्यक्तिगत जीवन को बदल दिया साथ ही सेवकाई की मेरी दिशा को बदल दिया। पर ये पवित्र आत्मा के प्रभुत्व का काम था जिसने मेरे जीवन में ताजा अभिषेक ला दिया। मानव कार्यों से नहीं।

स्वीकृति जिसकी पुष्टि होती है

इस प्रकार प्राप्त करने का स्पष्ट उदाहरण तीमुथियुस की विकसित सेवकाई में पाई जाती है। पौलुस तीमुथियुस के प्रारम्भिक क्षणों की याद दिलाता है कि जब पौलुस और कलीसिया के प्राचीन लुस्त्रा और इकोनियम में तीमुथियुस के ऊपर हाथ रखे और उसके लिये प्रार्थना की: *"उस वरदान से जो तुझ में है और भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीनों के हाथ रखते समय तुझे मिला था, निश्चिन्त मत रह"* (1 तीमुथियुस 4:14)।

इसी घटना का बयान पौलुस की तीमुथियुस की दूसरी पत्री में किया गया है: *"इसी कारण मैं तुझे सुधि दिलाता हूं कि तू परमेश्वर के उस वरदान को जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे मिला है चमका दे। क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ और प्रेम और संयम की आत्मा दी है"* (2 तीमुथियुस 1:6,7 साथ में 1 तीमुथियुस 1:18 भी देखें)।

इस हिस्से में 'वरदान' के लिये मूल शब्द जो इस्तेमाल किया गया वह "केरिस्मा" है। ये बताता है कि तीमुथियुस के ऊपर पवित्र आत्मा का प्रगटीकरण उस समय हुआ जब पौलुस और प्राचीनों ने तीमुथियुस के लिये प्रार्थना की।

पौलुस तीमुथियुस के वरदान का लेखक नहीं था या उसकी बुलाहट का बल्कि जैसा पौलुस और प्राचीनों ने तीमुथियुस पर हाथ रखे और प्रार्थना की तो पवित्र आत्मा ने तीमुथियुस के लिये परमेश्वर की इच्छा प्रगट की और भविष्यवाणी तीमुथियुस के जीवन की बुलाहट के लिये पुष्टि करते हुए की। जैसा उन्होंने तीमुथियुस को परमेश्वर की सेवा की आज्ञा दी तो ये पवित्र आत्मा था जिसने तीमुथियुस का अभिषेक किया कि वह परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करें।

पास्टर से पास्टर तक : ये प्रार्थना के उन अवसरों के द्वारा है और हाथ रखने के द्वारा पवित्र आत्मा अक्सर परमेश्वर की इच्छा और अभिप्राय को प्रगट करता है। उसकी इच्छा दिमाग में एक तस्वीर की तरह प्रगट हो सकती है, एक भविष्यवाणी का वचन, पक्का–धर्मशास्त्र, या ये असर जो पवित्र आत्मा व्यक्ति या उसकी परिस्थिति के प्रति चाहता है।

इन समयों में हमें धीरज से परमेश्वर की बाट जोहना या सुनना चाहिये फिर भी, यदि हम कुछ विशेष प्रभु से नहीं सुन रहे हैं तो हमें बोलना **नहीं** चाहिये।

एक पास्टर की तरह हमारी भूमिका परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी होने व विश्वासयोग्य होने पर आती है हमें दूसरों को प्रसन्न करने

की परीक्षा आ सकती है या एक आत्मिक अगुवा होने का दबाव हो सकता है जिसके पास लोगों के लिये वचन हो। यही तो बाइबल कहती है: *"मनुष्यों का भय"*। ये एक फन्दा है जो सबसे बुरे सहमति और शारीरिक बातों को ले ले (नीतिवचन 29:25)।

हमें विश्वासयोग्य होने के लिये बुलाया गया है: परमेश्वर के प्रति, उसके वचन के प्रति और पवित्र आत्मा की अगुवाई के प्रति। यदि आप किसी दूसरे के लिये प्रार्थना कर रहे हो, और परमेश्वर उनके विषय आप से नहीं बोलता तो ये पूरी रीति से ठीक है। प्रभु उनसे सीधे बोलना चाहता होगा, या दूसरे समय में या दूसरी तरह से। यदि परमेश्वर खामोश है तो हमें भी खामोश होना चाहिये। यदि परमेश्वर हम से किसी दूसरे के विषय में बातें करता है, तो हमें विश्वास योग्य होना चाहिये और सावधान होकर **केवल** वो कहें जो परमेश्वर कहता है या प्रगट करता है इससे अधिक नहीं ना इससे कम।

हमारी ये भूमिका नहीं है कि दूसरों को बतायें कि क्या करना है, कहां जाना है आदि। केवल ये है कि जो हम पवित्र आत्मा से महसूस करते वहीं समर्पित करें। अक्सर इसकी पुष्टि होना चाहिये कि परमेश्वर ने पहले ही से उनके ह्रदय में डाल दिया है। तब मामला उनके और परमेश्वर के बीच में पूरा करने का है।

अन्त में ये महत्वपूर्ण नोट: एक भविष्यवाणी के वचन परमेश्वर की ओर से **हमेशा** बाइबल के उन वचनों से मिलता जुलता रहेगा जो परमेश्वर ने पहले ही कहा है, उसका लिखा हुआ पवित्र वचन! हर चीज़ जो हम जीवन में करते परमेश्वर के वचन से मेल खाना चाहिये और उन सिद्धान्तों से जो प्रगट किये हुए हैं।

पवित्र आत्मा की अगुवाई में चलना

दिये जाने के दूसरे उदाहरण प्रेरित 6:1–7 और 13:1–3 में देखे जा सकते हैं। प्रारम्भिक कलीसिया में ये घटनाएं केवल चिन्ह स्वरूप ही नहीं थे। इन बातों में मसीह की देह के अगुवों ने पवित्र आत्मा की अगुवाई को खोजा और विशेषरूप से पीछे चले। तब निश्चित विश्वास

के द्वारा उन्होंने उस अगुवाई के लिये आज्ञाकारिता से प्रार्थना की उसके उत्तर में परमेश्वर ने उन्हें सुसज्जित किया, आशीषित किया और जिनके लिये प्रार्थना की गई उन्हें अभिषिक्त किया कि जिसके लिये वे नियुक्त किये गये हैं उसे पूरा करें।

गम्भीर बात ये है: पवित्र आत्मा की अगुवाई ये है कि अभिप्राय के प्रगटीकरण व परमेश्वर की इच्छा को बताना। मसीह यीशु ने स्वयं जाना कि उसकी धरती पर की सेवकाई केवल इसलिये सम्भव थी कि क्योंकि वह पिता परमेश्वर की इच्छा पूर्ण कर रहा था (यूहन्ना 5:19,30; 6:38, 8:29)। हम कर सकते और इसमें कम नहीं करना है!

जैसे हम परमेश्वर पवित्र आत्मा की अगुवाई में चल रहे हैं, तो वह अपनी इच्छा पूरी करने में हमें इस्तेमाल करेगा। उसका हिस्सा ये है कि दूसरों में उसकी बुलाहट की पुष्टि करना और तब हमारे लिये उनके अभिषेक के लिये प्रार्थना करना है जो परमेश्वर ने उनके लिये ठहराया है – उसकी देह की बढ़ौतरी व महिमा के लिये (इफिसियों 4:12–16)।

महान छुटकारा

वर्ल्ड मैप के बहुत से पास्टरों के सेमीनार में मैंने अभिषेक के विषय में सिखाया है या पवित्र आत्मा के बपतिस्में के बारे में। इन महासभाओं में, अनगिनित पास्टरों ने पवित्र आत्मा की ताज़ा भरपूरी पाई; दूसरों ने प्रथम बार पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया। मैंने व्यक्तिगत रूप से उन्हें कुछ नहीं दिया केवल उस विषय की शिक्षा के। मैंने उनके लिये प्रार्थना की होगी पर ये पवित्र आत्मा है जिसने उन्हें छुआ और भर दिया (लूका 3:16; यूहन्ना 16:7) क्योंकि उन्हें उसकी अधिक भूख थी!

हमने इनमें से बहुत से पास्टरों से उनकी सेवकाई के परिवर्तन के बारे में रिपोर्ट प्राप्त की हैं। वे चिन्हों में बढ़ौतरी देखते हैं आश्चर्यकर्मों में उनकी सभाओं में उनसे सुसमाचार के प्रचार के लिये नया जोश देखने को मिलता वे बहुतों को उद्धार के लिये ले आते या पवित्र आत्मा के बपतिस्में के लिये ले आते।

क्या हुआ है? एक चीज़ जो परमेश्वर के वचन की शिक्षा होती रही, जो विशेष विषय पर प्रकाश दिया गया। व्यक्ति जो परमेश्वर का वचन सुनते वे विश्वास के द्वारा प्राप्त करने का निर्णय लेते – जो उन्होंने सीखा उस पर अमल करते।

इससे अधिक भी कुछ हुआ। पवित्र आत्मा उपस्थित है और अद्‌भुत रीति से विचरण कर रहा है, परमेश्वर के वचन के सत्य की गवाही देता जो प्रस्तुत किया गया। इस प्रकार जब लोग खुले दिल और विश्वास से और परमेश्वर के लिये अपनी भूख से जो कुछ उसने उपलब्ध किया उसे सब प्राप्त करने को मांगें। वह उनकी भूख को अच्छी तरह से पूरा करता है (मत्ती 5:6; यूहन्ना 6:35)। वे प्राप्त करते हैं! सेवकाई के लिये परमेश्वर का अभिषेक उनके लिये अधिक छोड़ा जाता है।

कृपया ये समझ लीजिये कि परमेश्वर महासभा या घटनाओं तक सीमित नहीं है। परमेश्वर का आत्मा हर जगह उपस्थित है और जो उसे सम्पूर्ण हृदय से ढूंढ़ते हैं उन्हें वह उत्तर देता है (यिर्मयाह 29:12,13)। आप जहां कहीं भी है परमेश्वर आपसे भेंट करेगा – जैसा आप पूरे मन से उसे खोजते हो हल्लिलूयाह!

मैं फिर कहना चाहता हूं कि कोई पूरी तरह नहीं समझता कि परमेश्वर का आत्मा किस प्रकार चलता और कार्य कर सकता है। फिर भी हम इतना जानते हैं कि परमेश्वर अपनी आत्मा के द्वारा त्यागी भूख को उसके लिये समझेगा।

पवित्र आत्मा लोगों को प्रार्थना के उत्तर में ताजे रूप से भर देता है (लूका 11:9–13)। जब उसका विश्वास हिलाया जाता है तो वे विश्वास में पूछने लगते हैं – उस बिन्दु से आगे के विषय (इब्रानियों 11:6)।

सब से उत्तम विनय

जैसा हमने सीखा है, प्रेरितों ने एक दूसरे पर हाथ रखे और दूसरे कार्यकताओं पर उनके लिये प्रार्थना की और उन्हें सेवकाई सौंपी (प्रेरित 13:2,3, 6:1–6)। परमेश्वर ने उन्हें ऐसा करने को कहां तो कुछ अद्‌भुत और आवश्यक हो रहा था।

हम पवित्र आत्मा के सभी तरीके नहीं समझ सकते पर हम इसे जानते है: जैसा पवित्र आत्मा हमें दूसरों के लिये प्रार्थना करने को अगुवाई करता है और जब हम परमेश्वर के दूसरे पुरुष और महिलाओं को हमारे लिये प्रार्थना करने देते हैं – परमेश्वर का अभिषेक, वरदान, बुद्धि और बहुत सी चीज़ें दी गई हैं। यद्यपि हम ये निश्चय नहीं कर सकते हैं कि कौन परमेश्वर के वरदानों और अभिषेक को पाता है, हम दूसरों के लिये प्रार्थना कर सकते हैं कि वे शक्ति हथियार बने और पवित्र आत्मा की सामर्थ से परमेश्वर की सेवा में प्रभावशाली रूप से इस्तेमाल हो सकें (2 तीमुथियुस 1:6,7)।

हमें हमेशा इन मामलों में अपने जीवनों के लिये परमेश्वर की इच्छा को उसकी प्रभुसत्ता में ग्रहण कर समर्पित करना चाहिये। शायद हमारे उत्तम विनय परमेश्वर से मांगने के ये है: "वरदान क्या है, और आपके दिये गये कार्य जो आपके मेरे लिये हैं? आपने मुझे कैसे इस्तेमाल करने के लिये बुलाया? आपकी इच्छा पूरी करने के लिये आप मुझे क्या देना चाहते हैं:

परमेश्वर के विशेष कार्य हैं, बुलाहटें और हर स्त्री–पुरुष के लिये सेवकाई के अभिप्राय हैं। इनके साथ, वह हमें पवित्र आत्मा बहुतायत से देगा, *"अब जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है"* (इफिसियों 3:20)। उसकी इच्छा पूर्ण करने योग्य उस समय बनाता जब हम अपने जीवनों को देते और उसकी इच्छा को देते हैं।

अभिषेक का मूल अभिप्राय ये है कि हम सेवकाई में प्रभावशाली हों या अपने दिये गये कामों में। इसमें सेवकाई में स्वतंत्रता से दूसरों को दिया जा सकें जो हमें पवित्र आत्मा द्वारा दिया गया है।

यीशु स्वयं, अपनी सेवकाई के आरम्भ में कहा, *"परमेश्वर का आत्मा मुझ पर है क्योंकि उसने मेरा अभिषेक किया है . . ."* (लूका 4:16–21)। जब आप इन पदों को पढ़ोगे तो नोट करोगे कि यीशु ने कई चीजों की एक सूची बनाई–वह विशेष रूप से दूसरों के लिये करने को अभिषिक्त किया गया था।

अभिषेक एक पवित्र सौभाग्य है। हमें अधिक आत्मिक होने के लिये इसकी इच्छा नहीं करना चाहिये या दूसरों से बेहतर होने के लिये नहीं। अभिषेक पवित्र आत्मा के द्वारा सुसज्जित करना है, इसलिये दिया गया कि हम अधिक फलदायक और सेवकाई में प्रभावशाली हों और अपनी बुलाहट में भी। इसका मतलब ये है कि हम दूसरों के लिये बेहतर सेवक बन जायेंगे (यूहन्ना 13:12–17), देने की जीवन शैली व रवैया, जीवन के हर स्तर व पहलू में, हर एक विश्वासी के लिये बाइबल की आज्ञा है (मत्ती 10:8; लूका 6:38; प्रेरित 20:35)।

परमेश्वर की इच्छा उसके लोगों के लिये है कि वे लगातार अपने साधनों, व योग्यताओं को दूसरों के लाभ के लिये दे सकें। बिना देने की जीवन शैली के हम आत्मिक रूप से स्वस्थ नहीं हो पायेंगे और मसीह की देह में भी कमी होगी। परमेश्वर ने हमें अत्याधिक उदाहरण इस्राएल के भूगोल में दिये हैं जो इस उदाहरण को देने में सहायक होंगे।

जीवन या मृत्यु

इस्राएल के पास पानी की दो विशाल देहें हैं। एक गलील की झील और दूसरा मृतक सागर है। गलील की झील सुन्दर, ताज़े पानी की झील है जो जीवन से भरपूर है। मृतक सागर अपने नाम के अनुरूप है। वह इतना नमक और खनिज पदार्थों से भरा हुआ है कि वह जीवन को सहारा नहीं दे सकता। मृतक सागर का पानी पीने लायक नहीं है और इतना कठोर है कि उसमें अधिक देर तक रहने से खाल जल जायेगी, अंधापन दे सकता और आपको मार भी डाल सकता है। गलील की झील में ताज़ा पानी बहता और स्रोतों और झरनों से उसमें आता है। उसके निचले हिस्से से पानी यर्दन नदी में बहता है जो सीधे सीधे मृतक सागर में गिरती है। ये कैसे सम्भव है कि जीवन दायक गलील का पानी जहरीला होकर जीवन रहित मृतक सागर हो सकता है?

इन दोनों समुद्रों में एक महत्वपूर्ण भिन्नता हैः अच्छा, स्वस्थ पानी इन दोनों में बहता है, पर केवल गलील की झील से बहता है। मृतक सागर का कोई निकास नहीं है। मृतक सागर का पानी स्थिर रहता

और उड़ता है, पीछे बहुत सा नमक और खनिज छोड़ जाता है। पानी जहरीला और जीवन रहित बन जाता है।

उसी प्रकार से सेवक के जीवन में पवित्र आत्मा का अभिषेक दूसरों में यीशु के जीवन को उत्पन्न करता है। ये हमारे अन्दर परमेश्वर का जीवन बढ़ायेगा और तब हमारे अन्दर से दूसरों के लिये बहेगा। हमें लगातार दूसरों को समर्थ, जीवनदायक सेवकाई और सेवा देनी है।

जैसा हम दूसरों के लिये प्रार्थना करते प्रचार करते वचन सिखाते, और पवित्र आत्मा के अभिषेक के आधीन बढ़ौतरी के वचन बांटते, हम जीवन देने वाले सेवक हैं जो दूसरों को आशीष देंगे और बढ़ायेंगे। यदि हम अपने समय व प्रयासों में स्वार्थी बन जायें और लगातार पवित्र आत्मा के जीवन के बहाव न करना दूसरों की सेवा व सेवकाई में चुन लें – तो पवित्र आत्मा का अभिषेक हमारे अन्दर रूक जायेगा। हमारा इरादा लगातार और ताजा पवित्र आत्मा से प्राप्त करने का है (इफिसियों 5:18,19) और तब "जीवित जल" दे दें जो हमें सेवकाई के द्वारा प्राप्त हुआ कि दूसरों की सेवा के लिये दे सकें (यूहन्ना 7:37–39)।

आप इस सिद्धान्त को मत्ती 25:14–30 में पढ़ सकते हैं। उस सेवक के साथ क्या हुआ जिसने वरदानों के साथ कुछ नहीं किया और उस अभिषेक का जो परमेश्वर ने उसे दिया?

3. अभिषेक सीमित हो सकता या बंद हो सकता है

हमने सीखा है कि अभिषेक व्यक्ति है और परमेश्वर के आत्मा की उपस्थिति है। पवित्र आत्मा मूर्तरूप नहीं है या व्यक्तित्वहीन नहीं है। परमेश्वर आत्मा परमेश्वर का व्यक्ति है।

धर्मशास्त्र प्रगट करता है, पवित्र आत्मा "उदास" भी हो सकता है (इफिसियों 4:30)। इसका मतलब है कि उसे निराश या दुःखित करना, चोट पहुंचाना या परेशान होना। पवित्र आत्मा को "बुझाया" जा सकता है (1 थिस्सलुनीकियों 5:19)। ये शब्द में एक विचार है जो दबाया गया बुझाया गया जैसे आग को पानी से बुझाया जाता है।

क. पवित्र आत्मा को बुझाना। हम कैसे पवित्र आत्मा को बुझाते हैं? ये अक्सर उस समय होता है जब लोग इसके विषय रूकावट डालते या पवित्र आत्मा के कार्य के प्रति उदासीन होते हैं। यदि लोग पवित्र आत्मा के सुधार करने में इच्छा नहीं रखते या वे उसके कार्य को रोक सकते हैं (बुझा सकते)।

दूसरी ओर जब हमारे मानव प्रयास या जोश पवित्र आत्मा के कार्य का स्थान ले लेते हैं। बहुत सी कलीसियाएं हैं जहां लोग अपने रीति रिवाज़ों पर अधिक चलते हैं हर सप्ताह और पवित्र आत्मा के ताजे कार्य का कोई अपनी सेवा में स्वागत नहीं – जब ऐसा होता है – तो वह कार्य करने के लिये स्वतंत्र नहीं है – इस प्रकार आत्मा को "बुझाते" हैं।

और भी दूसरी जगहें हैं जहां लोग इस प्रकार "कार्य" करना चाहते हैं मानो पवित्र आत्मा उपस्थित है। वे आस पास कूदते, चिल्लाते, हिलते या ऐसी चीज़ें/हरकतें करते। ये सच है कि जब पवित्र आत्मा कार्य करता है तब शारीरिक प्रगटीकरण होता है पर यदि ये एक रूप में किया जाता है और पवित्र आत्मा के असली कार्य के उत्तर में नहीं है, तो ये व्यवहार भी पवित्र आत्मा के वास्तविक कार्य को "बुझा" सकता है जो वास्तव में उसकी उस क्षण करने की इच्छा है।

किसी भी समय जब लोग पवित्र आत्मा के कार्य के विकल्प को करने को चुनते हैं तो वह इतना स्वतंत्र नहीं कि जैसी इच्छा रखता कार्य कर सके – इस प्रकार वह बुझाया जाता है।

इन सभी उदाहरणों में क्या चीज़ एक सी (सामान्य) है? वे सब मनुष्य के नियंत्रण करने के प्रयासों को प्रगट करते हैं या परमेश्वर के कार्यों की नकल करते। लोग ये निर्णय कर सकते हैं कि वे विशेष प्रकार के रूप में आरामदायक हैं जो वे अपनाना चाहते हैं। हर सप्ताह यही चीज़ या तरीका अपनी अराधनाओं में अपनाया जाता है।

दुर्भाग्यवश, ये पवित्र आत्मा को आराधनाओं में असली कार्य करने में रूकावट पैदा कर सकता है कि वह अपने जीवन, शक्ति, चंगाई और

लोगों का अभिषेक न कर सके। कोई जगह व निमंत्रण नहीं कि वह आकर कार्य कर सके। इन घटनाओं में मानव की इच्छा पवित्र आत्मा की इच्छा का विरोध करती है और पवित्र आत्मा "बुझ जाता" या कार्य करने को स्वतंत्र नहीं है।

बाइबल विशेष रूप से मानव देह का पवित्र आत्मा की उपस्थिति का स्थान लेता है *"ना बल से, न शक्ति से पर मेरी आत्मा के द्वारा" ये यहोवा का वचन है"* (जकर्याह 4:6)।

पास्टर से पास्टर तक : कलीसिया के अगुवे – आपकी अपनी शैली या तरीका पवित्र आत्मा के काम को सीमित कर सकता है। हर समय जब विश्वासियों का झुण्ड जमा होता है तो हमें हमेशा सावधान होना चाहिये कि पवित्र आत्मा क्या करना चाहता है।

वह अच्छे, कोमल तरीके से बढ़ना चाहता हो और चंगाई देना चाहता हो। पवित्र आत्मा शक्ति से आ सकता और बन्दियों को स्वतंत्र कर सकता है। वह आराधना के बीच विजय का जश्न करता है, विश्वास बनाने के लिये और विश्वासियों की आशा बढ़ाने हेत् या वह महान रूप से कायल करता और पश्चाताप की इच्छा कराता है उनसे जो अपनी असफलताओं को लेकर परमेश्वर की उपस्थिति में है।

बात ये है, हमें हमेशा पवित्र आत्मा का स्वागत करना चाहिये और अपनी आराधना में काम करने देना चाहिये। हमें प्रार्थना करना है, सुनना और उसके निर्देश और भविष्यवाणी के वचनों को जो आते, लेना चाहिये। तब हमारी सेवकाई की 'शैली' या प्रचार, जो पवित्र आत्मा कर रहा है उससे मेल खाना चाहिये।

उदाहरण के लिये यदि हम उत्साहित होते या अपने को देते जब पवित्र आत्मा शान्ति और मेल करना चाहता (भजन 46:10)। उस क्षण हम उसके काम को बुझाते हैं यदि जश्न के समय की अनदेखी करते जो आराधना में उठता है तो हम विजय के कार्य

को रोकते हैं हमें आराधना के समय चुप रहना है और हर एक जो वहां है उन्हें प्रभु की बाट जोहनी है और उसके व्यक्तित्व से सुनना है।

पवित्र आत्मा के साथ चलना

ये अत्याधिक महत्वपूर्ण है कि कलीसिया के अगुवे होकर हम पवित्र आत्मा के प्रति पहचान और संवेदनशीलता का विकास करते हैं। ये वह सबसे उत्तम बढ़ाया हुआ प्रार्थना के लिये समय होता – इससे पहले कि विश्वासी आयें (जमा हों) ये प्रार्थना समय वो नहीं होना चाहिये जिसमें परमेश्वर से आशीष मांगें जो आपने पहले ही विचार कर लिया है। ये एक अवसर आपको हृदय समर्पित करने का व परमेश्वर की योजना में होना है – और उसकी बाट जोहें कि वह क्या करना चाहता है! सभा के बीच में समय निकालो और इन्तजार करके सुने और पहचाने।

आप ऐसे व्यक्ति हो जायें कि जो कुछ परमेश्वर करना चाहता है उसके प्रति समर्पित हों, ये उसकी कलीसिया है और ये उसके लोग हैं, आप वहां उनके भण्डारी हैं उनकी देखभाल कर उन्हें शिष्य बनायें। पर सबसे महत्वपूर्ण ये है – आपकी भूमिका है कि लोगों को परमेश्वर की ओर संकेत करें और उन्हें सिखायें कि हर चीज़ में कैसे पवित्र आत्मा को उत्तर देना है!

पवित्र आत्मा छुटकारे का कार्य कर सकता है, व्यक्ति में शीघ्रता से आराधना के बीच चंगाई या बढ़ौतरी कर सकता है। नहीं तो इस प्रकार का कार्य में महीनों लग जायेंगे या फिर कभी नहीं होगा, बिना पवित्र आत्मा की सेवकाई के उनके लिये उन क्षणों में नहीं हो सकेगा। तो आइये पवित्र आत्मा के साथ चलें और हर समय जब हम जमा होते हैं उसके कार्य में सहयोग करें।

ख. पवित्र आत्मा को उदास करना। धर्मशास्त्र भी पवित्र आत्मा के उदास होने के विषय में बताता है, (इफिसियों 4:30) "उदास करने" का मतलब है उसे दुःखी और निराश करना। पवित्र आत्मा को

दुःखित उन हर बात से जो हम होने देते या अपने हृदयों में बना लेते हैं, कर सकते हैं।

हम अपना व्यवहार आदतें, विचार वचन या कार्य कर सकते हैं – जो कुछ भी मसीह की तरह नहीं है वह पवित्र आत्मा को उदास करेगा।

"और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिये छाप दी गई है, सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध और कलह और निन्दा सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाये। और एक दूसरे पर कृपालु, और करुणामय हो और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किये, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो!" (इफिसियों 4:30–32)।

पौलुस का इफिसियों के मसीहियों को समझने में सहायता करना कि वे पवित्र आत्मा के मन्दिर हैं दोनों व्यक्तिगत रूप से (1 कुरिन्थियों 6:19) और साथ में मसीह की देह के (1 कुरिन्थियों 3:9–17)।

इसलिये कि परमेश्वर का आत्मा हम में बास करता है हम उसके साथ करीबी सम्बन्ध रख सकते हैं। पवित्र आत्मा शोकित हो सकता है इसलिये कि वह हमसे प्रेम करता है (रोमियों 5:5)। आइये किसी भी विचार या कार्य से अलग हो जायें जो पवित्र आत्मा को जो हम में बास करता उसे दुःखित/शोकित करता है।

आत्मा और वचन

ऐसे अगुवे हो सकते हैं जो ये कहें कि वे पवित्र आत्मा के कार्यों का अपने बीच में स्वागत करते हैं। पर वे अखड़ या ढीठ हो सकते हैं परमेश्वर के वचन के ध्यानपूर्वक अध्ययन की अनदेखी करके और उन तैयारियों से जो शिक्षण में आवश्यक है और दूसरों को प्रभु के मार्ग में शिष्य बनाना। *"वे पवित्र आत्मा को कार्य करने देंगे"।* इस प्रकार की विचार धारा गलत है, और ये अगुवे के जीवन में गम्भीर समस्या पैदा कर सकती है साथ ही कलीसिया में भी। ये व्यवहार सुस्ती के लिये बहाना बन सकता है या अनुशासन की कमी जिसे परमेश्वर आशीष नहीं देगा।

बाइबल अगुवों के लिये स्पष्ट रूप से इस विषय पर बोलती है, *"अपने आपको परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर जो लज्जित होने न पाये और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो"* (2 तीमुथियुस 2:15,16)।

अगुवों की तरह हमें हमारे हृदयों को अधिक प्रार्थना के साथ तैयार करना चाहिये और अपने दिमाग को परमेश्वर के वचन से भरना चाहिये। हमें धर्मशास्त्र का अध्ययन सावधानी से करना चाहिये और शिक्षण को परमेश्वर के वचन से तैयार करना चाहिये यह उनकी सहायता करेगा जिन्हें हम मसीह यीशु के परिपक्व चेले बनने में अगुवाई करते हैं। हमें गलत नहीं सिखाना चाहिये, झूठे धार्मिक सिद्धान्त या संसारिक विचार जो अध्ययन की कमी से है और परमेश्वर के वचन की सत्यता से जानकारी नहीं है। हम जो दूसरों को सिखाते उससे हमारा न्याय होगा (याकूब 3:1)।

जब हम परमेश्वर के वचन से तैयार हुए हैं हम पूरी तरह से पवित्र आत्मा के अभिषेक की आशा कर सकते हैं – समर्थ करने के लिये और परमेश्वर के सत्य वचन को प्रचार करने के लिये। हम आशा कर सकते हैं कि पवित्र आत्मा हमें सेवकाई के उन क्षणों में इस्तेमाल करें और ये भी अपेक्षा है उसकी सामर्थ चिन्ह और चमत्कार हैं।

यदि हम बाइबल अध्ययन करने और प्रार्थना करने में सावधान नहीं हैं तो हम अपने ही विचारों से काम करेंगे या संसार की बातों में। जब हम परमेश्वर के वचन को प्रस्तुत नहीं कर रहे ना ही अपने जीवनों और सेवकाई में पूरी तौर से मसीह को प्रदर्शित नहीं कर रहे – तो फिर पवित्र आत्मा हमारा अभिषेक कैसे करेगा?

स्वतः अभिषेक

बाइबल ये सिखाती है कि ऐसा समय भी है कि पवित्र आत्मा हमारे मुंहों को सही वचनों से भर देगाः *"जब वे तुम्हें पकड़वायेंगे तो ये चिन्ता न करना कि हम किस रीति से या क्या कहेंगे? क्योंकि जो कुछ तुम को कहना होगा वह उसी घड़ी तुम्हें बता दिया जायेगा"* (मत्ती 10:19, ये भी देखें मरकुस 13:11 और लूका 12:11,12)। फिर भी ये

पद सताव की परिस्थिति का संदर्भ देते हैं, साप्ताहिक सामान्य मीटिंग आपके झुन्ड के लिये नहीं! इसलिये ये धर्मशास्त्र का संदर्भ को बहाने के लिये कभी इस्तेमाल नहीं करना चाहिये कि धर्मशास्त्र को सावधानी से अध्ययन न करें और सही शिक्षण की तैयारी करें।

ऐसा समय भी हो सकता है कि हमें अचानक प्रचार के किये बुला लिया जाये प्रार्थना करने या सेवा करने। मेरा मानना है कि उन क्षणों में पवित्र आत्मा से स्वतः अभिषेक (सहायता) आ जाती है। याद रखें, यह वो है जो चाहता कि यीशु को जानें और मसीह के द्वारा लोगों को उद्धार के लिये खींचें! वह हमें किसी भी परिस्थिति में ये करने के लिये इस्तेमाल करगा। हम यदि प्रार्थना और वचन में अधिक तैयार हैं तो हम परमेश्वर के द्वारा बेहतर प्रभावशाली तरीके से इस्तेमाल किये जायेंगे।

परमेश्वर चाहता है कि उसके अगुवे बुद्धिमान हो और उसके वचन में विश्वास योग्य हों। ये अगुवों के व्यक्तिगत लाभ के लिये है और उनके लिये भी जिनकी वे अगुवाई करते हैं। प्रतिदिन प्रार्थना और बाइबल अध्ययन की आदत हमारे अन्दर "आत्मिक भण्डार" बनाते हैं जिससे पवित्र आत्मा निकाल सकता है। तब पवित्र आत्मा में अपना सामर्थ जोड़ देता है, साथ में बुद्धि और ईश्वरीय आंतरिक दृष्टि देता है। ये मिलावट सुनने वाले के जीवन को बदल सकता है!

परमेश्वर का वचन हमें हमेशा कहता कि पवित्र आत्मा के लिये तैयार रहो कि वह किसी भी परिस्थिति में इस्तेमाल कर सके (2 तीमुथिसयुस 4:2; 1 पतरस 3:15)। ये परमेश्वर के वचन की सावधानी से अध्ययन और प्रार्थना के द्वारा ही पूरा हो सकता है!

4. अभिषेक की निन्दा हो सकती या दुरुपयोग हो सकता हैः

पुरुष और महिलाओं के बहुत से उदाहरण हैं जिन्होंने पवित्र आत्मा की सामर्थ का दुरुपयोग किया या निन्दा की। जब उन्होंने किया तब उनके दुर्व्यवहार ने परमेश्वर का न्याय और सुधार लाया।

क. न्यायियों अध्याय 13–16 – शिमशोन। परमेश्वर का महान वरदान शिमशोन के लिये उसकी शारीरिक शक्ति थी। जब पवित्र आत्मा उस पर उतरा (न्यायियों 13:24,25, 14:6,19, 15:14) शिमशोन पलिश्तियों के विरुद्ध जिन्होंने इस्राएलियों को सताया बहुत कार्य किया। भले ही शिमशोन के पास असाधारण वरदान था – उसके नैतिक कमज़ोरी से उसका पतन हुआ और उसका जीवन छोटा हो गया और इस्राएलियों की सेवा भी (देखें अध्याय 16)।

शिमशोन ने सोचा कि वह अपना जीवन अपनी तौर से जी सकता है और फिर भी परमेश्वर उसका अभिषेक करें। ये केवल उसकी कल्पना मात्र थी और परमेश्वर का सेवक होकर असफलता की ओर ले गई। यद्यपि बाद में उसने पश्चाताप किया और परमेश्वर ने एक बार इस्तेमाल किया। शिमशोन के जीवन और सेवकाई ने बहुत कम पूर्ति की जैसा परमेश्वर ने चाहा था उसके विपरीत निकला।

(हम और नज़दीकी से देखेंगे कि कैसे चरित्र किस प्रकार कलीसिया के अगुवे के अभिषेक पर प्रभाव डालता है – भाग 3 क1 में, "चरित्र और अभिषेक"।

ख. लैव्यव्यवस्था 10:1–13–नादाब और अबीहू। ये दोनों हारून (महायाजक) के पुत्र थे, उनका अभिषेक इस्राएलियों की सेवा व याजक पद के लिये हुआ था। बाइबल ये प्रगट करती है कि उन्होंने "दूषित (अनजान या दूसरी) आग परमेश्वर के सन्मुख चढ़ाई, एक तरीके से "जिसे उसने आज्ञा नहीं दी थी" (लैव्यव्यवस्था 10:1)। ये परमेश्वर की पहले आज्ञा के विरुद्ध किया गया था (निर्गमन 30:9)।

परमेश्वर ने याजकों को बलिदान चढ़ाने के विशेष समय और वस्तुएं ठहराई थीं। परमेश्वर की आज्ञा पालन करना और उनके तरीके सबसे उच्च प्राथमिकता में थे। ये सच है कि नादाब और अबीहू का अभिषेक याजकों के रूप में किया गया था कि वे आज्ञा का उल्लंघन कर ही नहीं सकते थे। हारून के इन दोनों बेटों पर परमेश्वर का कठोर दण्ड पड़ा क्योंकि वे सेवकाई अपनी ही तरह से करते थे (लैव्यव्यवस्था 10:2)।

कलीसिया के अगुवे होकर हमें दोनों पवित्र आत्मा की अगुवाई का व सिद्धान्तों और परमेश्वर के वचन की आज्ञा पालन करना चाहिये। हमें उस जाल में नहीं गिरना चाहिये कि अपनी ही मर्जी से सेवकाई करना और कलीसिया की सेवा करनी है। हमें सभी बातों को अपनाना है जो वह अपने वचन के द्वारा प्रभावशाली सेवा के लिये प्रगट करता है और अपनी शक्ति भर करना चाहिये।

पास्टर से पास्टर तक : जिन्हें परमेश्वर (कलीसिया के अगुवों को) अभिषेक के लिये चुनता है विशेष करके उनको जिन्हें परमेश्वर महान रूप से इस्तेमाल करता है – ये सोचते हैं कि धर्मशास्त्र की मुख्य आज्ञा उनके लिये लागू करने के लिये नहीं है। वे भूल जाते हैं कि जो कुछ वे करते हैं सब कुछ पवित्र परमेश्वर की आंखों के सामने किया जाता है (लैव्यव्यवस्था 10:3)।

हम सबने उन पुरुष और महिलाओं के बारे में सुना है जिन्हें परमेश्वर महान रूप से इस्तेमाल कर रहा है जो नैतिक असफलता में गिर जाते हैं, आर्थिक और दूसरी बातों में व भयंकर अपराधों व पापों में गिर जाते हैं। ये असफलताएं उन पर बहुत कम अकेले रूप में आती है। वे साधारणतः छोटी सहमति से आरम्भ होता है और बहाने वचन के उल्लंघन की ओर बढ़ती है और पूरी रीति से असफल होते हैं। (याकूब 1:14,15)।

हमें ये नहीं भूलना चाहिये कि परमेश्वर पवित्र है और हमें भी पवित्र होने के लिये बुलाया है (लैव्यव्यवस्था 11:44, 1 पतरस 1:16)। परमेश्वर का वचन उसकी आज्ञाएं, उसके विचार हर एक विश्वासी के लिये हैं और मसीह के अनुयायियों के लिये विशेषकर उसके बुलाये हुए और अभिषिक्त अगुवे!

ग. गिनती 11:16–30 – प्राचीन। बाइबल इस्राएलियों के घूमने वाली घटना का रिकार्ड करते हैं जब परमेश्वर ने अपना आत्मा 70 प्राचीनों पर उंडेला और वे नबूवत करने लगे (पद 25) वहां दो पुरुष थे जो दूसरों के साथ उपस्थिति नहीं हुए थे पर अपने ही तम्बुओं में थे आत्मा उन पर भी आया और वे भी नबूवत करने लगे (पद 26)।

ije'oj d ifr vkKkdkfjrk%
gekjk iFke egRo

यहोशू जो उस समय मूसा का सहायक था, उसने कहा कि इन दोनों पुरुषों को मना करो और नवूबत करने से रोक दो (पद 28) पर मूसा ने यहोशू को डांटा और भविष्यवाणी की इच्छा प्रगट की कि परमेश्वर के सभी लोगों को पवित्र आत्मा मिले (पद 29 इसे भी देखें योएल 2:28,29; प्रेरित 2:14–21)।

यहोशू का अच्छा इरादा था, कि ये दोनों व्यक्ति रीति से अलग नबूवत कर रहे हैं जबकि वे और प्राचीनों के साथ सम्मलित नहीं थे। पर यहोशू गलती में था ये सोचने में कि ये निश्चय करना कि कब और किसके द्वारा परमेश्वर बोलेगा – ये उसकी जिम्मेवारी थी।

पास्टर से पास्टर तक : जब अगुवे अपने स्वयं के नियंत्रण को काम में लाते या पवित्र आत्मा के कार्यों का सामना करते, तो वे गलती पर हैं। अक्सर हमारी अच्छी प्रेरणा से इच्छा होती है, "सब कुछ कायदे – करीने से किये जायें" (1 कुरिन्थियों 14:40) पर हमारे मार्ग/तरीके परमेश्वर के मार्ग नहीं हैं (यशायाह 55:8,9)।

हमारे मानव स्तर जिससे हम आराम में हैं परमेश्वर अपने दिये गये क्षणों में करने की इच्छा रखता है।

परमेश्वर असाधारण रूप से चल सकता है, बिना किसी सफलता के और असाधारण तरीकों से। बालाम की गधी पर ध्यान दो (गिनती 22:22–40) और यीशु का धूल पर थूक कर इस्तेमाल अंधे की चंगाई के लिये करना (यूहन्ना 9:1–6)।

हम महान फसल के समय में जी रहे हैं और परमेश्वर के आत्मा के उंडेले जाने के समय में। असाधारण घटनाएं, आश्चर्यकर्म, भविष्यवाणियों का कहा जाना और दूसरे परमेश्वर की आत्मा का प्रगटीकरण ये संसार में बढ़ रहा है। हमें पहचान इस्तेमाल करना चाहिये और केवल स्वीकार ही नहीं या सब पर विश्वास करना (मत्ती 7:21–23) पर हमें ये भी सीखना है कि सहयोग करें और पवित्र आत्मा के द्वारा दिये गये किसी भी क्षण में चलें।

वे हम नहीं जो निश्चय करते हैं कि कब, किसके द्वारा से पवित्र आत्मा कार्य करेगा। पात्र जिसे परमेश्वर इस्तेमाल करेगा वह निश्चय सिद्ध नहीं है। हम में से कोई नहीं पर हम वो हैं जिनके द्वारा से परमेश्वर ने कार्य करने का निश्चय किया।

फिर भी ये नोट करना है कि धर्मशास्त्र भी इसे स्पष्ट करता है कि उनके साथ शामिल न हों जो पाप में जीते और गलत सिखाते हैं (1 तीमुथियुस 6:3–5; 2 तीमुथियुस 3:1–5)। हमें सही तरीके से भविष्यवाणी को जांचने में सावधान होना चाहिये (1 कुरिन्थियों 14:29)। हमें संसार का बाहरी स्तर मूल्यांकन के लिये इस्तेमाल नहीं करना चाहिये या किसी भाई या बहन को जानने के लिये (2 कुरिन्थियों 5:16,17)।

पास्टर होकर, अगुवाई करने की अपनी इच्छा में, हम पर स्वयं नियंत्रण करने के प्रयासों की परीक्षा आ सकती है। तब हम दखल करने के खतरे में है या अपने बीच पूरी तौर से पवित्र आत्मा के कार्य को समाप्त करने पर है (जैसा यहोशू ने लगभग किया)।

हम जिनकी सेवा करते उन्हें चेला बनाने में समय लेना चाहिये कि कब और कैसे भविष्यवाणी करनी है। पर जैसा वे सीखते और

बढ़ते तो हमें ये इच्छा रखना चाहिये कि उनके द्वारा पवित्र आत्मा को काम करने दें।

याद रखें पास्टर होकर हमारी भूमिका ये है कि लोगों की चेले की नाईं बढ़ने में अगुवाई करें। इसका मतलब ये है – दूसरी चीज़ों के साथ कि हम उन्हें सिखाते हैं और उन्हें छोड़ते हैं – कि पवित्र आत्मा की अगुवाई को प्राप्त कर उसमें प्रति उत्तर दें।

घ. प्रेरित 5:1–11; 8:9–24–हनन्याह और सफीरा; शिमौन जादूगर। प्रेरितों की पुस्तक प्रारम्भिक कलीसिया के दो अलग अलग पवित्र आत्मा दुरुपयोग का वर्णन करती है।

1) प्रथम हनन्याह और सफीरा (प्रेरित 5:1–11)। वे प्रारम्भिक कलीसिया की अगुवाई को धोखा देने का प्रयास कर रहे थे – जमीन के बेचे जाने पर। जब पतरस ने उनका सामना किया उसने उनके इस अपराध को प्रगट किया कि "पवित्र आत्मा से झूठ बोला" (पद 3)।

पाठ से स्पष्ट है कि विषय ये नहीं था कि कुल कितना पैसा उन्होंने दिया (पद 4) बल्कि वे उनके दिखावटीपन के लिये जांचे गये। परमेश्वर इस प्रकार की दिखावट का सामना कर रहा था और धार्मिक आत्मा जो शास्त्रियों और फरीसियों पर चिन्ह लगा रहा था (मत्ती 23:1–36; 6:1–6; मरकुस 12:38–40 आदि)।

वे जो मसीह के पीछे चलते हैं उन्हें धार्मिकता होनी चाहिये जो फरीसियों से बढ़कर हो (मत्ती 5:20) ये हृदय की धार्मिकता होनी चाहिये–बाहरी रूप नहीं या खाली धार्मिकता का दिखावा/ऐसा कहा जाना चाहिये कि यदि मनुष्य के अन्दर धार्मिकता है, तो वह स्वयं बाहरी व्यवहार में दिखाई देगा और ये सच्ची धार्मिकता है (मत्ती 23:25,26)।

ऐसा लगता है हनन्याह और सफीरा प्रारम्भिक कलीसिया में पवित्र आत्मा के उत्तम और असली रूप को अपने व्यक्तिगत लाभ के लिये इस्तेमाल कर रहे थे। वे दिखा रहे थे कि वे कार्य में सहयोग दे रहे थे पर स्पष्ट रूप से स्वार्थी उद्देश्य से कर रहे थे। उनका कार्य ये प्रगट करता है कि उन्होंने प्रेरितों के अधिकार का सम्मान नहीं किया जिनको परमेश्वर ने एक अगुवों की तरह नियुक्त किया था – और अन्त

में पवित्र आत्मा का आदर नहीं किया जिसके द्वारा प्रेरितों ने ये अधिकार प्राप्त किया था।

परमेश्वर ने हनन्याह और सफीरा का हृदय देखा और उन पर तुरन्त कठोर दण्ड लाया (5:5,9,10)।

परमेश्वर की इच्छा एक शुद्ध और पवित्र कलीसिया की है (इफिसियों 5:27) इसे पूरा करने के लिये कलीसिया के प्रभु को बिना रूके अपनी दुल्हन को बदलने व शुद्ध करने के काम में लगना होगा (इफिसियों 5:26,27)। वह हमें काफी प्रेम करता कि अनुशासित करें व ताड़ना दे (1 पतरस 4:17; इब्रानियों 12:3–11)।

2) पवित्र आत्मा के अभिषेक के दुरुपयोग की दूसरी घटना कलीसिया में पाई जाती है प्रेरित 8:9–24। यहां हमारा सामना शिमौन जादूगर से होता है जो नया नया मसीही बना था (पद 13) जैसे शिमौन फिलिप्पुस के पीछे हो लेता है, वह पवित्र आत्मा के द्वारा किये जाने वाले महान आश्चर्यकर्मों को देखता है।

जब शिमौन ने प्रेरितों को पवित्र आत्मा की सामर्थ में दूसरों की सेवा करते देखा, उसने वह सामर्थ पाना चाहा। उसके अपरिपक्व व अभी भी संसारिक विचारों में शिमौन ने प्रेरितों को कुछ पैसे देना चाहा कि वह भी ऐसी सामर्थ प्राप्त कर ले (पद 18,19)।

पतरस ने पवित्र आत्मा की शक्ति से शिमौन के इरादों को जान लिया, *"क्योंकि मैं देखता हूं कि तू पित्त की सी कड़वाहट और अधर्म के बन्धन में पड़ा है"* (पद 8:23)। ये स्पष्ट था कि शिमौन का स्वार्थी उद्देश्य था। उसका हृदय पाप में बंधा था, उसने ये नहीं चाहा कि पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर की महिमा हो और दूसरों की सेवा करें।

"कड़वाहट" इस संदर्भ में जलन या स्पर्धा की भावना थी (याकूब 3:14)। शिमौन दूसरों के सामने प्रभावशाली और महत्वपूर्ण होना चाहता था शायद उस तरह जैसा वह जब जादूगर था (प्रेरित 8:9–11)। वह अपने व्यक्तिगत लाभ के लिये परमेश्वर की सामर्थ चाहता था।

पास्टर से पास्टर तक : आज भी हम ऐसे अगुवों का सामना करते हैं जो सत्य में वरदान पाये हुए, अभिषिक्त और परमेश्वर के द्वारा इस्तेमाल किये जाते हैं। पर दुःख की बात है कि वे जितना उन्हें सोचना चाहिये उसके बदले वे अपने आपको बहुत ऊंचा सोचने लगते हैं। वे इस प्रकार हरकत करते मानो शक्ति उनमें ही है और दयावान परमेश्वर में नहीं है (2 कुरिन्थियों 4:5–7)। वे सेवकाई को इस्तेमाल अपना नाम बड़ा करने के लिये करते, धन प्राप्त करने के लिये या दूसरों को प्रभावित करते कि वे उनके पीछे हो लें।

बहुत से अगुवे इस प्रकार शुरुआत नहीं करते। अच्छे अगुवों को परमेश्वर को देखने की भूख होती है कि उसे कार्य करता देखें और जब बहुत से लोगों का जीवन उसकी सामर्थ से बदल जाता है तब उसकी महिमा होती है। पर यदि हम सावधान या सतर्क नहीं है कि अपने हृदय को देखें (नीतिवचन 4:23) तो हम भटक सकते हैं।

शैतान इन्कार नहीं कर सकता, ना ही परमेश्वर की सामर्थ पर विजयी हो सकता है (यूहन्ना 1:5)। तो इसके बदले शैतान अगुवे के हृदय को धोखा देने और जहर देने का प्रयास करेगा (2 कुरिन्थियों 2:11, 11:13–15), उसे ऐसा पात्र बना दे जो स्वयं की सेवा करता और आगे को परमेश्वर और उसके अभिप्राय की सेवा नहीं करता।

विश्वासयोग्यता में मज़बूत पकड़े रहना

शिमौन और हनन्याह सफीरा के मामले में हमें चितौनीपूर्ण और अच्छा पाठ सिखाया गया है। हमें मालूम होना चाहिये कि यदि हम अनुभूति देते हैं तो शैतान के पास हमारे विचारों और हरकतों पर प्रभाव डालने की शक्ति है (प्रेरित 5:3)। हमें उसे कोई जगह नहीं देनी है (इफिसियों 4:27)।

फिर भी जब अगुवे असफल होते हैं – धार्मिकता के बदले पाप को चुनते हैं – तो ये गम्भीर समस्या है। प्रथम क्योंकि हमारा परमेश्वर

पवित्र है पाप हमारे परमेश्वर के साथ के सम्बन्ध को तोड़ता है। मसीह के सभी पीछे चलने वालों को बुलाया गया और आज्ञा दी गई है कि व्यक्तिगत पवित्रता और नैतिक शुद्धता रखें (1 पतरस 1:13–19)।

दूसरा, हमें अगुवे बनने के लिये बुलाया गया है जिन्हें परमेश्वर के लोगों की देखभाल सौंपी गई है। जब हम पाप को रास्ता देते हैं तो हम उस विश्वास को तोड़ देते हैं और लोगों के लिये जिनकी अगुवाई करते बुरे उदाहरण बन जाते हैं। हम भेड़ों को भी नरक के हमले के लिये कमज़ोर छोड़ देते हैं (1 पतरस 5:2–4; प्रेरित 20:28–30; इब्रानियों 13:7,17; याकूब 3:1)। यदि शैतान एक अगुवे को नाश कर सकता है तो भेड़ें तितर–बितर हो जायेंगी और पतन की ओर चलेंगी। (मरकुस 14:27)।

हमारी असफलताएं भी हमारे परिवारों को चोट पहुंचाती है और प्रतिष्ठा को हम परमेश्वर के परिवार को भी चोट पहुंचाते और अपने कलीसिया के विश्वासयोग्य अगुवे की प्रतिष्ठा को भी हानि पहुंचाते हैं जिन्हें लोग शक की निगाह से देखते हैं (पौलुस के निर्देश प्राचीनों को चुनने के लिये देखें 1 तीमुथियुस 3:1–7)। शैतान विशेषरूप से कलीसिया के अगुवे पर निशाना लगाता है अपनी सब नष्टकारी युक्तियों के साथ। पर याद रखें जब तक आप उसकी परीक्षा में पड़ना न चुनें वह आप से पाप करवा नहीं सकता। शैतान का सामना करो तो वह तुम्हारे पास से भाग जायेगा (याकूब 4:7)।

आपके अगुवाई की भूमिका और अभिषेक एक सौभाग्य है – ये आवश्यक और गम्भीर जिम्मेवारी है। बाइबल हमें विश्वासयोग्य होने और सही अन्त करने के बहुत से उदाहरण देती है (मत्ती 24:13, फिलिप्पियों 3:17,18, 2 तीमुथियुस 4:6–8)। हमें अन्त तक अपनी आशा और मसीही में विश्वास को थामें रहना है, झुण्ड के लिये, यीशु के लिए और महिमा के लिये विश्वासयोग्यता के उदाहरण रहना है।

घ. पुराना नियम, पूर्व–प्रकार का अभिषेक

जैसा हम अपने अध्ययन को जारी रखे हुए हैं आइये, पुराने नियम के कुछ पूर्व प्रकार के अभिषेक की जांच करें। जैसा पहले संदर्भ में

दिखाया गया है कि पुराना नियम हमारे निर्देशों और उदाहरण के लिये दिया गया था (रोमियों 15:4, 1 कुरिन्थियों 10:11)। ये हमें अभिषेक की पूरी तस्वीर समझने में सहायता करेगा–जैसा वायदा किया गया है कि जो नये नियम के प्रारम्भिक कलीसिया द्वारा पूर्ण किया गया है (देखो प्रेरित अध्याय 2)।

1. चिन्ह के प्रकार का

पुराने नियम में पवित्र आत्मा के कार्यों के बहुत से चिन्ह रूपी दिये गये हैं।

क. आग – तम्बू में और बलिदान की वेदी पर धूप जलाने के द्वारा – लगातार लौ जलती रहती जो मूल रूप से परमेश्वर ने जलाई (लैव्यव्यवस्था 9:24; 2 इतिहास 7:1–3)। इस लौ को हमेशा जलती रहने देना था (लैव्यव्यवस्था 6:13)।

इसी प्रकार आग का स्वरूप जो परमेश्वर की जीवित आत्मा का प्रतीक है – नये नियम में भी देखा जाता है (मत्ती 3:11; प्रेरित 2:3)।

ख. पानी – पानी वह चिन्ह है जो पुराने नियम में पवित्र आत्मा को आत्मिक ताज़गी और परमेश्वर की आशीष के लिये वर्णन किया गया है। संसार के इस हिस्से में जहां पानी की कमी थी – चिन्ह के रूप में पानी का इस्तेमाल स्पष्ट रूप से परमेश्वर का आत्मा का लोगों से बोलने के लिये इस्तेमाल किया गया है (भजन 23:2; यशायाह 35:6,7)।

यहेजकेल ने दर्शन देखा कि परमेश्वर के निवास से एक नदी बह निकली (यहेजकेल 47:1–12)। ये परमेश्वर के आत्मा का असीमित बहाव प्रगट किया गया है यिर्मयाह "जीवित जल के सोते" इस्तेमाल करता है (यिर्मयाह 2:13; 17:13)। परमेश्वर की उपस्थिति उसके आत्मा के द्वारा – यीशु भी जीवित जल के विषय में बात करता है . . . *". . .उसके हृदय से जीवित जल की नदियां बह निकलेंगी। पर ये उसने आत्मा के सम्बन्ध में बोला . . ."* (यूहन्ना 7:37–39)। इस उदाहरण में यीशु विशेष रूप से भविष्यवाणी कर रहा था – पवित्र आत्मा के उंडेले जाने के बारे में (यूहन्ना 14:16,17; प्रेरित 2)।

ग. लहू – हम पुराने नियम में याजकों के अभिषेक के विषय में पढ़ते हैं (निर्गमन 29:19–21) (इसके विषय में विस्तार से भाग 20 में देखेंगे)।

घ. तेल – तेल का इस्तेमाल पूरे पुराने नियम में बहुत विस्तार से किया गया। खाना बनाने से लेकर बत्तियों में और शृंगार में साधारण रूप से इस्तेमाल किया गया। मंदिर के उच्च कार्यक्रमों में तेल की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

तेल विशेषरूप से पवित्र आत्मा की उपस्थिति और अभिषेक की सामर्थ का चिन्ह होता था। इसे हम राजाओं के साथ देखते हैं (1 शमूएल 10:1)। याजकों (निर्गमन 29:1–9), कोढ़ियों के शुद्धिकरण के रीति–रिवाज में (लैव्यव्यवस्था 14:10–18)।

तेल आनन्द का भी प्रतीक था (यशायाह 61:3) और इसकी अनुपस्थिति दुःख या अपमान जनक माना जाता था (योएल 1:10), तेल सम्पन्नता का भी चिन्ह था (व्यवस्थाविवरण 33:24) आराम/सुख का (अय्यूब 29:6) और आत्मिक पोषण का (भजन 45:7)।

एक शक्तिशाली चिन्ह की तस्वीर

पुराने नियम की ये संक्षिप्त दृष्टि से हम चिन्हों, तस्वीरों और कल्पनाओं का बड़ा भन्डार देखते हैं जो हमें काफी पवित्र आत्मा के अभिषेक और जीवनों में उसके कार्यों को प्रगट करते हैं इस प्रकार के ये पवित्र आत्मा के अभिषेक और कामों को प्रस्तुत करते हैं जो आज हमारे लिये उपलब्ध है! ये अभिषेक हमारे स्वर्गीय पिता के वायदों की पूर्ति है (योएल 2:28–32), अपना आत्मा लोगों पर उंडेलना (प्रेरित 2:33–39)।

सब में से एक सबसे शक्तिशाली–पवित्र आत्मा के अभिषेक की चिन्हों की तस्वीरें अभिषेक के तेल का बनाया जाना और इस्तेमाल करना है।

नीचे दिये गये हिस्से का अध्ययन पवित्र आत्मा के अभिषेक करने के स्वाभाव और कार्य के आंतरिक समझ देगा।

"फिर यहोवा ने मूसा से कहा, तू मुख्य मुख्यसुगन्ध द्रव्य अर्थात् पवित्र स्थान के शेकेल के अनुसार पांच सौ शेकेल अपने आप निकाला हुआ गन्धरस और उसका आधा अर्थात् अढ़ाई सौ सुगन्धित दाल चीनी और अढ़ाई सौ शेकेल सुगन्धित अगर और पांच सौ शेकेल तज, और एक हीन जलपाई का तेल लेकर उनसे अभिषेक का पवित्र तेल अर्थात् गन्धी की रीति से तैयार किया हुआ सुगन्धित तेल बनवाना, यह अभिषेक का पवित्र तेल ठहरे। और उससे मेल मिलाप वाले तम्बू का, और साक्षीपत्र के सन्दूक का और सारे सामान समेत मेज़ का और सामान समेत दीवट का और धूपवेदी का, और सारे सामान समेत होम वेदी का और पाये समेत हौदी का अभिषेक करना और उनको पवित्र करना जिससे वे परमपवित्र ठहरें और जो कुछ उन से छू जायेगा वह पवित्र हो जायेगा। फिर हारून का उसके पुत्रों के साथ अभिषेक करना और इस प्रकार उन्हें मेरे लिये याजक का काम करने के लिये पवित्र करना। और इस्राएलियों को मेरी यह आज्ञा सुनाना, कि वह तेल तुम्हारी पीढ़ी पीढ़ी में मेरे लिये पवित्र अभिषेक का तेल होगा। वह किसी मनुष्य की देह पर न डाला जाये और मिलावट में उसके समान और कुछ न बनाना, वह तो पवित्र होगा, वह तुम्हारे लिये पवित्र होगा, जो कोई उसके समान कुछ बनाये व जो कोई उसमें से कुछ पराये कुल वाले पर लगाये वह अपने लोगों में से नाश किया जाये"। (निर्गमन 30:20–33)।

अभिषेक का तेल अलग किया हुआ परमेश्वर के लिये पवित्र था। इस्राएलियों को ये तेल इसी प्रकार देखना था। ये मिश्रण अलग किया हुआ मूल पवित्र तेल था जिसे केवल पवित्र कार्यक्रम के लिये इस्तेमाल किया जा सकता था (पद 31–33)।

परमेश्वर ने ईश्वरीय नुस्खा दिया था (पद 22–25)। उसे दूसरे कार्यों के लिये मिलावट नहीं करना था। इसका उपयोग इस्राएल से बाहर कोई भी नहीं कर सकता था (पद 33)।

दैवीय नियुक्ति

जैसा कि ये पवित्र आत्मा का विशेष अभिषेक था, इस अभिषेक के तेल का सख्त नियम था ये तीन बहुत महत्वपूर्ण सिद्धान्त प्रगट करता है।

प्रथम, परमेश्वर की अपने आत्मा के अभिषेक की सार्वभौम इच्छा है। जैसा उसने अभिषेक के तेल की सामग्री बताई है (निर्गमन 30:22–25)। केवल परमेश्वर ही अपने अभिषेक का निर्देश देता है (1 शमूएल 10:1) और कैसे ये अभिषेक व्यक्ति के जीवन के द्वारा बताया जाये (1 कुरिन्थियों 12:7,11)।

दूसरा, ये अभिषेक का तेल याजकों के लिये था जो तम्बू में सेवा करते हैं (निर्गमन 30:30)। ये किसी भी मनुष्य की देह पर नहीं उंडेला जाना था (30:32)। सभी मसीह यीशु के सच्चे विश्वासी परमेश्वर के "राजकीय याजक" हैं (1 पतरस 2:9,10; प्रकाशितवाक्य 1:6)। पवित्र आत्मा का अभिषेक लें (1 यूहन्ना 2:20–27)।

ये अभिषेक अविश्वासियों के लिये उपलब्ध नहीं है। परमेश्वर का आत्मा केवल उनमें बसता है जिनका उद्धार हो गया है और जो परमेश्वर की आज्ञा पर चलते हैं (यूहन्ना 3:5,6; रोमियों 8:14–16; 1 कुरिन्थियों 12:3)।

पास्टर से पास्टर तक : पुराने नियम में महायाजक वर्ष में एक बार पवित्रों के पवित्र स्थान में प्रवेश करता और लोगों के लिये पश्चाताप करता (लैव्यव्यवस्था 16 देखें)। हर वर्ष केवल वही सीधे परमेश्वर से सम्पर्क करता था।

क्रूस पर मसीह की मृत्यु के समय बहुत गाढ़ा, गलीचे के समान जो परदा पवित्र स्थान को ढ़ांपे हुए था वह दैवीय शक्ति द्वारा ऊपर से नीचे तक फट गया (मरकुस 15:38, साथ में निर्गमन 26:31–33 भी देखें)। ये शक्तिशाली घटना, ये प्रगट करती है कि अब सब लोगों के लिये परमेश्वर के पास जाना खुल गया है – उस समय जब मसीह के क्रूस पर मानवता पर से पाप का कर्ज़ अदा कर दिया, विश्वास के द्वारा उद्धार उसके द्वारा उन सबके लिये उपलब्ध है जो उसे ग्रहण करते हैं (रोमियों 10:9,10)।

जितने प्रभु का नाम लेते वे सब उद्धार पायेंगे (रोमियों 10:12,13)। वे सब जो विश्वास के द्वारा मसीह यीशु में उद्धार पाते हैं वे स्वतंत्र से "परमेश्वर के दया के सिंहासन" पर प्रवेश कर सकते हैं (इफिसियों 3:12; इब्रानियों 4:16, 10:19)। जहां परमेश्वर की उपस्थिति है। हालिलूयाह!

मसीहियों को अब याजक की जरूरत नहीं है या किसी और को उनके बदले परमेश्वर के पास जाना है। हर एक विश्वासी का प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध हो सकता है, साथ ही आराधना और संगीत के द्वारा भी। वे उससे बात कर सकते, प्रार्थना कर सकते, वे उससे सुन सकते हैं।

ये बराबर की पहुंच परमेश्वर तक उन सबके लिये है जो उद्धार के लिये उसके पुत्र पर विश्वास करते हैं इसीलिये विश्वासी उसके याजक कहलाते हैं, *"तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओं जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य है"* (1 पतरस 2:5, देखें प्रकाशितवाक्य 1:6)।

जिसे "आत्मिक बलिदान" के लिये हम बुलाये गये उसके द्वारा परमेश्वर को ग्रहण योग्य नहीं होते – हम पहले ही से स्वीकार किये गए मसीह यीशु के क्रूस पर बलिदान देने के द्वारा। हमारा उद्धार मसीह के द्वारा विश्वास लाने से है – हमारे किसी कर्म से नहीं (इफिसियों 2:8,9)।

इसलिये जिस परदे ने पवित्रों के पवित्र स्थान को ढांपा था – ऊपर से नीचे तक फट गया। ये चिन्ह बताता है कि हमारा उद्धार परमेश्वर की इच्छानुसार है। इसका मतलब है परमेश्वर हमारे पास उस अनुग्रह से जो कमाया नहीं जा सकता–पहुंचता है – मसीह हमारे पापों के लिये क्रूस पर मरता है।

हमारे धार्मिक प्रयास अन्त में व्यर्थ हैं और उद्धार नहीं प्राप्त कर सकते (रोमियों 3:9–20; गलतियों 2:16)। फिर भी हम जीते और अपने विश्वास को आत्मिक बलिदान के द्वारा उसकी आज्ञा पर चलकर और उसकी देह की व संसार की सेवा करके प्रगट करते हैं (याकूब 2:14–26)।

पास्टर, आपको अक्सर क्रूस का ये मूल सत्य सिखाना चाहिये। आप जो अगुवाई करते हो आपको समझना चाहिये कि जो उद्धार उन्होंने मुफ्त में पाया है और तब उसे बताने योग्य हैं उनको जो आतुरता से उद्धार को किसी भी तरह पाने का प्रयास करते हैं उसकी अपेक्षा जो मसीह ने पहले ही कर दिया है (1 पतरस 3:15)।

तीसरा, अभिषेक का तेल किसी भी दूसरे इस्तेमाल के लिये दूसरा न बनाया जाये ना ही मिलावट या नकली बनाया जाये (निर्गमन 30:32,33)।

पुराने नियम में तेल से अभिषेक इस बात का चिन्ह था कि परमेश्वर का किसी वस्तु या व्यक्ति का अभिषेक है। इस नियुक्ति ने किसी चीज़ को समर्पित कर दिया या व्यक्ति को किसी विशेष स्थान के लिये या परमेश्वर के अभिप्रायों के कार्यों में।

प्रभु की आज्ञानुसार नियुक्ति उस अधिकार और शक्ति को लाती जो व्यक्ति को परमेश्वर की इच्छा की पूर्ति के लिये सुसज्जित करता है (1 शमूएल 16:13, यशायाह 61:1)। यही सिद्धान्त नये नियम के विश्वासियों के लिये है भले ही परमेश्वर ने उन्हें चाहे कलीसिया के भीतर या बाहर की सेवा दी है। ये उनके लिये भी सत्य है जिन्हें परमेश्वर ने विशेरूप से बुलाया है कि पूरे समय के लिये सेवकाई करें (2 कुरिन्थियों 1:21; 1 थिस्सलुनीकियों 5:24)। हमारी हर आवश्यकता को परमेश्वर उपलब्ध कराता है न केवल उसके फलदायक सेवक बनने को पर जीवन और सेवकाई में विजयी होने के लिये!

बनावटी/कृत्रिम के साथ समस्या

परमेश्वर का अभिषेक हमारे लिये उपलब्ध है ये अद्भुत खबर है! पर हमें सावधान होना चाहिये कि निर्गमन 30 की चितौनियों को न भूलें–नकली/बनावटी अभिषेक के तेल के विषय परमेश्वर ने इसे गम्भीर रूप से देखा, यहां तक कि हत्या के अपराध सा (निर्गमन 30:32,33) जिसने भी इस्राएल में इस प्रकार का पाप किया वह उनके बीच से नष्ट किया गया। बाइबल के शोधकर्ता इसे मृत्युदण्ड के रूप में देखते हैं।

ये बनावटी चीज़ बनाने का चिन्ह हमारे नये नियम के सेवकों के लिये क्या अर्थ रखता है? हमने पहले ही परमेश्वर के अभिषेक को अपने लाभ के लिये इस्तेमाल करने के पाप की जांच की है (फिलिप्पियों 1:15,16)। आज सेवकाई में ये मिलावट बहुत से दूसरे तरीकों से की जाती हैं।

कुछ लोग गलत तरह से सोचते हैं कि उनके प्रचार करने का लक्ष्य है कि लोग उत्तेजित हो जायें, इसलिये वे अभिषेक के मिलावट को अपनी उत्तेजनामय प्रचार और शिक्षण में करते हैं। कभी कभी वे उन चीज़ों को कहते हैं जिनमें लोग प्रसन्न होते हैं और सुनना चाहते हैं, भले ही वह बाइबल के विपरीत ही क्यों न हो वे कहानियों को बढ़ा चढ़ा कर बताते या भीड़ को उत्तेजित करने के लिये कुछ दूसरी तरह से तोड़–मरोड़ करते हैं।

दूसरे सेवकाई में प्रभावशाली होना चाहते हैं और अपना लाभ देखना चाहते हैं। वे अभिषेक को ऐसा बहाना बनाकर मिलाते मानो उसकी "गहरे रहस्य" को समझते हों जो कोई और दूसरा नहीं जानता (2 कुरिन्थियों 11:3,4), दूसरों को प्रभावित करने के लिये पदों का दावा करते हैं या अपने प्रभाव व अधिकारों को इस्तेमाल करते है कि दूसरे प्रभावित हो जायें या उससे अगुवे को लाभ पहुंचे।

और भी बहुत से तरीके हैं जिसमें लोग मिलावट करने की परीक्षा में पड़ते या अभिषेक का दुरुपयोग करते हैं। पर बात ये है–अभिषेक का दुरुपयोग या मिलावट करना परमेश्वर की दृष्टि में बड़ा अपराध है। ये एक प्रकार का धोखा है जब किया जाता है तो कलीसिया के अगुवे के जीवन में शैतान के राज्य को मौका देंगे। अन्त में ये परमेश्वर का न्याय व्यक्ति के जीवन पर आ पड़ेगा।

पवित्र आत्मा के अभिषेक में मिलावट नये नियम में बयान की गई हैं एक सबसे बड़ा उदाहरण जो पौलुस देता है वह "झूठे प्रेरितों" को तिरस्कार करता है– वे विश्वासियों को भटकाने में परमेश्वर के दूत की तरह बन जाते हैं (देखो, 2 कुरिन्थियों अध्याय 11)।

आज वो हैं जो परमेश्वर के अभिषिक्त संदेशवाहक लगते हैं पर वे हैं नहीं। नया नियम इनके बारे में बहुत सी चितौनियां देता है (मत्ती 7:15–20, प्रेरित 20:27–30; 2 कुरिन्थियों 11:1–15; गलतियों 1:6–10; कुलुस्सियों 2:18–23; 1 तीमुथियुस 4:1–3; 2 तीमुथियुस 3:1–9; 2 पतरस 2:1–22; 1 यूहन्ना 4:1–6; यहूदा 3–19)।

इस लेख में बाद के हिस्से में हम सात विशेषताओं का अध्ययन करेंगे जो पवित्र आत्मा के असली अभिषेक में पाये जाते हैं ये सूचित अपनी सेवकाई में सहायक होगी और साथ ही दूसरे सेवकों या कलीसियाओं के अगुवों में पवित्र आत्मा की असली उपस्थिति की पहचान में सहायक हागी।

पास्टर से पास्टर तक : सेवकाई में प्रभावशाली होने की इच्छा और पवित्र आत्मा के अभिषेक की इच्छा करना गलत नहीं है पर जो हम हैं नहीं और वैसा बनना गलत है – जिसमें ऐसी हरकत करना कि हमारा अभिषेक हो गया है।

जब हम वास्तव में अभिषिक्त हो सकते हैं तो फिर ऐसा क्यों दिखाना कि हम अभिषिक्त हैं – यदि हम अपने नहीं परमेश्वर की शर्तों पर उसे पाते हैं।

हम अभिषेक के सम्बन्ध में अपने जीवनों को पाप और धोखे से बचाव कर सकते हैं और बढ़ने और पवित्र आत्मा के असली अभिषेक में कई तरीके से कदम ले सकते हैं:

- परमेश्वर की दी हुई बुलाहट और वरदानों को आप स्वीकार करो, जलन न रखें या जो दूसरों के पास है आलोचना न करें या उनकी नकल न करें।
- अपनी सेवकाई और अपने लिये परमेश्वर की इच्छा जानने के लिये प्रतिदिन प्रार्थना करें।
- जहां परमेश्वर ने बुलाया उसमें सन्तुष्ट रहें और आप से क्या करवाना चाहता है।
- उसकी इच्छा को पूरा करने के लिये लगातार परमेश्वर की सहायता व शक्ति मांगें।
- प्रतिदिन अपने आपको याद दिलायें कि आप सेवकाई में परमेश्वर की वा दूसरों की सेवा करने के लिये हैं, अपने आप के लिये नहीं या अपने लाभ के लिये नहीं।

ये दिमाग में रखें कि कोई विशेष प्रकार का प्रचार नहीं है या अगुवाई जो अधिक "अभिषिक्त" है – मैंने अभिषिक्त अगुवों को

देखा है जो कोमलता और सभ्यता से बोलते हैं। जब वे परमेश्वर का वचन सिखा रहे होते तो लोग प्रभु में चंगे किये जाते या पवित्र आत्मा से जुड़ जाते। दूसरे अगुवे अधिक बाहरी शारीरिक दिखावा करें या जब पवित्र आत्मा उनके द्वारा दूसरों की सेवा करता तो वे अधिक जोर जोर से बोलते – कोई भी तरीका ना सही न गलत हैं।

महत्वपूर्ण बात ये है कि पवित्र आत्मा के प्रति हर समय जब प्रचार करते संवेदनशील हों। रूकें, सुनें, जो वह कह रहा उसकी ओर ध्यान दें और किसी विशेष इक्ट्ठी जगह में कुछ करता – तब अपनी शैली को पवित्र आत्मा की इच्छा से मिलायें – उस क्षण सेवा करने के लिये।

अपने को याद दिलायें कि परमेश्वर ने जैसे आप हैं वैसा ही बुलाया है – उसने विशेष वरदान किसी कारण दिया है – पवित्र आत्मा के अभिषेक के साथ और दूसरों की सेवा का कार्य करते हुए।

2. अभिषेक के तेल से पाठ/सीख

आइये उन सामग्रियों को जो अभिषेक के तेल के हैं विस्तार से जांच करें कि वे पवित्र आत्मा के अभिषेक के लिये क्या प्रगट करते हैं।

विशेषरूप से अभिषेक के तेल में गन्धरस, दाल चीनी, गन्ना, अमलतास और जैतून का तेल मिला रहता है।

क. गन्धरस। ये हल्की सोने की दवा है जो दर्द दूर करने के लिये इस्तेमाल की जाती थी – इसकी सुगन्ध अच्छी होती है इसे खुशबू वा सजावट के लिये भी इस्तेमाल किया जाता है।

ये गन्धरस छोटे यीशु को एक ज्योतिषी द्वारा भेंट दिया गया था (मत्ती 2:11)। क्रूस पर यीशु की पीड़ा कम करने के लिये गन्धरस दिया गया था फिर भी उसने लेने से इन्कार किया (मरकुस 15:23)। इस दर्द मिटाने की दवा को मसीह यीशु ने मना करके अपने मिशन को

पकड़े रहा, *"हर एक के लिये मृत्यु का स्वाद चखने को"* (इब्रानियों 2:9) इसकी सुगन्ध के कारण ये गन्धरस उन चीज़ों में एक था जो यीशु के गाड़े जाने के समय इस्तेमाल किया गया था (यूहन्ना 19:39)।

गन्धरस के इस्तेमाल पीड़ा को दूर करने का एक जरिया है वह हमारे लिये भविष्यवाणी का एक महत्वपूर्ण चीज़ है। अभिषिक्त मसीह यीशु आया कि हमारे बोझ को क्रूस पर उठा ले। उस बलिदान की जगह पर यीशु ने अपना हमें चंगा करने के अभिप्राय को पूरा किया (1 पतरस 2:24) और जो हमें मृत्यु और पाप के बन्धन से स्वतंत्र करता है (इब्रानियों 2:9, 14–18)।

अभिषेक का तेल में भविष्यवाणी का चिन्ह होकर गन्धरस हमसे बात करता है कि किस प्रकार पवित्र आत्मा लोगों को चंगाई में लाता है और उनके टूटेपन से छुटकारा देता, पाप के बन्धन और बीमारी से स्वतंत्र करता है। यशायाह भविष्यद्वक्ता इस अभिषेक की सामर्थ के विषय भविष्यवाणी के रूप में बताता है: "और अभिषेक के तेल के कारण वह जुआ तोड़ डाला जायेगा। जुए के लिये इब्रानी शब्द *"नष्ट किया हुआ"*। इस पद में उससे ऊपर जाता कि हानि किया गया या तोड़ा गया, इसका मतलब है पूरी तरह से नष्ट किया गया।

पवित्र आत्मा की सामर्थ पूरी तरह से लोगों का छुटकारा कर सकती और बीमारी को पूरी तरह चंगा कर सकती है। ये परमेश्वर की इच्छा है कि हम पवित्र आत्मा के अभिषेक में होकर इस प्रकार दूसरों की सेवा करें।

ख. दाल चीनी। बाइबल के समय में दालचीनी एक बहुत महंगा मसाला हुआ करता था। दालचीनी भी एक सुगन्धित वस्तु है पर ये अपने तीखे स्वाद के लिये जाना जाता है तो इस प्रकार अभिषेक के तेल में इस मसाले का होना हमसे उस ताज़ पोश के लिये बोलता है जो पवित्र आत्मा के अभिषेक से आता है। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने मसीह यीशु के बारे में वर्णन किया कि वह हमें आग और पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा (मत्ती 3:11)। इस पद में शब्द "आग" का अनुवाद किया गया कि ये विश्वासी के हृदय को शुद्ध करने की चीज़

है। इस अनुवाद में सत्य है पर इसका अर्थ और भी आगे जाता है। आग विस्फोटक, शक्तिशाली और भस्म करने वाली है। धर्मशास्त्र बोलता है कि यीशु अपने पिता के घर के जोश में भस्म हो गया है (यूहन्ना 2:13–17)।

अलौकिक साहस

नये नियम में इस प्रकार का अग्निमय जोश स्पष्ट उदाहरण है। पेन्तिकोस्त के दिन के पहले चेले व कुछ और लोग (विश्वासी जन) एक कमरे में एक साथ यरूशलेम में इक्ट्ठा थे (प्रेरित 1:12–14)। उन्हें यीशु के द्वारा बताया गया था कि उन्हें समस्त संसार को प्रचार करना है (प्रेरित 1:8)। फिर भी कैसे इन थोड़े से लोगों द्वारा ये विशाल कार्य पूरा किया जा सकता है? वे बड़े वक्ता नहीं थे, ना विचारक थे या पढ़े लिखे थे। वे साधारण लोग थे, एक विद्रोही संस्कृति से घिरे हुए थे जिसने उनके अगुवे को क्रूस पर चढ़ा कर मार डाला था।

ये पुरुष और महिला डरपोक नहीं थे पर वे पशोपेश में थे, अनिश्चिंत और बिना सोच के कि क्या करना है या कैसे करना है। पर वे बुद्धिमानी से इन्तजार करते रहे एकता बनाए हुए प्रार्थना में लगे हुए थे साथ ही आपसी साहस बनाए हुए थे। यद्यपि वे समझे नहीं थे–पर वे यीशु के वायदों पर अटल रहे जो उसने दिया कि वे पवित्र आत्मा की शक्ति पायेंगे (प्रेरित 1:5,8)। तो इस प्रकार वे ठहरे रहे...

"और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ और उससे सारा घर जहां वे बैठे गूंज गया और उन्होंने आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दी; और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं, और वे सब पवित्र आत्मा से भर गये और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे" (प्रेरित 2:2–4)।

चेले जो पहले घबराये हुए और अनिश्चित *भेड़ों* की तरह थे अब वे साहसी हो गये, और गवाही देते हुए, आश्चर्यकर्म करने वाले चरवाहे बन गये!

एक क्षण में उनके जीवन लगभग 120 लोग एकदम पवित्र आत्मा से भरकर बदल गये इस घटना ने सब को चौंका दिया (प्रेरित 2:5–13)। पतरस जो अनपढ़ मछुवारा था जिसने डर के मारे मसीह का इन्कार किया था, अचानक खड़ा हो गया और साहस के साथ अपना पहला सन्देश प्रचार पवित्र आत्मा की आधीनता में करता है (2:14–39)। परिणाम स्वरूप 3000 से अधिक लोग परमेश्वर के राज्य में शामिल उसी दिन किये गये (2:41)।

उन्होंने बिना शर्म सुसमाचार की घोषणा की – भले ही उन्हें मृत्यु का भी सामना क्यों न करना पडा। ये अग्निमय जोश था जो पवित्र आत्मा के अभिषेक द्वारा आता है (प्रेरित 4:23–31)।

ये जोश मानव भावना का गुजरता हुआ क्षण नहीं है। ये शक्ति है और साहस है जो आग की लौ की तरह आता है – उस समय जब हम पवित्र आत्मा का अभिषेक पाते हैं – ये परमेश्वर के वचन के सत्य में गहरा भरोसा है और मसीह के सुसमाचार में जो हमें कार्य करने को आगे बढ़ाता है, प्रार्थना करने, प्रचार करने, आश्चर्यकर्म पर विश्वास करने – ये सब पवित्र आत्मा की सामर्थ से होता है।

ग. मीठा गन्ना – ये अत्याधिक सुगन्धित मीठा है जिसके तने को इत्र के लिये लिया जाता है – इसको छीलने से उसकी खुशबू निकलती है या पौधे की जड़ को कूटने से निकलती है।

उसी प्रकार से उसी प्रकार की छीलना या विश्वासी के जीवन को कुचला जाता जिसमें से खुशबू आना जरूरी है जो हमारे अन्दर परमेश्वर की उपस्थिति से आती है।

कृपाकर नोट करें कि ये उसी प्रकार का टूटापन नहीं है न विनाश है जो पापमय और विद्रोही चुनाव से आता है। बल्कि ये पवित्र टूटापन है जो केवल परमेश्वर के हाथ से आता है।

ये आत्मिक कुचलना, यद्यपि कभी कभी पीड़ामय होता है वह दो चीज़ें उत्पन्न करता है:

पहला, ये हमारे शरीर को मार डालता है – हमारा शरीर अपना स्वयं का भरोसा चाहता है (लूका 9:23–26; रोमियों 12:1,2, 13:14; गलतियों 5:16–26)।

दूसरा, ये हमारे जीवन का "खुलने का टूटना" है, ये महान दया/अनुग्रह और परमेश्वर की सामर्थ आने देता है जो हम में हमारे द्वारा प्रगट होता है। पौलुस इसी चीज़ के बारे में लिखता है कुरिन्थ की पत्री में 2 कुरिन्थियों 12:7–10)।

पास्टर से पास्टर तक : कलीसिया के अगुवे होकर, हम मज़बूत होते, भरोसे व सक्ष्म होने की आवश्यकता महसूस करते हैं। इसका परिणाम ये हो सकता है कि हम पवित्र आत्मा के हमारे द्वारा मज़बूत होने के लिये कुछ जगह नहीं छोडते। सही प्रकार की कमजोरी भी होती है जो हमें सही तरह से पवित्र आत्मा पर झुकाता है और उसके अभिषेक हमारे जीवन पर निर्भर होने का कारण बनता है। इसी प्रकार सेवकाई की जाती है, अपनी नहीं पर उसकी सामर्थ के द्वारा।

इस प्रकार के खरोंच या चोट का धर्मशास्त्र का आधार है जिसके साथ पवित्र आत्मा का अभिषेक है। इस प्रकार के कुचले जाने का तिरस्कार नहीं किया जाना चाहिये। मसीह के स्वरूप में परिपक्व होने के लिये ये आवश्यक है हमें समर्पण के जीवन की ओर ले जाता है, भरोसे और आज्ञाकारिता की ओर कुछ और नहीं ले जा सकता।

थोड़ा समय लेकर धर्मशास्त्र के उदाहरण की ओर देखें और हर एक सत्य का मनन करें:–

- यीशु–यशायाह 53:1–6; प्रेरित 3:18; इब्रानियों 5:9; 12:2
- पौलुस–(और दूसरे) प्रेरित 9:15,16; रोमियों 8:18; 2 कुरिन्थियों 1:3–7; 4:7–18, 6:4–10, 11:22–30, 12:7–10।
- सब विश्वासी – 1 थिस्सलुनीकियों 2:14–16; 2 तीमुथियुस 3:12; 1 पतरस 4:1–19।

जीवनदायक–स्वयं का इंकार

टूटने व चोट लगने के धार्मिक चिन्ह धर्मशास्त्र में भी देखे गये हैं। उदाहरण के लिये "प्रभु भोज में" उस वस्तु का तोड़ा और कुचला जाना अवश्य है (लूका 22:14–20; 1 कुरिन्थियों 11:23–26)। यीशु ने रोटी इस्तेमाल की (गेहूं को तोड़ा और पीसा गया) और मय (अंगूरों

को कुचला गया) एक चिन्ह है जो पूरे मानवता के लिये क्रूस पर करने जा रहा था।

मसीह यीशु ने अपने ऊपर परमेश्वर के न्याय को सह लिया जैसे धार्मिकता हमारे पापों के लिये परिणाम है। उसका क्रूस पर मरना ये प्रगट करता है कि अन्तिम दैवीय कुचला जाना जीवन देने के लिये आवश्यक था (प्रेरित 2:23,24)। उद्धार का अनन्त जीवन मसीह यीशु पर विश्वास करने से है। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि हमें इस परिस्थिति से होकर नहीं गुजरना पड़ा – जबकि हमारे पाप और विद्रोह उसके हकदार थे!

फिर भी स्वयं को मरना आवश्यक है जिससे परमेश्वर की सामर्थ जीवन के लिये हम में से हमारे द्वारा प्रगट की जाये। ये किसी भी रीति से शहीद होना नहीं है या अपनी आत्मिकता को साबित करने के लिये अपने को अपंग नहीं करना है। पर मसीह के साथ चलने के लिये और उसकी पूरी तौर से सेवा करने के लिये ऐसी इच्छा की मांग करता है जो स्वयं के इंकार का जीवन जीने की हो और परमेश्वर की इच्छा में समर्पित हो अपने बलिदान होने तक (2 शमूएल 24:18–24; लूका 9:23–26)।

विश्वासयोग्य पात्र बनना

यातना के बीच यीशु का व्यवहार हमारे लिये अन्तिम उदाहरण है। *"और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुःख सहा और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा"* (इब्रानियों 12:2)। यीशु ने पूरी तरह से परमेश्वर के अभिप्राय को अपना लिया था अपनी यातना और बलिदान में।

ये सही है कि यीशु ने यातना का आनन्द नहीं लिया (लूका 22:42–44) पर उसने ये महसूस किया – क्रूस की आवश्यकता (लूका 24:46–49)। उसकी यातना सहने की इच्छा और हमारे स्थान पर (बदले में) मरना, इसने न केवल हमें उद्धार दिया पर आज्ञाकारिता का वह कार्य था कि पिता की इच्छा को पूर्ण करना (मत्ती 26:39,42,44)।

हमारी यातना और बलिदान यीशु ने जो हमारे लिये किया उसकी तुलना नहीं हो सकती क्योंकि हमारी तो बहुत मामूली है फिर भी ये कठिन है। फिर भी हमें परमेश्वर के अद्‌भुत समर्पण का लाभ है कि हमारी यातना को अपनी महिमा के लिये इस्तेमाल करे और साथ ही हमारी भलाई के लिये (याकूब 1:2–5, 12)। परमेश्वर की यह प्रतिज्ञा है कि वह हमारी यातना और बलिदान को जो जीवन में सामना करते उन्हें लेकर आशीष के रूप में परिवर्तित करें (रोमियों 5:1–5; 8:18; 2 कुरिन्थियों 4:17)।

हमारे पिता का हमारे प्रति समर्पण स्पष्ट है: *"और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाये हुए है"* (रोमियों 8:28)। और जिन्होंने मसीह पर उद्धार के लिये विश्वास कर लिया है उनके लिये परमेश्वर का अभिप्राय क्या है? इसके आगे के पद में इसे स्पष्ट रीति से बयान किया गया है: *"क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहलौठा ठहरे"* (रोमियों 8:29)।

परमेश्वर हमें मसीह की स्वरूप में ढालने के लिये हर चीज़ के इस्तेमाल करने की इच्छा रखता है स्वामी के इस्तेमाल के लिये सही पात्र (2 तीमुथियुस 2:19–21)। कभी कभी हमारी यातना इस संसार के टूटने–फूटने के कारण होती है और जो लोग उसमें हैं उनके पापमय स्वाभाव के कारण। दूसरे समय में परमेश्वर हमारे जीवनों में ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न करता जो उसके ईश्वरीय अभिप्राय के लिये हैं। दोनों बातें हैं परमेश्वर हमारी भलाई के लिये इस्तेमाल करना चाहता है।

परमेश्वर हमें इस प्रकार परिवर्तित करेगा जिससे हम शुद्ध और उसकी इच्छा और अभिप्राय में विश्वासयोग्य पात्र बन जायें पवित्र आत्मा के अभिषेक को अपने जीवन में बिना रूकावट बहने दें – पर हमें अपने जीवन में उसके साथ सहयोग करना और अपने आप को दे देना चाहिये!

मसीह की सुगन्ध

मसीह में हर एक विश्वासी विशेषकर हर कलीसिया का अगुवा कहलाता है, *"परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो मसीह में सदा हम को जय के उत्सव में लिये फिरता है और अपने ज्ञान की सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है क्योंकि हम परमेश्वर की निकट उद्धार पाने वालों और नाश होने वालों दोनों के लिये मसीह के सुगन्ध हैं"* (2 कुरिन्थियों 2:14,15)। ये परमेश्वर की उपस्थिति की वास्तविकता की सुगन्ध हमारे जीवनों के द्वारा दी जायेगी जब हम अपने आपको उसके पवित्र "कुचले जाने" के लिये दे देते और बदलने के कार्य के लिये देते हैं।

पूरे धर्मशास्त्र में और आज भी परमेश्वर साधारण पुरुष और महिलाओं को शक्तिशाली रूप से इस्तेमाल करता है। बहुधा वे अपनी तैयारी में और सेवा के दौरान कुचले जाते हैं। पर इसके कारण परमेश्वर के अभिप्राय पूरे किये जाते और परमेश्वर की सुगन्ध उनके जीवनों द्वारा छोटी (दी) जाती है। यह याद दिलाना जरूरी है और ठीक भी है कि सत्य में कोई भी परमेश्वर के महान पुरुष और महिला नहीं है – केवल नम्र (टूटे हुए समर्पित) पुरुष और महिलायें परमेश्वर के द्वारा महान रूप से इस्तेमाल किये जाते हैं।

घ. अमलतास – ये एक पेड़ की छाल होती है जो दाल चीनी के पौधे के समान होती है। बाइबल के समय में अमलतास को बदहजमी में इस्तेमाल किया जाता था। पवित्र अभिषेक के तेल में एक चिन्ह के रूप में ये पवित्र आत्मा के अभिषेक के शुद्ध करने के प्रभाव को प्रगट करता है।

ये सच है कि पवित्र आत्मा का अभिषेक हमें शक्ति वरदान और ईश्वरीय योग्यता प्रदान करता है। पर इसके साथ ही पवित्र आत्मा का जिसे उसने अभिषेक किया उन्हें परिवर्तन करने का भी कार्य है।

हम इस उदाहरण के महत्व का स्पष्ट अध्ययन राजा शाऊल के जीवन में कर सकते हैं। शमुएल ने इस्राएल पर राजा होने के लिये शाऊल को अभिषेक किया (1 शमूएल 10:1)। शाऊल को परमेश्वर के

अभिप्राय के लिये अलग किया गया था कि वह राजा बने। इस अभिषेक ने शाऊल को अधिकार दिया, वरदान और योग्यता दी कि परमेश्वर द्वारा दिये गये कार्यों को कर सके।

शाऊल ने जो कुछ प्राप्त किया धर्मशास्त्र इससे भी अधिक प्रगट करता है: *"तब यहोवा का आत्मा तुझ पर बल से उतरेगा और तू उनके साथ होकर नबूवत करने लगेगा और तू परिवर्तित होकर और ही मनुष्य हो जायेगा"*। (1 शमूएल 10:6) और थोड़े समय के बाद *"ज्योंही उसने शमूएल के पास से जाने को पीठ फेरी त्योंही परमेश्वर ने उसके मन को परिवर्तित किया और वे सब चिन्ह उसी दिन प्रगट हुए"* (पद 9)।

हम ये देख सकते हैं कि अभिषेक ने शाऊल का न केवल जो उसे आवश्यक था उसमें सुसज्जित किया पर उसमें उसे परिवर्तन करने के कार्य को भी शामिल किया। इसने उसे अधिक योग्य बना दिया वा परमेश्वर के हाथों में उपयुक्त हथियार बना दिया। ये एक अद्‌भुत प्रोत्साहन वाली तस्वीर है जो पवित्र आत्मा का अभिषेक हमें उपलब्ध करा सकता है साथ ही परमेश्वर का हथियार भी बना देता है।

दुर्भाग्यवश शाऊल ने उन सब से जो परमेश्वर ने उसे दिया उससे पीठ मोड़ ली थी – परमेश्वर के वचन को तिरस्कार करके और अपनी ही इच्छा से कार्य करने के द्वारा (1 शमूएल 15:22–33)। ये कितना दुःखित है कि जो इस्राएल पर महान शासन बना और उसका अन्त राजा दाऊद के वा उसके परिवार के लिये शर्मनाक तरह से अन्त हुआ।

पास्टर से पास्टर तक : परमेश्वर ने राजा शाऊल को वो सब कुछ दिया जो उसे उसके कार्यों को पूरा करने और सफल राजा बनने के लिये आवश्य था शाऊल ने उसे थोड़े समय के लिये किया और फलदाक भी था। पर दुःख की बात है कि शाऊल ने वह चुना जो वह करना चाहता था उसकी अपेक्षा जो परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी और उसका अन्त असफलता का था।

जब परमेश्वर हमें बुलाता है वह सब चीज़ उपलब्ध कराता है जो उसकी इच्छा पूरी करने के लिये आवश्यक है। पर ये कभी न भूलें कि पिता हमें किस ढांचे में ढाल रहा है यह उतना ही

महत्वपूर्ण है जितना कि वह हमें काम करने के लिये बुलाता है। परमेश्वर की इच्छा हमारा परिवर्तन है कि हम मसीह की तरह चरित्र में और कार्य में बन जायें।

हमारा पिता हमें चाहता है कि उसके वचन की आज्ञा पालन करें और हर चीज़ में उस पर भरोसा करें। हम कभी भी उस स्थान तक परिपक्व नहीं होंगे। जिसमें हमें बढ़ना ही नहीं है और पवित्र आत्मा के परिवर्तन के कार्य में! ये जीवन भर की प्रक्रिया है।

पवित्र आत्मा हमें सुधारेगा, ताड़ना देगा और कायल करेगा – परमेश्वर हम पर दण्ड की आज्ञा नहीं देता (रोमियों 8:1)। पर चाहता है कि हम आज्ञा पालन करें और उसके परिवर्तन के कार्य में अपने को दे दें। कभी कभी हम ठोकर खायेंगे या गिर जायेंगे पर हमें शीघ्र ही पश्चाताप करना चाहिये और सही सम्बन्ध में आ जाना चाहिये और उसकी इच्छा में समर्पित हो जाना चाहिये।

परमेश्वर हमें बदलने का कार्य करता है:

उसकी महिमा के लिये;

हमारे आनन्द, शान्ति और आशीष के लिये और हमें अधिक फलदायक व उसके राजपूत की तरह प्रभावशाली और सेवकाई में दूसरों का सेवक बनाने के लिये।

आत्मा के काम पर प्रतिउत्तर देना

अमलतास के अध्ययन में हमने पवित्र आत्मा के प्रारम्भिक कार्य को सीखा है। वह जो हमारे जीवन की रेखा में नहीं है। उसे बाहर निकालने आता है। सत्य में अभिषेक व्यक्ति का विशाल चिन्ह ये है

जो हमने बोया वही हम काटेंगे, चाहे वह धार्मिकता हो और आशीष या भ्रष्टाचार। परमेश्वर हमें एक अगुवे की तरह कठोर स्तर पर रखेगा।

कि वे मसीह के चरित्र में अधिक अधिक उसकी नाईं बनते जाते हैं – जरूरी नहीं कि महान योग्यता, वरदान या सेवकाई जो वे दिखाते हैं वैसा हो।

कलीसिया के अगुवे होकर हमें पवित्र आत्मा को हमारे देह की कमजोरी परीक्षाएं और असफलताओं को लगातार निपटने देना चाहिये। हमें पवित्र आत्मा को उसके हमारे अन्दर बदलने के कार्य से उदास नहीं करना चाहिये (इफिसियों 4:30)।

जो हम बोते हैं वही हम काटेंगे चाहे वह आशीष धार्मिकता हो या भ्रष्टाचार (गलतियों 6:7,8)। परमेश्वर हमें एक अगुवे की तरह जिम्मेवार ठहरायेगा (याकूब 3:1)। धोखा न खाओ, परमेश्वर को धोखा नहीं दिया जा सकता। यदि आप पाप में बने रहते हो तो ये सब के लिये हो जायेगा (गिनती 32:23)।

इसलिये धार्मिकता चुन लो! पवित्र आत्मा के काम पर ध्यान दो। परमेश्वर की आज्ञा पालन कर उस पर भरोसा रखो। अपने जीवन और सेवकाई में उसके अभिषेक को स्वीकार करो! दूसरों के लिये जिम्मेवार सिखाये जाने पवित्र आत्मा के कार्य के लिये पात्र बनने का उदाहरण बनो। उसे आपमें कार्य करने दीजिये जिससे वह आपके द्वारा अधिक महिमा पाये। "आमीन"।

ड. जैतून का तेल – पुराने और नये नियम दोनों में तेल पवित्र आत्मा को प्रदर्शित करने के लिये इस्तेमाल किया गया है। जैतून का तेल अभिषेक के तेल की एक वस्तु है जिसका बड़ा महत्व है। इसके अन्दर बाकी चारों चीज़ों के गुण हैं और उसमें एक और गुण जोड़ देता है।

बाइबल के समय में जैतून का तेल इसमें उपयोग होता थाः

- बीमारी और दर्द के इलाज में इस्तेमाल होता था (गन्धरस की तरह)
- बत्ती के तेल की तरह और आग से सम्बंधित था।
- इसे कुचलकर और तोड़ कर बनाया जाता था और उसमें से उत्तम सुगन्ध निकलती थी।
- इसे अन्दर – बाहर दोनों के शुद्धिकरण के लिये इस्तेमाल किया जाता था।

पर इसके साथ जैतून के तेल में एक और गुण है वह है जो मसीह की देह के लिये विशाल था। जैतून के तेल में स्वाभाविक चिकनापन होता है जब दो चीज़ों के बीच में रखते हैं ये रगड़ और टूट को कम करता है।

ये चिन्ह हमारे लिये परमेश्वर के लोगों के बीच एकता और आवश्यकता को बताता है धर्मशास्त्र इस विचारधारा को अभिषेक के साथ जोड़ता है बड़ी सुन्दरता के साथः *"देखो ये क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें। यह तो उस उत्तम तेल के समान है जो हारून के सिर पर डाला गया और उसकी दाढ़ी पर बहकर उसके वस्त्र की छोर तक पहुंच गया वा हर्मोन की उस आंत के समान है जो सिय्योन के पहाड़ों पर गिरती है यहोवा ने तो वहीं सदा के जीवन की आशीष ठहराई है"* (भजन 133)।

एकता, परमेश्वर के लोगों में आनन्द और शान्ति का स्रोत है। जब लोग एक दूसरे के साथ मेल मिलाप से रहते हैं तो परमेश्वर प्रसन्न होते हैं। उनसे हमें आशीष मिलती है और पवित्र आत्मा का बहुतायात से अभिषेक होता है।

मधुर सम्बन्ध

बाइबल में दिये गये एकता के विचार को अक्सर गलत समझा गया है। पवित्र शास्त्र के अनुसार एकता का अर्थ एक रूपता नहीं है।

dyhfl;k% ,d ljhykiu - - - iR;d vx egRoi.k

एक रूपता तब होती है जब सब कुछ बिल्कुल एक समान हो और उनमें किसी भी तरह का भेद न हों।

हालांकि, पवित्र शास्त्र के अनुसार, एकता का अर्थ है सुरीलापन। जैसे मधुर संगीत में अलग अलग तरह के कई वाद्यय होते हैं और हर एक का अपना अलग कार्य है। परन्तु यह सारे अलग अलग वाद्यय एक ही निदेशक के मार्गदर्शन में एक साथ कार्य करते हैं और इसलिये एक मधुर सुरीला संगीत उत्पन्न होता है।

मसीह के देह के लिए भी यह बात उतनी ही सच है। विविध प्रकार के वरदान, बुलाहट, प्रणाली, व्यक्तित्व और योग्यताएं हैं। किन्तु फिर भी हम सब को एक सुरीले सम्बन्ध के लिये बुलाया गया है (यूहन्ना 17:20,22)। हम में से कोई भी एक समान दूसरे व्यक्ति की तरह नहीं है। इसके बावजूद भी हर एक को एक महत्वपूर्ण कार्य करने के लिये बुलाया गया है। फिर परमेश्वर इन इच्छुक साझेदारों का एक मधुर सम्बन्ध की ओर मार्गदर्शन करते हैं, और एक दूसरे पर प्रेम रखने के कारण, उनकी देह इस संसार के लिए एक गवाही बनती है (यूहन्ना 13:34,35)।

पौलुस इसके विषय (1 कुरिन्थियों 12 पढ़ें 1 कुरिन्थियों 14:26–40) में पवित्र आत्मा के वरदानों की अभिव्यक्ति के विषय में चर्चा करते हुए कहता है। आरम्भिक कलीसिया इस एकता का एक उदाहरण थी, जिसका पालन पोषण पवित्र आत्मा की अभिषिक्त उपस्थिति से हुआ था (प्रेरित के काम 2:42,44–47)।

आपसी फूट के जोखिम परिणाम

मसीह की देह के अंगों में आपसी फूट दूर दूर तक व्यापक हैं। पौलुस ने कुरिन्थियों को उनमें आपसी फूट के विषय में डांटा था (1 कुरिन्थियों 3:1–23)। उसने उनको शारीरिक लोग और अपरिपक्व कहा, *"क्योंकि अब तक शारीरिक हो, इसलिये कि जब तुम में डाह और झगड़ा है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं? और मनुष्य की रीति पर नहीं चलते?"* (पद 3)।

भाइयों में आपसी फूट और विभाजन होना एक गंभीर अपराध है। यह केवल विनाशक ही नहीं, परन्तु वह परमेश्वर के राज्य के कार्य की गति और प्रभाव को गंभीर रूप से सीमित करता है। ऊपर बताये गये वरदानों की अभिव्यक्ति के विषय में पौलुस की चर्चा लोगों में घमंड़ और स्वार्थ से उत्पन्न हुई फूट और अव्यवस्था से प्रेरित है। यह एक दुःखद वास्तविकता है कि जब मसीह की देह के अंगों में एक दूसरे के प्रति प्रेम नहीं है और वे एक होकर परमेश्वर के ध्येय को पूरा नहीं करते तब वह संसार के सामने हमारी गवाही में बाधा डालती है। बाइबल हमें इस महत्वपूर्ण बात का स्मरण दिलाती है कि यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो (यूहन्ना 13:35)। यदि संसार हमारे बीच में प्रेम नहीं पाता, तो संसार के आगे हमारी गवाही शंकास्पद (झूठी) प्रतीत होती है।

हम भले ही प्रभु यीशु मसीह के नाम में महान कार्य कर सकते हों, एक महान प्रचारक हों, आध्यात्मिक सभाओं का आयोजन कर सकते हों, या इससे भी अधिक बहुत कुछ कर सकते हों। परन्तु यदि हम मसीह में अपने भाई–बहनों पर प्रेम न रखें तो इन सब कार्यों का प्रभाव कम हो जाता है (पढ़ें 1 कुरिन्थियों 13)।

पवित्र शास्त्र में मसीह की देह की एकता में बाधारूप बनने वाले या उसको तोड़ने वाले व्यवहार के विषय में अनगिनत उपदेश हैं। कृपया थोड़ा समय निकालकर इनको पढ़ें।

- रोमियों 13:13,14;
- इफिसियों 4:20–29
- तीतुस 3:9–11
- 1 यूहन्ना 2:6–11; 3:10–18
- गलतियों 5:13–23;
- 1 तीमुथियुस 6:3–5
- याकूब 3:14–16

इन आयतों में हमें साफ दिखाई पड़ता है कि जहां फूट, कलह, बैरभाव, कड़वाहट, ड़ाह, होड़, कुढ़न वगैराह है, वहां एकता में बाधा आती है और यहां तक कि वह टूट जाती है। इससे पवित्र आत्मा शोकित होता है (इफिसियों 4:30) और उसकी अभिषिक्त उपस्थिति बुझ जाती है। (1 थिस्सलुनीकियों 5:19)।

यह बात स्पष्ट है कि जहां इस प्रकार की शारीरिक मनोवृत्ति है वहां शैतान भी छिपकर लगातार कार्य करता है ताकि फूट डालकर परमेश्वर के कार्य में बाधा डाल सकें (याकूब 3:13–16)। फूट डालकर जीतने की योजना तो उतनी ही पुरानी है, जितना पुराना शैतान है। यह चतुराई उसने सीखी है ताकि वह मसीह की देह में बाधा डालकर उसे नष्ट करने के लिए बखुबी इस्तेमाल कर सकें। परन्तु उसकी यह योजनायें तभी कामयाब हो सकती है यदि हम उनका साथ दें।

आपसी सम्बन्ध : परमेश्वर की दृष्टि में मूल्यवान

पवित्र आत्मा का अभिषेक देह में आपसी सम्बन्धों में चंगाई और मेल मिलाप लायेगा। और यह खास करके अगुवों में पाया जाना चाहिये। परमेश्वर हमसे अपेक्षा करते हैं कि हम उचित सम्बन्ध में जीएं: पहले उनके साथ और फिर आपस में एक दूसरे के साथ (इफिसियों 2:14–17)। मनुष्य का घमंड, ईर्ष्या और कड़वा स्वार्थ ही इसमें बाधा

डालते हैं। शैतान इन व्यवहारों का इस्तेमाल करके देह में अनबन, नफरत और अक्षमाशीलता के बीज बोता है।

यदि तुम्हें स्मरण आये कि मेरे भाई के मन में मेरी ओर से कुछ विरोध है, तो जाकर पहले अपने भाई से मेल–मिलाप कर (मत्ती 5:23,24)। यदि किसी और के विरोध में तुम्हारे मन में कुछ है तो तुरन्त ही पश्चाताप करो (मत्ती 5:21,22)। तिरस्कार, क्रोध, नफरत और आलोचना के व्यवहार को अपने दिल में घर करने देने के लिये पश्चाताप करो। दूसरों को क्षमा करो अन्यथा परमेश्वर का न्याय तुम पर आ जायेगा। (मत्ती 6:14,15; मत्ती 18:21–35)।

परमेश्वर आपसी सम्बन्धों को बहुत अधिक महत्व देते हैं–इतना कि उन्होंने अपने पुत्र को दुख सहने और मरने के लिये भेजा ताकि हमारा उनके साथ सम्बन्ध जो पाप के कारण टूट गया था वह पुनः स्थापित हो सके। इसी तरह, हमारे प्रति उनका प्रेम और क्षमा यह संभव बनाता है कि हम आपस में एक दूसरे के साथ उचित सम्बन्ध रखें।

हमने यह सीखा है कि परमेश्वर जिस बात की आज्ञा देते हैं, वह हमेशा उसे संभव भी बनाते हैं। और उन्होंने हमें यह आज्ञा दी है कि हम आपस में एक दूसरे से उचित सम्बन्ध रखें (यूहन्ना 13:34,35)।

हमें परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध को मूल्यवान समझना चाहिये और उसे आगे बढ़ाने का प्रयास करना चाहिये। और हमें मसीह में अपने भाई–बहनों के साथ भी वैसे ही करना चाहिये।

सभी स्थायी और जीवन बदलने वाली सेवकाई स्वस्थ सम्बन्धों से उत्पन्न होती है। परमेश्वर के साथ सम्बन्ध के द्वारा जो हम पाते हैं। उसी से इस प्रक्रिया का आरंभ होता है। फिर, उस प्रेम और करुणा से जो हमने परमेश्वर से पाया है, उसे हम दूसरों को देते हैं और दूसरों की सेवा करते हैं। यह तो सेवकाई के विषय में परमेश्वर का नमूना है। प्रभु यीशु का इस पृथ्वी पर का जीवन हमारे लिये इस प्रकार की सेवकाई का एक सतत उदाहरण बनता है।

एकता, विविधता, प्रेम

मसीह की देह में अलग अलग प्रकार की अभिव्यक्ति है। पर

जरुरी नहीं है कि वह अलगता हमारी एकता और सम्बन्ध में बाधारुप बनें (रोमियों 14:13)। याद रखें, एकता का अर्थ एकरूपता (समानता) नहीं है। एकता तो एक सुरीला सम्बन्ध है जब हम अपने जीवन में पवित्र आत्मा के अभिषेक के कार्य का उत्तर देते हैं। पवित्र आत्मा हमें सतत दूसरों के साथ उचित सम्बन्ध के विषय में कायल करेगा, हमारी सहायता करेगा और हमारी अगुवाई करेगा – यदि हम उसे उत्तर दें तो एकता के विषय में सरल भाषा में यूं कहा गया है, "महत्वपूर्ण बातों में एकता, अमहत्वपूर्ण बातों में अलगता, और सब बातों में प्रेम"। जैसे जैसे हम पवित्र आत्मा के अभिषेक में बढ़ते जाते हैं, हम एक दूसरे के प्रति दया और प्रेम रखें। और जब हम ऐसा करते हैं, तब पवित्र आत्मा का अभिषेक हमारे अन्दर और हमारे द्वारा बहुतायत से प्रगट होता है।

समझ की प्राप्ति

पवित्र अभिषिक्त तेल के विषय में यह संक्षिप्त अध्ययन (निर्गमन 30:22–33) यह प्रगट करता है कि परमेश्वर ने हमें पवित्र आत्मा के कार्य के विषय में कुछ अद्‌भुत धारणाएं और भविष्यवाणियां की हैं। वास्तव में, पवित्र शास्त्र का अध्ययन हमें समझ, ज्ञान और आशा देता है (रोमियों 15:4)।

अभी तक के इस अध्ययन में आपके मन में कुछ सवाल उठें होंगे, जैसे कि:

- क्या मैं अभिषेक में आगे बढ़ सकता हूं? यदि हां, तो कैसे?
- क्या झूठे अभिषेक जैसी कोई बात है? यदि है, तो असली अभिषेक को कैसे पहचानें?
- ऐसी कौन सी बातें हैं जो मेरे जीवन पर अभिषेक को शोकित कर सकती है या उसे बुझा सकती है?
- क्यों मैं हमेशा पवित्र आत्मा के अभिषेक से भरपूर रह सकता हूं?

ऐसे कई सवालों को विषय में हम अगले "अभिषेक में चलना" में पाठ में चर्चा करेंगे।

पवित्र आत्मा का अभिषेक

भाग III

अभिषेक में चलना

पवित्र आत्मा के अभिषेक में हर रोज जीवन व्यतीत करने के विषय में अध्ययन शुरु करने से पहले, आइये हम कुछ आलोचनात्मक सिद्धान्त के विषय में संक्षिप्त में पुर्नविचार कर लें।

पवित्र आत्मा का अभिषेक कोई बिल्ला नहीं है जिसे प्राप्त कर सकें। या फिर यह कोई धार्मिक शब्दों को या मुहावरों को जानना नहीं है। परन्तु, वह तो पवित्र आत्मा के साथ जीवित और बढ़ता जाता सम्बन्ध है।

याद रहे, जैसे प्रभु यीशु और पिता व्यक्ति है, वैसे ही पवित्र आत्मा भी व्यक्ति हैं। इसलिये, हम पवित्र आत्मा के साथ हर रोज एक जीवित सम्बन्ध में चलना सीख सकते हैं बल्कि ऐसा हमें सीखना ही चाहिये।

हमने सीखा कि अभिषेक कोई रहस्यात्मक शक्ति या सामर्थ नहीं है जिसे हम अपने स्वार्थी मतलब के लिये काम में ले सकें। परन्तु, अभिषेक तो एक दैवी शक्ति, सामर्थ और वरदान है, जिसका सीधा सम्बन्ध पवित्र आत्मा जो कि एक व्यक्ति है उनसे और हमारे जीवन में उनकी उपस्थिति से है। पवित्र आत्मा की उपस्थिति से जो सामर्थ आता है, वह हमें उसके साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध से मिलता है।

अभिषेक तो पवित्र आत्मा जो कि एक व्यक्ति है, उनकी उपस्थिति है, जो अपनी उपस्थिति के साथ साथ तमाम आवश्यक सामर्थ, वरदान

और अधिकार लाती है जो सेवकाई में पिता की इच्छा को पूरा करने के लिये जरूरी है।

हमारी पहली जिम्मेदारी

हमने सोचा है कि पुराने नियम के समय में, परमेश्वर का पवित्र आत्मा उनके नबीयों, याजकों, न्यायियों तथा अन्य सेवकों पर उतर आया।

नये नियम और उसके बाद के समय में भी जिसे कलीसिया का युग कहा जाता है – पवित्र आत्मा को उन्डेल दिया गया (प्रेरितों के काम दूसरा अध्याय)। पवित्र आत्मा हर सच्चे विश्वासी के अन्दर वास करता है, ताकि हमारी अगुवाई कर सकें, हमें सान्तवना दे सकें और हमारे द्वारा दूसरों में कार्य कर सकें (यूहन्ना 7:37–39; 14:16,17,26)।

हर कोई जो प्रभु यीशु मसीह का विश्वासी है उसे पवित्र आत्मा दिया गया है (1 यूहन्ना 2:20–27)। यह आवश्यक है क्योंकि हर विश्वासी जो मसीह की देह का अंग है, किसी ना किसी सेवाकार्य के लिये बुलाया गया है (इफिसियों 4:12)। हम सभी को हर रोज पवित्र आत्मा की सहायता की आवश्यकता है।

परन्तु वे लोग जिन्हें किसी विशेष सेवकाई के लिये बुलाया गया है, उनके लिये एक विशेष और गहन अभिषेक प्राप्त है। और वह अभिषेक तो परमेश्वर अपने अधिपत्य से देते हैं। हम इसे स्वीकार करके उसमें उन्नति पायें या उसे अस्वीकार करें, या उसकी अपेक्षा करते यह हमारे ऊपर निर्भर करता है।

इस प्रकार के अभिषेक (पवित्र आत्मा का देवी अधिकार) का सीधा सम्बन्ध हमारे वरदान और बुलाहट से हैं। उदाहरण के तौर पर, जिस व्यक्ति को सुसमाचार का वरदान पूरा करने के लिये बुलाया गया है (इफिसियों 4:11), तो हो सकता है उसके पास प्रेरक कार्य का अभिषेक नहीं। जब वह व्यक्ति उसे दी गई सामर्थ, वरदान और अधिकार जिसके लिये उसे अभिषेक किया गया में रहकर कार्य करता है तो वह सर्वश्रेष्ठ कार्य कर सकता है और उसमें सबसे अधिक फलवान बनता है, यहीं पर एक सुसमाचारक।

फिर भी, हो सकता है, हर रोज के जीवन में इसका व्यवहार लागूकरण इतना सरल न हों। भले ही किसी को किसी विशेष सेवकाई के लिये बुलाया गया हो और उसका अभिषेक किया गया हो, हम में से हर किसी को मसीह के विश्वासी होने के नाते मसीह की देह के अंग की तरह हर रोज जीने और कार्य करने के लिये बुलाया गया है।

जैसे कि, पवित्र शास्त्र में हम पढ़ते हैं, तीमुथियुस को कलीसिया में शिक्षा देने के लिये और पासबान होने के लिये बुलाया गया था। फिर भी पौलुस ने उसे सुसमाचारक का कार्य करने की भी आज्ञा दी (2 तीमुथियुस 4:5)। सुसमाचारक बनने के लिये नहीं परन्तु जब कभी दूसरों को सुसमाचार सुनाना आवश्यक हो तब उसे करने के लिये।

इसलिये, हम देखते हैं कि मसीह के सेवक होने के नाते, हम सभी की कुछ जिम्मेदारियां और कार्य हैं, भले ही उसके लिये हमें विशेष बुलाहट न हों। पर फिर भी वे मसीह की देह को क्रियाशील होने के लिये उतने ही आवश्यक और महत्वपूर्ण है।

प्रभु यीशु मसीह के विश्वासी और कलीसिया के अगुवे होने के नाते हमारा सबसे पहला फर्ज यह बनता है कि हम मसीह के आधीन रहें। परमेश्वर के आधीन रहना और परमेश्वर के वचन में बताये गये आदर्शों पर चलना हमारे लिये अति आवश्यक है।

पवित्र शास्त्र में हम देखते हैं कि, विश्वासियों को कई तरह की जिम्मेवारियां दी गई हैं जैसे कि दूसरों की सेवा करना, गरीबों को खाना देना, अनाथों की सुधि लेना, संतों की मदद करना, भटके हुओं के पास पहुंचना – और यह सूची आगे बढ़ती जाएगी। और यह सूची आगे बढ़ती जाएगी। मसीह के साथ आपके जीवन में कई मौके ऐसे भी आयेंगे जब आपको अपनी मूलभूत बुलाहट के साथ साथ इस तरह के सुसमाचारक सेवकाई में अपना ज्यादा ध्यान और प्रयास करने की आवश्यकता होगी।

सेवकाई में आपको क्या करना चाहिये यह समझने के लिये अच्छा मार्गदर्शन यही है कि: *"जो काम तुझे मिले उसे अपनी शक्ति भर करना"* (सभोपदेशक 9:10; कुलुस्सियों 3:23)। हर एक मौके पर प्रार्थना करो,

और फिर परमेश्वर जो आपको दूसरों की सेवा करने के लिये बुलाते हैं उन्हें आधीन होने में फुर्ती करो। आपके सामने रखा गया कार्य छोटा है या बड़ा यह कोई मायने नहीं रखता – जरूरी यह है कि जब परमेश्वर आपको करने के लिये कहते हैं, तो उनके आधीन रहें।

पास्टर से पास्टर तक : एक सेवक और बाइबल स्कूल से स्नातक होने के नाते मुझे पहला कार्य एक बहुत बड़ी कलीसिया में पूर्ण समय द्वारपाल का मिला। दो वर्ष मैंने बाथरूम की सफाई, कचरा उठाना, ड्राइंग रूम की सफाई, आंगन की सफाई और ऐसे बहुत से निरुत्साही परन्तु जरूरी कार्य किए।

मुझे वास्तव में यह कार्य करने में कोई आनन्द नहीं मिलता था। यह आसान नहीं था। और वह बहुत छोटा काम भी था। परन्तु मैं जानता था कि परमेश्वर ने मुझे यह कार्य करने के लिये कहा है और यह मेरे लिये मसीह की देह की सेवा करने के लिये सीखने का अति उत्तम समय था। यह तो वास्तव में मेरी विश्वासयोग्यता की कसौटी थी।

इस कार्य के प्रति मेरी आधीनता और उसे मेहनत से पूरा करने की भावना ने मेरे सामने दूसरे कार्य का मार्ग खोला, और वैसे ही इतने वर्षों में बहुत से कार्यों के लिये। मैंने कलीसियाओं की स्थापना करी है, जवानों को शिक्षा दी है, कलीसियाओं में पासबान रहा हूं, सभाओं में बोला है, सुसमाचारकों के ग्रुप की अगुवाई करी है, सुसमाचार प्रचार किया है और बहुत कुछ और परमेश्वर की दया से किसी तरह इन 30 वर्षों के दौरान परमेश्वर ने मुझे इस विश्वव्यापी सेवकाई की अगुवाई करने के लिये तैयार किया है।

मैं वह पूरी तरह मानता हूं कि यदि मैंने अपनी पूरी शक्ति से इतने वर्षों में परमेश्वर की आज्ञा मानने की इच्छा नहीं रखी होती, एक एक कदम पर, हर एक कार्य को पूरा नहीं किया होता, भले ही उन्होंने मुझे अपने नाम से जो कुछ भी करने को कहा, तो आज मैं पूरी दुनिया में फैले इस कार्य की अगुवाई नहीं कर

रहा होता। मैं हर समय पूरी तरह से आधीन नहीं रहा हूं, और मैंने समय समय पर कई गलतियों भी करी हैं, परन्तु अगर समस्त कार्य को देखा जाये तो, परमेश्वर ने मेरे सामने जो भी मार्ग रखा उससे चलने की मैंने पूरी कोशिश की है।

परमेश्वर के पास आपके जीवन के लिये भी योजना है। और उसे पूरा करने के लिये आपकी अगुवाई करना वह बखूबी जानता है। परमेश्वर और उनके वचन के प्रति आधीनता हमारे लिये कोई विकल्प नहीं परन्तु अति आवश्यक है।

हमारी पहली बुलाहट

हम चाहे अगुवाई के किसी भी स्तर पर हों हमारी पहली बुलाहट मसीह के साथ हमारे सम्बन्ध के प्रति है। इस सम्बन्ध में आधीनता, विश्वास, सेवा, व्यक्तिगत पवित्रता, नम्रता, पवित्र आत्मा के सारे फल (गलतियों 5:22,23) और सतत वृद्धि शामिल है। यह विशिष्टताएं प्रभु यीशु मसीह के साथ हमारे भरपूर और बढ़ते हुए सम्बन्ध की नींव है।

आपके व्यक्तिगत सम्बन्ध की इस मजबूत नींव का एक परिणाम यह आता है कि आपके द्वारा सेवकाई की जाती है, और आपकी इस सेवकाई को पूरा करने के लिये जिस अभिषेक की आपको आवश्यकता है वह मिलता है।

इन मुख्य सिद्धान्तों के विषय में मूल पुर्नविचार को ध्यान में रखते हुए, आइये, हम थोड़ी और गहराई से देखें कि अभिषेक में चलने का क्या अर्थ है?

क. अभिषेक को संभाल कर रखना

जब पवित्र आत्मा हमें सेवकाई के लिये अभिषेक करता है, तो वह एक पवित्र सौभाग्य है। इसे हमें अपने जीवन में पोषण करना चाहिये और संभालकर रखना चाहिये।

मेरे कहने का बिल्कुल यह अर्थ नहीं है कि पवित्र आत्मा को (जो कि हमें अभिषेक करता है) हमारी सुरक्षा की जरूरत है। बल्कि, हमें

अपने दिल और जीवन को इस संसार के आत्मिक और नैतिक प्रदूषण से बचाना है (2 पतरस 1:2–4, 1 यूहन्ना 2:15–17)।

सुलैमान राजा जिसने नीतिवचन की पुस्तक लिखी है ये हमें प्रोत्साहित करते हुए कहते हैं, *"सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है"* (नीतिवचन 4:23)। हमारे जीवन के द्वारा पवित्र आत्मा का अभिषेक दूसरों के प्रति हमारी सेवा में बरसेगा। इसीलिये हमारा जीवन, हमारा दिल शुद्ध होना चाहिये।

1. कुएं में चूहे

पौलुस बताते हैं कि मसीह का हर एक विश्वासी "पवित्र आत्मा का भवन" हैं (1 कुरिन्थियों 6:19,20) और हमें यह प्रोत्साहन दिया गया है कि हम पाप में हिस्सा लेकर अपने मन्दिर को दूषित न करें (पढ़ें रोमियों 6)।

बाइबल में शरीर, मन और आत्मा में शुद्ध होने के विषय में अनगिनत उदहारण है (1 यूहन्ना 3:2,3)। वह वचन हर एक विश्वासी की अगुवाई के लिये है, और विशेष करके उनके लिये जो मसीह की देह के अगुवे हैं।

व्यक्तिगत शुद्धता क्यों जरूरी है? क्योंकि पवित्र आत्मा हमारे अन्दर वास करता है – हममें से हर एक जिसने निर्दोष और निष्कलंक मेमने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा छुटकारा पाया है" (1 पतरस 1:19), बैलों और बकरियों के लोहू से नहीं (इब्रानियों 9:13,14)। जब हम पापमय कार्य और व्यवहार में हिस्सा लेते हैं तो पवित्र आत्मा जहां निवास करने की इच्छा रखता हैं वो अशुद्ध और प्रदूषित हो जाता है।

शुद्ध बने रहना

मान लें कि किसी खेत या गांव में केवल एक ही कुआं है। हर कोई उसी कुएं का पानी इस्तेमाल करता है और उसी कुएं के पानी पर निर्भर करता है। उस पानी का सफाई के लिये खाना बनाने के लिये, कपड़े धोने के लिये और पीने के लिये इस्तेमाल होता है। क्या

आप सोच सकते हैं कि यह पानी जिसकी इतनी जरूरत है, किसी दिन मालूम पड़े कि कुएं में मरे हुए चूहे तैर रहे हैं तो क्या होगा?

इस से हम देख सकते हैं कि किस तरह हमारा चुनाव हमारे अन्दर पवित्र आत्मा के भवन को असर पहुंचा सकता है? हमारी प्रत्येक जरूरतों के लिये वह हमारा सबसे महान स्रोत है। केवल हमारे लिये व्यक्तिगत रूप से ही नहीं। कलीसिया के अगुवे होने के नाते हमारे अन्दर परमेश्वर का आत्मा हमें दूसरों के लिये ईश्वरीय स्रोत बनने के लिये सहायता करता है।

वास्तव में, सेवकाई में हम दूसरों को वहीं दे पाते हैं, जो हम हैं और जो हमें मिलता है। (मत्ती 10:8, पृष्ठ 20 पर दी गई गलील झील)। समुद्र की तुलना को भी पढ़ें) पर यदि हमने अपने जीवन में "चूहों" को आने दिया है तो क्या होगा? पापमय आदतें और व्यवहार हमें जहरीला बनाके हमें प्रदूषित कर देगा, हमारी सेवकाई को, हमारे सम्बन्धों को, हमारे परिवार को, हमारे पेशे को, जो कुछ भी हम करें उसको हानि पहुंचाएगा।

कुएं के कुछ आम "चूहें" कौन से हैं? नया नियम हमें ऐसे कई वर्ग के विषय में बताते हैं और फिर इन वर्गों के अन्दर की खास सूची बताता है।

जो मसीह की देह के अगुवे होने के नाते, आपको शुद्ध और पवित्र जीवन जीने के लिये बुलाया गया है। जो अभिषेक परमेश्वर अपने सेवकों को देते हैं, वह तो पुराने नियम के तम्बू के तेल के अभिषेक से बहुमूल्य और पवित्र है – क्योंकि यहां तो पवित्र आत्मा स्वयं मौजूद है।

- शरीर के काम (गलतियों 5:19–21)
- छल–कपट के पाप की वजह से अयोग्य व्यवहार (इफिसियों 4:17–32)
- व्यवस्था या केवल धर्म का आत्मा (गलातियों 5:1–6; कुलुस्सियों 2:11–23)
- स्थान, नाम और सत्ता की भूख (मत्ती 6:1,2, 5,16, 23:2–12)
- दोष लगाना, कड़वाहट रखना, क्षमा न करना (मत्ती 7:1–6, 18:21–35; कुलुस्सियों 3:12–19, इब्रानियों 12:15, याकूब 3:13–18)।
- झूठी शिक्षाएं, अपधर्म (मत्ती 24:4,5,11, 23–27, गलातियों 1:8, 2 कुरि0 11:13–15, 1 तीमुथियुस 4:1–5, 2 तीमुथियुस 2:14–18, 2 पतरस 2:1–22, यहूदा 7–19)।

यह तो उन "चूहों" का संक्षिप्त चित्रण है जो न सिर्फ आपके दिल के कुएं को नुकसान पहुंचा सकता है बल्कि उन लोगों को भी प्रभावित कर सकता है जो आपके जीवन और सेवकाई के दायरे में हैं।

मसीह की देह के अगुवे होने के नाते, आपको शुद्ध और पवित्र जीवन जीने के लिये बुलाया गया है (मत्ती 5:8; 1 कुरि0 9:24–27; इब्रानियों 12:14; 1 पतरस 1:13–19)। जो अभिषेक परमेश्वर अपने सेवकों को देते हैं, वह तो पुराने नियम के तम्बू के तेल के अभिषेक से बहुमूल्य और पवित्र है – क्योंकि यहां तो पवित्र आत्मा खुद मौजूद है।

हमारी सबसे महान बुलाहट यह है कि हम परमेश्वर के साथ उचित सम्बन्ध में जीएं। इसके लिये आवश्यक है कि हम एक योग्य भवन होने के नाते शुद्ध और अप्रदूषित जीवन जीएं (1 कुरिन्थियों 6:19,20), जो कि पवित्र आत्मा का घर है। एक शुद्ध जीवन परमेश्वर को प्रसन्न करता है और उनके नाम की महिमा करता है, और हमें अपने स्वामी के हाथों में अधिक विश्वासयोग्य और उपयोगी बनाता है।

सिर्फ आप ही अपने कुएं को शुद्ध रख सकते हैं। अभी निर्णय करो कि मैं एक साफ पात्र बनना चाहता हूं जिससे बिना किसी अवरोध

के पवित्र आत्मा और शुद्ध परमेश्वर का वचन बह सकें। एक शुद्ध किया हुआ सेवकाई का पात्र बनें, जिसे परमेश्वर अभिषिक्त करके अपनी महिमा और उद्देश्य के लिये इस्तेमाल कर सकें (1 कुरिन्थियों 10:31; 2 तीमुथियुस 2:19–21)।

असफलता सीख

सुलैमान एक ऐसा राजा था जिसे परमेश्वर ने ऊपर उठाया और उसे असाधारण वरदान दिये थे (1 राजा 3:5–14; 4:29–34)। परमेश्वर ने दो बार उससे अद्‌भुत रीति से भेंट करी (पढ़ें 1 राजा 3 और 9)। और सुलैमान राजा ने ऐसा ही किया – पर कुछ समय के लिये।

परन्तु हम आगे पढ़ते हैं कि सुलैमान राजा का अधिकार अन्त में उसके लिये और उसके पूरे राज्य के लिये नाश और बरबादी लाया (पढ़े 2 राजा 11)

सुलैमान राजा ने, दूसरे कई अगुवों की तरह शुरुआत तो अच्छी करी परन्तु अब बुरा रहा। ऐसा क्यों हुआ? और उसका जवाब हम एक ही शब्द में दे सकते हैं, वो है – *अनाज्ञाकारिता*।

यदि हम 1 राजाओं की पुस्तक का बारीकी से अध्ययन करें तो मालूम पड़ता है कि सुलैमान राजा एक बुद्धिमान व्यक्ति था, "सब मनुष्यों से अधिक बुद्धिमान (4:31)। उसके पास अतुल्य धन था (10:11–29) और मनुष्यों का आदर और प्रशंसा (10:1–9)। परन्तु फिर सुलैमान ने परमेश्वर के स्पष्ट आज्ञाओं को तोड़ने लगा (11:1,2)। और धीमे धीमे, एक के बाद एक पसंदगी, एक के बाद एक समझौता, और सुलैमान राजा अपने आपको, अपनी आशीषें और विशेष अधिकार जो उसे परमेश्वर के अभिषेक और वरदानों की वजह से मिला था, उसे व्यर्थ उड़ा देने लगा। और इस मार्ग का अन्त सुलैमान राजा के शासन की बरबादी से हुआ।

तो फिर हम सुलैमान के जीवन और शासन से क्या सीखते हैं?

क. ध्यान भंग हमें शिथिल बना देता है (अनुशासन और उद्यम की कमी)। सुलैमान लिखता है, *"छोटी लोमड़ियां दाख की बारियों को बिगाड़ती है"* (श्रेष्ठगीत 2:15)। सुलैमान का राजमहल धन

lyeku dk ;kn dj%

सम्पत्ति और मौको से भरपूर रहता था और बहुत से लोग थे जो उसके निकट रहने के लिये कुछ भी कर सकते थे।

क्या आप यह मानते हैं कि मनुष्य का हृदय छोटी छोटी खुशियों के लिये भी ध्यान भंग हो सकता है और फिर अनुशासनहीन की ओर आगे बढ़ता जाता है और अन्त में अनाज्ञाकारिता, क्या परमेश्वर यह नहीं जानते? मेरा मानना है, वे जरूर जानते हैं। और यह जानते हुए, उन्होंने बार बार सुलैमान को चेतावनी दी कि वह उनकी सब आज्ञाओं को मानें (1 राजा 6:12, 9:4)। परन्तु सुलैमान ने परमेश्वर के प्रति ध्यान नहीं दिया, खास करके जब वह अपने कार्य में "सफल" हुआ।

पास्टर से पास्टर तक : कलीसिया के अगुवों, आपकी सेवकाई भी आपके लिये ध्यान भंग करने का कारण बन सकती है, यदि आप उसे आदेश में व्यर्थ गवाएं तो अधिक व्यस्त होने के कारण या फिर हमेशा दूसरों की जरूरतें पूरा करने का दबाव आपको परमेश्वर की उपस्थिति में समय बिताने से दूर रख सकती है, प्रभु यीशु जब इस संसार में थे तब उन्होंने अपने पिता की बात सुनने के लिये और नयी आत्मिक शक्ति प्राप्त करने के लिये अलग समय निकालने का नमूना दिया (मरकुस 1:35–39; लूका 5:16, 6:12)।

हमें यह बात नहीं भूलनी चाहिये कि परमेश्वर ही पवित्र आत्मा के अभिषेक का और उनके वचन को समझने का स्रोत हैं (यूहन्ना 1:33; 6:63, 68)। वह तो उन्हीं की ओर से हैं। वास्तव में फलदायक सेवकाई तो हम प्रभु यीशु के चरणों में प्रार्थना में बैठकर, उनकी बाट जोहकर और उनके वचन का अध्ययन करके जो प्राप्त करते हैं उनसे बहती है (लूका 10:41,42; यूहन्ना 15:16)। हममें से ज्यादातर लोग इस मूलभूत सच्चाई को जानते हैं। परन्तु परेशानी तब आती है जब हम सामर्थ से जीवन और सेवकाई के लिये इस मुख्य सिद्धांत को अपने प्रतिदिन के जीवन में लागू करने में असफल होते हैं। आइये हम उन तमाम ध्यान भंग करने वाली बातों के प्रति सचेत रहें जो हमें शक्तिहीन कर देते हैं, या फिर हमें समझौते और पाप की ओर ले जाते हैं। सुलैमान ने जिन कार्यों को अपने जीवन में होने दिया,उसके कारण उसका हृदय परमेश्वर से दूर होता चला गया (1 राजा 11:1–4,9)। सांसारिक बातों के कारण उसकी परमेश्वर के प्रति निष्टा और आज्ञाकारिता हल्की पड़ गई, जिसके कारण न सिर्फ उसका अपना परन्तु परमेश्वर ने जिन जिन बातों पर उसे नियुक्त किया था उन सब का नाश हो गया। आपके जीवन के किसी भी कार्य के लिये आपको अपने आप से यह कुछ अच्छे सवाल पूछने चपहियेः क्या यह कार्य और व्यवहार मुझे परमेश्वर और मेरे जीवन के लिये उनका जो उद्देश्य है उसके निकट ले जा रहा है या नहीं? क्या यह मुझे उनसे दूर तो नहीं ले जा रहा?

ख. मनुष्यों से तारीफ तो एक बहुत भयानक गड़ढा है। मनुष्यों से तारीफ पाने के लिये प्रचार करना या शिक्षा देना तो एक बहुत बड़ा फंदा है जो हमें धोखा देता है। केवल परमेश्वर ही है जो अनन्त कालिक वस्तुओं को पूरा कर सकते हैं (जकर्याह 4:6)।

हां, परमेश्वर हमें ऐसे पात्रों की तरह उपयोग जरूर करना चाहते हैं, जिसके द्वारा वे कार्य कर सकें। परन्तु हमारे द्वारा जो कुछ भी भलाई कि जाती है उसकी सामर्थ्य और महिमा तो केवल परमेश्वर के पास

ही है। क्योंकि उनकी सामर्थ्य के बिना हम कुछ भी नहीं कर सकते (यूहन्ना 15:5)।

परमेश्वर ने अपने वचन में हमें बताया है कि वे अपनी महिमा किसी मनुष्य को नहीं देंगे (यशायाह 42:8, 48:11)। हमें मनुष्यों से महिमा या तारीफ पाने के लिये कोई कार्य या सेवकाई नहीं करनी चाहिये (यूहन्ना 7:18)।

प्रभु यीशु ने सबसे अधिक यदि किसी की आलोचना करी है तो वे हैं शास्त्रियों और फरीसी। उन्होंने उनकी ताड़ना करी क्योंकि वे हर काम मनुष्यों से तारीफ पाने के लिये करते थे (मत्ती 23:5–12; यूहन्ना 5:41–44)। भले ही वे शास्त्रों को जानते थे और परमेश्वर के मार्ग से परिचित थे इसके बावजूद भी, उनके घमंड के कारण वे प्रभु यीशु को मसीह के रूप में न तो स्वीकार कर सके ना ही उन पर विश्वास कर सके (यूहन्ना 5:36–40)।

उनके कदमों पर चलना

प्रभु यीशु को पवित्र आत्मा का असीमित अभिषेक दिया गया था (यूहन्ना 3:34,35)। वे तो राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु हैं। फिर भी उन्होंने हमारे लिये, एक नम्र सेवक का रूप धारण किया (मत्ती 20:28; फिलिप्पियों 2:3–11)।

वास्तव में, मसीह की देह के अगुवे होने के नाते हमें चाहिये कि *"जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा हमारा भी हो"* (फिलिप्पियों 2:5)। हमें प्रभु यीशु की तरह असीमित रूप से पवित्र आत्मा नहीं दिया गया। परन्तु हमें उनके सब साधन मिल सकते हैं यदि हम उनके साथ और पवित्र आत्मा के साथ आज्ञाकारिता के सम्बन्ध में जीएं (2 पतरस 1:2–4)।

इन साधनों के बावजूद भी हम अपने मालिक से बढ़कर या अच्छे नहीं हो सकते। बल्कि, हमें उनके समान बनना है (यूहन्ना 13:12–17), और जो परमेश्वर हमें देते हैं उनका नम्र होकर दूसरों की सेवा के लिये उपयोग करना है। इसलिये, यदि परमेश्वर हमें सेवकाई के लिये उपयोग करते हैं तो हमें इस बात का घमंड नहीं करना चाहिये। हमें

घमंड से चौकन्ना रहना चाहिय जो कि शैतान ने वही पाप किया था (1 तीमुथियुस 3:6)।

पापों में सबसे अधिक भयानक पाप

घमंड एक ऐसा भयानक पाप है जो सबसे अधिक समर्पित अगुवे में भी धीमा ज़हर भर सकता है और पवित्र आत्मा के अभिषेक में रुकावट डाल सकता है। कलीसिया के अगुवे के पास अधिक निपुणता, बुद्धि और ज्ञान हो सकता है। परन्तु इन बातों में घमंड करना मूर्खता है। सबसे पहले, इसलिये क्योंकि जो कुछ भी हमारे पास है, परमेश्वर के पास से आता है। दूसरी बात, हमारा ज्ञान, निपुणता और शक्ति सब मिलाकर भी परमेश्वर के आत्मा के अभिषेक जो केवल परमेश्वर ही कर सकते हैं, उसके सामने कुछ भी नहीं (मत्ती 7:21–23; 1 कुरिन्थियों 3:18–21, 4:20, 8:1–3)!

घमंड तो सब पापों में अधिक भयानक पाप है। यह तो शैतान का मूलभूत पाप था (यशायाह 14:12–14)। घमंड़ हमारे अन्दर यह निर्णय लाता है कि हम परमेश्वर से भी ज्यादा अच्छा कर सकते हैं और यही हमें आखिर में परमेश्वर के सामने बलवा करने की ओर ले जाता है।

जब हम परमेश्वर को आधीन होने के बदले अपने आप ही अपनी योजनाएं बनाने लगते हैं, तो वास्तव में हम परमेश्वर के विरुद्ध बलवा कर रहे हैं। और जब हम पूरी तरह आज्ञाकारी नहीं है, तो हम उनसे दूर हो जाते हैं, क्योंकि *"परमेश्वर अभिमानियों से विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है"* (याकूब 4:6)।

घमंड़ हमें आत्मनिर्भर और स्वावलम्बी बना देता है। और उसका परिणाम यह आता है कि हम सोचते हैं अब हमें परमेश्वर या मनुष्य से कुछ भी सीखने की कोई जरूरत नहीं। हम इस बात को अस्वीकार करते हैं कि हमें परमेश्वर से किसी चीज़ की जरूरत हैं, और हम मांगना छोड़ देते हैं, और इसलिये हम पाना भी छोड़ देते हैं (याकूब 4:1,2)। हमारे स्वर्गीय पिता से मांगने या उनसे सीखने के लिये नम्र और बालक के समान विश्वास की जरूरत है (मत्ती 18:3,4)।

परमेश्वर हमारी हर एक जरूरतों को पूरी करने वाला है। हमें नम्रता से इस बात को पहचानना है कि हमें उनकी जरूरत है और उन्हें हमें क्या क्या दिया है, वरना हम कभी भी कुछ भी प्राप्त नहीं करेंगे। घमंड हमें इस प्रकार की नम्रता से दूर रखता है और हमें परमेश्वर के राज्य की आशीषें और उनके अभिषेक से दूर रखता है।

केवल परमेश्वर पर भरोसा रखो

कुछ देर के लिये एक सिक्के के विषय में विचार करें। उसकी एक तरफ लिखा है, "घमंड़" और दूसरी तरफ लिखा है, "मनुष्य का भय"। शरीर के यह दो पाप कई बार कई व्यक्तियों के जीवन में एक साथ दिखाई देते हैं। *"मनुष्य का भय खाना फन्दा हो जाता है, परन्तु जो यहोवा पर भरोसा रखता है वह ऊंचे स्थान पर चढ़ाया जाता है"* (नीतिवचन 29:25)। *"मनुष्य का भय"* इसके कई रूप है। कुछ आम बातें जिसमें पासबान फंदे में आ जाते हैं वो कुछ इस तरह से हैं:

- कलीसिया के लोगों को नाखुश करने का या नाराज़ करने का भय (यहां तक कि उनके पापों को भी अनजान करना)।
- जो लोग ज्यादा पैसे देते हों या जिनका ज्यादा प्रभाव हों उनकी वकालत करना।
- साथी पासवान या विश्वासियों की संगति पाने के लिये (यहां तक की उनसे अधिक अच्छे दिखाई देने के लिये) कार्य करने का या जीतने का प्रयास करना।

और भी कई ऐसी बातें हैं जिनसे हम मनुष्य के भय के फंदे में आ सकते हैं। वो चाहे जो कोई भी हों परन्तु जब आप मनुष्य के भय को अपने अन्दर जगह देते हैं तब आप दूसरों की इच्छा के अनुसार कार्य करने के फंदे में फंस जाते हो। आप उनके विचार और आलोचना के फंदे में फंस जाते हैं। फिर जब आप मनुष्यों के विचारों को पूरा करने में व्यस्त हैं, तो फिर आप परमेश्वर की अपने पूरे मन से सेवा कैसे कर सकते हैं? कोई भी दो मालिकों की सेवा नहीं कर सकता (मत्ती 6:24); यदि आपके हृदय के दो टुकड़े हो गये हैं तो आप खड़े नहीं हो सकते (भजनसंहिता 86:11, मरकुस 3:24,25)।

प्रभु यीशु ने भी, लोगों की स्वार्थी इच्छाओं के कारण इस परेशानी का सामना किया (मरकुस 1:35–36; यूहन्ना 6:15,22–40); फरीसियों की आलोचना (मत्ती 22:15–22; लूका 7:36–50); यहां तक की उनके इस पृथ्वी पर के परिवार की मांग (मत्ती 12:46–50; यूहन्ना 7:1–9)।

इन सब और ऐसी ही कई अधिक बातों में प्रभु यीशु ने लोगों के विचारों के प्रति ध्यान नहीं दिया। बल्कि उन्होंने अपना ध्यान इन सब से ऊपर उठकर केवल परमेश्वर की इच्छा पूरी करने पर लगाया फिर चाहे जो भी कीमत चुकानी पड़े।

जब लोगों ने प्रभु यीशु पर विश्वास किया और ऐसा लगता था कि वे उनके पीछे चलते थे, वे तो जानते थे कि मनुष्य का हृदय कितना चंचल है (यूहन्ना 2:23–25)। प्रभु यीशु ने अपने चेलों को भी चेतावनी दी कि वे मनुष्यों की तारीफ पर विश्वास न करें और ना ही उन्हें खोजें (लूका 6:26); क्योंकि यदि हम मनुष्यों के सामने अच्छा दिखना चाहते हैं तो, हमारे हृदय केवल परमेश्वर की सेवा करने को तत्पर नहीं रहेंगे।

परमेश्वर को ऐसे लोगों की जरूरत है जिनके हृदय संपूर्ण और केवल उन्हीं के प्रति ईमानदार हों। और ऐसे लोगों के द्वारा वे महान कार्य करेंगे (2 इतिहास 16:9)। और ऐसे ही लोगों पर वे अपना अभिषेक उंडेल देंगे।

ऐसी कौन सी बात है जो हमें मनुष्य के भय से सुरक्षित रख सकती है: और वो तो है परमेश्वर पर विश्वास (नीतिवचन 29:25)। जब हम परमेश्वर को जानते हैं, जब हमने उनकी इच्छा के लिये उनको ढूंढा, और उन पर संपूर्ण विश्वास रखने के कारण, वो जो कुछ भी कहे उसका हम आज्ञापालन करते हैं – तो मनुष्य क्या सोचता है, उसकी हम परवाह नहीं करेंगे।

ग. बड़े समझौतों की शुरुआत छोटे छोटे समझौतों की "छोटी लोमड़ियों" से होती है (श्रेष्ठगीत 2:15)। परमेश्वर जिनका महत्वपूर्ण कार्य के लिये उपयोग करते हैं उन अगुवों में एक आम परेशानी पायी जाती है। वे तो यह मानने लगते हैं कि वे इतने महत्वपूर्ण हैं कि उन्हें परमेश्वर के सारे सिद्धान्त और मापदण्ड मानने की कोई

जरूरत अब नहीं रही। वे उनके विषय में जानते तो होंगे, और उन्हें सिखा भी सकते होंगे, परन्तु वे यह नहीं मानते कि उन्हें व्यक्तिगत रूप से उनके अनुसार जीने की आवश्यकता है।

इसे मैं "अगुवाई की अपवाद शर्त" कहता हूं। और यह तो तब है जब अगुवे यह मानने लगे कि वे इतने महत्वपूर्ण हो गये हैं कि उन्हें अब नम्र बनने की, या सेवा करने की, या दूसरों के प्रति धीरज रखने की, या समर्पण करने की कोई जरूरत नहीं। अपने मनों में वे परमेश्वर के मापदण्ड के लिये "अपवाद" बन जाते हैं। वे अपने "महत्व" और "सफलता" की वजह से अपनी स्वार्थी और शारीरिक बातों के पीछे लगना एक माफी के पात्र मानते हैं।

वे संसार की विचारधारा को मान लेते हैं, कि सेवकाई में उनकी सफलता उनकी अपनी महान शक्तियों और वरदानों की वजह से हैं और वे एक प्रसिद्ध व्यक्ति की तरह जीने लगते हैं।

क्योंकि परमेश्वर विश्वासयोग्य हैं कि उनके द्वारा सेवकाई करना जारी रखें (रोमियों 11:29), ये अगुवे परमेश्वर की अच्छाई का अनुचित लाभ उठाते हैं। वे धीरे धीरे ऐसे व्यवहार और विचारधारा अपनाने लगते हैं जो कि आखिर में उन्हें पाप करने पर ले जाती है। और इसके परिणाम स्वरूप उनकी सेवकाई असफल हो जाती है, यहां तक कि उनके विश्वास का भी नाश होता है (1 तीमुथियुस 1:19) या फिर उनके विवेक को दाग देती है (1 तीमुथियुस 4:2)।

इससे परमेश्वर का पवित्र आत्मा शोकित होता है (इफिसियों 4:30) *और बुझ जाता है* (1 थिस्सलुनीकियों 5:119)। और आखिर में परमेश्वर का अभिषेक बहना बन्द हो जाता है।

कलीसिया के अगुवे होने के नाते, हमें इसलिये बुलाया गया है कि हम मसीह की देह के लिये मसीह के स्वभाव (चरित्र का) नमूना उदाहरण बनें। हम अपवाद नहीं है। हमें परमेश्वर के वचन को जानना और अपनी संपूर्ण शक्ति से उन पर जीना बहुत जरूरी है। यदि ऐसा करने में हम असफल होते हैं, तो हमें तुरन्त पश्चाताप करना चाहिये (2 कुरिन्थियों 7:10; प्रकाशितवाक्य 3:19)।

जब लोगों ने प्रभु यीशु पर विश्वास किया और ऐसा लगता था कि वे उनके पीछे चलते थे, वे तो जानते थे कि मनुष्य का हृदय कितना चंचल है (यूहन्ना 2:23–25)। प्रभु यीशु ने अपने चेलों को भी चेतावनी दी कि वे मनुष्यों की तारीफ पर विश्वास न करें और ना ही उन्हें खोजें (लूका 6:26); क्योंकि यदि हम मनुष्यों के सामने अच्छा दिखना चाहते हैं तो, हमारे हृदय केवल परमेश्वर की सेवा करने को तत्पर नहीं रहेंगे।

आइये हममें से प्रत्येक जन धर्मशास्त्र की इस चेतावनी पर ध्यान दें: *"और जान रखो कि तुमको तुम्हारा पाप लगेगा"* (गिनती 32:23; गलातियों 6:7,8; 1 तीमुथियुस 5:24,25 भी पढ़ें)।

अपने हृदय की चौकसी करें

बाइबल हमें प्रोत्साहित करती है, *"सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है"* (नीतिवचन 4:23)। सुलैमान राजा ने परमेश्वर के साथ अपना सम्बन्ध तोड़ने और अपने राजा अधिकार को नष्ट कर देने के बाद शायद यह वचन लिखा। हम निश्चित रूप से नहीं जानते। परन्तु परमेश्वर के आत्मा के द्वारा जो सत्य सुलैमान राजा ने लिखा वो आज भी हमसे साफ बातचीत करता है।

शैतान के पास हमें आकर्षित करने के कई "चूहे" हैं। हमारे शरीर में भी कई अयोग्य और पापी इच्छाएं हैं। परन्तु यह सब चीज़ें हमारे अन्दर आकर ही प्रदूषित कर सकती है, यदि हम उनके लिये अपना

द्वार खोलें। वे हमारे हृदय के निवास स्थान को जो कि परमेश्वर की आत्मा का निवास स्थान है उसे तभी भ्रष्ट कर सकती है जब हम उन्हें अन्दर आने दें और पाप को जगह दें।

तो फिर हम अपने कुएं को शुद्ध कैसे रख सकते हैं? हम जो कि पवित्र आत्मा का भवन हैं (1 कुरिन्थियों 6:19–20), हम कुछ व्यवहार तरीके अपना सकते हैं, आइये हम उनके विषय में देखें।

2. पवित्रता का मार्ग

क. परमेश्वर के वचन के मापदण्ड पर जीयो। भजनकार एक गंभीर आलोचनात्मक सवाल पूछता है, और फिर उसका जवाब देता है। *"जवान अपनी चाल को किस उपाय से शुद्ध रखें? तेरे वचन के अनुसार सावधान रहने से"* (भजन संहिता 119:9)।

पौलुस के तीमुथियुस और तीतुस को लिखे पत्रों के द्वारा पवित्र आत्मा सभी पासबानों को साफ मार्गदर्शन देता है। वह तीन "पासबानीय पत्रियों" (1 और 2 तीमुथियुस और तीतुस) पासबानों को (तीमुथियुस और तीतुस) उनके व्यक्तिगत मामलों के विषय में लिखी गई थी।

तीमुथियुस की पत्री में हम पढ़ते हैं कि मनुष्यों के विचार नहीं परन्तु परमेश्वर का वचन हम जो सब करते हैं, बोलते हैं, बनते हैं और सेवकाई करते हैं, उसें हमें मार्गदर्शन देता है (1 तीमुथियुस 4:12–16; 2 तीमुथियुस 2:15–18; 3:16,17)।

प्रभु यीशु बताते हैं कि परमेश्वर का वचन हमारे जीवन का मापदण्ड है। वे बताते हैं कि संपूर्ण वचन पालन से यदि हम जरा सा भी कम पाये जाते हैं तो वह हमारी असफलता है और उसके लिये हमारा न्याय हो सकता है (मत्ती 5:17–20)। परमेश्वर का वचन पवित्र आत्मा से प्रेरित है (2 तीमुथियुस 3:16, 2 पतरस 1:19–21) और पवित्र आत्मा ने उसका समर्थन किया है (यूहन्ना 14:26; इब्रानियों 4:12,13)।

मनुष्यों के विचार चाहे कितने ही भलाई से अभिप्रेत या आकर्षित क्यों न हो, वे हमारे जीवन के मार्गदर्शन नहीं है। और हमें कलीसिया को परमेश्वर के राज्य में जीवन के विषय में सीखने योग्य भी नहीं है।

हमें मनुष्यों के अभिप्रायों के विषय में बहुत ही चौकन्ना रहना चाहिये (1 कुरिन्थियों 2:116) – भले ही हम उनसे सहमत क्यों न हों। क्योंकि मनुष्य, भले ही हम उनका आदर करते हों या उन पर विश्वास करते हों, आखिर केवल मनुष्य ही है।

यह जरूर है कि कुछ लोग हमारी मदद कर सकते हैं। उन्होंने जो सीखा है वो हमें सिखा सकते हैं। परमेश्वर के वचन के विषय में उनका ज्ञान और अनुभव हमारे लिये लाभदायी हो सकते हैं। परन्तु वह भी उतना ही लाभदायी है जब तक वह परमेश्वर के वचन से पूरी तरह से सहमत हो।

हमारा जीवन लोगों के अभिप्राय से या सेवकाई के आधुनिक प्रवाह से शुद्ध नहीं हो सकता। हम परमेश्वर के सम्मुख खरे तभी उतर सकते हैं जब हम केवल उनके पीछे चलें और उनका वचन मानें।

पवित्र आत्मा एक ही है और परमेश्वर के अनन्तकालिक वचन का एक ही स्रोत है – बाइबल! तो इसे पढ़िये, उसपर ध्यान करिये, उसका अध्ययन कीजिए, उसे याद करिए, उसका पालन करिये, उस के अनुसार जीएं, उसका प्रचार करें, उसे सीखाइये आमीन!

ख. पवित्र आत्मा प्रार्थना में कार्य करता है। *"मनुष्य की आत्मा यहोवा का दीपक है; वह मन की सब बातों की खोज करता है"* (नीतिवचन 20:27)। हमारी प्रार्थना का समय आशीष और निर्देश का स्रोत और सहभागिता दोनों का स्रोत है। प्रार्थना तो एक शक्तिशाली साधन बन सकता है, जब वह पवित्र आत्मा उसे मार्गदर्शन दें।

बदकिस्मती से, जीवन की व्यस्त प्रवृत्तियों में, आप और मेरे जैसे कलीसिया के अगुवे कई बार केवल परमेश्वर की बाट जोहने की अपेक्षा करते हैं। परन्तु जब हम परमेश्वर की बाट जोहने और उनकी आवाज़ सुनने में समय बिताते हैं, तभी पवित्र आत्मा वास्तव में हमारे दिलों में कार्य कर सकता है।

हममें से हर एक को पवित्र आत्मा के द्वारा नियमित और सम्पूर्ण हृदय की जांच परख जरूरी है। जब हम प्रार्थना करके परमेश्वर की

बाट जोहते हैं तो वे हमें हमारे छुपे हुए अर्थ, अशुद्ध बातें या फिर हमारी कमजोरी हमारे सामने प्रगट करते हैं। हमारे लिये और मसीह के देह के लिये उनके प्रेम के कारण, पवित्र आत्मा हमारे दोष बनाकर हमें आकार देना चाहते हैं, ताकि हम उन बातों का ध्यान रखें, जो हमारे जीवन और सेवकाई को नाश कर सकती हैं।

आत्मप्रवचना के प्रति चौकसी

क्योंकि हम सेवकाई में कार्यशील हैं, बाइबल के विषय में जानते हैं और दूसरों को सिखा सकते हैं इसका यह अर्थ नहीं कि हम सम्पूर्ण हैं। मनुष्य का दिल धोखा खा सकता है और पाप के लिये बहाना बना सकता है, इन बातों के प्रति हमें और भी अधिक जागरुक रहना चाहिये।

मेहरबानी करके इसी वक्त थोड़ा समय निकालकर नीचे दिये गये वचनों को पढ़ें:

- नीतिवचन 16:2,25; 28:26
- यिर्मयाह 17:9,10
- 1 कुरिन्थियों 10:12,13

पवित्र शास्त्र में ऐसे कई और वचन हैं जो हमें साफ प्रगट करते हैं कि हमें पवित्र आत्मा के सामने अपने हृदय खोल देने चाहिये। परमेश्वर तो हमारे संघर्ष को पहले से ही जानते हैं, हम उसे उनसे छुपा नहीं सकते। परन्तु हम अपने आपको धोखा देकर पाप को, शरीर की इच्छाओं या पापमय व्यवहार के कारण खंडित होने को तब तक चलने देते हैं जब तक उससे हमारे जीवन में अपवित्रता के फल न दिखाई दें।

परमेश्वर ऐसे हृदयों को खोजते हैं जो पाप से मुक्त हों। वे चाहते हैं कि ऐसी कोई बात न हों जो हमारे अभिषेक, या हमारे जीवन और सेवकाई की फलदायिता में रूकावट लाये। जब आप नम्र होकर पाप से अपने हृदय को चौकन्ना रखने के लिये विश्वासयोग्य साबित करते हैं और पवित्र आत्मा को आपको अन्दर से साफ करने की अनुमति देते हैं, तो परमेश्वर का असीमित अभिषेक बरस पड़ता है।

पास्टर से पास्टर तक : जितना हम परमेश्वर के साथ ज्यादा चलते हैं उतना ही पवित्र आत्मा को हमारे अन्दर आकर देने के कार्य की हमें जरूरत नहीं लगती।

दुःखद बात यह है कि, यह बात कलीसिया के अगुवों के लिये सच होती है। हम परमेश्वर के वचन को सीखने और सिखाने में इतना व्यस्त रहते हैं कि हम यह मानने लगते हैं कि हम हर रोज उसे अपने जीवन में भी लागू करते हैं। हम अपनी सेवकाई और दूसरों के लिये प्रार्थना करने में इतने एकाग्र हो जाते हैं कि हम अपने आपके लिये परमेश्वर की बाट जोहना और उनसे सुनने की अपेक्षा करते हैं हम मुस्कुराना और सब कुछ ठीक है यह दिखाना सीख जाते हैं, फिर चाहे अपने अन्दर हम पाप और खण्डित होने से संघर्ष क्यों न कर रहे हो। क्या आप मानते हैं कि ऐसा कई बार होता है?

प्रभु यीशु ने यह प्रगट किया है कि हमारी धार्मिकता हृदय की धार्मिकता होनी चाहिये। वह तो फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर होनी चाहिये (मत्ती 5:20)।

कृपया याद रखें कि प्रभु यीशु ने इसलिये मनुष्यों के लिये अपना प्राण नहीं दिया ताकि एक नया धर्म शुरु हों। उन्होंने अपना जीवन दिया ताकि हमें परमेश्वर के लिये फिर से स्थापित कर सकें, और फिर हमें सतत अधिक से अधिक मनुष्य की उस प्रतिमा में रूपान्तर कर सके जिसके लिये मनुष्य को वास्तव में बनाया गया था, जो पाप ने हमें निर्दयता से नाश किया उससे पहले हम थे उसी रूप में (मत्ती 15:10–20; 23:23–28; रोमियों 12:1,2; 2 कुरिन्थियों 3:18; 1 यूहन्ना 3:1–3)। हमने यह सीखा कि यह तो एक आजीवन प्रक्रिया है, हम अगुवों के लिये भी।

यदि हम अपने हृदय के अन्दर की हालत की अपेक्षा करते हैं तो, पाप में पड़ना बहुत आसान हो जाता है। हो सकता है शुरुआत छोटी छोटी परेशानियों से हों, परन्तु यह छोटे छोटे समझौते बहुत अधिक नाश की ओर ले जाते हैं। और इसलिये यह बहुत जरूरी है कि हम पवित्र आत्मा को हर रोज अपने अन्दर कार्य करने दें, ताकि वह हमारे दोष दिखा सकें और उन्हें पाप की ओर आगे बढ़ने से पहले ही रोक दें।

"हे प्रभु, मेरे हृदय को जांचें"

यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम पवित्र आत्मा को अपने मन और आत्मा में दीया जलाने दें। हमें उनकी जरूरत है, ताकि वे हमें हमारे हृदयों की हालत दिखा सकें, हमें शुद्ध कर सकें, हमें फिर से नया बना सकें और हमें बदल सकें। और हमारे जीवन के लिये परमेश्वर की यही इच्छा है (फिलिप्पियों 1:6; 2 कुरिन्थियों 3:18; रोमियों 8:29)।

जब हम प्रार्थना में पवित्र आत्मा के कार्य में साथ देते हैं तो हम "आदर के बरतन" ठहरेंगे (2 तीमुथियुस 2:20,21)। फिर परमेश्वर अपने पवित्र आत्मा का अभिषेक बहुतायत से उंडेंल देंगे और अपने आपको हमारे अन्दर और हमारी सेवकाई के द्वारा दूसरों तक ज्यादा से ज्यादा प्रगट करेंगे।

आइये, हम भी दाऊद की तरह हर रोज यह प्रार्थना करें: *"हे ईश्वर, मुझे जांचकर जान ले। मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले! और देख ले कि मुझमें कोई बुरी चाल है कि नहीं, और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर"* (भजन संहिता 139:23,24)।

ग. आज्ञाकारिता में चलो। *"और इन बातों के गवाह हैं, और पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है, जो उसकी आज्ञा मानते हैं* (प्रेरित के काम 5:32)। हम पासवान के व्यक्तिगत जीवन में परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा के बदलाव के कार्य का क्या स्थान है इस विषय में चर्चा कर चुके हैं। और वे तो एक शुद्ध जीवन जीने के लिये अनिवार्य कुंजियां है।

हालांकि, यह दोनों ही हमारे जीवन में निष्फल बन सकती है – यदि हम आज्ञा का पालन न करें।

जब हम परमेश्वर के आदेश को अनदेखा कर दें या फिर पवित्र आत्मा ने जो हमारे दिल में प्रगट किया है इसे मानने से इंकार कर दें तो यह हमारी अनाज्ञाकारिता होगी (याकूब 1:21–25)। शाऊल तो इस प्रकार की अनाज्ञाकारिता का साफ उदाहरण है (पढ़ें 1 शमूएल 15:1–35)। दाऊद ने शाऊल की इन असफलताओं से बखूबी सीखा और इस आलोचनात्मक सिद्धांत के विषय में लिखा (पढ़ें भजन संहिता 40:6–8)।

कलीसिया के अगुवे ज्यादातर सेवा करने के लिये और सेवकाई के लिये बलिदान करने को इच्छुक रहते हैं। और इसमें कुछ गलत नहीं है। परन्तु परमेश्वर बलिदान से कुछ अधिक की इच्छा रखते हैं; उन्हें हमारे नम्र और समर्पित आज्ञापालन की जरूरत है (1 शमूएल 15:22,23)। हमारे अन्दरूनी उद्देश्यों, विचार और हर रोज के व्यवहार में परमेश्वर और उनके वचन के प्रति आज्ञाकारिता का क्या महत्व है, इसके विषय में हम अध्ययन कर चुके हैं। परन्तु परमेश्वर के कार्य जो हम करते हैं, और कैसे करते हैं दोनों में आत्मा के कार्य को हमारी आज्ञाकारिता की जरूरत है।

आज्ञाकारिता के द्वारा बांधना

मूसा ने परमेश्वर की अगुवाई को अधीन होने के विषय में यह अत्यधिक दु:खद पाठ सीखा (गिनती 20:7–13)। मूसा को परमेश्वर ने यह आज्ञा दी थी कि वह *"मंडली को इक्ट्ठा करके उनके देखते उस चट्टान से बातें करें, तब वह अपना जल देगी"* (पद 8)। परन्तु इसके बदले मूसा ने लाठी चट्टान पर मारी (पद 12) और इसका परिणाम यह आया कि मूसा वाचा के देश में प्रवेश नहीं कर पाया (पद 12; व्यवस्था विवरण 31:1,2; 32:48–52)। मूसा ने परमेश्वर के इतने साफ आदेश को क्यों नहीं माना? इस्राएलियों ने जंगल में पहले भी दो बार सूखा और अकाल का सामना किया था (निर्गमन 25:22–26; 17:1–7)। पहली बार में, परमेश्वर ने मूसा को कड़वे पानी जिसे पी नहीं सकते, उसमें एक पेड़ डालने को कहा, और वो पानी मीठा हो गया। दूसरी बार में, परमेश्वर ने मूसा से चट्टान को मारने के लिये कहा, और ताज़ा पानी निकल आया।

परन्तु तीसरी बार, परमेश्वर ने मूसा को कुछ अलग करने को कहा, उन्होंने मूसा को चट्टान से बात करने को कहा। परन्तु मूसा ने वो ही किया जो पहले किया था, और चट्टान को मारा। शायद परमेश्वर जिस नये मार्ग में मूसा को चलाना चाहता था, उसके लिये मूसा तैयार नहीं था। शायद मूसा इस्राएलियों के झगड़ों से गुस्सा था या फिर अधीर हो गया था। हम निश्चित रूप से कह नहीं सकते। परन्तु हम इतना

तो जानते हैं कि मूसा की अनाज्ञाकारिता से परमेश्वर नाखुश हुये (गिनती 20:12)।

महत्वपर्ण पाठ यह है कि यहीं पर परिणाम पद्धति से ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं था। इस्राएलियों को जिस पानी की इच्छा थी वो तो उन्हें मिला। परमेश्वर का आज्ञाकारिता का मापदण्ड उसके परिणाम में नहीं हुआ, परन्तु वह उनके सेवक में जिसने सम्पूर्ण रीति से परमेश्वर के तरीके से उनके उद्देश्य को पूरा किया। और वह तो आज्ञाकारिता का सारांश है।

हमें परमेश्वर के वचन को और पवित्र आत्मा की अगुवाई को अनुसरण करना है, फिर भले ही हम अपने छोटे से दिमाग में इसके पीछे का "क्यों" न समझ पायें (यशायाह 55:8,9; 1 कुरिन्थियों 1:18–25)। परमेश्वर ने हमारी अगुवाई करने के लिये और हमें मार्गदर्शन देने के लिये अपना पवित्र आत्मा दिया है। हम जो परमेश्वर की सन्तान हैं, हमें उन पर विश्वास करने और उनकी आज्ञा मानने के लिये बुलाया गया है (रोमियों 8:14)।

इस बात को कृपया समझें कि आज्ञाकारिता तो परमेश्वर की आशीष और अभिषेक पाने का रास्ता नहीं है। हालांकि, जब हम आज्ञाकारिता पर चलते हैं, तब हम परमेश्वर और उनके वचन के सिद्धान्तों के साथ अपने आपको बांध देते हैं। और जब हम ऐसा करते हैं, तब हमारे लिये परमेश्वर का अधिक अभिषेक का सामर्थ्य प्राप्त होता है।

पौलुस इस सिद्धांत के विषय में लिखता है: *"परन्तु मैं अपनी देह को मारता, कूटता, और वश में लाता हूं, ऐसा न हों कि औरों को प्रचार करके, मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं"* (1 कुरिन्थियों 6:27)। पौलुस इस बात को बखूबी जानता था कि उसका व्यक्तिगत व्यवहार सीधे सीधे परमेश्वर ने उसे जो सेवकाई दी है उससे झूठा है।

नये नियम के स्तर

एक पासबान के जीवन में दो मूलभूत पहलू हैं: एक तो उसका व्यक्तिगत जीवन और दूसरा उसका आम जीवन या सेवकाई। और

परमेश्वर इन दोनों पहलुओं में आज्ञाकारिता की अपेक्षा करते हैं। एक पासबान को जीवन के व्यक्तिगत और आम दोनों पहलू पवित्र आत्मा और परमेश्वर के वचन की शिष्त और वृद्धि में बने होने चाहिये।

यदि कलीसिया का अगुवा अपने जीवन के हर पहलू में आज्ञाकारिता को समर्पित है, तो परमेश्वर के आत्मा का अभिषेक भी उसके जीवन के हर पहलू में बरसेगा।

यह मानना बिल्कुल गलत है कि अभिषेक केवल आम सेवकाई के लिये ही है। आपके जीवन में व्यक्तिगत रूप से और परिवार में आपका प्रभाव और साथ ही, वे आपको आपके नौकरी पेशे और दूसरे हालात में भी कैसे उपयोग करते हैं उसकी भी चिन्ता रखते हैं।

नये नियम में कलीसिया के अगुवों के लिये जो आवश्यकताएं बताई गई हैं (पढ़ें 1 तीमुथियुस 3:1–7)। वे हम पासबानों के लिये भी मापदण्ड हैं। आरंभ की कलीसिया के अगुवे तो उन कलीसियाओं के पासबान थे। इसलिये उनके व्यक्तिगत और आम जीवन के लिये जो मार्गदर्शन और मापदण्ड थे वे आज के पासबानों के लिये भी हैं।

बाइबल सम्बन्धी व्यवस्था

कई पासबान इन मापदंडों को उपेक्षा करते हैं, विशेष के अपनी पत्नी और बच्चों को। वे सोचते हैं कि अपनी सेवकाई के प्रति सम्पूर्ण समय समर्पित करने के लिये अपने परिवार की उपेक्षा करना यह तो ईश्वरीय बात है। परमेश्वर का वचन हमें साफ बताता है कि परमेश्वर ने पासबानों को ऐसा करने के लिये नहीं बुलाया है।

एक पति को (पासबान भी) चाहिये कि वह अपनी पत्नी से वैसा प्रेम करें जैसा मसीह ने कलीसिया से किया, यानि बहुतायात से और समर्पित प्रेम। एक पासबान और उसकी पत्नी को एक दूसरे के प्रति आदर और प्रेम होना चाहिये, एक दूसरे के लिये प्रार्थना और एक दूसरे की सेवा करनी चाहिये। बच्चों को ना कि सिर चढ़ाना चाहिये और ना ही उनसे नौकरों जैसा व्यवहार करना चाहिये। बल्कि, उनका सही पालन पोषण होना चाहिये, उनकी कदर करनी चाहिये और उन्हें ईश्वरीय बातों तथा प्रेम में बड़ा करना चाहिये। हमें अपने बच्चों के लिये

मसीह की और उनके स्वर्गीय प्रेमी पिता के गुणों का नमूना बनना चाहिये (पढ़ें इफिसियों 5:22–33, 6:1–4, कुलुस्सियों 3:18–23, 1 पतरस 3:7)।

हमारा परिवार हमारे लिये प्राथमिकता होना चाहिये और उनकी जरूरतों को पूरा करना हमारी जिम्मेदारी है जिसे हम अनदेखा नहीं कर सकतेः *"पर यदि कोई अपनों की और निज करके अपने घराने की चिन्ता न करें, तो वह विश्वास से मुकर गया है, और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है"* (1 तीमुथियुस 5:8)। बाइबल सम्बन्धी व्यवस्था यह है कि : परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध सबसे प्रथम, हमारे परिवार के साथ दूसरा; और हमारी सेवकाई और दूसरी जिम्मेदारियां इन दोनों के बाद।

पासबान की आर्थिक प्रबंध को संभालना भी परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा के मार्गदर्शक से होना चाहिये। परमेश्वर एक पासबान को व्यक्तिगत रूप से जो स्रोत देते हैं उसे ऐसे उपयोग करना चाहियेः

- अपने दशमांश और भेंट से परमेश्वर की स्तुति करो;
- अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करके उनको आशीषित करो;
- परमेश्वर ने जो हमें दिया है उन्हें दूसरों के साथ बांटो।

जिस सहायता की हमें जरूरत है

पासबान की सेवकाई भी परमेश्वर के वचन को आधीन होकर और पवित्र आत्मा की अगुवाई में होकर होनी चाहिये। पवित्र आत्मा हमारी सहायता करेगा और हमें मार्गदर्शन देगा, कि विशेष सेवकाई की परिस्थिति में वो हमसे क्या करवाना चाहता है।

जब हम अपने आपको समर्पित और शिष्यद्ध करते हैं, परमेश्वर की सलाह–सूचना को सुनते हैं, परमेश्वर के वचन को अध्ययन करते हैं, नियमित प्रार्थना करते हैं और पवित्र आत्मा की अगुवाई का अनुसरण करते हैं, हम मसीही अगुवे होने के नाते वृद्धि पायेंगे और समझ में परिपक्व बनेंगे। और जब हम ऐसा करते हैं तो, हम अपने जीवन पर और अपनी सेवकाई के द्वारा परमेश्वर के अभिषेक को अधिक मात्रा

में बरसने की अपेक्षा कर सकते हैं (देखें पौलुस का तीमुथियुस को प्रोत्साहनः 1 तीमुथियुस 4:12–16, 6:11,12,20; 2 तीमुथियुस 1:6,7,13,14; 2:1,15,16,22–25; 4:1–5)। हमारे लिये परमेश्वर की यही इच्छा है। हमें विश्वासयोग्यता से उनकी सेवा करने के लिये और उनके वचन के अनुसार जीवन जीने के लिये जिन बातों की जरूरत हैं, वे उन्हें पूरा करते हैं। परन्तु हमें आज्ञाकारिता को ही पसंद करना चाहिये।

पास्टर से पास्टर तक : एक पासबान से दूसरे पासबान कोः यदि कोई पासबान या कलीसिया का अगुवा अपने व्यक्तिगत या आम जीवन के विषय में इन मूलभूत सिद्धांतों को भंग करता है या सतत अनदेखा करता है, तो परमेश्वर का अभिषेक बुझ जाता है। और उनके घर और सेवकाई दोनों के फलवान होने में नुकसान होता है।

यदि सम्पूर्ण पश्चाताप और परमेश्वर के उद्देश्यों के प्रति पुनःवचनबद्ध न हों तो अगुवे के व्यक्तिगत जीवन और सेवकाई दोनों में नाश होने का जोखिम है। इस नाश में समय लग सकता है परन्तु यह सुनिश्चित है कि हम जो बोयेंगे वही काटेंगे (गलतियों 6:7,8)।

यह दुःखद बात है कि, आज कलीसिया में वरदानों से भरपूर और सामर्थ्य से अभिषिक्त ऐसे कई अगुवे हैं जो ढोंगी जीवन जीना शुरु कर देते हैं। दूसरे शब्दों में, वे सीखाते कुछ है और स्वयं चलते किसी और राह पर हैं।

कई बार हम सब असफल हो जाते हैं, और हममें से कोई भी सम्पूर्ण नहीं। परन्तु मैं यहीं कभी कभी असफलता की बात नहीं कर रहा जिसके बाद फौरन पश्चाताप आता है। परन्तु, मैं तो अगुवे के व्यक्तिगत जीवन में परमेश्वर के वचन के मापदण्ड का सतत, लज्जाजनक उल्लंघन की बात कर रहा हूं।

इससे हमारे ईश्वर पिता और प्रभु यीशु के नाम का अनादर होता है। इसके कारण लोग मसीह के द्वारा उद्धार से दूर हो जाते हैं। कलीसिया के अगुवों के व्यक्तिगत जीवन में ईमानदारी की कमी

की वजह से कलीसिया के लोग और हमारे अपने परिवार के लोग भी परमेश्वर की बातों के प्रति भ्रम में पड़ जाते हैं।

यह तो बात गलत है, और यदि आपके व्यवहार के कारण कोई दूसरा ठोकर खाता है, तो प्रभु यीशु किसी विशेष दोष के विषय में चेतावनी देते हैं (लूका 17:1,2)। हमारे कार्यों के ऊपर परमेश्वर का न्याय नियमित है (1 कुरिन्थियों 3:11–15)।

हमारे सम्पूर्ण जीवन का परमेश्वर

विश्वासी होने के नाते पवित्र आत्मा हममें निवास करता है; वह हमें परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिये अभिषेक करता है। उनकी इच्छा यही है कि वह केवल हमारी सेवकाई को ही नहीं परन्तु हमारे सम्पूर्ण जीवन को भर दें। प्रभु यीशु हमारे जीवन के किसी एक हिस्से का नहीं परन्तु हमारे सम्पूर्ण जीवन के व सम्पूर्ण हृदय के प्रभु हैं (2 पतरस 3:15)। हमें चाहिये कि हम अपने जीवन के तमाम पहलुओं में परमेश्वर और उनके वचन के आधीन हों, ताकि हमारे द्वारा उनकी महिमा हो और हम उनके उद्देश्यों के लिये असरकारक साधन बनें!

घ. हमें अभिजात सम्बन्धों की आवश्यकता है। पासबान और अगुवे कई बार अपने जीवन के विषय में बताते हुए हिचकिचाते हैं। उनकी यह असुरक्षित भावना एक दूसरे के साथ ईर्ष्या या होड़ उत्पन्न

हमें अभिजात सम्बन्ध की ज़रूरत है। हम जो दूसरों के साथ हमारे स्वस्थ सम्बन्ध नहीं होने से, हमारा कलीसिया के अगुवे होने के नाते प्रभाव कम हो जाता है। हमें एक दूसरे की आवश्यकता है; शायद जितना हम सोचते हैं या स्वीकार करते हैं इससे कहीं अधिक।

कर सकती है। शैतान इन भावनाओं का लाभ उठाता है ताकि, मसीह की देह, विशेष करके अगुवे विभाजित हों और एक दूसरे से भयभीत हों। दूसरों के साथ हमारे स्वस्थ सम्बन्ध नहीं होने से मसीही अगुवे होने के नाते हमारा प्रभाव कम हो जाता है। हमें एक दूसरे की आवश्यकता है, शायद जितना हम सोचते हैं या कबूल करते हैं इससे कई ज्यादा। विश्वासी लोग, पासबान भी, एक परिवार है (भाई–बहन) और यह तो किसी पदवी, स्थान, साम्प्रदायिक सम्बन्ध या आपकी कलीसिया के विस्तार से कई ज्यादा महत्वपूर्ण है।

मसीह की देह में हमें अलग अलग प्रकार के वरदान और कार्य इसलिये दिए गये हैं ताकि हम एक साथ मिलकर असरकारक कार्य करें (रोमियों 12:3–8; 1 कुरिन्थियों 12)। सेवकाई में दूसरे विश्वासी और अगुवों के साथ साझेदारी के बिना प्रभावशाली कार्य करने की क्षमता हममें से किसी के भी पास नहीं है। परन्तु इस प्रकार की एकता के लिये समझ, प्रेम, सेवक का स्वभाव और नम्रता बहुत जरूरी हैं।

मजबूत सहारा

पासबानों को विशेषकर एक दूसरे की जरूरत है। हमें दूसरे पासबानों और अगुवों के साथ सम्बन्ध में आगे बढ़ना चाहिये। इसका प्राथमिक उद्देश्य तो आपसी उत्तरदायित्व को बनाना है। हमारे आत्मिक स्वास्थ्य के लिये और असफलता से बचने के लिये हमारे अन्दर ये होना बहुत जरूरी है।

ऐसे सम्बन्धों में एक प्रामाणिक खुलापन होना चाहिये, जिसमें हम अपने जीवन और सेवकाई की चुनौतियां, परेशानियों और सफलताएं बांट सकें। इस प्रकार की मित्रता और सम्बन्ध में, हम सेवकाई, प्रार्थना और सलाह पा सकते हैं। परमेश्वर चाहते हैं कि हमारी वृद्धि और समझ के लिये ऐसा सम्बन्ध हों: *"जैसे लोहा लोहे को चमका देता है, वैसे ही मनुष्य का मुख अपने मित्र की संगति से चमकदार हो जाता है"* (नीतिवचन 27:17)।

इस प्रकार का विश्वास का सम्बन्ध हमें अपने डर, चिंता और परीक्षाओं के विषय में बांटने की सुरक्षा देता है। हम अपने पाप और

गलतियों को स्वीकार कर सकते हैं (याकूब 5:16), और सेवकाई और प्रोत्साहन पा सकते हैं।

सेवकाई में जुड़े हर व्यक्ति को प्रोत्साहन की जरूरत होती है। शैतान अगुवों को व्यक्तिगत असफलता या सेवकाई छोड़ने की परीक्षा में डाल सकता है। कई बार लोग – हमारी अपनी कलीसिया के लोग भी हमें गलत समझ सकते हैं या हमारा विरोध कर सकते हैं, या फिर हमारे प्रति घृणा से पेश आ सकते हैं।

हमें ऐसे समय में आत्मिक रूप से मजबूत और विश्वासयोग्य मित्रों की सहायता की जरूरत होती है ताकि हम मसीह के द्वारा विजयी साबित हो सकें।

पास्टर से पास्टर तक : इस झूठ पर विश्वास मत करो कि आपके जीवन में दूसरे लोगों की जरूरत न होना तो अधिक "आत्मिक" होने की निशानी है। बल्कि, जितना हम ज्यादा समझदार बनेंगे उतनी ही हमें मसीह के देह में पवित्र सम्बन्धों की ज़रूरत महसूस होगी। पौलुस हमें बताता है कि, हम एक साथ मिलकर परमेश्वर का भवन बनते हैं जिसमें पवित्र आत्मा भर जाता है (1 कुरिन्थियों 3:16,17)।

ऐसे मित्र और जिम्मेदार समूह को बहुत प्रार्थना और ध्यान से ढूंढना चाहिये। आप जिनको जानते हैं उनमें से हर कोई आपका प्रार्थना का अनुकूल साथी नहीं बन सकता, और ना ही हर कोई विश्वास योग्य बनने के लिये परिपक्व होता है। ऐसे लोगों को ढूंढों जिनका आप आदर करते हो और जिन पर आप विश्वास कर सकते हों। ऐसे लोग जो कि परिपक्व, ज्ञानी, पवित्र आत्मा के प्रति संवेदनशील हो और प्रमाणिकता से प्रेम से सच बोलता हो।

ऐसे समूह में प्रार्थना पर आपका सबसे पहला ध्यान होना चाहिये। और ऐसे समूह में पुरुषों की पुरुषों के साथ और महिलाओं की महिलाओं के साथ संगति होनी चाहिये।

ऐसे विशाल सम्बन्ध हमें "तेज" बनायेंगे और वृद्धि, शुद्धता और महान अभिषेक के मार्ग में स्थापित करेंगे।

3. प्रमाणिक अभिषेक के सात लक्षण

एकमात्र या कम समय की सेवा कार्य अनुभव अकसर अभिषेक के प्रकार और उद्देश्य पर उलझन उत्पन्न करता है। चाहे वह एक सभा में दिया गया प्रभावशाली संदेश हो या एक भावुक प्रार्थना हो, या किए गये चिन्ह या आश्चर्यकर्म हों।

यह लघुकालिक दृष्टिकोण दो प्रकार से गलतफ़हमी की ओर ले जाता है। पहला, सेवकाई में उत्साह, योग्यता, वरदान, शैली और निपुणता को सहज गलती से अभिषेक समझ लिया जाता है। दूसरा, यह समझ लेना की आलौकिक अभिव्यक्ति की चरम सीमा का क्षण ही अभिषेक का सम्पूर्ण उद्देश्य है।

यद्यपि ये अद्भुत और उत्तेजक पल वास्तव में पवित्र आत्मा के अभिषेक के परिणाम हो सकते हैं, परन्तु हमें समर्पण रखना है कि अभिषेक इन सब के अलावा और भी बहुत कुछ है।

यह अति आवश्यक है कि हम अभिषेक के प्रति दीर्घकालिक दृष्टिकोण विकसित करें। यह तो समझ है कि प्रमाणिक अभिषेक लोगों के परिवर्तित जीवन में परिणाम पायेगा (रोमियों 12:1,2)।

परिवर्तित जीवन से मेरा अर्थ उस जीवन से है जो परमेश्वर के वचन और प्रार्थना में मज़बूती से जड़ पकड़े हुए हैं। जो लोग परिवर्तित जीवन व्यतीत करते हैं वे अपने आसपास के संसार में गवाही और प्रेमपूर्ण सेवा में लगे हुए हैं। ये लोग पाप और शरीर के कार्य का सामना करके, दीनता और पश्चाताप में चल रहे हैं। ये लोग प्रभु यीशु की देह में सक्रिय हैं, और अपने आत्मिक वरदानों को खोज़ लेने के पश्चात्, उनको सेवकाई में प्रयोग कर रहे हैं।

ये चीज़ें एक परिवर्तित अगुवे में वास्तविकता में होनी चाहिए और उनमें भी जिनके मध्य में कलीसिया का अभिषिक्त अगुवा सेवकाई कर रहा है।

वास्तविक अभिषिक्त सेवकाई निरन्तर फलदायक होगी, और इसके परिणामस्वरूप जीवन उद्धार पाते जायेंगे और मसीह का अनुसरण करने वाले शिष्य बनते जायेंगे।

अभिषिक्त सेवकाई पहचान, धन या सम्पन्नता अर्जित करने का मार्ग नहीं है। पौलुस प्रेरित अधिकाई से अभिषिक्त मनुष्य था, और महानता से परमेश्वर के लिये उपयोग किया गया। किन्तु फिर भी उसने अधिक पीड़ा सही, वह गरीब था और अक्सर सताया गया, बंदीगृह में संयम बिताया और जिस कलीसिया की सेवा करने की उसने चेष्टा की उसी के द्वारा तिरस्कृत किया गया (2 कुरिन्थियों 4:8–15, 7:2–6; 11:23–33)। पौलुस का जीवन तब अन्त हुआ जब रोम में उसके सिर को कुल्हाड़े से धड़ से अलग किया गया। फिर भी अपनी मृत्यु से कुछ समय पूर्व, पौलुस ने घोषणा करी कि *उसका पूर्ण पुरस्कार, धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं, बरन उन सब को भी, जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं"* (2 तीमुथियुस 4:8)।

संसार के मापदण्ड के अनुसार, पौलुस का जीवन बिल्कुल भी "सफल" नहीं रहा। सम्भवतः कुछ मसीही लोग आज ये सोचें कि पौलुस बहुत हद तक एक प्रेरित नहीं था।

परन्तु पौलुस निर्भीकता से यीशु मसीह का सुसमाचार प्रचार करने के लिये प्रतिष्ठित था (प्रेरितों के कार्य 17:1–6)। वह एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जाना जाता था जिसमें अधिकार और सामर्थ हो, यहां तक की शैतानी शक्तियां भी यह मानती थीं (प्रेरितों के कार्य 19:15)। उसने शिक्षा दी और चेले बनाए, और कलीसियाओं की स्थापना करी। पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर पौलुस ने जो कुछ लिखा वो नए नियम का एक तिहाई भाग बन गया (इसका अधिकतर कार्य उस समय किया गया जब वह अपने विश्वास के कारण बंदीगृह में था)। और पौलुस प्रेरित वह प्रमुख प्रतिनिधि था जिसके द्वारा उस समय के संसार में सुसमाचार का प्रचार हुआ। पौलुस वास्तविकता में परमेश्वर में परमेश्वर का अभिषिक्त था, और पवित्र आत्मा की सामर्थ से परिपूर्ण था! (कुलुस्सियों 1:24–29)।

परमेश्वर के अभिषेक के उद्देश्य के विषय में हमें स्पष्ट रहना है। हमें परमेश्वर का अभिषेक इसलिये नहीं दिया गया है कि हम अपना

स्वार्थपूर्ण करें या फिर लोगों का मनोरंजन करें। परमेश्वर का उद्देश्य पूर्ण होना है! इसका उपयोग इस प्रकार करना है कि लोगों का जीवन परमेश्वर के वचन और सामर्थ के द्वारा परिवर्तित हो जाये।

स्वयं की परीक्षा

इन दिनों में हमें अपने विवेक का उपयोग करना चाहिए ताकि हम पहचानें की क्या परमेश्वर का है और क्या मनुष्य का है। हमें यह पहचानना है कि परमेश्वर की आत्मा की ओर से क्या है और किसी अलग आत्मा की ओर से क्या है (2 कुरिन्थियों 11:4)। बाइबल हमें बताती है, कि समय के साथ–साथ, शैतानी राज्य और अधिक रीति से लोगों को गलत दिशा में ले जाने को अग्रसर रहेगा। यहां तक की मसीही लोग भी धोखा खायेंगे और भटकाये जायेंगे, वे उसका तिरस्कार करेंगे जो वास्तविक में परमेश्वर की ओर से है (2 तीमुथियुस 3:1–9; 4:3,4)।

इसलिये हमें *"आत्माओं को परखना"* है (1 यूहन्ना 41–6)। क्योंकि शैतान इस ताक में हैं कि लोगों को धोखा दे और उनका विनाश कर दें (2 कुरिन्थियों 2:11; 10:1–5; 11:14; 1 पतरस 5:8)। साथ ही साथ, दुष्ट लोग इस बात की खोज में रहेंगे परमेश्वर को और आत्मिक बातों को अपने लाभ के लिए उपयोग करें (2 कुरिन्थियों 11:13–15; फिलिप्पियों 1:15,16; 2 पतरस 2)।

फिर हम किस प्रकार जान सकते हैं कि वास्तविकता में पवित्र आत्मा का अभिषेक क्या है? और किस मापदण्ड से हम स्वयं का परीक्षण कर सकते हैं यह निर्धारित करने के लिए कि हम अभिषेक के विषय में मसीही के पीछे विश्वासयोग्य और आज्ञाकारिता से चल रहे हैं?

अब हम सात लक्षण देखेंगे जो पवित्र आत्मा के अभिषेक को प्रमाणित करते हैं। पवित्र आत्मा का प्रमाणिक अभिषेक :

1) हमेशा यीशु की महिमा देगा (यूहन्ना 16:14), किसी मनुष्य अथवा सेवकाई को नहीं।

2) सम्पूर्ण परमेश्वर के वचन के प्रति सत्य रहेगा और मेल रखेगा (यूहन्ना 14:26), क्योंकि पवित्र आत्मा परमेश्वर के लिखित वचन का विरोध नहीं कर सकता है।

3) उनमें आत्मिक जीवन का आरम्भ करेगा जो इस सेवकाई में आते हैं या उसे ग्रहण करते हैं (यूहन्ना 6:63)। लोग प्रभु यीशु उसके वचन और उसके मार्ग को और समर्पित हो जायेंगे।

4) लोगों को यीशु और उसके उद्धार की ओर ले आएगा, न की किसी अन्य व्यक्ति या चिन्ह या आश्चर्यकर्म की ओर (यूहन्ना 15:26)।

5) प्रभु यीशु की देह में शांति और एकता की उन्नति करेगा (1 कुरिन्थियों 12:1–14) उनके मध्य में जो अपने दृष्टिकोण से आत्मिक प्रभु यीशु और उसकी कलीसिया से प्रेम रखते हैं।

6) जीवन परिवर्तित करने वाली सामर्थ रखेगा (1 कुरिन्थियों 2:4,5; 4:20; 1 थिस्सलुनीकियों 1:5), जो की अभिषिक्त सेवकाई का परिणाम है।

7) लोगों में मसीही के चरित्र को उत्पन्न करेगा (गलतियों 5:16–24; 2 कुरिन्थियों 3:18)। प्रत्येक मसीही अनुयायी के लिए यह परमेश्वर की इच्छा है!

अभिषेक को प्रमाणित करते यह सात लक्षण, उसके चिन्ह होंगे जो पवित्र आत्मा के अभिषेक से सेवकाई करता है। ये लक्षण हमारी सहायता करते हैं कि हम अभिषेक के प्रति दीर्घकालीन दृष्टिकोण की आवश्यकता को देखें।

सेवकाई के किसी विशिष्ट अवसर के लिए लघुकालीन या सहज अभिषेक हो सकता है। परन्तु मसीही की देह के चरवाहे होने के कारण, हमारा अभिषेक शिष्य बनाने और परमेश्वर के लोगों को परिपक्व करने के लिये है – जो कि एक दीर्घकालीन कार्य है – न की कुछ अवसरों पर आनन्दमय सेवा करने के लिए।

ऊपर दी गयी सूची को अपनी सेवकाई को परखने के लिए उपयोग कीजिए। कलीसिया का अगुवा होने के कारण, मसीही के देह में लोगों का चरवाहा बनने के लिए आपको एक अनमोल और महत्वपूर्ण बुलाहट मिली है। उसने आपको अपने अन्तर्गत चरवाहा कर के बुलाया है। उसी को आपको लेखा–जोखा देना पड़ेगा कि आपने किस तरह उसके आदेश का पालन उसकी भेड़ों की देखभाल करने में किया (1 पतरस 5:1–4)।

क्या हमें और मिल सकता है

यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम मसीही का अनुसरण परिश्रम और विश्वासयोग्यता से करें। हमें अपने जीवन में परमेश्वर के वचन के आदर्श और सिद्धान्त को अपनाना है, और उसके आत्मा के द्वारा चलाए जाने की योग्यता में निरन्तर बढ़ते जाना है।

जो सेवकाई की बुलाहट परमेश्वर ने आपको दी है वो आपकी सेवकाई नहीं है। वह उसकी सेवकाई है जो वह चाहता है कि आपके द्वारा हो! सेवकाई, जब परमेश्वर के तरीके से करी जाए, तो उसमें बड़ा प्रतिफल मिलता है (यूहन्ना 15:14–16) और उसमें उसका अभिषेक भी सम्मिलित होगा।

हम यह स्थापित कर चुके हैं कि पवित्र आत्मा का अभिषेक केवल परमेश्वर की स्वेच्छा के द्वारा निर्धारित होता है। यह हमारी बुलाहट और वरदान प्राप्ति के अनुरूप होगा। यह अभिषेक मनुष्य की इच्छा पर निर्भर नहीं है, केवल इस बात को छोड़कर की या तो हम उसको स्वीकार करें या उसका तिरस्कार करें।

यदि आप मेरी तरह हैं, तो आप अपने जीवन और सेवकाई में परमेश्वर के अभिषेक को और अधिकाई से चाहेंगे। यह आपके हृदय की पुकार है कि आप एक ऐसा प्रभावकारी पात्र बन जाएं, जिसके द्वारा परमेश्वर के राज्य के उद्देश्यपूर्ण हो सकें।

परमेश्वर के अभिषेक में बढ़ने को कोई सरल मार्ग नहीं है। ना ही हम अभिषेक को छीन कर अपनी सेवकाई को सामर्थी करने और व्यक्तिगत लाभ उठाने के लिये उपयोग कर सकते हैं। याद रखें कि परमेश्वर की सामर्थ उससे अलग नहीं है। अभिषेक पवित्र आत्मा की वो उपस्थिति है जो की सदैव परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य के आधीन रहेगी, न की हमारे आधीन।

इसलिये क्या यह सम्भव है कि आप न केवल परमेश्वर के अभिषेक को ग्रहण करें, बल्कि उस अभिषेक में बढ़ते जाएं जो परमेश्वर हमें देता है? क्या जो कुछ हमारे पास है क्या उससे अधिक भी हम प्राप्त कर सकते हैं? आइए, इन प्रश्नों को हम संक्षेप में देखें।

ख. अभिषेक में बढ़ना

यह प्रभु की इच्छा है कि आपको पवित्र आत्मा का अभिषेक मिले। और यह उसी की इच्छा है कि आप अपने जीवन की योग्यता में और पवित्र आत्मा द्वारा अभिषिक्त सेवकाई में बढ़ते जाएं।

परमेश्वर के अभिषेक में बढ़ने को कोई सरल मार्ग नहीं है। ना ही हम अभिषेक को छीन कर अपनी सेवकाई को सामर्थी करने और व्यक्तिगत लाभ उठाने के लिये उपयोग कर सकते हैं। याद रखें कि परमेश्वर की सामर्थ उससे अलग नहीं है। अभिषेक पवित्र आत्मा की वो उपस्थिति है जो की सदैव परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य के आधीन रहेगी, न की हमारे आधीन।

1. चरित्र और अभिषेक

यह महत्व है कि आप इस बात को समझें कि जैसे जैसे आप मसीह के चरित्र में बढ़ते जाएंगे। वैसे वैसे आप अभिषेक में भी बढ़ते जायेगें। हमारा चरित्र या तो हमारे जीवन से अभिषेक का सम्पूरक और स्रोत बनेगा या उसका अवरोधक बन कर पवित्र आत्मा के कार्य में हमारे जीवन द्वारा बाधा उत्पन्न करेगा (देखें, इफिसियों 4:30; 1 थिस्सलुनीकियों 5:19)।

याद रखें कि हम सर्वप्रथम परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियां हैं। प्रभु यीशु के बलिदान के कार्य के द्वारा यह सम्भव हुआ कि हमारे स्वर्गीय पिता से हमारा सम्बन्ध पुनः स्थापित हो।

यीशु मसीह; जो कलीसिया का सिर है (कुलस्सियों 1:18;2:19), उसने हमें बुलाया है और हमें आत्मिक वरदान दिए हैं – ताकि, उसके पुत्र और पुत्रियां होने के कारण, हम मसीह की देह की सेवा करें (इफिसियों 4:11–16; 2 तीमुथियुस 1:9)। ये आत्मिक वरदान और बुलाहट तभी पूर्ण रूप से और सही रूप से कार्य कर पायेंगे जब वे

पवित्र आत्मा द्वारा सामर्थ और निर्देशित होंगे (1 कुरिन्थियों 12:7 – सभी वरदान इसी सिद्धान्त पर क्रियाशील हैं)।

इसलिये हम यह कह सकते हैं कि सभी वास्तविक अभिषिक्त सेवाएं, सम्बन्धों से निकलती हैं। मसीह के साथ हमारा सम्बन्ध, जो उसको समर्पित है और जो बढ़ रहा है, वही जीवन परिवर्तित करने वाली सेवा कार्य का आधार है।

यह बात सत्य है, चाहे प्रभु में आपकी परिपक्वता और अनुभव का स्तर कुछ भी क्यों न हो। कभी भी इस बात को न भूलें कि प्रभावकारी सेवा का स्रोत यीशु मसीह के साथ आपको निरन्तर सबल और बढ़ता सम्बन्ध है।

पास्टर से पास्टर तक : यह सम्भव है कि सेवकाई में प्रभु के संग अपने सम्बन्ध पर ध्यान न दें। हम यह सोचना शुरु कर सकते हैं कि उसकी ओर से कल का "मंत्र" हमारे आज के लिये भी पर्याप्त है। लेकिन ऐसा नहीं है।

इस समस्या को दर्शाने के लिये यीशु एक शक्तिशाली चेतावनी देते हैं। पढ़ें मत्ती 7:21–23। इन आयतों में जिन लोगों का वर्णन है वो कलीसिया के लोग हैं – ऐसे लोग जो नबूवत की सेवकाई में है, छुटकारे की सेवकाई में हैं, जो चिन्ह और आश्चर्यकर्म की सेवकाई करते हैं, इत्यादि।

परन्तु यह वे अगुवे हैं, जिन्होंने किसी जगह पर, अपने "पहले से प्रेम" को छोड़ दिया (प्रकाशितवाक्य 2:1–5)। वे धोखा खा गए हैं, वे यह सोचते हैं कि सेवकाई में सफल प्रतीत होना (बाहरी रूप से) दी पर्याप्त है। वे पवित्र शास्त्र के वचन को बता सकते हैं और यीशु के नाम को अधिकार से उपयोग करते हैं। लेकिन वे प्रभु के साथ प्रमाणिक, आज्ञाकारी और सबल सम्बन्ध में नहीं चल रहे। ना वे उसे जानते हैं, ना वो उन्हें जानता है। उनका अंत भयानक है (मत्ती 7:23)।

शैतान की योजना

जैसा हमने सीखा, हमारे जीवन में उद्धार के बाद आत्मा कार्य है, हमारा व्यक्तिगत बदलाव (रोमियों 8:29; 2 कुरिन्थियों 3:18)। इस कार्य में हमारा आजीवन साथ और उसके साथ साथ परमेश्वर के वचन और उनकी उपस्थिति के प्रति हर रोज की अधीनता से हमारे अन्दर ईश्वरीय स्वाभाव की वृद्धि करते हैं।

कलीसिया के अगुवों में इस ईश्वरीय स्वभाव की वृद्धि को शैतान फुर्ती से विरोध करता है। शैतान हमसे पवित्र आत्मा का अभिषेक और वरदानों को न तो भ्रष्ट कर सकता है नाही चुरा सकता है। बल्कि सच्चाई इससे विपरीतः "परमेश्वर का पुत्र इसलिये प्रकट हुआ, कि शैतान के कामों को नाश करें" (1 यूहन्ना 3:8, और पढ़ें लूका 10:17–20; रोमियों 8:30–39; 2 कुरिन्थियों 10:3–5; कुलुस्सियों 2:14,15; इब्रानियों 2:14)।

क्योंकि शैतान पवित्र आत्मा के अभिषेक और वरदानों का न तो भ्रष्ट कर सकता है और ना ही नुकसान पहुंचा सकता है, इसलिये उसका पहला निशाना आप हो। शैतान फुर्ती से संतों को लूटना, मारना और नाश करना चाहता है (यूहन्ना 10:10)। उसका एक तरीका यह

है कि वह आपके और विशेष करके कलीसिया के अगुवों के अन्दर के ईश्वरीय स्वभाव को दुर्बल बना देता है।

शैतान कलीसिया के अगुवों को भ्रष्ट करके उन्हें परमेश्वर के उद्देश्य के लिये अनुपयुक्त बना देता है (2 कुरिन्थियों 9:24–27; 2 तीमुथियुस 2:19–22)। और ये परीक्षा, धोखा, डर, भयभीत, विभाजन, घमंड़, स्वार्थ, जो कोई भी पाप हो, शैतान उसका स्रोत हैं।

शैतान का प्रलोभन आम तौर पर छोटी छोटी बातों से शुरु होता है। वह तो हमारी शारीरिक इच्छाओं और स्वार्थी स्वभाव को प्रलोभन करना शुरु करता है। शैतान सदियों से मनुष्य के व्यवहार को ध्यान से देख रहा है, और हमें गिराने के लिये नये नये तरीके ढूंढता रहता है। हमें उससे डरने की ज़रूरत नहीं है – परन्तु हमें उससे हमेशा चौकन्ना रहना है और चौकसी भी रखना है (1 पतरस 5:8,9)।

कृपया ध्यान दें कि यदि हम प्रभु यीशु मसीह के साथ सतत और वृद्धि होते हुए सम्बन्ध की उपेक्षा करते हैं तो हम शैतान को युक्तियों में फंस जाते हैं (1 तीमुथियुस 4:1,2; 2 तीमु0 1:1–9; इब्रानियों 2:1–3)। प्रभु यीशु की निरुपता के बिना, हम अपने आपको अपवाद बनाने, हमारे व्यवहार की गलतियों के लिये बहाने बनाने, और कामुक विचारों के प्रलोभन में आ जायेंगे – और यह सब हमें पाप, धोखा और असफलता की ओर ले जाता है (याकूब 1:13–15)।

परमेश्वर की यही इच्छा है कि उनका अभिषेक हमारे व्यक्तित्व को वेद करें। ईश्वरीय व्यक्तित्व (या उसका अभाव) हमारी सेवकाई के फलदायिता और प्रभाव पर सीधा असर पहुंचाती है। परमेश्वर चाहते हैं कि उनका अभिषेक हमारे जीवन में और जीवन के द्वारा, नास्तिकता रूपी अवरोध के बिना बहता चला जाये। यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि अभिषेक तो उतना ही व्यक्तित्व (हमारे) के विषय में है जितना कि सामर्थ्य (परमेश्वर) के।

आइये हम सबसे अधिक अभिषिक्त व्यक्ति के जीवन से कुछ सीखें।

2. गुरु के कदमों पर चलना

वास्तव में प्रभु यीशु ही पृथ्वी पर ऐसा व्यक्ति था जो सबसे अधिक अभिषिक्त था। उन्हें पास असीमित पवित्र आत्मा था (यूहन्ना 3:33:35)। उनकी अद्वितीय अभिषेक के विषय में उनके जन्म से सदियों पहले ही भविष्यवाणी की गई थी (यशायाह 61:1–3)। प्रभु यीशु ने अपनी सेवकाई के आरंभ में इस भविष्यवाणी का समर्थन किया (लूका 4:17–20)। प्रभु यीशु की पृथ्वी पर की सेवकाई से यह पुष्टि होती है कि वह तो सचमुच में अभिषिक्त थे। यदि हम लूका रचित सुसमाचार (अध्याय 4 और 5) पर जल्दी से एक तरफ डालें तो वह तो उनकी सेवकाई के आरंभ से ही उनके महान सामर्थ्य को दर्शाता है। प्रभु यीशु का अभिषेक किया गया ताकिः

- वे अशुद्ध आत्माओं को निकाल सकें (4:33–37,41)
- अधिकार से शिक्षा दे सकें (4:22,32)
- रोगियों को चंगा कर सकें (4:38–40; 5:15)
- लोगों को पश्चाताप के लिये बुला सकें (5:17–26, 31,32)
- आश्चर्यकर्म कर सकें (5:4–9)
- नबी होने के नाते लोगों की सेवकाई के लिये बुलाहट दे सकें (5:10.,27)
- एक छोटा अगुवों का समूह बना सकें (5:11)
- कोढ़ी को चंगा करना, जो कि उस समय के लिये यह तो आश्चर्यचकित करने वाली बात थी (5:12–15)।

यह तो प्रभु यीशु ने इस संसार में अपनी सेवकाई को कैसे शुरु किया उसका एक उदाहरण है। उन्होंने इससे भी अधिक कार्यों को पूरा किया। केवल एक ही परमेश्वर का पुत्र है जो इस पृथ्वी पर आया, हमारे लिये मरा, और यह दिखाने के लिये कि वह वास्तव में परमेश्वर है फिर से जीवित हुआ।

प्रभु यीशु ही है जिन्होंने हमें बुलाया है (2 कुरिन्थियों 2:26–31)। उन्होंने हमें जरूरी सब आशीषें, (इफिसियों 4:11–16), सामर्थ्य (यूहन्ना 16:7) दिया है ताकि हम उनकी इच्छा को पूरा करें (यूहन्ना 15:16)।

परमेश्वर ने अपनी कलीसिया को यह आज्ञा दी है कि वह उनके कार्य को आगे बढ़ायें (प्रेरितों के काम 1:4–8)। और यह तो परमेश्वर के पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से ही संभव है। वही आत्मा जिससे प्रभु यीशु का अभिषेक हुआ था, वही आत्मा इस पृथ्वी पर उंडेल दिया गया है, उन सबको प्राप्त है जो अपने उद्धार के लिये प्रभु यीशु पर विश्वास करते हैं (रोमियों 8:14–17) हालिल्लूयाह!

प्रभु यीशु के कदमों में चलना

प्रभु यीशु को ऐसे लोगों की जरूरत है जो उनके प्रति प्रमाणिक हो (2 इतिहास 16:9)। प्रभु यीशु ने अपने आपको परमेश्वर के प्रति प्रमाणिक और उनको पसंद आने वाला साबित किया (मत्ती 3:17)। प्रभु यीशु हर बात में अपने पिता की इच्छा के आधीन रहें (इब्रानियों 10:5–7)। प्रभु यीशु पाप के प्रति परखा गया, परन्तु उन्होंने कभी भी पाप नहीं किया (इब्रानियों 4:15)।

क्योंकि वे हर बात में हमारे लिये नमूना हैं, हम अभिषेक की वृद्धि पाने के विषय में प्रभु यीशु के जीवन से क्या सीख सकते हैं? आइये, हम कुछ समय के लिये उनके कदमों में चलने का प्रयत्न करें जिससे हमारे व्यक्तित्व में और आत्मिक बातों में वृद्धि हों।

क. प्रभु यीशु अधिकार के आधीन थे। प्रभु यीशु ने अपने ऊपर स्थापित हुए अधिकार को अधीन होना पसंद किया। जब वे छोटे थे तब भी वे अपने माता–पिता और अपने समाज के अधिकारियों के आधीन रहें (लूका 2:41–51) और अपनी पृथ्वी पर की सम्पूर्ण सेवकाई के बीच, प्रभु यीशु सतत स्वर्गीय पिता के अधीन रहें।

बाइबल हमें सिखाती है कि अगुवे होने के नाते हमें भी सत्ता के अधीन रहना हैं। सरकार को, साम्प्रदाय को, कलीसिया को, नौकरी पेशे में हर जगह पर सत्ता का ढ़ांचा होता है।

और हमें अपने ऊपर वह सत्ता होने से सुरक्षा और सांत्वना भी मिलती है। फिर भी कई बार हो सकता है कि हम पूरी तरह से उससे सहमत न हों, हमें हो सकता है कि उन नास्तिक, स्वार्थी और निरंकुश लोगों ने मुद्दा बनाया हो।

ये स्वाभाविक हैं कि हम अपने जीवन काल में दोनों तरह के,एक जो परापकारी है और दूसरे जो हठीले हैं अधिकारियों के आधीन हो सकते हैं। यह सत्ता और अधिकारी चाहे कैसे भी हो, परमेश्वर का वचन हमें सूचना देता है कि हम आधीनता को अपने जीवन की रीत बनायें यह बहुत जरूरी है। और यह तो आधीनता हैः

- परमेश्वर को (याकूब 4:7)
- सरकार को (रोमियों 13:1–7; 1 पतरस 2:13–17 नीचे दी गई सूचना को भी पढ़ें)
- मसीह की देह के अगुवों को (1 कुरिन्थियों 16:15,16; 1 थिस्सलुनीकियों 5:12,13; इब्रानियों 13:7,17)
- मसीह की देह में एक दूसरे को (इफिसियों 5:21, 1 पतरस 5:5)
- पत्नियों अपने पतियों को (इफिसियों 5:22; कुलुस्सियों 3:18)
- बच्चे अपने माता–पिता को (इफिसियों 6:1–3; कुलुस्सियों 3:20)
- सेवक अपने मालिक को (इफिसियों 6:5–9; कुलुस्सियों 3:22–4:1; 1 पतरस 2:18–21)

सूचना : मसीही होने के नाते, जहां कहीं भी हो सरकार के अधीन रहना चाहिये। प्रभु यीशु ने कभी भी रोमन साम्राज्य को पलटने की

बात नहीं की भले ही वे इस्राएलियों को भयानक रूप से सताते थे। परन्तु यदि सरकार या अगुवा लोगों के परमेश्वर की स्तुति करने और अधीन होने की स्वतंत्रता को नकारता है, तो फिर भी हमें परमेश्वर की सेवा करते रहना चाहिये – भले ही इससे सताव क्यों न आयें (1 पतरस 4:12–19)।

आप सत्ता को आधीन न होने के विषय में तभी सोच सकते हैं जब वे हमें शास्त्रों का उल्लंघन करने को कहें या फिर नैतिक जीवन के नियमों को उल्लंघन करने का आदेश दें (जैसे कि झूठ बोलना, चोरी करना, जातीय दुर्व्यवहार इत्यादि)।

उदाहरण के तौर पर, यदि सरकारी सत्ता आपको प्रभु यीशु के नाम में सुसमाचार प्रचार करने से रोकती है, तब मसीह का आदेश तो आपको बोलने के लिये विवश करता हैं। प्रेरित इसी तरह प्रचार करते रहे (प्रेरितों के काम 4:1–31; 5:17–42; 8:1–4)। यदि आप ऐसी किसी परिस्थिति का सामना करते हैं तो, इसमें बहुत सावधानी, समझ और हिम्मत की जरूरत होगी। पवित्र आत्मा की अगुवाई में चलो, और परमेश्वर को महिमा मिलेगी (मरकुस 13:9–13)।

आधीनता के नियम

एक विश्वासी, और विशेष करके कलीसिया के अगुवे के जीवन में आधीनता एक मूलभूत सिद्धांत है। सबसे पहले हमें हर बात में परमेश्वर के आधीन होना है। फिर हमें उन लोगों के आधीन रहना है जिनका हमारे ऊपर अधिकार हैं – चाहे हमारे समाज में, साम्प्रदाय में, नौकरी पेशे में या और किसी परिस्थिति में।

भले ही हम उनसे सहमत न हों, या उन्हें पसंद करते न हों और उनका आदर न करते हों, फिर भी हमें अपने व्यवहार और कार्यों में आधीन रहना है।

मात्र एक ही अपवाद है, यदि हमारे अधिकारी हमें परमेश्वर के वचन का उल्लंघन करने के लिये कहें या फिर दूसरों को ऐसा करने को कहें तब।

पास्टर से पास्टर तक : कई बार ऐसा भी होता है कि हमें अपने अधिकारियों से परेशानी हों। हमें लगता है कि हमारे साथ अन्याय हो रहा है, या हमें योग्य आदर या स्वीकृति नहीं मिल रही।

इन परिस्थितियों के लिये प्रभु यीशु का हमारे लिये यह उदाहरण है कि *"अपने आपको ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया"* (फिलिप्पियों 2:7)। मसीह ने मनुष्यों की सहमति या तारीफ को नहीं चाहा, इसलिये भी कि वे जानते थे कि वह कितना व्यर्थ है; मनुष्य तो अपने अभिप्राय तुरन्त बदल सकते हैं (यूहन्ना 2:23–25; 6:15, 26, 60–66)।

बल्कि, प्रभु यीशु ने अपने स्वर्गीय पिता की प्रशंसा को ढूंढा। उन्होंने तो दास होना पसंद किया (मत्ती 20:28)। और उनके आज्ञाधीन हृदय और सेवा के कारण हमारे लिये उद्धार और परमेश्वर के लिये महान महिमा दोनों संभव हुए (फिलिप्पियों 2:7–11)।

कलीसिया के अगुवे होने के नाते हम भी कभी सत्ता पर होंगे। और अधिकार से और प्रभावशाली अगुवाई के लिये जरूरी हैं कि हम अधिकार के आधीनता में जीएं और चलें। इसका अर्थ है, आधीनता के सिद्धान्त में हमें कैसे जीना है यह हमें जरूर समझना चाहिये।

यदि आपको अपने अधिकारी से कोई परेशानी है तो कुछ व्यवहारिक कदम उठाने चाहिये। सबसे पहला, उस व्यक्ति के लिये हर रोज प्रार्थना करो। इससे आप जान सकोगे कि परमेश्वर का उनके विषय में संदर्भ क्या है। फिर अपने संघर्ष के लिये परमेश्वर को ढूंढ़ों। शास्त्रों में ढूंढों, और उत्तर के लिये परमेश्वर की बाट देखो।

आपको चाहिये कि आप उस व्यक्ति के पास जाकर नम्रता से अपनी चिंता–विचार को बताएं (मत्ती 5:23,24)। आप ऐसे व्यक्तियों की सलाह भी ले सकते हैं जो बुद्धिमान हैं और निष्पक्ष

हों, जो सिर्फ आपकी तरफदारी न करें। परन्तु इस प्रश्न का हल निकालने में आपकी सहायता करें।

आखिर में, अपने हृदय को सीधा रखें (यानि कोई फरयाद या गपशप न करें) और विश्वास रखें कि परमेश्वर आपके रक्षक होंगे (भजन संहिता 5:1; 7:10; 31:2; 59:16,17; आदि)। यह तो दाऊद के जीवन से नमूना मिलता है, जिसने शाऊल का व्यवहार मुश्किल और कभी कभी नास्तिक होने पर भी परमेश्वर को पसंद किया और उनके समय का इन्तजार किया (पढ़ें 1 शमूएल 16–24)।

हो सकता है परमेश्वर हमारे जीवन की परेशानियों और परीक्षा का कर्ता न हों। परन्तु उन्होंने हमें वचन दिया है कि वे हमारे जीवन की हर एक परिस्थिति का भलाई के लिये उपयोग करेंगे; और यह भलाई तो हमें मसीह के जैसा बनाने की हैं (रोमियों 8:28–29)।

कई बार हम जिन परेशानियों का सामना करते हैं उन्हें परमेश्वर हमारे हृदयों को परखने के लिये उपयोग करते हैं (निर्गमन 20:20; 1 इतिहास 29:17)। कई बार, ऐसी चुनौतियां हम पर दबाव डालती है कि हम ज्यादा समझदार बनें। ऐसी परेशानियों के बीच में परमेश्वर को भाता हुआ प्रतिभाव चुनने से हमेशा हमारे व्यक्तित्व की वृद्धि होती है।

यदि हम इन चुनौतियों के मध्य में प्रभु यीशु का स्वभाव और हृदय ग्रहण करते हैं, तो इससे परमेश्वर हम पर अपना ओर भी अधिक अधिकार, प्रभाव और अभिषेक सौपते हैं।

ख. प्रभु यीशु समझ में बढ़ते गये। प्रभु यीशु ने एक स्थिर, समतल वृद्धि की रीति को अपनाया (लूका 2:52)। यह वचन प्रभु यीशु के जवानी के विषय में हैं, फिर भी यह एक स्वस्थ व्यक्ति के व्यक्तिगत वृद्धि और समझ के लिये एक स्वस्थ आदर्श बन सकता है।

1) *"बुद्धि में बढ़ता गया"* – बुद्धि का मूलभूत स्रोत तो परमेश्वर का वचन है। जैसे जैसे आप इसे पढ़ते और इसका अध्ययन करते हैं, पवित्र आत्मा से मांगें ताकि वे आपकी समझ खोलकर आपसे सत्य के विषय में बातचीत कर सके (2 तीमुथियुस 2:15)।

प्रभु यीशु ने कहा, पवित्र आत्मा तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा (यूहन्ना 14:26)। परमेश्वर का आत्मा उनके वचन को फुर्ती से (जीवित और समृद्ध) बनाएगा।

हमने जो परमेश्वर का वचन अपने जीवन में जमा किया है उसी से खर्च करेगा। जब हम बाइबल पढ़ते हैं और उसका अध्ययन करते हैं, या फिर जब हम बाइबल की सही शिक्षा या प्रचार सुनते हैं उससे जमा करते हैं।

कलीसिया के अगुवे होने के नाते, ज्ञान में वृद्धि पाने के लिये हमें शास्त्रों का अध्ययन, उसे स्मरण करना और अपने जीवन में लागू करना जरूरी है।

हालांकि, यह पढ़ना और अध्ययन करना प्रवचन तैयार करने के लिये नहीं है। यह तो हमारी व्यक्तिगत वृद्धि के लिये हैं। और फिर हमारे जीवन में परमेश्वर के वचनों से भरे इस गहरे कुएं में वह बहुतायत से जमा हो जाता है, और जब हम दूसरों की सेवकाई करते हैं, हम इन सत्यों को अपने कुएं से खीच सकते हैं और परमेश्वर फुर्ती से उन्हें हमारे दिलों में लाता है। और इससे हमें तो बहुतायत से व्यक्तिगत आशीष मिलती ही है, साथ में उनको भी मिलती है, जिनके मध्य में हम सेवकाई करते हैं (1 तीमुथियुस 4:12–16)।

2) *"महिमा में . . . वृद्धि पाना"* – हमने सीखा है कि हमारे शरीर पवित्र आत्मा का भवन है (1 कुरिन्थियों 6:12–20; 1 थिस्सलुनीकियों 4:1–8)। और इसलिये, परमेश्वर ने हमें जो शरीर दिया है, उसके अच्छे भंडारी बनना है। हमारा शरीर यदि स्वस्थ है तो परमेश्वर जो हमें अपनी सेवकाई के लिये उपयोग करते हैं, उसे करने की क्रियाशीलता पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

हम जानते हैं कि हमारे शरीर के आम दुरुपयोग क्या क्या हैं जैसे पियक्कड़पन, या फिर नशे की दवाई होना (इफिसियों 5:18); व्यभिचार (1 थिस्सलुनीकियों 4:3–5); पेटूपन (1 कुरिन्थियों 6:12,13; 9:24–27)। इसके विपरीत आइये, हम अपने शरीरों को परमेश्वर की सेवकाई के लिये उपयोग करें।

बाइबल हमें बताती है कि भक्ति का महत्व देह की साधना से ज्यादा है (1 तीमुथियुस 4:8); परन्तु साधना का कुछ तो मूल्य है। फिर भी हमें अपनी प्राथमिकता बनाए रखनी चाहिये। अपनी शारीरिक स्थिति से ज्यादा अपनी आत्मिक स्थिति पर ध्यान देना चाहिये।

हर रोज थोड़ी सी देह की साधना स्वास्थ के लिये अच्छी होती है। स्वस्थ भोजन होना भी बहुत जरूरी है। हमें अपनी समय सारणी ऐसी बनानी चाहिये ताकि हमें अच्छी नींद मिल सकें। इससे हमारी कार्यशीलता और दीर्घायु पर असर होता है, हमारी आयु के वर्ष बढ़ते हैं ताकि परमेश्वर हमारा उपयोग कर सकें और हमारी सेवकाई के द्वारा उनको महिमा मिले।

3) *"परमेश्वर के अनुग्रह में वृद्धि"* – प्रभु यीशु पिता की आधीनता में चले। उनकी सम्पूर्ण सेवकाई सही थी, जो भी पिता उनसे करवाना चाहते थे (यूहन्ना 5:16,30)। प्रभु यीशु ने वो ही बोला जो पिता कहते थे (यूहन्ना 8:26,28) और परमेश्वर के कार्यों को किया (यूहन्ना 5:17; 9:4; 14:10)।

प्रभु यीशु सम्पूर्ण रीति से पिता की इच्छा के आधीन रहें, यहां तक कि वे यह कह सके, *"पिता ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूं जिस से वह प्रसन्न होता है"* (यूहन्ना 8:29); यूहन्ना 4:34; 6:38 भी देखें)।

परन्तु उनकी आधीनता से भी अधिक, प्रभु यीशु आत्मा में पिता से घनिष्ठ और गहरे सम्बन्ध में चले। प्रभु यीशु ज्यादातर एकान्त में प्रार्थना करने जाते थे (लूका 5:16)। यहीं पर यूनानी भाषा में क्रिया पर का जो काल दर्शाया गया है, उससे प्रतीत होता है कि एकान्त में प्रार्थना में समय बिताना प्रभु यीशु की नियमित आदत थी।

इस अधीनता से उन्होंने परमेश्वर को प्रेम और अनुग्रह को तो नहीं खरीदा। परन्तु उससे वह जरूर सुरक्षित किया कि किसी भी पाप या समझौते का असर उनके अपने पिता के साथ सम्बन्ध को नुकसान नहीं पहुंचायेगा।

और यह तो हमारे लिये गहरा महत्व दर्शाती है, क्योंकि प्रभु यीशु हमारे साथ ऐसे ही घनिष्ट सम्बन्ध का वचन देते हैं।

जब हम उनकी आज्ञाओं की अधीनता में चलते हैं तो प्रभु यीशु हमें यह वचन देते हैं कि वे अपने आपको हम पर प्रगट करेंगे (यूहन्ना 14:21–24)। प्रभु यीशु और उनके वचन के प्रति छोटी या बड़ी बातों में हमारी अधीनता हमें आत्मिकता में परमेश्वर के समीप चलने में सहायता करती है। हमारी आधीनता परमेश्वर के अनुग्रह को खरीदती नहीं है। परन्तु वह तो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के साथ गहरे सम्बन्ध और सहभागिता को अनुमति देती है। और इस घनिष्ट सम्बन्ध से पवित्र आत्मा का अभिषेक हमारे द्वारा बढ़ती मात्रा में बहता जायेगा।

4) *"मनुष्यों की प्रसन्नता में वृद्धि"* – इसका यह अर्थ नहीं है कि प्रभु यीशु ने मनुष्यों से तारीफ पाने की या प्रशंसा पाने की कोशिश करी। परन्तु उन्होंने सब मनुष्यों में सर्वश्रेष्ठ होते हुए भी घमंड से व्यवहार नहीं करना पसंद किया। इसके विपरीत प्रभु यीशु ने प्रेम से बोला और व्यवहार किया।

अनुग्रह और सच्चाई

प्रभु यीशु ने हमें परमेश्वर के व्यक्तित्व के तालमेल का एक बेहतरीन नमूना दियाः *"और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में पेश किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसा पिता के एकलौते की महिमा"* (यूहन्ना 1:14); *"इसलिये कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई; परन्तु अनुग्रह, और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुंची"* (पद 17)।

प्रभु यीशु ने पापियों के साथ समय बिताया (मत्ती 9:9–13) और धार्मिक लोगों के साथ भी (लूका 7:36–50)। जिसने भी उन्हें सुना उन सबको उन्होंने परमेश्वर के प्रेम और उद्देश्य के बारे में बताया। प्रभु यीशु ने मनुष्यों की संगति या तारीफ को नहीं चाहा, परन्तु उन्होंने हर परिस्थिति में परमेश्वर पिता के हृदय और वचन को प्रगट करना चाहा।

प्रभु यीशु ने सिखाया कि परमेश्वर चाहते हैं कि हमारा आपसी सम्बन्ध शुद्ध और बेदाग हो।

बाइबल साफ दर्शाती है कि हमारे आपसी सम्बन्धों में यह शारीरिक और पापमय व्यवहार का झुण्ड है जो परमेश्वर को नामंजूर है। जैसे

अक्षमाशीलता, कड़वाहट, क्रोध, ईर्ष्या, डाह, अनबन, गपशप, दोष लगाना इत्यादि (मत्ती 5:21–24, 43–48; 6:12, 14,15; 7:1–6; 18:21–35; रोमियों 12:9–21; गलातियों 5:13–15, 19–21; 1 यूहन्ना 2:9, 10; 3:10–18 – यह तो बहुत से संकेतों में से कुछ है जो यह दर्शाते हैं कि हमारे आपस में सही सम्बन्ध होने के विषय में परमेश्वर कितना अधिक महत्व देते हैं)।

दूसरों के विचार या व्यवहार पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है; परन्तु हम अपने व्यवहार के बारे में निर्णय ले सकते हैं। और कई बार, अनुग्रह और सच्चाई का हमारा व्यवहार दूसरों के साथ मेल मिलाप और शान्ति का मार्ग खोल सकता है।

जब हम अनुग्रह और सच्चाई से भरपूर होकर, सही सम्बन्धों की तरफ बढ़ते हैं, तो एकता स्थापित होती है। मसीह की देह में अधिक एकता तो हमारे जीवन में, हमारी कलीसियाओं में और हमारे समाज में पवित्र आत्मा की अभिषिक्त उपस्थिति को मुक्त करने की चाबी है। यह तो संसार के सामने सुसमाचार के सही सत्य की गवाही भी है (यूहन्ना 17:20,21)।

ग. प्रभु यीशु नम्रता से चला। इसमें कोई शक नहीं कि परमेश्वर पुत्र मनुष्यों में सबसे अधिक नम्र व्यक्ति था। "प्रभु यीशु सम्पूर्ण ईश्वर थे, फिर भी उन्होंने मनुष्य के रूप में प्रगट होकर पास का स्वरूप धारण किया, ताकि हम सबके लिये अपना प्राण दे (फिलिप्पियों 2:7:8)। यदि हम उनके मार्ग पर चलते हैं तो हमें भी नम्रता में चलना चाहिये।

प्रभु यीशु ने नम्र होकर अपनी सेवकाई की शुरुआत की, भले ही उसकी जरूरत नहीं थी। हम देखते हैं कि जब यूहन्ना बपतिस्मा करने वाला लोगों को उनके पापों के पश्चाताप का बप्तिस्मा दे रहा था तब प्रभु यीशु उसके पास आये (मत्ती 3:13–17)। वास्तव में प्रभु यीशु को पश्चाताप की जरूरत नहीं थी क्योंकि वे तो पापरहित थे (इब्रानियों 4:15)। यूहन्ना ने प्रभु यीशु को रोकने भी कोशिश करी क्योंकि वो जानता था कि प्रभु यीशु पापरहित है और उससे श्रेष्ठ हैं (मत्ती 3:14)। परन्तु फिर भी प्रभु यीशु ने यूहन्ना से बपतिस्मा देने की विनती करीः

"अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है" (पद 15)।

प्रभु यीशु ने बपतिस्मा लेने के लिये क्यों कहा? इस घटना से उनकी सेवकाई का उदघाटन, हुआ, शुरुआत हुई। इसलिये प्रभु यीशु ने अपने आपको पानी के बपतिस्मा को अधीन किया ताकि वे आप और मुझ जैसे पापियों के साथ पहचाने जायें।

प्रभु यीशु, जो कि पाप रहित परमेश्वर के पुत्र ने मनुष्यों के उद्धार और आशा देने के अपने लक्ष्य पूरा करने के लिये अपने आपको पापी मानव जाति के समानांतर रखा। "सब धार्मिकता" पूरी करने के लिये, प्रभु यीशु ने परमेश्वर की इच्छा को स्वीकार किया कि वे मानवजाति का मुक्तिदाता और उद्धारक बनने के लिये वे मानव जाति के पाप अपने ऊपर उठा लें।

दासों का दास

प्रभु यीशु जानते थे कि परमेश्वर ने उन्हें जो लक्ष्य दिया था वो था मानवजाति के नम्र दास बनना (मत्ती 20:28)। और बारह साल की उम्र में भी वे इस बात को जानते थे (लूका 2:41–50)। उनके पानी से बपतिस्मा लेने के बाद जो घटना हुई उससे इस बात को फिर समर्थन मिला।

"और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया; और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा। और देखो, यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं" (मत्ती 3:16,17)।

प्रभु यीशु ने बपतिस्मा में अपने पिता की इच्छा का नम्रता से पालन किया उससे तीन बातें हुईः

1) *"आकाश खुल गया"* (पद 16) – यह तो इस बात का प्रतीक था कि परमेश्वर ने अपने बेटे के द्वारा अपने आप को और अपने उद्देश्यों को नयी तरह से प्रगट किया। प्रभु यीशु ईश्वर थे और आज भी (कुलस्सियों 1:15, 16,19, इब्रानियों 1:3)। उनको देखना, सुनना और

जानने का अर्थ है वास्तव में परमेश्वर को जानना। परमेश्वर ने पहले से कई अधिक स्पष्ट रीति से प्रभु यीशु में अपने आपको पापी मनुष्य के सामने प्रगट किया।

2) *"परमेश्वर का आत्मा उतर आया"* (पद 16ग) – प्रभु यीशु ने पवित्र आत्मा के सामर्थ्यवान, असीमित अभिषेक को पाया। जिसने उन्हें परमेश्वर के उद्देश्य और इच्छा को पूरा करने में परमेश्वर के हृदय को और अधिक प्रगट करने में और सबके लिये उद्धार का मार्ग खोलने में समर्थ किया। पवित्र आत्मा का अभिषेक पाने से, प्रभु यीशु विश्वासियों को पवित्र आत्मा से बप्तिस्मा देने वाले बन पाये (लूका 3:16)।

3) *"यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं"* (पद 17) – यह तो वास्तव में, परमेश्वर ने और भी अधिक गहराई से अपने आपको प्रगट किया ताकि मसीह की पहचान को समर्थन दे सकें। परन्तु इस घोषणा का और भी अधिक गहन अर्थ है।

इस कथन के दो भाग हैं जो कि पुराने नियम के मसीह के विषय में नबी की भविष्यवाणी से लिये गये हैं। "यह मेरा प्रिय पुत्र है" यह तो भजन संहिता 2:7 से लिया गया है। यहूदी लोग ऐतिहासिक तौर पर यह मानते थे कि यह पूरा अध्याय तो आने वाले मसीह के विषय में नबियों का वर्णन है।

दूसरा भाग, *"जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं"* को यशायाह 42:1 से लिया गया है। यह पूरा अध्याय और 43 भी, मसीह के विषय में यह भविष्यवाणी करते हैं कि वह एक पीड़ित दास और मुक्तिदाता होगा जो कि समस्त मानवजाति के लिये न्याय, दया और उद्धार लायेगा।

परमेश्वर ने जब वह शब्द कहें, उन्होंने यह समर्थन दिया कि प्रभु यीशु ही वो मसीह है जिनके विषय में भविष्यवाणी की गई थी और जिनका इन्तजार हो रहा था। वे तो वही है जिनको परमेश्वर ने उद्धारकर्ता, राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु होने के लिये पसंद किया है। इस बात को भी समर्थन मिला कि अनन्तकालिक दैवी मुकुट पाने का, सलीब ही एकमात्र रास्ता है। राजाओं का राजा सबसे पहले तो सबका दास बना (फिलिप्पियों 2:5–11)। उनका महिमा पाने का मार्ग

तो पिता की इच्छा के अधीन होने से था (इब्रानियों 5:8)। प्रभु यीशु प्रेम से प्रेरित इस लक्ष्य को पूरा करेंगे (यूहन्ना 3:16)।

प्रभु यीशु सब तक पहुंचे

प्रभु यीशु के बपतिस्मा से जुड़ी हुई इन घटनाओं से हम अभिषेक के विषय में बहुत महत्वपूर्ण पाठ सीख सकते हैं। सबसे पहले, अपने आपको नम्र करने की उनकी तत्पर आधीनता से फिर भले ही वो जरूरी नहीं था, परमेश्वर ने जो उनके लिये नियत किया था, और उनके द्वारा जो करने की इच्छा थी उसे और भी अधिक प्रगट किया। प्रभु यीशु किसी को भी दोषी ठहराये बिना, सबको प्रेम, क्षमा और परमेश्वर का उद्धार देते हुए सब के पास पहुंचे (यूहन्ना 8:1–11), उन्होंने नम्रता का उदाहरण देते हुए (यूहन्ना 13:1–17), आखिर में क्रूस पर परमेश्वर के प्रेमी हृदय को प्रगट किया (1 यूहन्ना 4:9,10)।

पास्टर से पास्टर तक : अगुवों, हमें भी परमेश्वर के प्रति नम्र आधीनता में चलना चाहिये। हमें नम्रता से हर एक को सुसमाचार प्रचार करना चाहिये। यह तो हमें आम बात लग सकती है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि हम उसे करते हैं। अपने आपको नम्र करना कई बार बहुत बड़ी चुनौती है। नम्रता सीधे सीधे हमारे चरित्र से जुड़ी हुई है। और पवित्र आत्मा के अभिषेक में वृद्धि पाने और फलवान होने के कार्य में हमारा चरित्र आलोचनात्मक कारण है।

परमेश्वर घमंड का विरोध करते हैं। परन्तु नम्र को अनुग्रह देते हैं। हम में से ऐसा कौन है जिसे अपने जीवन में परमेश्वर का अधिक अनुग्रह नहीं चाहिये? वह तो हमें अपनी नम्रता के द्वारा दिया जाता है।

यह नम्रता तो मुंह के बल गिर पड़ना या अपने आपका तिरस्कार करना ताकि दूसरों पर हमारा प्रभाव पड़े कि हम कितने "आत्मिक" हैं, इसमें नहीं। जो वास्तव में नम्र हैं, उसे अपनी नम्रता दूसरों को दिखाने की जरूरत नहीं होती।

जब कोई नम्र होने का दिखावा करता है, तो उसका परिणाम उतना ही अरूचिकर है जितना कि घमंड़ी होना। सच्ची नम्रता तो

हृदय में होती है। यह तो दूसरों के लिये निःस्वार्थ चिंता का स्वाभाव है। यह तो घमंड़ और अहंकार की अनुपस्थिति है। ये कुछ ईश्वरीय स्वभाव है। यह तो घमंड़ और अहंकार की अनुपस्थिति है।

मैं कुछ ईश्वरीय स्वभाव के लक्षणों को सिफारिश करना चाहता हूं जो हमें नम्र आधीनता में चलने में सहायता करेंगे। इन्हें अपनी हर रोज की आदत बना लेना बुद्धिमानी होगी।

- जिनको हमने दुःख पहुंचाया है या अपराध किया है उनसे माफी मांगों।
- दिल से माफ करो, भले ही कोई माफी न भी मांगें तब भी।
- जो लोग अनाकर्षक या अयोग्य लगते हैं उनसे प्रेम करो।
- मदद मांगो और उसे स्वीकार करो।
- ऐसे नाम, पद या लाभ जो हमें दूसरों से बढ़कर दिखाते हैं उनका त्याग करो।
- ऐसी सेवा पसंद करो जो उल्लेखनीय न हों, जिसमें प्रशंसा, आदर और उसका कोई तात्कालिक ईनाम न हों।
- आपका हक होते हुए भी उसका श्रेय दूसरों को लेने दो।

प्रभु यीशु हमारे घमंडी होने के प्रति मनुष्य के झुकाव को जानते थे और इसलिये उन्होंने कई बार नम्रता के विषय में शिक्षा दी (मत्ती 6:115; 18:1–4; 20:20–28)। यदि हम पवित्र आत्मा के सही अभिषेक पाने की इच्छा रखते हैं – जिसका परिणाम फलवान और बदलते जीवन है – तो हमें वैसे ही चलना पड़ेगा जैसा प्रभु चले थे।

यह तो परमेश्वर के वचन में प्रगट की गई उनकी इच्छा को नम्रता से आधीन और विश्वासयोग्यता से चलना है; यह तो हर रोज पवित्र आत्मा की अगुवाई और मार्गदर्शन में चलना है (मीका 6:8)।

घ. प्रभु यीशु ने परीक्षा को समझा। प्रभु यीशु के बपतिस्मा के तुरन्त बाद, वे "आत्मा की अगुवाई से" उपवास, प्रार्थना और शैतान से लड़ने के लिये जंगल में गए (लूका 4:1–12)। हम शायद यह सोचेंगे कि बपतिस्मा और पवित्र आत्मा के अभिषेक के अनुभव के बाद, प्रभु

यीशु को सामर्थ से भरी, दृश्य सेवकाई के लिये भेजा गया होगा। परन्तु परमेश्वर की सोच हमारी सोच में बहुत अधिक अन्तर है (यशायाह 55:8, 9) और उनके उद्देश्यों को अनन्तकालिक बातों को ध्यान में रखकर बनाया गया है। यह तो निश्चित है कि प्रभु यीशु की परीक्षा, परमेश्वर की योजना के अनुसार था (मत्ती 4:1; मरकुस 1:12,13; लूका 4:1)।

पास्टर से पास्टर तक : कलीसिया के अगुवे होने के नाते, हमारे सामने अनोखे परीक्षण, परेशानी और परीक्षा आते हैं। कलीसिया के अगुवे होने के कारण हम कभी आनन्द के सर्वोच्य शिखर पर होते हैं तो कभी निराशा और हार की गहरी खाई में और कई बार तो यह एक इतवार से दूसरे इतवार तक होते रहता है।

साथी पासबानो, कलीसिया के अगुवे होने के नाते, आप नर्क के हमलों के निशाने पर हो। आप अपने आपको इन परेशानियों में अकेलेपन को अनुभव करते हों और आपको ऐसा लगता है कि कोई आपको समझ नहीं पाता। आपको यह भी ख्याल आने की परीक्षा हों कि यदि आप ज्यादा समझदार और आत्मिक होते तो शायद आप ऐसे मुश्किल हालातों से नहीं गुजरते। आप शायद निराश हो कर सेवकाई छोड़ देना चाहते हों। पर यह तो आपको हताश करने के लिये शैतान के झूठ हैं – इन पर विश्वास मत करिए।

सच्चाई तो यह है कि जो कोई भी परमेश्वर की सेवकाई करना चाहते हैं वे सब सताव, परीक्षण और परीक्षाओं का सामना करेंगे (2 तीमुथियुस 3:12) – प्रभु यीशु ने भी किया।

उनका जीवन हमारे लिये एक नमूना है कि हम कैसे अभिलाषी जीत की भावना और परमेश्वर पर विश्वास के साथ परीक्षणों का सामना करें और उन्हें सहन करें।

प्रभु यीशु जानते थे कि परमेश्वर न तो उन्हें छोड़ेगे, ना ही त्यागेंगे। वे जानते थे कि परमेश्वर विश्वासयोग्य है और उनके वचन सच्चे हैं। वे जानते थे कि वे पवित्र आत्मा की सामर्थ और परमेश्वर की सहायता से अपने पिता की इच्छा को पूरा कर सकते

हैं : *"तुम्हारा बुलाने वाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा"* (1 थिस्सलुनीकियों 5:24)। मैं सिफारिश करता हूं कि आप इस आयत को याद कर लें और जब भी आप चुनौती या परेशानी का सामना करें तब इस पर विचार करें। फिर नीचे दिये गये प्रभु यीशु के जीवन पर आधारित नियमों और सिद्धान्तों का ध्यान से अध्ययन करें; वे भी आपको चुनौती के समय में मदद करेंगे।

प्रभु यीशु ने अपने परीक्षण और कसौटियों के समय में भिन्न लक्षणों को अपनाना उनसे हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। उन्होंने न तो कोई बड़बड़ाहट करी और ना ही शिकायत करी। वे न तो डरे और ना ही किसी उलझन में रहे। अपने परीक्षण और अंत में उस पर विषय के दौरान, प्रभु यीशु ने अपने पिता परमेश्वर पर अपना विश्वास बनाये रखा।

प्रभु यीशु ने यह सवाल भी नहीं किया कि उनके साथ ऐसा क्यों हो रहा है? परन्तु उन्होंने इस परीक्षा को सहन किया, यह विश्वास रखते हुए कि उनके जीवन में और जीवन के द्वारा परमेश्वर का उद्देश्य पूरा हो रहा है। परमेश्वर और वचन के अपरिवर्तनीय सामर्थ पर विश्वास के प्रति उनकी आधीनता में उन्हें शान्ति और बल मिला।

अनुरूप शस्त्र साज

परमेश्वर जब हमें नयी जिम्मेदारी के नये स्तर पर लाते हैं या हमारे जीवन में नवीन अभिषेक लाते हैं, तो कई बार वे परीक्षा के समय को आने देते हैं। आइये हम कुछ कारणों को देखें कि क्यों परीक्षा इतनी महत्वपूर्ण है:

परमेश्वर के दिये हुए अभिषेक में हमें बढ़ना है।

परमेश्वर हमारी भलाई के लिये आत्मिक रूप से सींचते हैं। परन्तु वृद्धि तो बेआराम हो सकती है; हमें इसका विरोध करने का प्रलोभन आ सकता है। परन्तु क्योंकि परमेश्वर जानते हैं कि हमारे भविष्य में क्या होने वाला है, इसलिये वे हमें हार के लिये नहीं परन्तु जीत के लिये तैयार करते हैं। इसलिये हमें चाहिये कि हम मज़बूत और समझदार बनें, और इस कार्यवाही में आज्ञाकारी बनें।

हमें इस सिद्धान्त का एक उदाहरण पुराने नियम में मिलता है (1 शमूएल 17:38,39)। दाऊद तो विशाल गोलियत का सामना करने पर हैं, शाऊल चाहता है कि दाऊद उसका अपना शस्त्र साज़ पहने। परन्तु दाऊद, शाऊल के शस्त्र साज पहनने से इंकार करता है और कहता है, *"इन्हें पहने मुझसे चला नहीं जाता, क्योंकि मैंने नहीं परखा"* (पद 36)।

दाऊद को जो शस्त्रसाज अनुरूप नहीं था या जिसे पहनने का वो आदि नहीं था उसे वह सफलता से उपयोग नहीं कर पाया। भले ही वह शस्त्रसाज़ शाऊल के लिये अच्छे थे, परन्तु वे दाऊद के लिये अपरिमित और अपरिचित थे।

वैसे ही, जिन अभिषेक और वरदानों में चलने के लिये हमें बुलाया गया है, वे केवल हमारे ही होने चाहिये – किसी ओर के नहीं। किसी दूसरे व्यक्ति की आशीषों और अभिषेक पर विश्वास और भरोसा करना बहुत आसान है। हो सकता है हम उनका अनुकरण करने की कोशिश करें या उनके प्रवचन उन्हीं की शैली में सुनाने की कोशिश करें। हम ऐसे शस्त्रसाज़ से कार्य करने की कोशिश करें जो हमारे अपने नहीं है।

किसी और के अभिषेक में कार्य करना तो परेशानी की बात है क्योंकि परमेश्वर ने तो आपको बुलाया है। वे तो आपका उपयोग करना चाहते हैं। उन्होंने आपको जो अभिषेक दिया है वो तो आप ही के लिये है। आप एक अलग साधन हैं जिसे परमेश्वर किसी विशेष तरीके से उपयोग करना चाहते हैं। जो कार्य उनके पास है वो तो आपके लिये हैं और जो अभिषेक वे देंगे वो आपके कार्य के बिल्कुल अनुरूप होगा।

परन्तु ज्यादातर आपकी बुलाहट को, आप के कार्य को, और आप के अभिषेक को समझने और उसमें "वृद्धि पाने" में वक्त लगता है।

कई बार, परमेश्वर आपकी कसौटी करेंगे या परीक्षा करेंगे ताकि हम वृद्धि पायें और उन्होंने हमारे लिये जो शस्त्रसाज रखा है उसमें अनुरूप बन सके। ऐसे समय में यदि आप परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं, वे आपको आगे बढ़ायेंगे ताकि आप अपने स्वयं के शस्त्रसाज़ में,

और परमेश्वर ने जो अभिषेक आप को दिया है उसमें मज़बूत बनते आए और उसी में कार्य कर सकें ताकि आप उसकी बुलाहट में विजयी और फलवान बन सकें।

जो साधन उन्होंने हमें दिये हैं, उनसे हमें प्राप्त करना सीखना चाहिये।

कसौटियां कई बार हमें अपर्याप्त दर्शाती हैं। मुश्किल समयों में ही हम सबसे ज्यादा समझ सकते हैं कि हमें परमेश्वर की कितनी जरूरत है और केवल वे हमें क्या दे सकते हैं।

हमने अच्छी कमज़ोरियों के महत्व के विषय में सीखा है, कि वे हमें परमेश्वर पर अधिक निर्भर होना सिखाती हैं (2 कुरिन्थियों 12:7–10)। इस प्रकार की कमजोरियां हमें ऐसे साधन बनाती हैं जिससे पवित्र आत्मा का अभिषेक बह सकें।

हमें परमेश्वर की सतत जरूरत है

जब हम परमेश्वर के अभिषेक से भरपूर होते हैं, और भरोसे और विश्वास (जो कि हमारी आधीनता पर आधारित है) में कार्य करते हैं, तब भी एक खतरा है जिसके विषय में हमें जानना चाहिये। और वो तो यह हो सकता है धीरे धीरे, हम अपने आप पर और हमारे जमा हुए अनुभव तथा निपुणता पर निर्भर होना शुरु करें। फिर हम परमेश्वर और पवित्र आत्मा की सामर्थ पर कम निर्भर होते जायेंगे। यह जरूरी नहीं है कि ऐसा ही हो, परन्तु यदि हम सचेत न रहें तो ऐसा हो सकता है।

प्रभु यीशु ने कहा, *"मैं दाखलता हूं, तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है (ठहरा रहना, लगता, निवास करता, घर बनाता), और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते"* (यूहन्ना 15:5)।

मैं यही बताना चाहता हूं कि पवित्र आत्मा का अभिषेक तो प्रभु यीशु के विषय में है। यह तो वरदान, ताकत या सेवकाई के विषय में नहीं है। यह तो उन लोगों के विषय में भी नहीं जिनके मध्य में हम सेकवाई करते हैं, यह तो केवल प्रभु यीशु के विषय में है। सच्चे अभिषेक

के सात लक्षणों में (पृष्ठ 20 पर दिये गये हैं) एक आम बात यह थी कि वे सब प्रभु यीशु की ओर निर्देश करते हैं।

हम तो केवल उन्हीं में, परमेश्वर के आत्मा के द्वारा *"हम उसी में जीवित रहते, और चलते फिरते, और स्थिर रहते हैं"* (प्रेरितों के काम 7:28)। चाहे परमेश्वर हमें कितना ही उपयोग क्यों न करें, और चाहे हमें कितना ही अनुभव क्यों न मिले, फिर भी हमें हमेशा बालक के जैसा सरल विश्वास रखना चाहिये। इस प्रकार का विश्वास हमारे अन्दर नम्र विश्वास पैदा करता है और परमेश्वर पर गहराई निर्भर बनाता है।

हमारा मनुष्य स्वभाव हमें स्वार्थी बना सकता है और हमें परमेश्वर से स्वाधीन होने की भावना दे सकता है। परन्तु परीक्षण और कसौटियां हमें स्मरण दिलाती है कि हमें अपने जीवन में उनकी, उनके अनुग्रह की और उनके स्पर्श की सतत जरूरत है।

हमें शुद्धिकरण की जरूरत है ताकि हम उनका अधिक अभिषेक पाने के लिये मुक्त हो सकें।

प्रभु यीशु ने कहा, *"आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं: जो बातें मैंने तुम से कही हैं, वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं"* (यूहन्ना 6:63)।

परमेश्वर के आत्मा की हमारे जीवन में उपस्थिति हमारे पापी स्वभाव को तकलीफ देती है – ऐसा ही होना चाहिये। क्योंकि आत्मा और शरीर (पापी स्वभाव) एक दूसरे के साथ संघर्ष में हैं, और एक दूसरे के विरोधी हैं (गलतियों 5:16,17; याकूब 4:1–10; और 1 पतरस 2:11 भी पढ़ें)।

परमेश्वर हमारे हृदय, दिमाग और व्यक्तित्व की उन बातों को जानते हैं जो उनके पवित्र आत्मा का अभिषेक पाने में बाधा डालते हैं। परीक्षण और कसौटियां ज्यादातर शुद्ध करने वाले कर्ता बनती है, ताकि हमारी कमज़ोरियां सतह पर आ जायें और हम उन पर विचार कर सकें।

हमारी अशुद्धताओं को शुद्ध करना शिल्पकार जो चांदी और सोने का कार्य करते हैं वे बतायेंगे कि कच्ची धातु जब पहली बार सुरंग

से खोदी जाती है तो वह अशुद्धताओं से भरी होती है। उन्हें गर्म करके और पिघालना पड़ता है ताकि उसकी अशुद्धता सतह पर आ जाये। फिर उस तरल धातु से कुशलतापूर्वक कूड़ा करकट निकाल दिया जाता है (नीतिवचन 25:4)। यह प्रक्रिया बार बार दोहराई जाती है। जब तक वह धातु शुद्ध और उपयोग के योग्य न हो जाये। जो कारीगर इस धातु को तापन कर रहे हैं वे जानते हैं कि उस बहुमूल्य धातु को आग से कब निकालना है ताकि उसको नुकसान न पहुंचे।

इसी तरह, हमारे जीवन में आने वाली परीक्षाओं को परमेश्वर इस तरह इस्तेमाल करते हैं ताकि हमारे अन्दर की अशुद्धता सतह पर लाकर प्रकट हो सकें। उन्हें पहचाना जा सकें–और पश्चाताप, चंगाई, उद्धार, हमारे पापी स्वभाव के बंधन से मुक्ति के द्वारा उन्हें दूर कर दिया जा सके।

पास्टर से पास्टर तक : हे कलीसिया के अगुवो, जब हालात बिगड़ जाते हैं या जब आप पर दवाब आता है तो आप के जीवन की सतह पर क्या उभर कर आता है? आपकी क्या प्रतिक्रिया होती है? या आप राहत पाने के लिये किस की ओर मुड़ते हैं? क्या आपके जीवन की सतह पर जो उभर कर आता है वह तो स्वभाव या व्यवहार है जो परमेश्वर आपके जीवन से साफ करता, चंगा करता या हटाना चाहता है? क्या आपकी परीक्षा और कठिनाई के मध्य में परमेश्वर आपको कुछ सिखाना चाहता है?

इस समय जब हम अपनी कमज़ोरी और अशुद्धता का सामना करते हैं तब हमें डरना नहीं चाहिये। परमेश्वर, अपने प्रेम में, इन परीक्षाओं और मुसीबतों के द्वारा हमें शुद्ध करेगा और आकार देगा वह अपने प्रेम के प्रकाशन, समझ और सर्वसमर्थता से हमें छू लेगा और अपने वचन के प्रति अन्तर्दृष्टि प्रदान करेगा। वह ऐसी परिस्थियों के द्वारा हमारे विश्वास की सीमा को बढ़ाएगा और हमारे चरित्र को बदल देगा ताकि हम उसके लिए और प्रभावकारी और उपयोगी पात्र बन जाएं।

बुद्धि की परख

परमेश्वर परीक्षाओं के द्वारा हमें शुद्ध और समर्थ बनाता है। परमेश्वर इसलिये हमारी परीक्षा नहीं करता कि हम पराजित या ऐसा महसूस करें कि हम "इतने अच्छे नहीं" हैं। ऐसा नहीं है! परमेश्वर हमारे जीवन में परीक्षा के द्वारा हमारे बल को बढ़ाना चाहता है, क्योंकि वह नहीं चाहता की हम उन क्षणों में अपने आपको कमज़ोर महसूस करें जब हमें बल की आवश्यकता है (नीतिवचन 24:10; यिर्मयाह 12:5)। परमेश्वर परीक्षाओं के द्वारा अपने अभिषेक को ग्रहण करने के लिए और उसके प्रति विश्वासयोग्य रहने के लिए हमें समर्थ करता है!

इसलिये याकूब हमें प्रोत्साहित करता है कि *"जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो"* (याकूब 1:2)। पवित्र शास्त्र हमें प्रोत्साहित करता है कि हम धीरज के साथ परीक्षाओं को सह लें (पद 3,4) यह जानकर और विश्वास करके की विश्वासयोग्य परमेश्वर इनके द्वारा अपनी महिमा और हमारी भलाई उत्पन्न करेगा (रोमियों 8:28,29)।

याकूब सलाह देता है कि हम बुद्धि मांगें (याकूब 1:5–8) – और, विश्वास के साथ, परमेश्वर के उत्तर की आशा रखें। हमें यह बुद्धि क्यों चाहिए? क्या यह केवल परीक्षा से बचने के लिए है? नहीं! परन्तु इसके विपरीत यह हमको विवेक और समझ प्रदान करेगी, ताकि, भले ही परीक्षा का स्रोत कोई भी क्यों न हो, जब परमेश्वर हमारे अन्दर कार्य कर रहा होगा तब हम जान लेंगे की हमें क्या करना है।

एक परखे हुए इतिहास की आवश्यकता

परमेश्वर चाहता है कि वह हमें अपने आत्मा की ओर अधिक दें। परन्तु इसके लिए अक्सर इस बात की आवश्यकता है कि हमारा चरित्र बलवान हो और हम परिपक्व हों ताकि उसके वरदानों को हम व्यर्थ न करें या उनका गलत उपयोग न करें। आप अपने पांच साल के बेटे को कार/गाड़ी देंगे, चाहे वह कितना भी जिद करें? वह अभी इतना समझदार नहीं हुआ है कि अपनी जिम्मेदारी को समझ सके। इसके आवश्यक है कि वह पहले शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से बड़ा हो जाए।

वह तो शैतान है जो कि दुष्टता का स्रोत है, जो चोरी करना, मारना और नष्ट करना चाहता है (यूहन्ना 10:10)। शैतान प्रत्यक्ष रूप से हमारे वरदानों और अभिषेक को कम या नष्ट नहीं कर सकता है। वो तो केवल परमेश्वर की सर्वसमर्थ राज्य के आधीन हैं। परन्तु शैतान हमारे चरित्र के क्षेत्र में हमारी परीक्षा करता है। वह हम पर आक्रमण करेगा, बहकाएगा, दूषित करेगा या हमें परमेश्वर के पात्र होने के योग्य न छोड़ेगा।

यह सिद्धान्त परमेश्वर के राज्य पर भी लागू होता है। पौलुस ने तीमुथियुस को पुरनियों और सेवकों को नियुक्त करने के लिये जो निर्देश दिए है उनको देखें (1 तीमुथियुस 3:1–13)। जो अगुवा बनना चाहता है वह एक सराहनीय और भला काम करता है। परन्तु यह आवश्यक है कि उनका अतीत–अच्छे व्यवहार और चरित्र और परिपक्व जीवन के लिए परखा होना चाहिए। विशेष रूप से, पौलुस तीमुथियुस को निर्देश देता है कि नए विश्वासी को पुरनिये नियुक्त न करें क्योंकि नए विश्वासियों में अभी उस प्रकार की परिपक्वता नहीं होती है।

परीक्षा में स्थिर रहना

हमारा परमेश्वर पवित्रता में सिद्ध है। वह कभी भी दुष्ट कार्य न करेगा, न ही वह हमें जो उसके प्रेम का पात्र है, परीक्षा में डालेगा कि हम दुष्ट कार्य या पाप करें (अय्यूब 34:10–12; याकूब 1:13–18)।

वह तो शैतान है जो कि दुष्टता का स्रोत है, जो चोरी करना, मारना और नष्ट करना चाहता है (यूहन्ना 10:10)। शैतान प्रत्यक्ष रूप से हमारे वरदानों और अभिषेक को कम या नष्ट नहीं कर सकता है।

वो तो केवल परमेश्वर की सर्वसमर्थ राज्य के आधीन हैं। परन्तु शैतान हमारे चरित्र के क्षेत्र में हमारी परीक्षा करता है। वह हम पर आक्रमण करेगा, बहकाएगा, दूषित करेगा या हमें परमेश्वर के पात्र होने के योग्य न छोड़ेगा। अगर वह हमें पापमय स्वभाव या व्यवहार चुनने के लिये बाध्य कर लेता है, तो हमारे व्यक्तिगत असफलताओं के कारण हमारे जीवन में परमेश्वर के कार्य में या तो रूकावट आ जायेगी या वो नष्ट हो जायेगा।

तो हम क्या करें क्योंकि हमारा, *"विरोधी शैतान गर्जने वाले सिंह के नाईं इस खोज़ में रहता है, कि किस को फाड़ खाए"* ? (1 पतरस 5:8) हमें परीक्षा का सामना उसी प्रकार करना है जिस प्रकार यीशु ने जंगल में सामना किया था (लूका 4:3–12)। साथ ही याकूब 4:7–10 में भी वर्णन है कि हम किस ढंग से शैतान के कार्य का विरोध कर सकते हैं। पवित्र शास्त्र का वह हिस्सा पढ़ो, और हम मिल कर एक पल के लिए उसका अध्ययन करते हैं।

"परमेश्वर के आधीन हो जाओ" –परमेश्वर पर विश्वास रखो और उसके आज्ञाकारी रहो। उसके वचन की आज्ञाकारिता हमें परीक्षा के स्थानों और परिस्थितियों से दूर रखेगी। साथ ही, जब परीक्षा में पड़ो तो पहले प्रार्थना में परमेश्वर की ओर दौड़ो; बिना परमेश्वर की मदद के के परीक्षा का विरोध करने का प्रयास न करो।

"शैतान का सामना करो" – परमेश्वर के वचन और अपनी आत्मिक प्रार्थना की भाषा ("भाषा – 1 कुरिन्थियों 12 और 14) का उपयोग करो, उसके साथ प्रार्थना में जुड़ो जिस पर आप भरोसा कर सकते हैं।

"परमेश्वर के निकट आओ" – अपनी सम्पूर्ण परिस्थिति को प्रार्थना में परमेश्वर के सम्मुख लाओ और अवसर दो कि वह आपके हृदय में अपनी आत्मा और वचन का प्रकाश उत्पन्न करें। धीरज धरो और उसकी बाट जोहो ताकि वह वो करें जो केवल वह ही कर सकता है। ऐसी परीक्षा में न पड़ो कि मामले के अपने हाथों में ले लो या अपने ही तरीके से परिस्थिति को सुलझाने या सम्भालने का प्रयास करो।

"अपने हाथ शुद्ध करो" – अपने हृदय पवित्र करो", "दीन बनो" – जैसे – जैसे पवित्र आत्मा आपके जीवन में दास्तव, पाप और कमजोरी को प्रगट करती है और आपको इनके प्रति दोषी ठहराती है, तो इनको, दीन और पश्चातापी हृदय के साथ, प्रार्थना में परमेश्वर के सम्मुख लाओ, अपने कमियों को स्वीकार करो और परमेश्वर के शुद्धिकरण, उसकी क्षमा, चंगाई और छुटकारे की आवश्यकता को भी स्वीकार करो।

विजयी होने के लिए अनुग्रह

इसके साथ, निर्देशों की एक और शक्तिशाली सूची है जो हमें यह जानने में सहायता करते हैं कि आत्मिक युद्ध कैसे किया जाए। इफिसियों 6:10–18 पढ़ें। यह हमें निर्देश देता है कि हम अपने शस्त्र पहन लें, और आत्मा की तलवार (परमेश्वर का वचन) और प्रार्थना में "युद्ध" करें। तब, जब आपने वो सब कर लिया हो जो आप कर सकते थे, तब अपने विश्वास, भरोसे और परमेश्वर की तरफ समर्पण में दृढ़ता से खड़े हो जाए। आपके शैतान और उसके कार्य का विरोध कर सकते हैं, और उसको भागना पड़ेगा, परमेश्वर आज ही आपको विजय देगा। शत्रु अपनी हार नहीं मानता है। वह पुनः प्रयास करेगा क्योंकि उसका उद्देश्य आपका विनाश है। यह बात यीशु के लिए भी सत्य थी। हालांकि उसने जंगल में परीक्षा का सामना करा और महान विजय प्राप्त करी – यह उसका शत्रु के साथ अंतिम मुकाबला नहीं था (देखें लूका 4:13, और देखें मत्ती 16:23;लूका 22:1–6)। परन्तु प्रत्येक परीक्षा में, यीशु ने पाप न किया।

याद रखें कि परमेश्वर पूर्णतः आपके लिए है (रोमियों 8:31)। उसकी प्रतिज्ञा है कि वो आपको कभी ऐसी परीक्षा में न पड़ने देगा जिसका आप विरोध न कर सकें; वह हमेशा आपको बच निकलने का मार्ग दे देगा (1 कुरिन्थियों 10:13, 2 पतरस 2:9)।

इसलिए हम आनन्द करें, क्योंकि हमारा राजा जो करीबी से हमारे संघर्ष को जानता और समझता है। यह न्यायी और प्रेमी उद्धारकर्ता हमें मुफ्त न्यौता देता है कि हम उसकी सामर्थ, शक्ति और अनुग्रह को ग्रहण करें और उसके समान विजयी बन जाएं (इब्रानियों 4:14–16)।

हमें पवित्र आत्मा की सामर्थ पर निर्भर रहने के लिए एक आजीवन नमूने को अपनाना है।

जब यीशु चालीस दिन जंगल में रहने के बाद लौटे, तो बाइबल में इस प्रकार लिखा है, *"फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील में लौटा, और उसकी चर्चा आस–पास के सारे देश में फैल गई"* (लूका 4:14)।

यीशु अपने नगर नासरत में आया। यह वही जगह है जहां वह बड़ा हुआ या और जहां वह आराधनालय में जाता था (लूका 4:16–30)। यह यहां पर था कि वो पढ़ने के लिए खड़ा हुआ, पूरे शास्त्र में से उसने इस अध्याय को यशायह 61:1,2 में से चुना, *"कि प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिये कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिये भेजा है कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं। और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूं"* (लूका 4:18,19)।

यीशु ने घोषणा करी उसके मसीह होने का कार्य "प्रभु की आत्मा के द्वारा ही पूरा किया जाएगा। यीशु पवित्र आत्मा द्वारा अभिषिक्त और समर्थ किया गया था। यह इसी अभिषेक के कारण सम्भव हुआ कि वह वो सब कर पाया जिसकी उसने अपनी सेवकाई के विषय में नबूवत करी थी।

प्रभु पर पूर्ण निर्भरता

इस अध्याय में, यीशु एक उत्तम नमूना प्रस्तुत करता है कि हम कैसे परमेश्वर की इच्छा को पूरा कर सकते हैं। जैसा कि हम जानते है, यीशु केवल पिता की इच्छा पूरी करने को आए, न की अपनी इच्छा को। इसी तरीके से, मुझे और आपको पिता की इच्छा पूरी करने के लिए बुलाया गया है और न की अपनी। हम इसलिए नहीं बुलाए गए कि "अपना कार्यक्रम" पूरा करें; चाहे हम कितना भी क्यों न सोचें कि वो भला कार्य है। बल्कि, हम बुलाए गए हैं, अधिकृत और समर्थ किए गए हैं कि केवल एक व्यक्ति की इच्छा पूरी करें–वो है परमेश्वर। और

gkj u ekU

परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए हमें परमेश्वर की सामर्थ की आवश्यकता है!

हमने यह सीखा है, कि हमारी सबसे बड़ी चुनौती यह है कि जैसे–जैसे हम परमेश्वर की बातों में परिपक्व होते जाते हैं वैसे–वैसे हमें और अत्याधिक परमेश्वर और पवित्र आत्मा की सामर्थ पर निर्भर होते जाना है। अपने बढ़ते हुए वरदानों और योग्यताओं पर निर्भर होना सहज हो जाता है। हमें थोड़ी सफलता मिल तो जाती है, इसलिए हम नियमित प्रार्थना और बाइबल अध्ययन से पीछे हट जाते हैं। हम शायद उतनी आत्मिक भूख महसूस न करें, या उस हद तक लोगों के जीवन में या अपने समाज में परमेश्वर के कार्य को देखने को तत्पर न हो। ऐसे समय में हमारा भरोसा अधिकतर हमारे अनुभव और निपुणता पर होता है, और पवित्र आत्मा की अभिषिक्त शक्ति पर कम भरोसा ऐसे मौकों पर, मुसीबतें और परीक्षाएं हमें दुबारा अपने घुटनों पर ले आती हैं; हम दुबारा उसी जगह पर आ जाते हैं, जहां पर हम अपने जीवन

और सेवकाई की सभी आवश्यकताओं के लिए परमेश्वर पर निर्भर हो जाते हैं।

हम यीशु के जीवन में, महान आश्चर्यक्रर्मों और सेवकाई का समय, और महान परीक्षा और विरोध का समय देख सकते हैं। परन्तु दोनों ही स्थिति में, पापरहित परमेश्वर का पुत्र पूर्ण रीति से परमेश्वर की आत्मा की सबल सामर्थ पर निर्भर था।

मानव देह की सीमाओं को अपनाना यीशु ने चुन लिया और अपनी ईश्वरीय विशेषाधिकार से अपने को शून्य कर दिया (फिलिप्पियों 2:7)। इसी कारण से, यीशु ने अपने आपको पूर्णतः परमेश्वर की इच्छा और पवित्र आत्मा की सामर्थ निर्भर कर दिया। इसने उसको समर्थ किया उसके पृथ्वी के जीवन में, उसकी पूरी सेवकाई में, यहां तक की उसकी मृत्यु में और उसके बाद उसमें महिमामय पुनरुत्थान में!

यदि परमेश्वर के पुत्र होने के बाद भी, यीशु को पिता की इच्छा पूरी करने के लिए पवित्र आत्मा के अभिषेक की सामर्थ की आवश्यकता थी तो मुझे और आपको कितनी और आवश्यकता होगी?

परीक्षाः हमें आकार देने का परमेश्वर का साधन

परमेश्वर हमारे जीवन में परीक्षा का उपयोग करेगा। वह हमें ऐसे समय में डाल नहीं रहा। इसका विपरीत ही सत्य है। क्योंकि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है, वह हमें अनुशासित करता है (इब्रानियों 12:3–11)। क्योंकि हम वास्तव में उसके बेटे और बेटियां हैं (रोमियों 8:14–16), वह वहीं करता हैं जो हमें उसके रूप में ढालने और बढ़ाने के लिए आवश्यक है (2 कुरिन्थियों 3:18)। क्योंकि हम मसीह के संग सह–वारिस हैं (रोमियों 8:17), और निश्चित है कि हम उसके साथ प्रभुता और राज्य करें (2 तीमुथियुस 2:12; प्रकाशितवाक्य 5:10), इसलिये जो कुछ आने वाला है उसके लिए हम परीक्षा में जाने को तैयार हैं (रोमियों 8:18; 2 कुरिन्थियों 4:17)।

हम में से प्रत्येक पर जो परीक्षाएं और मुसीबतें आतीं हैं उन से हमको डरना या भागना नहीं है। परन्तु जैसे, याकूब लिखता है, *"जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसको पूरे आनन्द की बात*

समझो" (याकूब 1:2)। क्योंकि इन्हीं साधनों के द्वारा परमेश्वर हमें आकार देगा, परिवर्तित करेगा और तैयार करेगा – अपने इस्तेमाल और महिमा के लिए।

3. परमेश्वर का अनुसरण का प्रयास

जैसा हमने देखा है, कि यीशु के जीवन और सेवकाई से बहुत कुछ सिद्धान्त और पाठ सीखने को हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है, कि उसके समान किसी ने शिक्षा नहीं दी (लूका 4:32)। यीशु ने अपनी सेवकाई में कई चिन्ह, अद्‌भुत कार्य और आश्चर्यकर्म किए–ये इतने अधिक थे कि प्रेरित यूहन्ना कहता है कि वे नहीं लिखे जा सकते थे! (यूहन्ना 21:25)।

क्योंकि यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक सा है (इब्रानियों 13:8), वे कार्य जो उन्होंने अपनी इस पृथ्वी पर सेवकाई के दौरान किए, वे आज भी हो रहे हैं। यह अद्‌भुत कार्य और चमत्कार तो पवित्र आत्मा, मसीह की देह के अंगों के द्वारा करता है। इसका अर्थ यह है कि प्रभु यीशु ने इस पृथ्वी पर जिस सेवकाई को शुरु किया था, उसने अब वह अपने अनुयायियों को दी है ताकि वे इसे आगे बढ़ा सकें (प्रेरितों के काम 1:1–8)।

हमें उनके जैसा कार्य तो नहीं दिया गया कि हम मानवजाति के पाप के लिये क्रूस पर अपना प्राण दें। वह तो केवल मसीह का कार्य था अनन्तकालिक उद्धार जो केवल उनके बलिदान से मिलता है (प्रेरितों के काम 4:12)। उस महान और सम्पूर्ण किये गये कार्य में तो हम कुछ भी नहीं कर सकते। हमें केवल उसे पाना है।

पास्टर से पास्टर तक : इस बात को समझें कि प्रभु यीशु की सेवकाई को उनके क्रूसारोपण से छोटा नहीं किया गया था। प्रभु यीशु की इस संसार में सेवकाई का मुख्य कार्य यही था कि वे मानवजाति के उद्धार के लिये क्रूस पर अपना प्राण दें। यह उद्धार का कार्य तो उनकी मृत्यु और फिर पुनरुत्थान के द्वारा महिमा में सम्पूर्ण हुआ (यूहन्ना 19:30; इफिसियों 1:17–23; फिलिप्पियों 2:5–11; इब्रानियों 9:11–15)।

इसलिये हम दृढ़ विश्वास से कह सकते हैं कि प्रभु यीशु को उनकी इच्छाओं के विरूद्ध किसी ने नहीं मारा। इसके विपरीत, हमारे पापों के लिये प्रभु यीशु की मृत्यु तोपरमेश्वरकी उनके लिये पूर्व निश्चित उद्देश्य का भाग थी (यूहन्ना 1:29; 12:27; 19:5–11; प्रेरितों के काम 2:22–24,33)। प्रभु यीशु ने अपनी इच्छा से इस कार्य को अपनाया और उसे पूरा किया।

अद्‌भुत कार्य

हममें से जिन्होंने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार मिला है, उन्हें प्रभु यीशु की इस सेवकाई को पृथ्वी के छोर तक पहुंचाने का कार्य दिया गया है (प्रेरितों के काम 1:8)। इस पवित्र आज्ञा को पूरा करने के लिये पवित्र आत्मा दिया गया है। प्रभु यीशु ने यह भी कहा, *"मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं"* (यूहन्ना 14:12)। इस पद में हम साफ देखते हैं कि प्रभु यीशु ने हमें अपने कार्यों को आगे बढ़ाने के लिये बुलाया है।

हालांकि, हमें यह भी समझना है कि हमारे कार्य किसी भी तरह से उनके कार्यों से अधिक नहीं या हम किसी भी हाल में मसीह के बराबर नहीं (मत्ती 10:24,25; यूहन्ना 13:16)। क्योंकि केवल प्रभु यीशु ईश्वर थे और हैं; केवल प्रभु यीशु ही परमेश्वर पिता और पवित्र आत्मा के साथ एक हैं (यूहन्ना 10:30)।

जब प्रभु यीशु ने कहा, "महान कार्य"। इसका अर्थ है हम ऐसे कार्य करेंगे जो कि संख्या और विस्तार में महान होंगे। प्रभु यीशु की सेवकाई केवल साढ़े तीन वर्ष की रही। हमारी सेवकाई हमारे पूरे जीवन के दौरान फैल सकती है।

प्रभु यीशु की इस पृथ्वी पर सेवकाई भौगोलिक दृष्टि से छोटे से क्षेत्र तक और अपेक्षाकृत बहुत थोड़ी संख्या के लोगों के बीच में थी। और जब हम प्रभु यीशु के लाखों अनुयायी और हम जो *"पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक"* सुसमाचार फैलाने के लिये बुलाये गये

हैं उसकी तुलना में सीमित हैं। (प्रेरितों के काम 1:8)। हमें सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार देना है (मरकुस 16:15) और सब जातियों के लोगों को चेला बनाना है (मत्ती 28:19)। और यही महान कार्य है जो हम करेंगे।

सबके लिये सुसमाचार

यह तो परमेश्वर पिता के हृदय की योजना है कि सारे लोग उद्धार पायें। प्रभु यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा अब यह सम्भव है। परन्तु यह सुसमाचार सारी जातियों को सुनाने की आवश्यकता है (मत्ती 24:14; यूहन्ना 4:35)। वे कैसे जानेंगे जब तक कि कोई जाकर उन्हें न बताएं (रोमियों 10:14,15)।

और यह तो हर एक विश्वासी की जिम्मेवारी है कि वह मसीह के द्वारा उद्धार के सुसमाचार को लोगों तक पहुंचाए। परन्तु इसे पूरा करने के लिए, हमें परमेश्वर के पवित्र आत्मा की सामर्थ और शक्ति की जरूरत है। पवित्र आत्मा के सामर्थ से, *"वह संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा"।* (यूहन्ना 16:7–11)। प्रथम प्रेरितों ने भी पवित्र आत्मा ही की सहायता से अद्‌भुत कार्य किये थे (प्रेरितों के काम 2:43; 5:12 आदि)।

यही पवित्र आत्मा की सामर्थ के अद्‌भुत कार्य कलीसिया के आरंभ से आज तक होते आ रहे हैं (1 कुरिन्थियों 12:6,10)।

आज कई पासबान और कलीसिया के अगुवे अपनी सेवकाई में परमेश्वर की अधिक से अधिक सामर्थ को प्रगट करना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि बीमार चंगाई पायें, अशुद्ध आत्माओं को निकाला जाये, मुर्दे जी उठें और भी कहीं अधिक ताकि प्रभु यीशु के नाम की महिमा हो।

और पवित्र आत्मा की सामर्थ से यह अद्‌भुत कार्य आज भी हमें मिल सकते हैं। प्रभु यीशु ने अपनी सेवकाई में उन्हें पवित्र आत्मा के द्वारा किया (प्रेरितों के काम 2:22)। और उन्होंने यह वचन दिया है कि हम भी वैसा ही करेंगे (यूहन्ना 14:12), पवित्र आत्मा के द्वारा (1 कुरिन्थियों 12:11)।

हमें यह अपेक्षा रखनी चाहिये और विश्वास भी कि परमेश्वर अपने अद्‌भुत सामर्थ से सुसमाचार प्रचार करने की हमारी सेवकाई को समर्थन देंगे (मरकुस 16:19,20)। और यह तो वे अपनी इच्छा के अनुसार पवित्र आत्मा की सामर्थ से पूरा करेंगे। हलिल्लूयाह!

परमेश्वर का इशारा

अद्‌भुत कार्य परमेश्वर की ओर निर्देश करते हैं यहां पर हमें एक सन्तुलित और सावधानी पूर्वक संदर्भ लाना चाहिये। हमारी सेवकाई का उद्देश्य या केन्द्र अद्‌भुत कार्य कभी नहीं होना चाहिये। ना ही वे हमारे हृदय की इच्छा बनना चाहिये।

यह सच है कि परमेश्वर आज संसार में कई अद्‌भुत कार्य कर रहे हैं! परन्तु इन सब का उद्देश्य क्या है? "अद्‌भुत कार्य" तो एक असाधारण और असमान्य घटना का होना है (मेहरबानी से नीचे दिये गये विशेष लेख में अद्‌भुत कार्यों के विषय में अधिक पढ़ें)। अद्‌भुत कार्य परमेश्वर इसलिये करते हैं ताकि हमें आकर्षित कर सकें। जैसे कि, जंगल में झाड़ियों में आग लगना यह कोई असाधारण घटना नहीं है। परन्तु यह वह झाडी लम्बे समय तक जलती रहे और फिर भी भस्म न हो तो उसके प्रति हम जरूर आकर्षित होंगे (निर्गमन 3:1–3)।

परन्तु अद्‌भुत कार्य तो असाधारण घटना से कहीं अधिक बढ़कर हैं। अद्‌भुत कार्य का मुख्य उद्देश्य है कि वह तो किसी बात को निर्देश कर रहा है वो ही उसे मान्यता देता है।

पवित्र आत्मा जितने भी अद्‌भुत कार्य करता है वे हमेशा लोगों को परमेश्वर पिता या परमेश्वर पुत्र यानि प्रभु यीशु की ओर निर्देश करता है। यह अद्‌भुत कार्य तो अपने आप में आखरी उद्देश्य या केन्द्र नहीं है। बल्कि, यह अद्‌भुत कार्य व्यक्ति को आखरी उद्देश्य तक हो जाना चाहिये।

परमेश्वर ने एक जलती हुए झाड़ी जो कि भस्म नहीं हो रही थी उसके द्वारा मूसा का ध्यान आकर्षित किया। परन्तु एक बार उसका ध्यान आकर्षित हो गया, फिर उन्होंने अपने आप को प्रगट करना शुरु

किया (निर्गमन 3:4–6) और अपने लोगों के लिये अपने उद्देश्य को (निर्गमन 3:7–4:17)

ज्यादा जरूरी क्या था? परमेश्वर ने सतत झाड़ी को जलने दिया वो या फिर उन्होंने अपने आपको और अपने उद्देश्य को प्रगट किया वो?

क्या सुसमाचार का स्पष्ट प्रचार होता है?

अद्‌भुत कार्य, चमत्कार, नबिओं की भविष्यवाणी और दर्शन, या ऐसी ही कोई घटना को वह असाधारण या ईश्वरीय है उसके आधार पर ज्यादा नहीं करना चाहिये। शैतान भी हमें धोखा देने के लिए कुछ हद तक इन अलौकिक शक्तिओं का उपयोग कर सकता है (2 कुरिन्थियों 11:14)। जैसे जैसे हम अन्त समय में दाखिल होते जा रहे हैं शैतान की ऐसी युक्तियां और भी बढ़ेंगी (मत्ती 24:23–25; 2 थिस्सलुनीकियों 2:8–10; प्रकाशितवाक्य 13:13, 14; 16:14,19:20)।

शैतान का राज्य अद्‌भुत कार्यों के विरोध में चमत्कार करेंगे ताकि लोगों को धोखा दे सके, और सुसमाचार का यह सत्य कि केवल प्रभु यीशु एकमात्र उद्धार का मार्ग है उससे उनको दूर कर सके। परन्तु यह नकारात्मक उदाहरण भी यही दिखाते हैं कि अद्‌भुत कार्यों से लोगों का ध्यान आकर्षित होता है।

इसलिये, पवित्र आत्मा के अद्‌भुत कार्यों को जांचने का एक ही सच्चा आधार यह है कि क्या इससे प्रभु यीशु की महिमा होती है? क्या वह लोगों को यीशु मसीह से प्रेम करने का, स्तुति करने का, आधीन होने का और उनके पीछे चलने का प्रतिभाव देने के लिये प्रोत्साहित करते हैं? क्या सुसमाचार का स्पष्ट प्रचार हुआ है ताकि जो खोए हुए हैं उन्हें पश्चाताप का अवसर मिले? क्या प्रभु यीशु का नाम सब नामों से ऊपर उठाया जाता है? जब हम अद्‌भुत कार्य या चमत्कार के विषय में समझ पाना चाहते हैं तो इन सब प्रश्नों का हमें उत्तर देना चाहिये।

चमत्कारों और अद्‌भुत कार्यों पर एक नजर

परमेश्वर की ओर से हुए चमत्कार और अद्‌भुत कार्य अच्छे हैं, और हमें आप उन्हें देखने की अपेक्षा रखनी चाहिये। प्रथम प्रेरितों की मृत्यु के साथ उनका अन्त नहीं हुआ (100ईस्वी) और ना ही तब जब नये नियम के पुस्तकों को प्रमाणिक धर्मग्रन्थ संग्रह बनाया गया (यह शब्द तो दर्शाया है कि कलीसिया के अगुवों ने यह मान्यता दी कि प्रेरितों के पत्र परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे गये थे – 300 ईस्वी)।

प्रभु यीशु ने 2000 वर्ष पहले जो कार्य शुरु किया था पवित्र आत्मा उसे आज भी कर रहा है। यीशु मसीह कल, और आज और युगानुयुग एक सा है (इब्रानियों 13:8) और उन्होंने हमें पवित्र आत्मा की सामर्थ से उनके कार्य करने के लिये बुलाया है (यूहन्ना 14:12)।

हालांकि, अद्‌भुत कार्य और चमत्कार हमें उत्तेजित तो करते हैं, परन्तु उनके कार्य करने की एक सीमा है। हमने देखा कि अद्‌भुत कार्य लोगों को आकर्षित करने के लिये हैं। और वे हमेशा लोगों को प्रभु यीशु की ओर अगुवाई करने वाले होने चाहिये।

यह तो आलोचनात्मक है, क्योंकि अद्‌भुत और चमत्कार किसी व्यक्ति के हृदय में उद्धारक विश्वास को बढ़ाता नहीं। ऐसे अद्‌भुत कार्य या चमत्कारों से बना हुआ विश्वास तो बहुत ही हल्का होता है और वह ज्यादा समय टिकता नहीं (उदाहरण के तौर पर पढ़ें यूहन्ना 6, विशेष करके 14,15, 26–35, 60–64 पद)।

अन्त में उद्धार में दाखिल होने के लिये, किसी भी व्यक्ति को प्रभु यीशु मसीह की सच्चाई जो वह हैं और जो उन्होंने उनके लिये क्रूस पर किया उसको प्रतिभाव देना होगा। उन्हें प्रभु यीशु पर विश्वास करना होगा, अपने पापों का पश्चाताप करना होगा और अपने प्रभु और उद्धारकर्ता स्वीकार करना होगा।

प्रथम स्थान प्रभु यीशु का है

प्रभु यीशु ने अपनी सेवकाई की शुरुआत ही में जान लिया कि

मनुष्य का हृदय सबसे अधिक धोखा देने वाला और हल्का होता है (यिर्मयाह 17:9)। प्रभु यीशु ने अपने आपको अपने पीछे चलने वालों को नहीं सौंपा (यूहन्ना 2:23–25)। वे जान गये थे कि उनका प्रभु यीशु के साथ केवल एक बाहरी सम्बन्ध था, जो कि उनके चिन्हों को देखकर विश्वास करते थे (पद 23)।

पवित्र आत्मा की सामर्थ से किये गये अद्‌भुत कार्य, चिह्न और चमत्कार प्रमाणित और मान्य हैं। परमेश्वर लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिये उनका उपयोग करते हैं। परन्तु अन्त तक टिकने वाला विश्वास तो किसी व्यक्ति पर, जो कि अनन्तकालिक और मजबूत है–यानि प्रभु यीशु, उन पर बांधना है।

प्रभु यीशु और उन्होंने लोगों के पापों के लिये जो बलिदान दिया उस पर बांधा हुआ विश्वास मजबूत, टिकाऊ और उद्धार देने वाला है।

और यही जीवन बदलने वाला विश्वास विपत्ति और परीक्षा में भी मज़बूत बना रहेगा और बढ़ता जायेगा। यही विश्वास है जो आजीवनटिका रहता है – और अनन्तकाल तक भी।

पवित्र आत्मा इन अद्‌भुत कार्यों, चमत्कार और चिह्नों को उपयोग करता है ताकि लोगों का ध्यान आकर्षित हों। परन्तु वह उसके बाद उन्हें ऐसे अवसर की तरफ अगुवाई करता है कि वे अपने उद्धार के लिये प्रभु यीशु पर विश्वास कर सकें। आइये, हम इस विषय पर दो उदाहरण देखें।

पहले उदाहरण में (यूहन्ना 9:1–41)। प्रभु यीशु एक जन्म से अन्धे व्यक्ति को चंगा करते हैं। वह व्यक्ति चंगाई तो पाता है, पर फिर प्रभु यीशु उसे यह अवसर देते हैं कि वह उन पर विश्वास कर सकें (9:35–38)।

दूसरे उदाहरण में (प्रेरितों के काम 13:4–12)। पौलुस एक दुष्ट जादूगर का सामना करता है। पवित्र आत्मा के अभिषेक में होकर,

पौलुस उसके लिये भविष्यवाणी करता है (पद 9–11)। एक राज्यपाल जो सामर्थ के प्रमाण को देखता है वह कायल हो जाता है कि पौलुस ने जो भी प्रभु यीशु के बारे में सिखाया है वह सच है (पद 12)।

आप देखेंगे कि क्षमा की घटनाओं में, प्रभु यीशु पर विश्वास का आधार केवल चमत्कारों पर नहीं था। पर उस प्रश्न पर था कि उन्होंने प्रभु यीशु पर विश्वास किया था या नहीं (यूहन्ना 8:35–38; प्रेरितों के काम 13:12)। इन चमत्कारों से प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार के सामर्थ और सत्य को मान्यता मिली।

कलीसिया के अगुवों, चमत्कार और अद्‌भुत कार्यों की आपकी सेवकाई में जगह होनी चाहिये। परन्तु सब बातों में सबसे पहला स्थान प्रभु यीशु का है; बाकी सब बातों का कार्य तो उनकी तरफ निर्देश करना है।

प्रभु यीशु उनका उद्धारकर्ता है। प्रभु यीशु उनका प्रभु है। सारा आदर और महिमा उनके हों। क्या उससे लोग उनकी तरफ जाते हैं?

अन्य कोई देवता नहीं

इससे हमें पवित्र आत्मा के अभिषेक में पहने, सेवा करने, आगे बढ़ने का एक और मुख्य सिद्धान्त मिलता है।

क्या हम परमेश्वर को इसलिये ढूंढ़ते है कि वे हमारे लिये क्या क्या करेंगे? या फिर हम परमेश्वर को इसलिये ढूंढ़ते हैं कि जो वे हैं, और उनके साथ सम्बन्ध की इच्छा के कारण ढूंढ़ते हैं यही इच्छा कि हम उनको जानें और दूसरों को बतायें?

हमने देखा कि परमेश्वर की सामर्थ, परमेश्वर के व्यक्तित्व से अलग नहीं है। परमेश्वर का अभिषेक तो, परमेश्वर का आत्मा समर्पित मानव बर्तन में और उसके द्वारा कार्य करता है।

यदि परमेश्वर से किसी का ध्यान हट जाता है, या लोगों की आत्मिक भूख को गलत निर्देश देकर उन्हें परमेश्वर से दूर कर देता

है। तो? प्रभु यीशु के समय के यहूदी धार्मिक अगुवों में हम इसके अनर्थकारी परिणाम देख सकते हैं।

प्रभु यीशु इन धार्मिक अगुवों का सामना करते हैं जो उन्हें मार डालना चाहते थे (यूहन्ना 5:16–18)। वे तो गहन और गंभीर शिक्षा पाये हुए लोग थे, परन्तु अपने ज्ञान के बावजूद वे अपना मार्ग भूल गये थे।

प्रभु यीशु ने उनकी शिक्षा के विषय ही अन्धेपन के लिये ताड़ना करीः *"तुम पवित्र शास्त्र में ढूंढ़ते हो, क्योंकि समझते हो कि उसमें अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है, और यह वही है, जो मेरी गवाही देता है। फिर भी तुम जीवन पाने के लिये मेरे पास आना नहीं चाहते"* (यूहन्ना 5:36–40)।

बाद में, प्रभु यीशु ने धार्मिक अगुवों की ताड़ना करी क्योंकि कई चिन्ह देखें होने के बावजूद भी चिन्ह ढूंढ़ रहे थे (मत्ती 12:38,36)। और प्रभु यीशु ने तीसरी बार फरीसियों, शास्त्रियों और सदूकियों को फिर चिन्ह मांग रहे थे, उनके अन्धेपन के लिये उनकी ताड़ना करी (मत्ती 16:1–4)।

फिर प्रभु यीशु की सेवकाई में, जब फरीसियों की सत्य के प्रति अपनी इच्छानुसार अंधेपन में कोई बदलाव नहीं आया तब प्रभु यीशु ने उन पर दोष लगाया (मत्ती 23:37–39)।

प्रभु यीशु यहां क्या बताना चाहते थे? प्रभु यीशु का उनके समय के धार्मिक अगुवों से जो सामना हुआ उससे हमें बहुत सी बातें सीखने को मिलती हैं। पर विशेष तौर पर प्रभु यीशु यह बताना चाहते थे कि यहूदी लोग इसी खोज में रहते थे कि उनकी इच्छा के अनुसार परमेश्वर उनके लिये करें – ना कि परमेश्वर को खोजते थे।

और प्रभु यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में इंकार करने के बहुत से कारणों में मत्ती भी एक था। प्रभु यीशु ने उन्हें वो सब नहीं दिया जो वे चाहते थे, यानि वे पृथ्वी पर उसी समय अपना राज्य स्थापित करते और फरीसी, सदूकी और स्त्रियों को उसमें अगुवे होने का लाभ मिलता। वे तो सत्ता, प्रभाव और धन चाहते थे। वे अपने पद, आदरयुक्त नाम और समाज में अपने स्थान में सुखी थे (मत्ती 6:2,5,6, 16–18;

परमेश्वर धार्मिकता से हमारे प्रेम और भक्ति के लिये जलन रखते हैं। क्योंकि इस समस्त सृष्टि में केवल वही हमारे प्रेम और स्तुति के योग्य हैं। क्योंकि, परमेश्वर हमारा उत्पन्नकर्ता है और मानवजाति का जीवन और अस्तित्व उन्हीं की वजह से है क्योंकि, उन्होंने अपने बेटे को दे दिया – ताकि हम, जिन्हें वे सम्पूर्ण प्रेम करते हैं उन्हें पाप और मृत्यु से छुटकारा मिले। (कुलुस्सियों 2:11–15; 1 यूहन्ना 4:9–10)।

23:2–7; यूहन्ना 12:42,43, आदि)। उन्होंने केवल अपने ही बारे में सोचते हुए वास्तव में जो महत्व की बात है उसे खो दिया था। प्रभु यीशु ने इसी स्वयं सेवा और धार्मिक घमंड़ की ताड़ना करी।

धार्मिक अगुवे परमेश्वर के विषय में मुख्य सत्य को भूल गये थे, जिनके लिये वे कहते थे कि वे उनकी सेवा करते थे। *"तू मुझे छोड़ दूसरों की ईश्वर करके न मानना . . .क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूं"* (निर्गमन 20:3,5)।

परमेश्वर धार्मिकता से हमारे प्रेम और भक्ति के लिये जलन रखते हैं। सबसे पहले इसलिये क्योंकि इस समस्त सृष्टि में केवल वही हमारे प्रेम और स्तुति के योग्य हैं। दूसरा, इसलिये क्योंकि, परमेश्वर हमारा उत्पन्नकर्ता है और मानवजाति का जीवन और अस्तित्व उन्हीं की वजह से है (उत्पत्ति 1:26–28; 2:18–25; यूहन्ना 1:3)। तीसरा, इसलिये क्योंकि, उन्होंने अपने बेटे को दे दिया – ताकि हम जिन्हें वे सम्पूर्ण प्रेम करते हैं उन्हें पाप और मृत्यु से छुटकारा मिले (कुलुस्सियों 2:11–15; 1 यूहन्ना 4:9–10)।

नये नियम में इस सत्य को एक बार फिर समर्थन दिया गया है। *"जो आत्मा हमारे अन्दर निवास करता है वह ऐसी जलन रखता*

है" (याकूब 4:5)। यह तो आरम्भ के मसीहियों की ताड़ना करते हुए कहा गया या जो कि अपनी स्वार्थी इच्छाओं को पूरा करने के लिये परमेश्वर का उपयोग करना चाहते थे (याकूब 4:1–4)। उनको तो *"व्यभिचारी और व्यभिचारिणी"* कहा गया है (पद 4)। क्योंकि वे लोग इस संसार की शारीरिक और नाशमान खुशियों के लिये अपने उद्धारकर्ता के साथ समर्पित और पवित्र सम्बन्ध को धोखा दे रहे थे।

परन्तु फिर भी, परमेश्वर ने उनका त्याग नहीं किया, बल्कि उन्होंने जलन से उनकी लालसा रखी, क्योंकि केवल वही उनसे सच्चा प्रेम करते थे। सच्चा पश्चाताप करने वाले व्यभिचारी को भी परमेश्वर क्षमा करके अपने पास ले लेंगे (याकूब 4:6–10)।

फिर यह बात तो साफ है, कि हमें दूसरी वस्तुओं से मोहित होकर परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम और सेवकाई को नुकसान नहीं करना है।

डूबने से बचें

मसीह की देह के पासबान और अगुवे होने के नाते, केवल एक ही है जिसके प्रति हमारी प्रामाणिकता, निष्ठा, चाहना और आशा होनी चाहिये और वे है – प्रभु यीशु

- चिन्ह, चमत्कार या अद्भुत कार्य नहीं
- कोई बड़ी सेवकाई नहीं, या फिर ऐसा कोई जिसके पास हों
- वरदान, बुलाहट, कार्यशीलता, पद, या नाम नहीं
- उनकी आशीषें भी नहीं।

ऐसा कहा गया है कि विश्वासियों के जीवन में सबसे बड़ी रूकावटें तो ज्यादातर परमेश्वर ने दी हुई आशीषें ही बनती है। ऐसा क्यों होता है? क्योंकि हमारा ध्यान और इच्छाएं बहुत आसानी से परमेश्वर से दूर होकर, उनकी आशीषों पर ही केन्द्रित हो सकती है। हमारे मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला होता है (यिर्मयाह 17:9)। भले ही हमारा उद्धार हुआ हो, परन्तु फिर भी हमारी प्रवृत्ति पाप करने की है (1 यूहन्ना 1:8)।

पास्टर से पास्टर तक : मित्रो और कलीसिया के अगुवों, आप अपने ऊपर और अपनी सेवकाई पर पवित्र आत्मा की अभिषिक्त उपस्थिति उंडेल दी जाए ऐसा चाहते हैं, और इस बात को समझें कि इसमें कुछ भी गलत नहीं। वह तो परमेश्वर की महान इच्छा है कि आप उसे पायें।

परन्तु यदि हम बुद्धिमान और सचेत नहीं, तो हमारे हृदय धोखा खा सकते हैं। सेवकाई में सफल होने की हमारी इच्छा के कारण हो सकता है कि हम इसी बात पर ध्यान दें कि परमेश्वर हमारे लिये क्या कर सकते हैं, बजाय इसके कि वे जो हैं इसलिये हमारे उनके प्रति प्रेम पर धीरे–धीरे हम धार्मिकता के लिये परमेश्वर की खोज करने से दूर होकर वे हमारे लिये क्या कर सकते हैं उसी की हमें भूख हो। फरीसियों के साथ कुछ ऐसा ही हुआ। उन्होंने परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध के आधीन होने के बजाय परमेश्वर के विषय में ज्ञान को आधीन होना पसंद किया। वे तो शास्त्रों और धार्मिक बातों के विषय में बहुत कुछ जानते थे परन्तु उनको नहीं जानते थे। उन्होंने परमेश्वर की खोज नहीं करी परन्तु वे उन्हें क्या दे सकते हैं, उसकी।

आज भी कुछ अगुवे ऐसे हैं, जो परमेश्वर के पास आने के बजाय, देवी शक्तियों के अद्‌भुत चमत्कार जो पवित्र आत्मा के आने से होते हैं उनके प्रति आकर्षित होते हैं। यह तो ऐसा है, जैसे कोई जन किसी धनवान आदमी या औरत के साथ उसके धन के लिये शादी करना चाहता हो। उनको तो उस व्यक्ति से ज्यादा उसके धन में और उस धन से उसका स्वयं का क्या भला हो सकता है उसमें दिलचस्पी है। और यह तो कितना भयानक और स्वार्थी विचार है।

जब हम ऐसे देवी अनुभवों की लालच करते हैं, तो परमेश्वर के प्रति हमारा प्रेम शुद्ध न रहके कम हो जाता है–यहां तक कि ठंड़ा पड़ जाता है (मत्ती 24:12)। यह तो शमौन टोने करने वाले के जैसा स्वभाव है, जिसने पवित्र आत्मा के अद्‌भुत कार्य करने

के सामर्थ को अपने लाभ के लिये उपयोग किया (प्रेरितों के काम 8:6–24)।

हमारा परमेश्वर हमसे जलन रखते हैं। उन्हें हमारी प्रमाणिकता, हमारे प्रेम, और हमारी भक्ति की इच्छा है क्योंकि वे हमसे अनन्त कालिक प्रेम से प्रेम करते हैं (रोमियों 5:5; 1 यूहन्ना 3:1)। वे तो ऐसे लोगों की अपेक्षा रखते हैं जिन्होंने अपना पूरा दिल उनको सौंप दिया हो। और ऐसे श्रृद्धालु बच्चों के द्वारा वे अपने सामर्थी कार्य प्रगट कर सकता है (11:32)।

हमारी पहली बुलाहट

पवित्र शास्त्र में हमें कई जगह परमेश्वर का "मुख" ढूंढ़ने के लिये प्रोत्साहित किया गया है (2 इतिहास 7:14; होशे 5:15; भजन संहिता 27:8 आदि)। शास्त्र में परमेश्वर का मुख तो उनके व्यक्तित्व को उनके हृदय को दर्शाता है।

लेकिन शास्त्र में कहीं भी हमें परमेश्वर का "हाथ" ढूंढ़ने को नहीं कहा गया। परमेश्वर के हाथ का अर्थ है उनके कार्य, उनकी आशीषें। हम परमेश्वर के कार्य का परिणाम जो वे करते हैं उसमें देख सकते हैं। और आपकी सेवकाई में और उसके द्वारा उन परिणामों को देखने की आशा रखना कोई गलत बात नहीं।

परन्तु मेहरबानी से इस बात को समझे; जब हम परमेश्वर के मुख को (उनके हृदय, स्वयं उनको) ढूंढ़ते हैं, तब हम उनकी इच्छा को कि वे क्या करना चाहते हैं वह जान पाते हैं। जब हम उनकी इच्छा के आधीन होते हैं और उसके पीछे चलते हैं। तब हम उनके आत्मा में, उनके सामर्थी हाथ को कार्य करता देख पाते हैं। परमेश्वर को और उनके साथ अपने सम्बन्धों को ढूंढ़ना हमारी सबसे पहली प्राथमिकता होनी चाहिये। और वहीं से हमारी सेवकाई से जो कुछ भी जरूरी है वह उतर आयेगा।

सच्चे बेटे, सच्चे सेवक

प्रभु यीशु ने कहा, *"यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले;*

और जहां मैं हूं, वहीं मेरा सेवक भी होगा, यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा" (यूहन्ना 12:26)।

इस आयत में प्रभु यीशु प्रथम स्थान पर है। प्रभु यीशु तो कलीसिया के शिरोमणि है (इफिसियों 1:22); हमें उनके पीछे चलना है। वे हमारी सेवकाई में पीछे पीछे चलकर हम जो आशीषें मांगें उसे दे देंगे ऐसा नहीं है।

कलीसिया के अगुवे होने के नाते हमारी पहली बुलाहट हररोज़ तो परमेश्वर को ढूंढ़ने के सम्बन्ध में यानि उनको जानने में, उनसे प्रेम करने में, उनकी स्तुति करने में, उनके साथ सहभागिता में हैं (भजन संहिता 63:1–8)। और यहीं से हम सही मायने में उनकी इच्छाओं को अपने जीवन सेवकाई और बाकी सब बातों के लिये उनकी योजनाओं को जान पायेंगे।

परमेश्वर यही चाहता हैं कि वे अपनी आशीषें, अपना अभिषेक, अपने अद्‌भुत कार्य अपनी कलीसिया पर, आप जिन्हें उन्होंने अगुवे होने के लिये बुलाया है के उपर उंडेल दें। परन्तु क्या वे इसके लिये आप पर भरोसा रख सकते हैं? क्या आपमें उनके प्रति प्रमाणिक रहने की समझ, मजबूत व्यक्तित्व, और ज्ञान है?

यदि आपके हृदय केवल परमेश्वर की तरफ हैं तो वे भी ज्यादा से ज्यादा अपना हाथ प्रगट करने का वचन देते हैं, *"देख, यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिये फिरती रहती है कि जिनका मन उसकी ओर निष्कपट रहता है, उनकी सहायता में वह अपना सामर्थ दिखाए"* (2 इतिहास 16:9)। वे हमारे धार्मिक ईर्ष्या से भरे हृदय चाहते हैं क्योंकि वे हमसे अनन्तकालिक प्रेम से प्रेम करते हैं (रोमियों 8:31–39)।

पास्टर से पास्टर तक : परमेश्वर आपको अत्यन्त और बिना शर्त प्रेम करते हैं। आपकी कमियों के बावजूद भी वे आपसे गहन, व्यक्तिगत और अनन्तकालिक प्रेम करते हैं।

यदि परमेश्वर को अधिक सेवकों की जरूरत होती तो वे और अधिक स्वर्गदूतों को बना देते। परन्तु उन्होंने आपको बनाया क्योंकि उन्हें बेटे और बेटियों की जरूरत है जो उनके साथ सम्बन्ध में

रहें। स्वर्गदूत अपने उत्पन्नकर्ता के साथ इस तरह का सम्बन्ध नहीं रख सकते – यह तो केवल मनुष्य ही अनुभव कर सकते हैं (इब्रानियों 2:14–18; 1 पतरस 1:12)।

प्रभु यीशु ने इसलिये अपना प्राण नहीं दिया कि आप सेवकाई में आओ। उन्होंने आपके पापों के लिये बलिदान दिया, ताकि वे आपको परमेश्वर के साथ सम्बन्ध में पुनः स्थापित कर सके।

हमें केवल परमेश्वर के सेवक ही नहीं। परन्तु हम तो मसीह के मित्र (यूहन्ना 15:15) और संगी वारिस (रोमियों 8:17) हैं। हम जीवित परमेश्वर के बेटे बेटियां हैं (रोमियों 8:15,16)।। हमें यह लाभ और अवसर मिला है कि हम अपने प्रेम और कृतज्ञता के कारण परमेश्वर और उनकी देह की सेवा करें!

हर रोज उनकी उपस्थिति में

पवित्र आत्मा के अभिषेक का सीधा सम्बन्ध हमारी परमेश्वर को ढूंढ़ने की प्राथमिकता से है। दाऊद राजा जिसके लिये परमेश्वर ने कहा, *"मेरे परमेश्वर मन के अनुसार है"* (प्रेरितों के काम 13:22), हमें परमेश्वर के साथ सम्बन्ध के विषय में मार्गदर्शन देते हैं। *"तूने कहा है, कि मेरे दर्शन के खोजी हो। इसलिये मेरा मन भी तुझ से कहता है, कि हे यहोवा, तेरे दर्शन का मैं खोजी रहूंगा"* (भजन संहिता 27:8)।

ढूंढना मतलब, जब तक मिल न जाये तब तक मन लगाकर, परिश्रम से, दृढ़ता से ढूंढना है। प्रभु यीशु ने भी इस सिद्धान्त के विषय में बताया (मत्ती 6:33; 13:44–46; लूका 11:9–13)।

परमेश्वर को ढूंढ़ने में समय और शक्ति दोनों लगता है। हो सकता है हमें अपना कुछ आराम, लाभ और कार्यों को छोड़ना पड़े। परन्तु उनको ढूंढ़ने से ही हम उनको जान पाते हैं। उनके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध से ही हम अपने जीवन और सेवकाई के लिये उनकी इच्छा को जान पाते हैं। जब हम उनकी इच्छा के अधीन होते हैं, तब वह हमें और हमारे द्वारा अपना अभिषेक देते हैं।

आइये, हम परमेश्वर की उपस्थिति में समय बिताने को अपनी हर रोज की प्राथमिकता बना लें। वहीं पर हमें आत्मिक सत्य मिलेगा

जो न तो घटता है और ना ही फीका पड़ता है (लूका 10:38–42)। आज ही, और हर रोज यही निश्चय करो: *"मैं तो परमेश्वर तेरे दर्शन का खोजी होऊंगा"।*

पुर्नवालोकन

इस पाठ "अभिषेक में वृद्धि पाना" को अन्त करते हुए इस बात को याद रखें कि हम में से हर एक को पवित्र आत्मा के अभिषेक के सामर्थ में वृद्धि पा सकते हैं और पाना भी चाहिये। इसमें आप (एक पासबान और अगुवे होने के नाते) और जिन लोगों की आप अगुवाई करते हैं वे भी शामिल हैं!

आपको परमेश्वर के लोगों की रखवाली करने की जिम्मेदारी दी गई है (1 पतरस 5:2–4)। यह सुनिश्चित करना आपका कार्य है कि जिन लोगों की आप अगुवाई करते हैं वे परमेश्वर के वचन में अपनी समझ और पवित्र आत्मा के सामर्थ में कार्य करने की शक्ति दोनों में वृद्धि पायें। मसीह की देह की वृद्धि की शास्त्रों के अनुसार यही रीत है (इफिसियों 4:11–16, विशेष करके 12वां पद)।

अभिषेक में वृद्धि पाने का मार्ग तो शायद आप की अपेक्षा से अलग है। आइये अभिषेक में वृद्धि पाने के विषय में मुख्य सिद्धान्तों का हम पुनर्वालोकन करें:

- शुद्धता
- अच्छी कमजोरियां
- नम्रता
- सत्ता के आधीन रहना
- कसौटी की योग्य प्रतिभाव देना
- केवल परमेश्वर के लिये हृदय
- परमेश्वर के साथ हर रोज के सम्बन्ध में चलना और आगे बढ़ना।

प्रभु यीशु तो हमारे लिये इन तमाम लक्षणों का नमूना है। वे तो इस पृथ्वी पर अभिषिक्त एकमात्र व्यक्ति थे। उन्होंने हमें न्यौता दिया

कि हम भी परमेश्वर के अभिषेक के मार्ग पर उनके कदमों पर चलें। और जब हम ऐसा करते हैं, तब परमेश्वर की उच्च बुलाहट को पूरा करने के लिये जो भी जरूरी है वह हमें बहुतायत से मिलेगा।

ग. उनके अभिषेक को पाना

मैं क्यूबा में पासबानों के सम्मेलन में सेवकाई का विषय था। सम्मेलन के अन्त में उपस्थित सभी को अपनी गवाही देने का अवसर मिला। एक अन्धा बुजुर्ग किसी की मदद से मंच पर पहुंचे। उन्होंने कहा कि उन्होंने अपने पूरे जीवन में परमेश्वर की सेवकाई करी है, उनका परिवार भी परमेश्वर की सेवकाई में संलग्न हुआ है। उन्होंने यह भी बताया कि अपने जीवनकाल में उन्होंने कितने गिरजे बनाये, उसी साल में उन्होंने छः गिरजे बनाये।

उन्होंने बताया कि उन्होंने कैसे अपनी दृष्टि गवाई और यह कितना चुनौती का कार्य था, यही भी कि उन्हें हर रोज बाइबल पढ़ने के लिये भी किसी की जरूरत पड़ती थी।

फिर वे एक पल के लिये रूक गये, और अपना सिर झुकाया। सभा भवन जो कि 1000 से भी ज्यादा पासबानों से भरा था, बिल्कुल शान्त हो गया। फिर अचानक उस आदमी ने अपने हाथ विजय दिखाते हुए ऊपर उठाये और जोर से चिल्लाया, "मैंने अपनी आंखें खोई हैं पर अपनी आग नहीं"। और पूरी सभा खुशी से और परमेश्वर की स्तुति से फूट पड़ी।

ऐसी क्या बात है जो एक 76 वर्ष के आदमी को आग को जिन्दा रख सकती है–जो कि प्रचार, शिक्षा और गिरजे बनाने के कार्य में लगा रहे? और वह तो केवल पवित्र आत्मा का अभिषेक और परमेश्वर के उद्देश्य और महिमा में उपयोग होने के लिये उस आदमी का समर्पण ही है।

मिट्टी के बर्तन में खज़ाना

मेरी यही आशा है कि परमेश्वर जब तक मुझे स्वर्गीय घर में नहीं बुलाते तब तक मेरे जीवन के हर दिन में मुझे इस्तेमाल करते रहेंगे। परन्तु सेवकाई में इस बात को समझने में ज्यादा समय नहीं लगता कि

वह तो हर एक स्तर पर यानि शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आत्मिक तौर पर थकाने वाली और दुर्बल कर देने वाली लगती है।

परन्तु यह सब कुछ इतना बुरा भी नहीं, क्योंकि हमें परमेश्वर के वरदान, सामर्थ और अभिषेक के विषय में स्वार्थी नहीं होना है। परमेश्वर ने जो हमें दिया है वह तो हमें सतत दूसरों को देते रहना है। हमें सेवकाई में सुस्त या अनुशासनहीन नहीं होना है (लूका 6:62; सभोपदेशक 9:10; कुलुस्सियों 3:23); बल्कि हमें हर एक कार्य मसीह के लिये करना है।

हालांकि, यदि हम अधिक थक जाएं, या हम "बुझ जायें" तो इससे गंभीर परेशानी आ सकती है। परमेश्वर जानते हैं कि हम सीमित हैं और हमारी शक्तियां भी सीमित है। इसलिये वे हमें शक्ति, ज्ञान, अनुग्रह, कार्यशीलता और सामर्थ करते हैं ताकि हम उनकी इच्छा पूरी कर सकें–और हमें इन बातों की भीषण आवश्यकता है। क्योंकि उनके बिना हम कुछ भी नहीं कर सकते (यूहन्ना 15:5)।

पौलुस ने इस जरूरत को समझा, इसलिये लिखाः *"परन्तु हमारे पास वह धन मिट्टी के बरतनों में रखा है, कि यह असीम सामर्थ हमारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर ही की ओर से ठहरे (2 कुरिन्थियों 4:7)।* एक मसीह का अनुभवी और निपुण प्रेरित होने के नाते पौलुस जानता था कि परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की सामर्थ और इच्छा मनुष्य के स्वाभाविक कार्यशीलता या क्षमता में नहीं। इसके विपरीत, "मिट्टी के बरतनों" में यह "खजाना" जो हमारी सारी जरूरतों को पूरा करता है – वह तो पवित्र आत्मा का अभिषेक है (2 कुरिन्थियों 3:1–4, 18 पढ़ें)।

वे हमारी जरूरतों को पूरा करते हैं

सेवकाई की आवश्यकताएं (या फिर आज के जमाने में सिर्फ मसीही होना भी) हमें परमेश्वर की सामर्थ से खाली कर देती है। प्रभु यीशु को भी आत्मिक ताज़गी और परमेश्वर के आत्मा से सेवकाई पाने की जरूरत थी।

सुसमाचारों का अध्ययन हम करें तो कई बार प्रभु यीशु एकान्त में प्रार्थना करने गये (उदाहरण के तौर पर लूका 4:42; 5:16; 6:12)।

प्रार्थना में समय बिताने के बाद प्रभु यीशु अपनी सेवकाई में और भी अधिक सामर्थ से कार्य कर पाये, या जरूरी निर्णय ले पाये, या परीक्षा का सामना करने या सहन करने के लिये तैयार हो पाये आदि।

प्रभु यीशु के उदाहरण से हम पर क्या प्रगट किया गया है? इस प्रश्न का जवाब देने के लिये, आइये हम शास्त्र के कुछ परिच्छेदों को देखें।

1. भरपूर हो

"और दाखरस से मतवाले न बनो, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ" (इफिसियों 5:18)।

"आत्मा से परिपर्ण होते जाओ" इस वाक्य की रचना को यदि हम इब्रानी भाषा में पढ़ें तो तीन महत्व के सिद्धान्त हम देख सकते हैं।

क. यह तो वर्तमान काल में लिखा गया है। इसका अर्थ है यह तो अभी इसी समय हो रहा है। दूसरे शब्दों में कहें तो, "आत्मा में परिपूर्ण होते जाओ" का अर्थ है हमें सतत आत्मा में परिपूर्ण होते जाना है। यह तो अद्‌भुत समाचार है। सतत परिपूर्ण होने का अर्थ है, **हम केवल एक ही बार नहीं परन्तु बार बार परिपूर्ण हो सकते हैं।**

जब हम उद्धार पाते हैं तब हमें पवित्र आत्मा मिलता है (रोमियों 8:15,16; इफिसियों 1:13–15)। यह तो आम अभिषेक हैं जो सभी विश्वासियों को मिलता है (1 यूहन्ना 2:20,27)। पर जब हमें सर्वश्रेष्ठ सेवकाई के लिये बुलाया जाता है, तो परमेश्वर हमें कुछ बढ़कर अभिषेक देते हैं ताकि हम इस सेवकाई में फलदायक बन सकें।

परमेश्वर हमें अपना व्यक्तित्व, सामर्थ्य और वरदान देते हैं। पर जब हम इन्हें अपनी सेवकाई में खर्च करते हैं तो हो सकता है हम आत्मिकता में खाली होने चले जायें। इसीलिये परमेश्वर ने यह संभव होने दिया है कि हम पवित्र आत्मा से बार बार जब भी हमें जरूरत हो, परिपूर्ण होते चले जायें।

आरंभ को कलीसिया की सेवकाई में हमें यह बात साफ दिखाई देती है। प्रेरितों के काम के पुस्तक में हमें ऐसी कुछ घटनाएं देखने को मिलती हैं:

• पतरस पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर सुसमाचार प्रचार करने लगा और अपने विश्वास की सफाई देने लगा (प्रेरितों के काम 4:8)।

• चेले पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गये और सताव के बावजूद परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे (प्रेरितों के काम 4:31)।

• पौलुस शुरुआत में पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हुआ (प्रेरितों के काम 9:17), फिर उसको शैतान को शक्तियों का सामना करने के लिये फिर से पवित्र आत्मा से भरपूर किया गया (प्रेरितों के काम 13:9)।

• धार्मिक अगुवों का सामने करने के बाद चेलों को फिर से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण किया गया (प्रेरितों के काम 13:42–52)।

• स्तीफनुस को बार बार भरपूर किया गया (प्रेरितों के काम 13:52)।

• बरनाबास को बार बार भरपूर किया गया (प्रेरितों के काम 13:52)।

इस बार बार पवित्र आत्मा से भरपूर होते रहने से चेलों के प्रचार और शिक्षा में महान सामर्थ दिखाई दी। उनको हियाव के साथ सुसमाचार के प्रचार के साथ साथ उन्होंने बहुत से अद्‌भुत काम भी किये (प्रेरितों के काम 5:12)।

कुछ लोगों का मानना है कि ऐसे अद्‌भुत कार्य केवल आरंभ के प्रेरितों से ही हुए। परन्तु प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम पढ़ते हैं कि जिस किसी को भी पवित्र आत्मा ने चुना उनसे अद्‌भुत कार्य हुए।

जैसे, स्तिफनुस, जिसे लोगों को (प्रेरितों के काम 6:8) और "भाइयों" को (प्रेरितों के काम 14:1–7) खिलाने पिलाने की सेवा के लिये नियुक्त किया गया था। पौलुस लिखता है, कि पवित्र आत्मा तो अद्‌भुत रीति से किसी को भी बदल सकता है, वह किसी को भी चुनकर उसको सामर्थ दे सकता है, उसका मार्गदर्शन कर सकता है (1 कुरिन्थियों 12:1–11)।

देने से बढ़ते जाओ

पवित्र आत्मा से सतत भरपूर होते रहने का एक लाभ और है। जैसे हम *"सेंतमेंत पाते हैं, सेंतमेंत दें"* (मत्ती 10:8)। उनका अधिक

अभिषेक पाने की हमारी क्षमता और भी बढ़ जाती है। परमेश्वर के राज्य का यह सिद्धान्त हर बात में यानि धन में, समय, सेवा और दूसरे कई पहलुओं में लागू होता है–जितना अधिक हम देते हैं, उतना ही अधिक हम पाते हैं।

जितनी बार हम पवित्र आत्मा का जीवन और सामर्थ दूसरों को देते हैं, उतना ही हम अपनी सेवकाई में आगे बढ़ते हैं। इसका अर्थ यह है कि हम और भी अधिक पाते हैं ताकि और भी अधिक दे सकें।

और देने, होने की यह अशिक्षित प्रक्रिया इससे जुड़े सभी को लाभदायी है। और परमेश्वर की महिमा होती है क्योंकि उनकी इच्छा पूरी होती है। मसीह की देह के अंग आशीष पाते हैं और मजबूत चेले बनते हैं (इफिसियों 6:12–16)। आप, सेवक होने के नाते आशीष पाते हो। परमेश्वर के सामर्थी और विश्वासयोग्य सेवक, उनकी बुलाहट को पूरा करते हुए और पवित्र आत्मा से देने और पाने की अपनी शक्ति में वृद्धि पाते हो।

यह सब तो पवित्र आत्मा से सतत परिपूर्ण होने पर निर्भर करता है। और यह तो उद्धार के समय पाये पवित्र आत्मा के सामर्थी वरदान या उसके बाद पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने से अलग हैं। (प्रेरितों के काम 8:14–17; 19–1–7)। हमारा जीवन ऐसा होना चाहिये कि हम सतत बारम्बार पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते जायें।

ख. "आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ" यह वाक्य आदेश भाव में लिखा गया है (इफिसियों 5:18)। इसका अर्थ यह है कि यह वाक्य तो एक आज्ञा है, कोई सुझाव नहीं। परमेश्वर हमसे अधिक जानते हैं कि हमें कितनी सामर्थ और कार्यशीलता की जरूरत है। वास्तव में, हमें अपने हर रोज के जीवन में जीत पाने के लिये पवित्र आत्मा की जरूरत है। परन्तु इससे भी अधिक, हमें अपनी सेवकाई में फलवन्त और असरकारक होने के लिये पवित्र आत्मा की उमड़ने वाली उपस्थिति की जरूरत है।

जब परमेश्वर कोई आज्ञा देते हैं तो वह

• धार्मिक और विवेकी होते है

- उनकी महिमा के लिये
- हमारी भलाई के लिये
- उनके स्रोत से मिलने वाली

परमेश्वर ने अपनी सर्वश्रेष्ठ इच्छा से असीमित मात्रा में पवित्र आत्मा हमारे लिये भेजा है। और उन्होंने हमें यह आज्ञा दी है कि हम सतत पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते जायें। हालिलूयाह!

यह तो ऐसी आज्ञा है जिसे मानने के लिये हमें हर रोज और जरूरतों के समय प्रयास करना चाहिये।

ग. यह वाक्य कर्मवाच्य है

इसका अर्थ यह है कि पवित्र आत्मा की परिपूर्णता हम अपने आपसे नहीं पा सकते। हम उसे खरीद नहीं सकते और ना ही उसको पाने के लायक बनने के लिये काम कर सकते हैं। वह तो हमारे लिये परमेश्वर की भेंट है। हम तो केवल परमेश्वर जो हमें देना चाहते हैं उसे अपने हृदय खोलकर स्वीकार कर सकते हैं।

हालांकि हमें ऐसी जगह पर होना चाहिये कि हम उसे पा सकें। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन जीने के लिये और आत्मा से भरपूर सेवकाई के लिये कुछ मुख्य बातें यह हैं।

क्या आपने कभी ऐसा सोचा है कि क्यों कुछ लोग हमेशा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते हैं, वरदानों से, ज्ञान से, सामर्थ आदि से भरपूर दिखते हैं– जबकि दूसरे लोग ऐसे नहीं दिखते?

परमेश्वर के पवित्र आत्मा से सतत परिपूर्ण होने के लिये एक ही मार्ग है, समर्पित होना। इसका अर्थ है आपके जीवन की हर बात यानि आपकी इच्छा, योजनाएं, कमजोरियाँ और सबसे अधिक आपकी शक्तियां सब कुछ परमेश्वर को समर्पित होना चाहिये। जब आप ऐसा करते हैं तो आप अपना सम्पूर्ण अस्तित्व पवित्र आत्मा और उसकी आपके लिये इच्छा को समर्पित करते हैं। पवित्र आत्मा को अपने जीवन में समर्पित करने से हमें उनकी हमारे लिये इच्छा के लिये तैयार करता है।

हालांकि, पवित्र आत्मा को अपने जीवन समर्पित करने का अर्थ अविष्ट हो जाना नहीं है। सिर्फ शैतान ही है जो व्यक्ति की इच्छा और

व्यक्तित्व पर हावी हो जाता है (लूका 8:26–38क)। किसी पंथ या झूठे धर्म के अगुवे भी अपने भक्तों को पूरा पूरा आधीन बनाके उन पर अधिकार करना चाहते हैं क्योंकि वे भी शैतान के प्रभाव में कार्य करते हैं।

हमें अपना दिमाग और पसंद करने की क्षमता को एक तरफ रखकर धार्मिक कठपुतली बनने के लिये नहीं बुलाया गया। इसके विपरीत हमें प्रेम, विश्वास और हमारे जीवन में पवित्र आत्मा की उपस्थिति के सम्बन्ध के लिये बुलाया गया है। वह हमारे अन्दर कार्य करता है, ताकि हमें बदल सकें, और शुद्ध कर सकें; और हमारे द्वारा कार्य कर सकें ताकि हम परमेश्वर के लिये उपयोगी साधन बनें। और जब हम परमेश्वर और उनके कार्य के लिये अपना जीवन समर्पित करते हैं तो, हम नया और सतत अभिषेक पा सकेंगे।

पास्टर से पास्टर तक : हमारे स्वर्गीय पिता के बच्चे होने के नाते, हमें चाहिये कि हम पवित्र आत्मा की अगुवाई में चलें (रोमियों 8:14)। यहां पर अगुवाई में चलें शब्द वर्तमान कालका है। यानि हमें सतत अगुवाई में चलना है।

पवित्र आत्मा का सतत अगुवाई में शास्त्र की आज्ञाओं और सिद्धान्तों और उनके प्रति हमारी आज्ञाकारिता शामिल है, हालांकि उसका कार्य इतना ही सीमित नहीं है। यह तो पवित्र आत्मा की अगुवाई में चलने का प्राथमिक तरीका है, क्योंकि परमेश्वर ने तो अपने वचन में हमें बता ही दिया है कि हमें अपना हर रोज का जीवन कैसे जीना है।

परन्तु पवित्र आत्मा की सतत अगुवाई में कहने का मतलब यह भी है कि उनके सुझाव जो वो हमें कभी भी दे सकते हैं उनके प्रति संवेदनशीलता बढ़ाये। पवित्र आत्मा आपको आपकी सेवकाई के विषय में आपके व्यक्तिगत जीवन के सम्बन्ध में, किसी और की जरूरत के सम्बन्ध में, और ऐसी कई और बातों में सुझाव दे सकता है। वह हमेशा आपके साथ रहता है ताकि आपके इस जीवन में आपकी अगुवाई कर सकें। पवित्र आत्मा आपकी अकड़

जानने में भी सहायता करता है कि आप दूसरों की जरूरतों को पूरा करने में उनके साथ सहकर से कैसे कार्य करें।

यदि यह पवित्र आत्मा का सुझाव है तो, वह आपको हमेशा शास्त्र में लिखे गये परमेश्वर की आज्ञाओं और नैतिक स्तरों को आधीन होने के लिये अगुवाई करेगा। यदि आपको ऐसा लगता है कि पवित्र आत्मा आपको एक बहुत भारी बदलाव लाने या फिर आपके लिये जो आम बात है उससे कहीं अधिक बढ़कर सेवकाई के लिये अगुवाई कर रहा है तो जरूरी है कि आप शास्त्र में दिये गये, प्रोत्साहन को पढ़ें और परिपक्व सलाहकारों की सलाह लें (नीतिवचन 11:14; 24:6)। वे आपकी यह जानने में मदद कर सकते हैं कि आपकी भावना पवित्र आत्मा की ओर से है या नहीं। इससे आप किसी प्रकार की भूल या धोखे से बच सकते हो।

सारांश

"आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ" (इफिसियों 5:18)। इस वाक्य से हमने तीन महत्वपूर्ण सिद्धांत सीखें।

- यह तो एक बार का अनुभव नहीं है पर हम सतत परिपूर्ण हो सकते हैं।
- हमें चाहिये कि हम सतत परिपूर्ण होते रहे क्योंकि परमेश्वर ने हमें यह आज्ञा दी है।
- हम केवल उन्हीं के द्वारा परमेश्वर की सतत परिपूर्णता और पवित्र आत्मा का अभिषेक पा सकते हैं–यह तो उनकी भेंट है कि हम अपने जीवनों को समर्पित करके उसे प्राप्त कर सकें।

2. परमेश्वर को ढूंढो!

आप के मन में इस समय यह सवाल उठ रहा होगा, "परमेश्वर के पवित्र आत्मा का नया अभिषेक पाने के लिये मुझे क्या करना चाहिये?" क्या मुझे कोई विशेष जगह पर जाना होगा? कुछ विशेष शब्द बोलने होंगे? किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढ़ना होगा जो मेरे लिये प्रार्थना कर सकें? क्या मुझे विशेष सभाओं में जाना होगा?

पवित्र शास्त्र का कुछ भाग हमें बताता है कि हम पवित्र आत्मा का अभिषेक कब और कैसे पा सकते हैं। प्रभु यीशु ने कहा, *"और मैं तुम से कहता हूं कि मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा, ढूढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जायेगा। क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है, और जो ढूढ़ता है, वह पाता है, और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा। तुममें से कौन ऐसा पिता होगा, कि जब उसका पुत्र रोटी मांगे, तो उसे पत्थर दे: या मछली मांगे, तो मछली के बदले उसे सांप दे? या अण्डा मांगे तो उसे बिच्छू दे? सो जब तुम बुरे होकर अपने लडके वालों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा* (लूका 11:9–13)।

इस अध्याय में, प्रभु यीशु हमें एक सामर्थ मार्गदर्शन देते हैं कि हम कैसे पवित्र आत्मा से नये रूप में बार बार परिपूर्ण हो सकते हैं।

क. हमें मांगना है, ढूंढ़ना है, खटखटाना है। परमेश्वर पवित्र आत्मा का देने वाला है (पद 13)। इस पद में मांगना, ढूंढ़ना, खटखटाना यह शब्द मूल इब्रानी भाषा में वर्तमान काल में लिखे गये हैं।

इसका अर्थ है, करते ही रहना, इस वक्त भी। हमें मांगते, ढूंढ़ते और खटखटाते ही रहना है–जब तक हमें अपने प्रेमी ईश्वर पिता से जवाब ना मिल जाये।

हमें वचन दिया गया है, *"जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है, और जो खटखटाता है उसके लिये खोला जाएगा* (लूका 11:10)। हालिलूल्याह! परमेश्वर हम पर अपना पवित्र आत्मा उण्डेल कर प्रसन्न होते हैं; पर हमें उनसे मांगने की जरूरत है।

प्रभु यीशु ने पवित्र आत्मा से मांगने, ढूंढ़ने और खटखटाने को जारी रखने के लिये तीन उदाहरण दिये हैं। प्रभु यीशु तीन अलग अलग प्रक्रिया नहीं बता रहें। बल्कि, वे हमें प्रोत्साहन देते हैं कि हम उन्हें गंभीरता से और सच्चाई से उनको ढूंढ़ते रहें।

आपने ध्यान दिया होगा कि यही भीख मांगने या पाने के लिये अपनी योग्यता पूरा करने के विषय में नहीं बताया गया। इन प्रयासों

की जरूरत नहीं है, वास्तव में वे तो ऐसा स्वाभाव हैं जो कि परमेश्वर की सन्तान होने के नाते सरल विश्वास में मतलब कार्यशीलता में बाधा डालते हैं।

ख. **पवित्र आत्मा बेटे और बेटियों के लिये हैं।** जो परमेश्वर के बेटे बेटियां है, उन्हें आत्मिक नया जन्म मिला है (यूहन्ना 1:12,13; 3:5–8), हमें अपने पिता परमेश्वर से वचन की आशीषों के लिये भीख मांगने की जरूरत नहीं है।

प्रभु यीशु इस महान सत्य को उसके अनुरूप उदाहरण से समझाते हैं कि माता–पिता होने के नाते कैसे हम अपने बच्चों को भोजन देते हैं (पद 11,12)। फिर प्रभु यीशु तुम्हारे माता–पिता की भूमिका को परमेश्वर जो कि हमारे स्वर्गीय पिता हैं उनके साथ तुलना करते हैं (पद 13)।

फिर वे हमारे सीमित पापी स्वभाव के विरोध में परमेश्वर के असीमित सम्पूर्ण प्रेम को रखते हैं। यदि हम, जो "दुष्ट" माता–पिता, अपने बच्चों से अच्छी चीज़ें दूर नहीं रखते, तो हम ऐसा कैसे सोच सकते हैं कि हमारा सम्पूर्ण और पवित्र स्वर्गीय पिता अपने बच्चों के साथ ऐसा करेगा? (परमेश्वर का हमारे प्रति हृदय के विषय में अधिक जानकारी के लिये पढ़ें; रोमियों 5:6–10; 8:31–39; 1 यूहन्ना 3:1–4:10, 12–19)।

ऐसा नहीं है कि हम अनिच्छुक परमेश्वर के आगे विनती करें और भीख मांगें। हम तो सर्वोच्च परमेश्वर के बेटे बेटियां हैं, और वे हमें पवित्र आत्मा की परिपूर्णता देने में प्रसन्न होते हैं।

सच्चाई वह है कि, हमें नम्रता से और अपने जीवन को सम्पूर्ण समर्पण के साथ मांगना चाहिये। फिर भी, हम, उनके बेटे – बेटियां होने के नाते, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बांधकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हामरी सहायता करें (इब्रानियों 4:16; इफिसियों 3:12; इब्रानियों 10:19–22 भी पढ़ें।

ग. **ऐसी कौन सी बातें हैं जो हमें प्राप्त करने से रोक सकती हैं?** कुछ ऐसी परेशानियां हैं जो हमें पवित्र आत्मा से सतत परिपूर्ण होने में बाधा डालती है।

1) हमारे जीवन में पाप की उपस्थिति या समझौता (रोमियों 6:12–14; 1 कुरिन्थियों 5:6,7)। बाइबल हमें सिखाती है कि हम इस जीवन में पाप रहित और सम्पूर्ण कदापि नहीं हो सकते (1 यूहन्ना 1:8)। हम सभी के जीवन में असफलता की घड़ियां आती हैं जिनके लिये हमें एकदम से पश्चाताप करना चाहिये और परमेश्वर से माफी मांगनी चाहिये।

हालांकि, हमें संसार, शरीर और शैतान के साथ समझौता करने में लगे रहना नहीं है। बाइबल ऐसे व्यवहार को पाप की आदत कहती हैं (गलतियों 5:21)। यानि पाप को नियमित आदत बना लेना या उसको बार बार करते रहना।

इस तरह बार बार पाप करना हमें मालिक के उपयोगी साधन बनने से अयोग्य ठहरायेगा (1 कुरिन्थियों 6:24–27; 2 तीमुथियुस 2:19–21)। हमारे परमेश्वर पवित्र ईश्वर है और वे हमें पवित्र होने के लिये बुलाते हैं, ताकि उनका पवित्र आत्मा और अनुग्रह हमसे कार्यरत हो सकें (1 पतरस 1:13–19)।

आत्मा जो कि पवित्र है (रोमियों 1:4), उन्हीं साधनों के द्वारा कार्य करना चाहता है जो कि पवित्र हो।

2) अपनी ही सेवा करने के उद्देश्य की उपस्थिति यानि घमंड (मत्ती 7:21–23; फिलिप्पियों 2:3,4; 1 तीमुथियुस 6:3–5)। हमने घमंड और उसके परिणामों के विषय में सीखा है। कलीसिया के अगुवे होने के नाते, हमें प्रभु यीशु की तरह बनना है। जो कि "नम्र और दयालु" है (मत्ती 11:29)।

जो लोग गलत उद्देश्य से कार्य करते हैं उन्हें परमेश्वर अभिषेक नहीं देंगे (याकूब 4:6)। हमें पवित्र आत्मा को अपने हृदय जांचने देना चाहिये (नीतिवचन 16:2) और हमारी अपनी महिमा करने की इच्छा को साफ करने देना चाहिये। यही कुछ बाइबल के वचन है जिन्हें आप

पढ़कर उन पर ध्यान करियेः (2 इतिहास 16:9; नीतिवचन 13:10; 16:5, 18; मत्ती 23:8–14; गलतियों 5:20; फिलिप्पियों 1:15,16, 2 तीमुथियुस 3:6; याकूब 3:14–4:4)।

3) आपके सम्पूर्ण जीवन के समर्पण का अभाव (रोमियों 12:1,2; गलतियों 2:20)। आपके सम्पूर्ण जीवन को परमेश्वर को समर्पित करने के महत्व के विषय में मैं आपको बता चुका हूं। फिर भी, मैं बताना चाहता हूं कि परम पवित्र आत्मा का अभिषेक दिया जाता है ताकि परमेश्वर के समर्पित सेवक में और सेवकाई के लिये सामर्थ हों। यदि हम परमेश्वर की और दूसरों की सेवा करने के अतिरिक्त किसी और उद्देश्य से उनके सामर्थ की अपेक्षा रखते हैं तो हम अपने जीवन पर उनके अभिषेक की अपेक्षा नहीं रख सकते।

हमारी समर्पित सेवा तो परमेश्वर की अगुवाई में होनी चाहिये, क्योंकि वे मसीह की देह के लिये हमें कैसे उपयोग करना है वह जानते हैं। हम परमेश्वर के लिये क्या करेंगे इसे हम पसंद नहीं कर सकते। हमारे हृदय में यह इच्छा होनी चाहिए कि जो भी वे कहेंगे हम उसे पूरा करेंगे।

हमारा सम्पूर्ण समर्पण जरूरी है ताकि हम परमेश्वर की सामर्थ को पा सकें और उनकी इच्छा को जान सकें। फिर हमें उन्हें आधीन होना भूल लेना चाहिये। इससे हम सेवकाई में सही मायने में फलवन्त हो सकेंगे।

4) एक विश्वास जो कमज़ोर या कम हो (इब्रानियों 11:6; याकूब 1:6)। *"सो सुनना मसीह के वचन से होता है"* (रोमियों 10:17)। हमें शास्त्रों से यह सीखना है कि परमेश्वर ने हमारे लिए क्या कुछ उपलब्ध किया है, अन्यथा हमारा विश्वास कमजोर हो जायेगा।

जैसा कि आपने अभिषेक के विषय में बाइबल अध्ययन किया है, आपने यह सीखा है कि पवित्र आत्मा की सामर्थ आज आपके लिए है। और ऐसा नहीं कि थोड़ी बहुत है, जैसा की रेगिस्तान में पानी की बूंद के समान। पवित्र आत्मा को आपके द्वारा एक नदी के समान बह निकलना है! (यूहना 7:37–39)

परमेश्वर हमारा प्रेमी पिता है, वह अपनी संतानों को अपना जीवन और सामर्थ दे कर आनन्दित होता है। परन्तु, हमें विश्वास से मांगता है, उसमें यह विश्वास करके कि वह हमारे हृदय की पुकार का उत्तर देगा (भजन संहिता 138:3)।

यदि आपको चिंता है कि आपका विश्वास कमज़ोर और कम है, तो आप याद करें कि विश्वास के सम्बन्ध में यीशु ने क्या कहा था। *". . .यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कह सकोगे, कि यहां से सरककर वहां चला जा, तो वह चला जाएगा, और कोई बात तुम्हारे लिए अनहोनी न होगी"* (मत्ती 17:20ख)।

यीशु इस बात को प्रगट करते हैं कि हमारा विश्वास कम होने पर भी, यदि परमेश्वर के प्रति केन्द्रित है – तो वो फिर भी प्रभावकारी है! न हो हम अपने आप पर विश्वास रखें और न ही इस बात पर कि हमें कितना अधिक विश्वास है। हमें अपना विश्वास परमेश्वर पर और उसके वचन पर रखना है। क्योंकि वह जो कहता है, वो वह करता भी है! हम यह विश्वास कर सकते हैं कि वह अपना वचन पूरा करेगा,

और हम पूर्ण रूप से अपना विश्वास उस में रख सकते हैं। इसलिये, परमेश्वर के वचन पर अपना विश्वास मज़बूत करो। यह विश्वास रखो कि जिसके विषय में उसका वचन प्रकाशन करता है, वह वो है जो आपका सृष्टिकर्ता, आपका उद्धारकर्ता, आपका राजा है! उसके पास अक्सर जाओ, उसका मुख देखो और वह तुमको उत्तर देगा (यिर्मयाह 29:11–13)।

5) आत्मिक भूख की कमी (भजन संहिता 63: 1,2; 84:1,2; मत्ती 5:6; यूहन्ना 6:35, 48, 7:37–39)। परमेश्वर हमेशा हमारी आत्मिक भूख की सुधि लेता है ताकि हम उसको और अधिक ग्रहण कर सकें।

आत्मिक भूख की कमी कई कारणों से हो सकती है, जैसे कि:

- कोई त्रासदी, शोक या मृत्यु (जैसे की किसी परिवार के सदस्य की) जो कि भावनात्मक और आत्मिक उदासी को उत्पन्न करती है।
- कोई निराशा, हार या मकान जो कि परमेश्वर को ढूंढ़ने की हमारी आशा और प्रेरणा की भावना को नष्ट कर देती है।
- दूसरों के प्रति, यहां तक के परमेश्वर और स्वयं अपने प्रति कोई क्रोध, कड़वाहट या अक्षमाशीलता जो कि परमेश्वर के प्रति हमारी चाहत को कम करती है।
- इस संसार का सुख और आकर्षण, या सुस्ती और आत्मसंतोष, जो कि परमेश्वर के प्रति हमारी धार्मिक भूख को कम करती या नष्ट कर देती है।

पृथ्वी पर हमारा जीवन कठिन और ऐसी चुनौतियों से भरा हो सकता है जिनसे हमें ऊपर उठना है। परन्तु हमें उत्साह रखना है क्योंकि जो भी शोक, मनोव्यथा या हार हमें अनुभव करती है। परमेश्वर उनसे पार जाने के मार्ग हमें देता है। परमेश्वर की चंगाई और छुटकारे की सामर्थ, उसका प्रेम और क्षमा, उसकी दया और अनुग्रह और उसका अभिषेक – हमारा है यदि हम उसके पास आ जाएं।

प्रेरित पौलुस हमें बताते हैं कि किस प्रकार हम उन बातों से ऊपर उठ सकते हैं जो परमेश्वर के प्रति हमारी खोज़ और भूख में बहुत हद तक बाधा उत्पन्न कर सकते हैं। फिलिप्पियों (3:12–14) में उन्होंने

लिखा, *"यह मतलब नहीं, कि मैं पा चुका हूं, या सिद्ध हो चुका हूं . . ."* (पद 12क)। पौलुस दीनता से अपनी कमजोरी और हार को पहचानता है।

". . . पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिये दौड़ा चला जाता हूं, जिसके लिए मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था . . ." (पद 12ख)। पौलुस जानता था कि वह हार नहीं मान सकता है क्योंकि सुसमाचार के लिए उसको आगे बढ़ते जाना है।

"हे भाइयो, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं . . ." (पद 13क)। पौलुस हर बात को नहीं समझता या, यहां तक की उन बातों को जो उसके साथ घटी थीं।

". . . परन्तु केवल यह एक काम करता हूं, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूल कर . . ." (पद 13ख)। पौलुस प्रत्येक दर्द या चोट, विजय या हार – जो कुछ बीत चुका है उन सब को छोड़ने का सच निर्णय लेता है।

". . . आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ . . ." (पद 13ग)। पौलुस बीती बात को छोड़ कर, उसके प्रति परमेश्वर के उद्देश्य तक पहुंचने को चुन लेता है।

"निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं, जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है" (पद 14)। पौलुस निर्णय लेता है कि चाहे कुछ हो जाए, वह परमेश्वर और परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने में लगा रहेगा।

प्रत्येक विपत्ति और परीक्षा, प्रत्येक आनन्द और विजय में पौलुस सम्पूर्ण हृदय से परमेश्वर के पीछे चलता रहा। अपने हृदय की पड़ली भूमि को जोतना (होशे 10:12) कोई छोटा या सरल कार्य नहीं है। परन्तु यदि हम खुल कर अपने आपको उस परमेश्वर के निकट लाते हैं – जिसने हमको बनाया, जो हमको बचाता है, जो हमसे प्रेम करता है – तो हम एक नया हृदय प्राप्त करेंगे और परमेश्वर के प्रति हमारी भूख फिर बढ़ जायेगी (यहेजकेल 36:26,27)।

घ) हमें परमेश्वर की बाट जोहली है: शास्त्र हमें "परमेश्वर की बाट जोहने" के लिए प्रायः प्रोत्साहित करते हैं (भजन संहिता 25:5; 27:14; 37:7,9,34; यशायाह 30:18, 40:31; विलापगीत 3:25,26 आदि)। यह मसीही जीवन का एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। परमेश्वर की बाट जोहने से हमेशा आशीष मिलती है।

किन्तु, बाट जोहना हमारे स्वाभाव में नहीं है। हम बैचेन, भयभीत और भुलक्कड़ हो जाते हैं। हमारा व्यस्त जीवन, सेवकाई का कार्य, निर्णय लेने का दवाब – और बहुत सी बातें हमारे समय पर दवाब डालती हैं और मांग करती हैं।

परन्तु एक साधारण, और दर्दनाक, सत्य यह है कि जो कुछ आपके लिए सचमुच महत्वपूर्ण है, आप उसके लिए समय निकाल ही लेंगे। दुख की बात है, हम बहुत देर के बाद ही समझते हैं कि हमारे लिए वास्तव में क्या महत्वपपूर्ण है।

पास्टर से पास्टर तक : कभी–कभी अपनी प्राथमिकताओं को परखने का समय निकालना महत्वपूर्ण है, अपने जीवन को निकट से देखें, और अपने सारे कार्यकलाप पर ध्यान दें। फिर उन सभी को परमेश्वर के सम्मुख रख दें, उसके वचन पर ध्यान करें, और निर्णय लें कि क्या हमारी प्राथमिकताएं, परमेश्वर की प्राथमिकताओं से मेल खाती हैं।

यदि शास्त्र का यह प्रोत्साहन कि "परमेश्वर की बाट जोहो" हमारी प्राथमिकता में नहीं है तो उसको होना चाहिए। क्योंकि अकसर यह एकमात्र तरीका है कि हम परमेश्वर की आवाज़ को सुन सकते हैं।

परमेश्वर के निकट आना

अपने जीवन में और अधिक पवित्र आत्मा प्राप्त करने के लिये हमें मांगना पड़ेगा। इसके बाद हमें परमेश्वर की बाट जोहनी पड़ेगी।

यदि हम प्रतीक्षा करें, तो बहुत हद तक सम्भव है कि हम उसका "धीमा शब्द" सुन सकेगे (1 राजा 19:12)। प्रतीक्षा करने से पवित्र आत्मा को समय मिल जाता है कि वह हमारे हृदय और जीवन को जांचे, और

उसकी उपस्थिति और सामर्थ को ग्रहण करने के लिये हमें तैयार करें। शायद वह हमारे अन्दर से किसी रूकावट या अवरोधक को प्रगट करें, हमको दोषी ठहराए, हमें निर्देश या दिशा दे, आदि।

जब हम धीरज से प्रतीक्षा करते हैं तभी परिवर्तन का कार्य हमारे जीवन में होता है। जैसे हम परिवर्तित हो जाते हैं, हमें मिलता है, जैसे हम उसकी आत्मा को और प्राप्त करते हैं, तो निश्चित है कि हम उसकी सेवकाई में और अधिक प्रभावकारी और फलदायक हो जाएंगे।

परमेश्वर की बाट जोहने का एक ओर महान लाभ है कि उसकी उपस्थिति में व्यतीत समय, हमें उसके निकट और निकट ले जाता है। हम उसको और गहरे और व्यक्तिगत रूप से जान जाते हैं।

जैसे हम परमेश्वर की बाट जोहते हैं, तब आप शांत रहना चाहेंगे (भजन संहिता 46:10)। या फिर आप अपनी आत्मिक भाषा में शांति से प्रार्थना कर पाएंगे, या शांति से अराधना कर पाएंगे (1 कुरिन्थियों 14:2,15)। परन्तु याद रखें, प्रतीक्षा का मुख्य उद्देश्य सुनना और ग्रहण करना है। यह बात तभी पूरी होती है जब अचेत और शान्ति हो।

यदि आपको परमेश्वर की ओर भूख हो, तो आपकी प्रार्थना का स्वर और बढ़ जाएगा। जरूरी नहीं कि यह गलत हो। परन्तु याद रखें कि आपको अपनी प्रार्थना के स्वर के द्वारा आपका अपनी इच्छा और योग्यता साबित नहीं करनी है, और न ही आपको जोर से विनती करने की आवश्यकता है ताकि परमेश्वर सुने और उत्तर दे।

इसके विपरीत, उसकी प्रतिज्ञा पर विश्वास करें, *". . . स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा"* (लूका 11:13)।

भयभीत न हों

कुछ लोग शायद यह डर रखें कि और अधिक पवित्र आत्मा के लिए परमेश्वर की बाट जोहते–जोहते कहीं दुष्ट आत्मा न आ जाए। यह सम्भव नहीं है। पहली बार, दुष्टात्माएं तभी प्रवेश करती हैं जब उनको न्यौता दिया जाए, या जब कोई व्यक्ति जादू–टोने का उपयोग करें। यदि आप परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं और आप उसी की इच्छा रखते हैं, तो कोई दुष्टात्मा अचानक ही आपके अन्दर नहीं घुस जायेगी आप इस का भय न रखें।

आप वे संत हैं जिनको यीशु मसीह के रक्त के द्वारा खरीदा और धोया गया है। शैतान या दुष्टात्माओं की कोई सामर्थ आपके ऊपर तब तक नहीं है जब तक आप उनको यह अधिकार नहीं देते हैं। दुष्ट को क्रूस पर पराजित किया जा चुका है (कुलुस्सियों 2:14,15)।

शैतान के राज्य को पता है कि जैसे आप और पवित्र आत्मा ग्रहण करेंगे, तब आप महान रीति से परमेश्वर की सामर्थ में चलेंगे। इसका अर्थ है कि आपकी हिम्मत और अधिकार जो आत्मिक बातों के प्रति है, सहज ही बढ़ जाएगी। इसलिए, दुष्ट आपको परीक्षा में डालने का और भटकाने का प्रयास कर सकता है ताकि आप परमेश्वर को ढूंढ़ने का समय न निकाल पाएं।

परन्तु याद रखें: आप वे संत हैं जिनको यीशु मसीह के रक्त के द्वारा खरीदा और धोया गया है। शैतान और दुष्टात्माओं की कोई भी सामर्थ आपके ऊपर तब तक नहीं है जब तक आप उनको यह अधिकार नहीं दे देते हैं। दुष्ट को क्रूस पर पराजित किया जा चुका है (कुलुस्सियों 2:14,15)। तो अपने शस्त्र और तलवार ले लो (इफिसियों 6:10–18) और जैसे आप परमेश्वर के निकट आते हो तो आत्मा दृढ़ खड़े रहो (याकूब 4:7,8)।

ड. पवित्र आत्मा के अभिषेक को विश्वास से ग्रहण करो। हम परमेश्वर की संतान हैं और उसकी प्रतिज्ञाओं के वारिस हैं (रोमियों 8:17, 2 कुरिन्थियों 1:20; गलतियों 3:26)। इसमें पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा भी शामिल है (प्रेरितों के काम 2:38,39)। हमने सीखा है कि यह एक बार की परिपूर्णता नहीं है, परन्तु हमारे जीवन में उसके उपस्थिति और सामर्थ की तृप्ति हमेशा होती और नई होती रहती है (इफिसियों 5:18)। जो प्रतिज्ञा परमेश्वर ने करी है। वह उसे पूरा भी करेगा – सो केवल उससे मांग लें!

तो हम मांगें – और मांगते रहें, खोजते रहें और खटखटाते रहें जब कि हमें मिल नहीं जाता (लूका 11:9,10)। परमेश्वर चाहता है कि आपको पवित्र आत्मा की परिपूर्णता मिले (लूका 11:13)। जैसे आप धीरज से उसकी बाट जोहते हैं – अपने हृदय को खोल दें और उस पर उसकी इस इच्छा पर विश्वास रखें कि वह आपको परिपूर्ण करना चाहता है (इब्रानियों 11:6)।

नई तृप्ति की प्रार्थना प्रतिदिन हो सकती है, क्योंकि हमें निरन्तर तृप्ति चाहिए। हम जो कुछ भी करते हैं, उसमें हमें पल पल उसकी सामर्थ और उपस्थिति की आवश्यकता है।

केवल ग्रहण करें

हम विश्वास से ग्रहण करते हैं, न कि अपनी भावनाओं से। हम एक भावनात्मक अनुभव की नहीं बल्कि पवित्र आत्मा की कभी अलग न होने वाली उपस्थिति को खोज रहे हैं। जब आप मांगते हैं, तो आप उस शारीरिक अवस्था को ले सकते हैं जिसमें आप आराम महसूस करें – आप बैठ सकते हैं, घुटने टेक सकते हैं, खड़े रह सकते हैं या मुंह के बल लेट सकते हैं। आप अपने प्रार्थना के स्थान में, रसोई में, कमरे में, चर्च में या बाहर हो सकते हैं। आपकी अवस्था और स्थान उतना आवश्यक नहीं है जितना यह आवश्यक है कि आपका हृदय खुला हो और आप में पाने की इच्छा हो।

जब आप पवित्र आत्मा की नई तृप्ति मांगें, तब जो हृदय में आए उन्हीं शब्दों का प्रयोग करें। परमेश्वर से प्रार्थना करने का कोई सही या गलत तरीका नहीं है। जैसे आप हैं, वैसे ही वह आप को सुनना चाहता है।

आप इस तरह से मांग सकते हैं, "पवित्र आत्मा आइए, आपको और ग्रहण करने के लिए मेरा हृदय खुला है। मैं अपना हृदय और जीवन आपको सौंपता हूं। मैं विनती करता हूं कि आप मुझ में नई रीति से भर जाएं। अपनी उपस्थिति से मेरे जीवन को तृप्त करें। मेरे मुंह को परमेश्वर की स्तुति से तृप्त करें। मेरी सेवकाई को अपनी सामर्थ से तृप्त करें, ताकि मैं परमेश्वर के लिए एक उपयोगी पात्र बन जाऊं

. . ."। अपने शब्दों का उपयोग करें और अपने हृदय को परमेश्वर के लिये खोल दें। प्रार्थना करो और ग्रहण करो, तृप्त हो जाओ, यीशु के नाम में! हाल्लिलूय्याह!

निष्कर्ष

मेरे भाइयो और बहनो, परमेश्वर के क्षेत्र में सहकर्मियो और सुसमाचार के सेवा कार्य में मेरे साथियो – आपको और मुझे वास्तव में एक बुलाहट मिली है! हमें आदर प्राप्त हुआ है उस मसीह के प्राय देह की सेवा करने का, जिसका, *". . .छुटकारा चांदी सोने अर्थात नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। पर निर्दोष और निष्कलंक मेमने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ"* (1 पतरस 1:18,19)।

यह एक ऐसी बुलाहट है जो हम न तो अपनी शक्ति से पूरी कर सकते हैं–और न ही हमें करनी चाहिए। परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि उसने हमें वो सब दे दिया है जो हमें चाहिए ताकि हम वास्तव में फलदायक, वास्तव में प्रभावकारी और वास्तव में उसको महिमा दें!

हमने यह अध्ययन परमेश्वर के वचन से आरम्भ किया था,

"न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा,
मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है"
(जकर्याह 4:6)।

आरम्भ ही से परमेश्वर ने ऐसे महान और आश्चर्यजनक कार्य कर रखे हैं। परन्तु अभी भी बहुत कुछ है जिसकी उसने प्रतिज्ञा करी है, और जो अभी पूरा होना बाकी है!

अभी "महान कार्य" होना बाकी है–आश्चर्यकर्म, चिन्ह और अद्‌भुत कार्य, यीशु की महिमा के लिए (यूहन्ना 14:12)। और परमेश्वर ये सब आपके द्वारा करना चाहता है! प्रभु चाहता है कि सुसमाचार का दृढ़ता से प्रचार हो, खोए हुओं को मसीह में फेर लाएं, और कलीसिया की स्थापना करें। परमेश्वर की यह इच्छा आपकी कलीसिया के लिये है, आपके शहर के लिए है, आपके राष्ट्र के लिए है। परमेश्वर की महिमा हो!

परमेश्वर निरन्तर ऐसे लोगों को ढूंढ़ रहा है जो उसकी इच्छा के लिए अपने पूरे जीवन को अर्पित कर सकते हैं। वह ऐसे हृदयों को खोज रहा है जो उसके प्रति विश्वासयोग्य रहेंगे, जिनके द्वारा वह अपने आपको समर्थ प्रगट करेगा। वह उनको उत्तर देता है जो उसकी, सब चीज़ों से अधिक, इच्छा करते हैं, और उनको जो उसके प्रति अपनी आत्मिक भूख को बढ़ने देते हैं – जो निडर होकर कहेंगे *"मैं यहां हूं! मुझे भेज।"* (यशायाह 6:8)।

आपके जीवन और सेवा से, परमेश्वर और उसकी बुलाहट को पूरा करने का केवल एक ही तरीका है – जो कि पवित्र आत्मा का अभिषेक है! पवित्र आत्मा की सामर्थ से आपको परिवर्तन, वरदान और योग्यता प्राप्त होगी, ताकि जो परमेश्वर आपसे इच्छा रखता है वो आप बन सकें और कर सकें। यह मांग लेना आप पर निर्भर करता है।

परमेश्वर आपको अपना आत्मा बहुतायत से देगा, यह विश्वास करें, उसके अभिषेक को स्वीकार करें, उसी में चलें और उसी के साथ सेवा करें। जैसे जैसे आप दूसरे की सेवा में पवित्र आत्मा का जीवन और सामर्थ को बांटते रहेंगे, वैसे–वैसे आप में और आप के द्वारा और अधिक पवित्र आत्मा उंड़ेलेगा।

प्रभु आपको आशीष दे और आपकी आत्मिक आंखें खोल दे ताकि आप इस सत्य को समझ सकें। प्रत्येक कार्य में उसका आज्ञा पालन करने के लिये आपको उसका अनुग्रह और सहायता प्राप्त हो। आपको और आपकी सेवकाई को बहुतायत का अभिषेक प्राप्त हो, ताकि औरों का जीवन परिवर्तित हो जाएं, और वे उस की महिमा बन जाएं, जो उनके उद्धार के लिए मरा। जैसे जैसे आप पवित्र आत्मा के अभिषेक में चलते और बढ़ते जाते हैं, तो उसके द्वारा परमेश्वर को उसकी उचित सभी स्तुति, सभी महिमा, सभी आदर प्राप्त हो। मैं यह पिता के सम्मुख मांगता हूं, हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के शक्तिशाली और महिमामय नाम में। आमीन! 🕮

अति आवश्यक – डाक खर्च व समय बचाएं! ई–मेल द्वारा नवीनीकरण करें।

एक्ट्स पत्रिका के अगले संस्करण को ऑनलाइन पाने के लिए पहले अगवे बने!

इंटरनेट द्वारा एक्ट्स पत्रिका की PDF फाइल पाने हेतु निम्निलिखत निर्देश का पालन करें।

1. क्या यह आपके अनुदान के नवीनीकरण का समय है? एक्ट्स के डाक लेबल में इसकी अन्तिम तिथि देखें।
2. अगर तिथि आज से छः महीने कम की हे, तो यह समय नवीनीकरण का है!
3. एक्टस के प्रत्येक संस्करण के बाद नवीनीकरण की आवश्यकता नहीं, यह नवीनीकरण तभी करना है जब आपका तीन वर्ष का अनुदान समाप्त हो गया या छः महीने बाद समाप्त हाने वाला हो।

एक्ट्स अनुदान को आप ऑनलाइन या डाक द्वारा नवीनीकरण कर सकते हैं।

- ऑनलाइन नवीनीकरण के लिए, wmap@world-map.com में ईमेल करें और निम्नलिखित निर्देश का पालन करें:

1. ईमेल के Subject लाइन में "मेरा एक्ट्स अनुदान का नवीनीकरण" (Renew My Acts Subscription) लिखें।
2. अपना पूरा नाम व एक्ट्स के डाक लेबल का नम्बर भेजें किसी किसी नाम एक जैसा होता है उसके लिये लेबल नम्बर से हम आपके रिकॉर्ड को सही कर सकते हैं।
3. अगर आपका पता बदल गया है तो अपना लेबल नम्बर पुराना पता व नया पता भेजें। पता साफ साफ लिखा हो व पिन कोड को प्रयोग अवश्य करें।
4. नीचे दिये गये फॉम में भी भरें। कृपया प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दें (कृपया अटैच फाईल न भेजें। हम इस प्रकार की फाईल नहीं खोलते हैं)।
5. ईमेल से अपना एक्ट्स का अगला संस्करण पाने के लिये अपना पता व ईमेल सही लिखें। (आपके ईमेल से एक्ट्स पत्रिका प्राप्त होगी)।

- **डाक द्वारा नीवनीकरण के लिये, नीचे दिये गये फॉर्म को काटें और दूसरे पेपर में चिपकायें।**

1. नीवनीकरण फॉर्म के प्रत्येक निर्देश का पालन करें (हां या नहीं में गोला लगाएं)।
2. नवीनीकरण के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लिखें।
3. एक्ट्स पत्रिका को ऑनलाइन पाने के लिये अपना ई–मेल साफ–साफ लिखें।
4. अपना नवीनीकरण फॉर्म भेंजें – (World MAP ACTS INDIA, Post BOx 1037, Kilpauk Chennai, 600 010. T.N. India) अमेरिका के मुख्यालय व समीप की शाखा के लिये (नीचे पूरे पते देखें)।

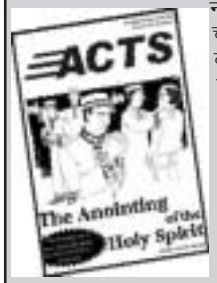

नोटः एक्ट्स पत्रिका एशिया, अफ्रीका व लैटिन अमेरिका के चर्च अगुवों को निःशुल्क दी जाती है (जो सप्ताह में 20 लोगों को प्रभु का वचन सिखाते हैं)। अगुवे जो चर्च के हैं वे ध्यान दें: आप एक्ट्स को तीन वर्ष तक प्राप्त करेंगे; तब आपको अनुदान का नवीनीकरण करना है जिससे तीन और वर्ष आप इसे प्राप्त कर सकें। एक्ट्स पत्रिका "पत्राचार– पाठ्यक्रम" नहीं है। आप एक्ट्स के पढ़ने के बाद कोई "सर्टिफिकेट" या "डिप्लोमा" प्राप्त नहीं करेंगे। ये हमारी आशा व प्रार्थना है कि आप उससे भी अधिक मूल्यवाद वस्तु प्राप्त करें: बाइबल के आधार पर प्रशिक्षण और सेवकाई का व्यवहारिक प्रशिक्षण। यह आपको दूसरों की गवाही देने और सेवा करने में सुसज्जित करेंगी।

एक्ट्स नवीनीकरण/चरवाहे की लाठी का आवेदन (नीचे दिये प्रश्नों के हाँ या नहीं पर घेरा बनाओ)

1. जबकि आगामी छः महीनों में मेरा एक्ट्स अनुदान समाप्त होगा, मुझे नवीनीकरण कराना है। **हां नहीं**
2. मेरा एक्ट्स लेबल नम्बर है: ————समाप्ति की तारीख ———/———है।
3. मैं एशिया अफ्रीका, और लेटिन अमेरिका में एक कलीसिया का कार्यकर्ता हूं और मैं प्रचार करता हूं या 20 या उससे अधिक लोगों को बाइबल से सिखाता हूं कम से कम सप्ताह में एक बार (ये आपके लिये सच होना चाहिये हमारी सामग्री प्राप्त करने हेत्)। **हां नहीं**
4. क्या आपके पास चरवाहे की लाठी की प्रतिलिपि है? **हां नहीं**
5. क्या आप चरवाहे की लाठी का निवेदन कर रहे हैं? **हां नहीं**
6. क्या आप इंटरनेट द्वारा PDF फाइल पाना चाहते हैं? **हां नहीं**
7. कृपया नीचे अपना पूरा नाम और पता छापें/बड़े शब्दों में साफ साफ लिखें:

मेरा अन्तिम नाम (परिवारिक नाम)

.....

मेरा प्रथम नाम

.....

मेरा डाक का पता

.....

मेरा शहर/जिला

.....

मेरा प्रान्त (यदि पते में आवश्यक हो)

.....

मेरा देश डाक कोड नम्बर

.....

कलीसिया में मेरा पद (या जिम्मेवारी)

.....

मेरा हस्ताक्षर आज की तारीख

.....

7. क्या ये शिक्षा समझने में आसान थी.....समझने में कठिन .....सहायक.....सहायक नहीं.....एक अलग कागज पर आप अपनी गवाही हमें भेज सकते हैं या एक्ट्स के विषय में कोई टिप्पणी कि किस प्रकार एक्ट्स और चरवाहे की लाठी ने आपकी सहायता की।

इस पूरे किये फार्म को यहां भेजें:

वर्ल्ड मैप, एक्ट्स इण्डिया पो.बाक्स 1037, किलपॉक, चेन्नई–600 010 (भारत)

चर्च के अगुवे ध्यान दें:

क्या आप धर्मशास्त्र अध्ययन *चरवाहे की लाठी"* द्वारा करते हैं,जो वर्ल्ड मैप का शक्तिशाली शिष्यता का हथियार है?

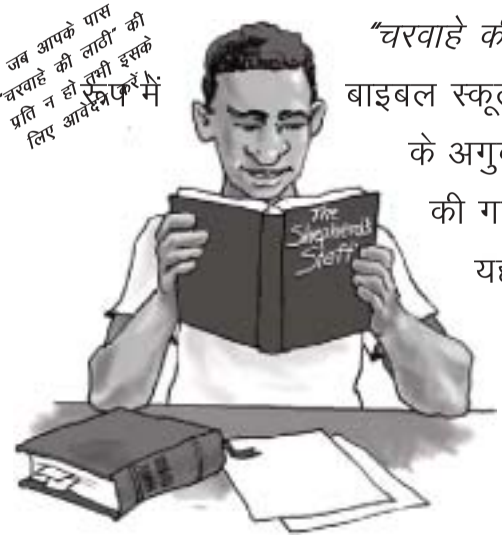

"चरवाहे की लाठी" को कुछ लोगों द्वारा पूर्णतः "पुस्तक के बाइबल स्कूल" माना जाता है! यह 100 पृष्ठों की पुस्तक चर्च के अगुवों को प्रशिक्षण व सुसज्जित करने के लिये तैयार की गई है। इसमें कई लेखकों द्वारा लेख सम्मिलित है। यह पुस्तक एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के चर्च अगुवों की आवश्यकता के अनुसार बनाई गई है। अगर आप एक्ट्स पत्रिका के नए पाठक हैं और आपके पास *"चरवाहे की लाठी"* की प्रति नहीं है तो अभी आवेदन करें।

चरवाहे की लाठी की पुस्तक में आप पायेंगे :

(1) **नये विश्वासियों के लिए प्रशिक्षण पुस्तक** जो कि आपको नये विश्वासियों का सिखाना है।

(2) **विषय की सूची** इसके अन्दर 1000 बाइबल के सन्दर्भ दिये गये है और 200 विषयों के बारे में बताया गया है। *चरवाहे की लाठी* की पुस्तक आपको दूसरों को बाइबल सिखाने के लिये आपकी सहायता कर सकती है।

(3) **अगुवों के प्रशिक्षण का मार्गदर्शिका** – जिसमें वर्ल्ड मैप के 30 वर्षों की अथक मेहनत के द्वारा शिक्षण सामग्री कलीसिया के उत्तम अगुवाई के प्रशिक्षण का इसमें समावेश है।

ये सब और बहुत कुछ *"चरवाहे की लाठी"* में उपलब्ध है।

इस शक्तिशाली प्रशिक्षण पुस्तिका, *"चरवाहे की लाठी"*को पाने के लिए ऑनलाइन संपर्क करें *wmap@world-map.com/applyform.html*, या इस पुस्तिका में दिये फॉर्म को साफ–2 भरें। फॉर्म को भरने के बाद इसे समीप में वर्ल्ड मैप दफ्तर में डाक से भेजें। (पते इस पुस्तिका में दिये गये है)। अगर आप इंटरनेट द्वारा फॉर्म को भरना चाहते हैं तो यह अधिक तेज है और डाक का खर्चा भी बचेगा। आप जल्द से जल्द *चरवाहे की लाठी"* की प्रति प्राप्त करेंगे (पर क्योंकि कभी कभी डाक धीरे–धीरे आती है तो कृपया छः महीने का समय हमें दें)। धन्यवाद।

हिन्दी एक्ट्स H84/2008

व्यक्तिगत वितरण हेत्